उत्थान-पतन

उत्थान-पतन

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-11-2
Price Rs.250/-
US $ 25 (for abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website :http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal
Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone : 2328-8341, 4362-8341

UTHAN-PATAN by Shri Jagdish Prasad Mandal
a Novel in Maithili Language

समर्पित

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर

बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित

आ नवविहान अननिहारकेँ सेहो।

आमुख

नाटककार, कथाकार आ उपन्यासकारक रुपमे श्री जगदीश प्रसाद मंडलजी मैथिली साहित्यमे नूतन उर्जाक संग उपस्थित भेल छथि। हिनक जन्म १९५७ ई. मे भेल। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, प्रेरक कथा उपन्यास सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

एहि उपन्यास 'उत्थान-पतन' क माध्यमसँ लेखक गामक जिनगीकेँ यथार्थ आ नव रुपमे उपस्थित करबाक चेष्टा कएने छथि। गामक जड़ता, रीति-रिवाज, पावनि-तिहार, मूर्खता, विद्वता, अड़ि जाएबला भाव आ सहज स्वभाव आदि सहज रुपमे आबि गेल अछि।

तत्वक दृष्टिसँ देखल जाए तँ सर्वप्रथम कथावस्तु घ्यानकेँ आकृष्ट करैत अछि। कथावस्तु तँ सशक्त आधार अछि जाहिपर उपन्यासक कतेक रंगक प्रसाद ठाढ़ होइत अछि। जाहिमे जिनगीक श्वास रहब आवश्यक।

उत्थान-पतनमे गंगानंद, यमुनानंद, पंडित शंकर, सुधिया, ज्ञानचंद, भोलिया, विसेसर, भोलानाथ, सुकल, निलमणि, मोहिनी, रीता, महंथ रघुनाथ दास, लीला, दीनानाथ, गुलाब आदि अनेक पात्रसँ सज्जित भऽ अंचलक मार्मिक चित्र उपस्थित भेल अछि।

कथावस्तुमे बिच्छिन्न होइत गाम-घर आ टूटैत बेकती सबहक समस्याकेँ मार्मिक ढंगसँ अभिव्यक्ति कएल गेल अछि। उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि- ''गामे-गाम, कतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ कतौ नवाह, कतौ चण्डी यज्ञ तँ कतौ सहस्त्र चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह बच्चाकेँ भेने तँ सुखौनी लगि जाइत आ जहिठाम एगारह ग्रह एकत्रित अछि तइठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नामसँ गदमिसान होइत।........ जाधरि लोक कीर्तन मंडलीक संग मंडपमे कीर्तन करैत ताधरि घरक सभ सुधि-बुधि बिसरि मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबितहि.......... बच्चाकेँ बाइस-बेरहट लेल ठुनकब सुनि। व्यथाककेँ दबैत सभ आँखिक नोर होइत बहबैत।''

सामाजिक उत्थान करऽ बला बेकतीकेँ गामक एहि परम्परा आ धार्मिक

आडम्बरसँ संधर्ष करऽ पड़ैत अछि। लेखक अपना पात्रक द्वारा अंधविश्वासकेँ तोड़ि परिवर्तन अनबाक प्रयास कएने छथि।

साहित्यक भाषा होएबाक चाही जन-भाषा। जेकरा साधारण जन सहज रुपसँ पचा सकए। एहि उपन्यासक भाषा गाम-घरक बोलचालक भाषा अछि। जेकरा प्रयोग करैत काल सहजहि नव-नव शब्दक निर्माण भऽ गेल अछि। साधारण जनक बोली आ नूतन शब्दक प्रयोग एहि उपन्यासमे प्रचुरताक संग देखल जा सकैत अछि। कथोपकथनमे सहजता संक्षिप्तता आओर स्वभाविकता अछि। जेना एहि कथोपकथनपर दृष्टिपात कएल जा सकैत अछि-

"अगर दसखत कएल नइ होइत होअए तब?"
"तब की? औंठा निशान दऽ देतइ।"
"भाय दूटा समांग आएल अछि। दुनूकेँ काज कऽ दहक।"
"अच्छा थमहह। किरानी बाबूसँ गप्प केने अबै छी।"

कथोपकथन उपन्यासमे वर्णित जिनगीक अनुकूल अछि। दौड़ैत-पड़ाइत संसारमे बृहताकार उपन्यास पढ़बाक लेल समएक अभाव रहैत अछि। किन्तु भाषा आ शौलीमे जँ आकर्षणक गुण रहैत अछि तँ ओ जनमानसकेँ पढ़बाक लेल अपना दिशि घिचि लैत अछि। ताहि गुणसँ भरल-पूरल एहि उपन्यासक चित्रात्मक शैलीक एकटा उदाहरण देखल जा सकैत अछि।

"गौर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोंछ, बड़दक आँखि सन नम्हर-नम्हर आँखि सुकलक रहै। कोठीक गेटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सुकल सेठक करैत।"

एकहि वाक्यमे बहुत बात कहि देब लेखकक बिशेषता अछि। जेना-

"माथपर छिट्टा, दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकड़ने, दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब, सैंया भेल किसनमा घुनघुनाइत आंगन दिशि लफड़ल चललीह।"

केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। एहि दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक पात्र श्यामानन्द द्वारा कएलनि अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम थीक। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भहिसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।

सामाजिक उत्थान समितिक निर्माण कऽ लेखक ई देखबए चाहैत छथि जे टूटैत गामक लेल एकता आवश्यक भऽ गेल अछि। जाहिसँ एक-दोसराक सहयोग

भेटतैक आ गामक सम्पूर्ण विकास होएतैक। सबहक संगे सामाजिक न्याय होएतैक। श्यामानन्द द्वारा आधुनिक यंत्रसँ कृषि कार्य होइत अछि। जाहिसँ ओ सम्पन्न किसान बनि जाइत अछि। एहि माध्यमसँ लेखक देखाबए चाहैत छथि जे अपनहुँ गाम-घरमे जँ बेकती विवेक आ कर्म निष्ठासँ काज करए तँ ओकरा अर्जन करबाक लेल दोसर प्रदेश नहि जाए पड़तैक आ पलायन रुकि जएतैक।

एखनहुँ गाम-घरमे पूर्ण ज्ञानक किरिण नहि पहुँचि सकल अछि। ताहि कारणे एक गाम दोसर गामसँ लड़ैत-झगड़ैत अपना विकासकेँ अवरुद्ध कएने रहैत अछि। बेमारीकेँ डाइन-जोगिन आ भूत-प्रेतक प्रकोप मानैत अछि। ई समस्या सभ सहजहि एहि उपन्यासमे उपस्थित भऽ गेल अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे लेखक गामक यथार्थ जिनगीक चित्र उपस्थित कएने छथि, संगहि आदर्श रुप सेहो दृष्टिगत भऽ रहल अछि।

राजदेव मंडल

उत्थान-पतन

उपन्यास

--१--

गामे-गाम, कतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ कतौ नवाह, कतौ चण्डी यज्ञ तँ कतौ सहस्त्र चण्डी यज्ञ होइत। किऐक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बाल ग्रह बच्चाकेँ भेने तँ सुखौनी लगि जाइत आ जहिठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तइठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवान नामसँ गदमिसान होइत। जओ-तील, घीउक गंधसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदयमे भगवानक स्वरुप बिराजैत। सभ व्यस्त। सभ हलचल। खरचाक कोनो इत्ता नहि। जना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना, जाधरि लोक कीर्तन मंडलीक संग, मंडपमे कीर्तन करैत ताधरि घरक सभ सुधि-बुधि बिसरि मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबितहि क्यो भूखल गाए-महीसिक डिरिएनाइ सुनि, चिन्तित होइत तँ क्यो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट लेल ठुनुकब सुनि। व्यथा कऽ दबैत सभ आँखिक नोर होइत बहबैत। चारि सालक रौदीक चलैत पोखरिक पानि सूखि गेल। नमहर-नमहर दरारि खेतसँ लऽ कऽ पोखरि धरि फाँटि गेल। इनारक मटिआइल पानि भरि-भरि सभ घैलमे राखि, जखन फड़िछाइत तखन गिलास, लोटामे लऽ लऽ पीबैत। लोक की करत? कतए जाएत? मृत्युक मुँह छोड़ि दोसर रस्ते की? आजुक कलकत्ता ओ कलकत्ता नहि जहिठाम अकाल आ समुद्री तूफानसँ ढेरो लोक मरैत छल। जेकरा आइ अपन दोसर घर बुझि लोक जीवन-यापन करए जाइत अछि। आजुक पंजाब ओ पंजाब नहि जहिठाम आन-आन राजक लोक जा खेत-खरिहानसँ कारखाना धरि खटि कऽ परिवारक भरण-पोषन करैत अछि। पंजाबक ओ दशा छल, जहिठाम कल-कारखानाक कोन गप्प जे खेतक माटि गेउर रंगक कंकड़ मिलल, बरखासँ भेटि नहि होइत छल। साइते-संयोग सालमे कहिओ बरखा भऽ जाइ छलै। ओतुक्का लोक पड़ा-पड़ा आन-आन राज जा हड़तोड़ मेहनत कऽ जीविका चलबैत छल। बम्बइ आजुक बम्बइ नहि। ने सिनेमा उद्योग छल, ने कल कारखाना आ ने अखुनका जेकाँ कारोबार।

गंगानन्दकेँ तीस बीघा जमीन। तीनि भाँइक भैयारी आ सत्तरह गोटेक आश्रम। जइ साल सबारी समए होइत ओइ साल आश्रम चला, मलगुजारी दइयो कऽ गंगानन्दकेँ अन्न उगड़ि जाइत जकरा दू-सलिया, तीनि सलिया पुरान बना खाइत। सबाइयो लगबैत। पहिल सालक रौदी गंगानन्दकेँ बुझि नहि पड़लनि। घरमे धान-चाउर, गाए-महीसिक लेल बड़का-बड़का दूटा नारक टाल। पहिलुके जेकाँ गंगानन्दक मोन हरियर। दोसर साल घरक धान-चाउर लगिचाइल। रौदमे, जहिना गाछक तोड़ल फूल मौलाए लगैत तहिना गंगानन्द मौलाए लगला। कुटुम्बो-

संबंधीक आवा जाही बढ़ि गेलनि। गंगानन्दक जेठ बेटी रीता सासुर बसैत। चारि बेटी आ एक बेटाक संग रीता सेहो आबि गेलनि। रीताक जेठकी आ मझिली बेटी विआह करए जोकर। जँ कहियो रीता कोनो काजमे नैहर अबैत तँ, काजक पराते सासुर जाइले धूम मचा दइत। किएक तँ सासुरक सभ भार रीते दुनू परानीपर। भैयारीमे जेठ रहने घरसँ बहार धरिक सभ तरद्दुत करए पड़ैत।

रौदीक चलैत रीता, धिया-पूताक संग छवो गोटे नैहर गेली। मासोसँ उपरे भऽ गेल मुदा सासुर जइक नामे ने रीता लइत। बाप-माए कोना मुँह फोड़ि कऽ बेटीकेँ सासुर जाइले कहत। भरिआइल खरचासँ गंगानन्द तेरे-तर कुहरैत। मने-मन सोचैत जे साल खेपब कठीन अछि, तइपर सँ कुटुम-परिवारक घुमसाही। मुदा कहत ककरा। बरखाक कतौ पता नहि। उपजा-बाड़ीक कोनो आशा नहि। मने-मन रीता सोचैत जे जँ जेठ बेटी सुमनक विआहक चर्च माए करत तँ ओकरे माथपर पटकि देबै। अपना बूते तँ विआह पार लागब कठिन अछि।

सभ दिन गंगानन्द साँझू पहरकेँ भूजल चूड़ा फँकैत। बीस मनिया कोठीटा मे चाउर बचल। धान पहिनहि सठि गेल। धानक दुआरे चूड़ा कथीक कुटाओल जाएत। पत्नी -पार्वती- पतिक आदत बूझि चाउरे भूजि छिपलीमे दरवज्जापर नेने एलखिन। भूजल चाउर देखि गंगानन्द मने-मन बुझि गेलाह। जे धान सठि गेल। पुरान चाउर रहने भूजा पथरा गेल। तँ सक्कत। पहिलुके फक्का मुँहमे लइत गंगानन्दक दाँत सिहरि गेलनि। दाँत सिहरतहि गंगानन्द लोटाक पानि मुँहमे लऽ गुल-गुला कऽ चाउर घोटलथि। मुँहक चाउर घोटि छिपली आगूसँ घुसका देलक। मने-मन पार्वती अंदाजलनि जे सक्कत दुआरे भूजा नहि खेलनि। मुदा उपाए की? गंगानन्दकेँ तामस नहि उठल। जँ घरमे धान रहैत तँ चूड़ा कुटाओल जाइत मुदा नइ रहने कएल की जाएत। जहिना लकड़ी जरि कऽ राख बनि शक्तिहीन भऽ जाइत तहिना गंगानन्दक दशा भऽ गेलनि। गिलासमे चाह नेने गंगानन्दक नातिन सुमन आइलि। दुनू परानीक नजरि सुमनपर पड़ल। चाह राखि सुमन आंगन चल गेलि। लग्गी भरि हटल पार्वतीकेँ हाथक इशारासँ गंगानन्द लग अबैले कहलखिन। पार्वती बैसले-बैसल घुसुकि कऽ लग आइलि। फुस-फुसा कऽ गंगानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- ''रीताक दुनू बेटी, विआहए जोकर भऽ गेल। जँ कहीं अइसाल एकोटा विआह ठनलक तँ इज्जत वाँचव मोसकिल भऽ जाएत। हमहूँ तँ नने छियै।''

अखन धरि पार्वती अंगनासँ दलान धरि अवैत-जाइत छलीह। एहिसँ अधिक ने देखैक समए भेटल आ ने घरक नीक अधला बुझैक। नातिनक विआह बुझि अह्लादसँ पार्वती बाजलि- ''यज्ञो ककरो बाकी रहै छै। यैह तँ भगवानक लीला छन्हि जे गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरिक काज कहुना ने कहुना भइए जाइ छै।''

केँचुआइल साँप जेकाँ गंगानन्दक दशा। दिन ससरब कठिन। तइपर सँ पत्नीक चढ़ल बात सुनि, केँचुआ छोड़ैत जेना साँपक साँस तेज भऽ जाइत, तहिना नमहर साँस छोड़ैत गंगानन्द कहए लगलखिन- ''ऐहन दुरकालमे जीवि कठिन अछि तइपर विआह सनक यज्ञ....। तहन तँ जकरा सिरपर काज अबै छै, कोनो ने कोनो धरानी पार लगबिते अछि। दू सालक रौदीक झमारसँ घर फोँक भऽ गेल अछि। अखनो धरि पानिक कोनो आशा बुझिये ने पड़ैए। तँ पहिने जीबि पार लगत तखन ने किछु। विआह तँ एक-दू साल आगूओ बढ़ाओल जा सकैए।''

ओलती लग ठाढ़ भऽ रीता माए-बापक फुसुराहटि सुनैत। गप्प मोड़पर अबिते रीता आगू बढ़ि माए लग आबि ठाढ़ भऽ गेलि। अपन बातकेँ छिपबैत गंगानन्द कठहँसी हँसि पत्नीकेँ कहए लगलखिन- ''रीतोक बेटी विआह करए जोकर भेल जाइ छै?''

मुँह निच्चा केने रीता बाजलि- ''बावू, दुनू बहीन तरे-उपरे भऽ गेलि अछि। मुदा घरक जे दशा भऽ अछि तहिसँ अखन विआह पार लागब कठिन अछि। जखन समए-साल सुधरत तखन बुझल जेतै।''

मने-मन गंगाननद सोचति जे घरक भार पड़लासँ सभ आगू-पाछू देखि किछु करैत अछि। मूड़ी हिलबैत गंगानन्द कहलखिन- ''हँ, से तँ ठीके। अखन विआह करबाक अनुकूल समयो ने अछि। सिर्फ हमरेटा घरमे नहि समाजमे बहुतोँ कऽ घरमे विआहए जोकर बेटी अछि। सबहक पार तँ भगवान लगेबे करथिन।''

पिताक बात सुनि रीताक मोनमे शान्ति एलै। अपन परिवारक चर्च करैत रीता बाजए लगलीह- ''बावू घरक हालत बड़ खराव भऽ गेल अछि। एक तँ दू-अढ़ाई बरखक रौदी दोसर एक्कोटा समांग उहिगर नहि। क्यो कमाए-खटाए नइ चाहैत। भरि दिन, गप्प-सप्प लड़बैत समए वितबैत अछि। घरक कोनो धैन-फिकिर नहि। भैयारीमे जेठ रहने दुनू परानी काजक पाछू भरि दिन अपसियाँत रहै छी।''

मास पूरैमे दू दिन बँचल। राजक सिपाहीकेँ पटवारी अंतिम सूचना मालगुजारीक पठौलक। सिपाही आबि गंगानन्दकेँ कहलकनि- ''परसू तक जँ मालगुजारी नइ देवइ तँ जमीन निलाम भऽ जाएत। पटवारी अपन जाति-बेरादर बुझि चुपचाप पठौलनि। नइ तँ कानून-काएदासँ काज हएत''

सिपाहीक समाचार सुनि गंगाननदकेँ एहन धक्का लगलनि जेना कोनो राजाकेँ राज छीनि कऽ भगा देलापर लगैत। छाती धकधकाइत, कंठ सुखैत, गंगानन्द सिपाहीकेँ कहलक- ''अखन जे दशा अछि तइमे मालगुजारी देव असंभव अछि। दोसर कोनो रास्ते ने देखै छी।''

गंगाननदक मजवूरी बुझैत सिपाही कहलकनि- ''एकटा उपाए अछि।''

“की?” - गंगानन्द कऽ सुखाइत कंठसँ बहरेलनि।

कने घुसैक कऽ लग आबि सिपाही बाजल- “पटवारीकेँ विआहै जोकर बच्चिया छनि। अहाँ अपन बेटाक बिआह कऽ लिअ। देबो-लेब नीक जेकाँ भेटत। हुनके हाथक काज छनि, जमीनक रसीद सेहो दऽ देताह। क्यो बुझवो ने करत काजो भऽ जाएत।”

बचनाक आवाज सुनि, फुलिया जाँत चलौनाइ छोड़ि, एक हाथसँ हथरा पकड़ने, तकलक। बचनाक मन, जेना धिया-पूताक हाथसँ कौआ रोटी लपकि उड़ि जाइत, तहिना सोगाइल, बचना फुलियाकेँ कहलक- “हम फुलियाक नैहर, अपन सासुर लक्ष्मीपुर जाइ छी जँ कोनो गर रुपैआक लागि जाएत तँ लगौने अबै छी।”

नैहरक नाम सुनि फुलियाक मनमे गुदगुदी लगल। मुदा विपत्तिक चद्देर ओकरा झाँपि देलक। सोगाइल मने फुलिया बाजलि- “जाउ, कपार तँ फुटले अछि मुदा तइओ अपना भरि कोशिश करु। कपार तँ उनटवो-पुनटवो करै छै। जँ कहीं नीके गरे उनटि जाए। कनिये थमि जाउ। रोटी पका दइ छी। खा कऽ जाएव।”

मन्हुआइल बचना ठोर पटपटबैत बाजल- “बड़वढ़ियाँ। तुर्रते हमहूँ दूटा दारही खोखरौने अबै छी। नहाइयो लेब।”

बचना दाढ़ी कटबए विदा भेल। फुलिया जात्ता लगक चिक्कस समेटि मुजेलामे उठौलक। मुजेला लऽ जा चुल्हि लग रखलक। चिक्कस रखि फुलिया कोठीपर सँ चिक्साही सूप आनि गठूलासँ जारन आनए गेलि। हाँइ-हाँइ कऽ चुल्हि पजारि रोटिपक्का धिप्पै लऽ चुल्हिपर चढ़ौलक। मुजेलासँ लप लऽ लऽ चिक्कस निकालि सूपमे रखलक। पानि दऽ हाँइ-हाँइ सानए लागलि। जाबे रोटिपक्का धिपलै ताबे रोटियो ठोकि लेलक। हाथपर ठोकल रोटि रोटिपक्कामे दऽ पकेलक।

नौवा गाममे नहि। मूड़नक पता लए कऽ सुखेत गेल छल। बिना दाढ़ी कटौनहि बचना घुमि कऽ आवि गेल। अलगनीपर सँ धोती लऽ नहाइले विदा भेल। जाबे बचना नहा कऽ आएल ताबे फुलिया थारीमे भाँटाक सन्ना आ रोटी परोसि कऽ रखने। हाँइ-हाँइ कऽ बचना खा, अंगा पहीरि, छाता लऽ लछमीपुर विदा भेल।

वचना रास्तो चलए आ मने-मन ‘जय महावीरजी, जय महावीरजी’ घुनघुनइतो रहए। लछमीपुर लग पहुँचते, मने-मन महावीर जी कऽ गोड़ लागि, सबा रुपैआक चीनी कबुला केलक। महावीर जी कऽ कबुला करिते जना बचनाक मनमे संतोष भेलै जे काज हेवे करत। लछमीपुर पहुँते बचना सबहक मन खसल देखलक।

जना कत्ते भारी विपत्तिमे सभ पड़ल हुअए। करेजपर पाथर रखि बचना सरहोजिकेँ पूछलक- “किऐक सभ अनोन-विसनोन जेकाँ छथि?”

नोराइल आँखिये सरहोजि उत्तर देलकनि- “पाहुन की कहब, खेतक मलगुजारी दू साल पछुआ गेलै, तेँ परसू सबटा खेत लिलाम भऽ जाएत।”

सरहोजिक बात सुनि बचना अवाक् भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल जे के ककर दुख हरत। सबहक गति तेँ एक्के रंग छैक। बचना पाएरो ने धोए लगल चोट्टे गाम घुरि गेल।

विसेसर घरक आगूमे रास्तापर लोक सभ ठाढ़। रौदाइल विसेसर हर जोति कऽ अबिते छल। हाथमे हरबाही पेना। माथमे गमछाक मुरेठा बन्हने। फरिक्केसँ विसेसर सुनलक जे कचहरीक सिपाही बलजोरी बाड़ीमे कदीमा तोड़ि लेलक। विसेसरक पत्नी मोहिनी कतबो मनाही केलकै सिपाही नहि मानलक। मोहिनी आ सिपाहीक बीच रक्का-टोकी होइते छल, कदीमा सिपाहीक हाथेमे। लग अबिते विसेसर सिपाहीकेँ चारि-पाँच पेना लगा कदिमा छीनि लेलक। आ अनधुन सिपाहीकेँ गरिअबैत विसेसर कहलक- “बापक बाड़ी बुझि कदीमा तोड़लेँ। तूँ सिपाही कचहरीक छीही की हमर?”

चारि-पाँच गोटे पकड़ने। तइओ जोशमे बिसेसर हुरुकि-हुरुकि मारैक कोशिश करैत। लोकक कहलासँ शान्त भेल। मुदा तामसे ठोर पटपटाइते। शान्त भऽ विसेसर कहलक- “अहाँ समाज मिलि पकड़लहुँ, मुदा पच्चीस बेरि सिपाहीकेँ कान पकड़ि उठाउ-बैसाउ। चाहे थूक फेकि कऽ चटबाउ। जे फेरि ऐहन गल्ती नै करए। ई चोर छी। लालीस कऽ देबै। जहलसँ कहियो निकलए नइ देवइ। ई राँड़-मसोमात हमरा बुझलक।”

बिसेसर कऽ मात्र दू कट्ठा घरारिएटा। सेहो बेलगान। दुइये गोटाक आश्रम। बेटा-पुतोहू भिन्न। एकटा तेरह हाथक घर जइमे दूटा हन्ना बनौने। एकटा मे अपने दुनू परानी विसेसर रहैत आ दोसरमे बेटा-पुताहू। कनियेटा अंगना, तीनू भागसँ टाट लगा, बनोने। वाकी डेढ़ कट्ठा बाड़ी बनौने। मोहिनी अपन बाड़ीमे सभ दिन राशि-राशि कऽ तरकारी उपजबैत। विसेसर, दुनू उखराहा बोइन करैत। दुनू परानीक मिलानक चर्च सौँसे गाममे होइत। दुनू परानी अपन-अपन काज बँटने। कोनो हरहर खटखट नहि। दू सेर-चारि सेर अन्न् घरोमे रहैत। साठि बरखक विसेसर जुआन जेकाँ तनदुरुस्त। ने एकोटा दाँत टूटल आ ने केश पाकल। जेना दोसर-तेसर बोनिहार पचास बरख पुरैत-पुरैत झुनकुट बूढ़ जेकाँ भऽ जाइत, तेना नहि। नियमित जिनगी बना दुनू परानी विसेसर जीवैत।

डेढ़हो कट्ठा बाड़ीमे मोहनी कोदारिक काजसँ लऽ कऽ खुरपी हसुआँ धरिक

सभ काज करैत। लत्ती-फत्ती लऽ छोट-छोट मचान मोहनी अपने बना लैत। तरकारीक गाछ रोपइसँ लऽ कऽ ताक-हेरि, पटौनी, कमौनी सभ मोहिनीये करैत। अंगने जेकाँ चिक्कन बाड़िओ बनौने। दश हाथक एकटा लग्गी बनौने जहिसँ गाछक सूखल ठौहरी सभ तोड़ै। विसेसर तमाकुल खाइत आ मोहिनी हुक्का पीबैत। अपलो असान। एक्को पाइ खर्च नहि। कातिकमे मोहिनी सए गाछ तमाकुलक रोपि लइत। जकरा सभ तरद्दूत कऽ दैत। माघ अबैत-अबैत गाछ जुआ जाइत। गाछक रंगो बदलै लगैत। गाछ कऽ जुआइते काटि लइत। ओहिमे बीचला पात बाँछि खाइले रखैत आ निचला पात, कनोजरि कऽ पीनी कुटै लऽ रखि लैत। जे सालो भरि दुनू बेकतीकेँ चलैत।

भोलिया विसेसरक बेटा। जाबत छोट छल ताबत माएक संग घर-आंगनाक काजसँ लऽ कऽ जारनि धरि तोड़ि अनैत छल। जखन भोलिया नमहर भेल तखन विसेसरक संग बोइन करए लगल। विआहो भेलै। मुदा छौँड़ा-मारड़िक संगतमे पड़ि भाँग पीबए लगल। बाड़ी-झाड़ीमे भाँगक गाछ। ओकर फूलो झाड़ि-झाड़ि आ जट्टाबला डारियो काटि-काटि सुखा-सुखा रखैत। विसेसरकेँ कोनो जानकारी नहि। मुदा माए देखै। भिनसरु पहरकेँ जखन विसेसर काज करै विदा हुअए ते भोलिया सुतले। दु-चारि दिन विसेसर खिसिया कऽ 'छौँड़ा अवारा भऽ गेल, मौगियाह भऽ गेल कहि अपने काज करए चलि जाए। भोलिया घूमिते-घामिते रहि जाए। एक दिन खिसिया कऽ विसेसर भोलियाकेँ कहलक- ''तू बेटा छियैं, एकर माने ई नइ जे तूँ मालिक भऽ गेलैं। दू परानी तोहूँ छैं। बिना कमेने खेमे की? भिन्न रह कि साझी मुदा कमाइये पड़तौ। जो आइसँ फुटे भानस कर। कहि बिसिसेर भोलियाकेँ भिन्न कऽ देलक।

साझू पहरकेँ विसेसर सभ दिन डेढ़ियापर बिछान बिछा, जाबे भानस होए, भजन-कीर्तन करैत। असकरे विसेसर खजुरियो बजबे आ भजनो करै। ने दोसर कोनो साज आ ने क्यो संगी। अपने गबैया अपने बजनियाँ आ अपने सुनिनिहार। पाँचेटा भजन विसेसरकेँ अबैत। जैह सभ दिन गबैत। जखन भजन करै बैसए तखन एक झोक, खूब झमाझम कऽ, जय सतनाम, जय सतनाम जय सतनाम जय-जय सतनाम गबैत। चुल्हि लग मोहिनी भानसो करै आ घुनघुना-घुनघुना सतनामो करै। सतनामक बाद 'साँझ भयो नहि आयो मुरारी' अहलादसँ विसेसर गवैत। अड़ोस-पड़ोसक सभ पाँचो भजन सीखि नेने। जहाँ विसेसर भजन शुरु करै कि सभ अपना-अपना अंगनामे घुन-घुना, घुन-घुना गबैत। साँझ गौलाक बाद विसेसर विनती गबै। विनती गेवा काल तते तन्मय विवेसर भऽ जाइत जना भगवान हृदयमे बैसि गेल होथि। विनती समाप्त होइते खजुरी रखि तमाकुल चुना कऽ विसेसर खाइत। मोहिनीयो चुल्हिये लग हुक्का भरि पीबैत। तमाकुल फेकि

कुडुड़ कऽ कृष्णक रुप वर्णन शुरु करैत। रुप वर्णनक समए विसेसरकेँ बुझि पड़ै जे अन्तर्ज्ञानसँ ब्रह्माण्ड देखि-देखि गवैत छी। गबैत-गबैत विसेसर उठि कऽ ठाढ़ भऽ खजुरियो बजबैत आ ठुमकी चालिमे झूमि-झूमि नचबो करैत। असकर रहनहुँ विसेसरकेँ बुझि पड़ै जे हजारो-लाखो लोकक बीच नाचि-गाबि रहल छी। कखनो हँसबो करए, तँ कखनो मुस्कुरेबो करए।, तँ कखनो आँखिसँ नोरो बहवै तँ कखनो तौनीसँ मुँह-हाथ पोछि विसेसर सोहर शुरुह करैत। सोहर गवैत-गबैत, भरि दिनक ठेही उतड़ल वुझि पड़ै। अंतमे समदाउन गाबि विसेसर भजन समाप्त कऽ लैत।

--२--

रोहितपुरक दानोक चर्चा बुढ़हो-पुरान आश्चर्यसँ करैत, कहैत जे ऐहन आँधी जिनगीमे नहि देखने छलौं। खेतमे हवा उठल। खढ़-पात उड़ए लगल। गोल-मोल भऽ हवा सुरुंगा उपर मुहे आकास दिशि बढ़ल। टोलसँ हटि खेतमे हवा उठल जे दौड़ैत टोलमे प्रवेश केलक। टोलमे प्रवेश करिते अन्हर घर-दुआरक छप्पड़केँ उड़वैत, घरो खसबैत, क्षणेमे हजरो घरकेँ खसा-पड़ा देलक। पहिने तँ हवा गोल-मोल, नर्तकी जेकाँ नचैत, उठल मुदा कनिये कालक बाद तेहेन भयंकर रुपमे बदलि गेल जे गामकेँ उजाड़ि-पुजाड़ि एकबट्ट कऽ देलक। दुपहरक समय तँ गामक लोको छिड़िआयल आ मालो-जाल बाधमे। आँधी समाप्त होइते जे जतए छल दौगल गामपर आएल। क्यो बच्चा सभ तकए लगल तँ क्यो माल-जाल। गाममे एकोटा ऐहन घर नहि बँचल जेकरा कोनो नोकसान नइ भेल होय। सगरे गामक लोक विपत्तिमे डूबि गेल। के ककर नोर पोछत, सभकेँ अपने खसैत। जहिना सुरुज डूबला बाद अन्हारमे सभ कुछ कारिये बुझि पड़ैत तहिना गामक माल-जाल सऽ लऽ कऽ मनुक्ख धरि कनए लगल।

रतनाक स्त्री नैहरमे। बेर झुकि गेल। गाय कऽ पानि पीआ, खाइले आगू दऽ अन्हार होइ दुआरे, चोरवत्ती कऽ गमछामे लपेट काँख तर लऽ रतना बच्चो आ स्त्रीयोकेँ आनैले सासुर विदा भेल। मुह सूखल, छाती धकधक करैत, रतना आगूओ बढ़ै आ पाछुओ घुरि-घुरि तकै। मनमे होय जे फेरि कही आँधी दोहरा कऽ ने चलि आबे। मनमे इहो होय जे ओम्हर सासुर जाइ छी आ इम्हर गाममे जँ आँधी चलि आओत तब तँ आरो पहपटि भऽ जाएत। गामक सीमा टपिते रतना खूब झोंकसँ कखनो दौड़वो करै आ कखनो असथिरोसँ चलै। रस्तेमे विसेसर रतनाकेँ भेँटि भेल। भेँटि होइते विसेसर कुशल पूछलक। कुशलक उत्तर दैत

तरना कहलक- "पाहुन की कहब नाश भऽ गेल! सबहक घर आँधीमे गिर पड़लै। अगुताइल छी अखन नइ रुकब। राता-राती बच्चा सभकेँ लऽ कऽ गाम घुमव।"

आँधीक नाम सुनि विसेसर कहलकै- "जाउ-जाउ। ऐहन विपत्तिमे रोकवो ने करब।"

रतना आगू बढ़ल। विसेसर आंगन आयल। मोहिनी आंगनमे नहि, मुदा नैहरक समाद जरुरी बुझि विसेसर जोरसँ भोलिया माएकेँ सोर पाड़लक। धड़फड़ाइत मोहिनी आइल। मोहिनीकेँ देखि विसेसर कहलक- "नैहर उजड़ि गेल। रतना कहलक।"

चैल बुझि मोहिनी हँसैत बाजलि- "नैहर उजड़तै हमरा दुश्मनकेँ, हमर किऐक उजड़त। अहूँक मुहसँ दुरभक्खे निकलैए आकि सासुर अकछ लगैए?"

समाचार कऽ सत्य बनबैत विसेसर कहए लगल- "एहनो चौल होइ छै। हँसी-चैल हमरा अहाँक बीच हएत कि गामक अधला बजने हैत।"

विसेसरक बातसँ मोहिनीक मुह मलिन हुअए लागलनि। आँखिमे नोर आबै लगलनि। आरो अधिक समाचार बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़ै लगलनि। मुदा विसेसरकेँ जतबे गप भेल ओतवे बुझल तेँ ओहिसँ आगू किछु कहबे ने करैत। जिज्ञासा करैक खियालसँ मोहनी विसेसरकेँ कहलक- "कने रोहितपुर जा कऽ देखि अबियौ। नइ ते हमही जाइ छी।"

मोहिनीकेँ बुझवैत विसेसर कहलक- "ओहिना जा कऽ देखलासँ की हैत। जखन जाएब तँ किछु मदति करबै। देखै छियै ने जकर घर जरैत छै ओकर सभ किछु जरि जाइ छै। मुदा कुटुम-परिवार छूछे हाथे आवि-आबि जिज्ञासा करै छै। की ओहिना हमहूँ करब। काल्हि भोरे दुनू परानी चलू। घरमे जे अन्न-पानि अछि सेहो लऽ लेब। अपनो लत्ता-कपड़ा लऽ लेव। जत्ते दिन रहलासँ होतइ ओत्ते दिन रहि घर बान्हि देवइ।"

पतिक विचार सुनि मोहिनीक मन बदलल। पतिक कर्मठता देखि मोहिनीक हृदयमे नव स्नेह सेहो जगल। मधुर स्वरमे मोहिनी पतिकेँ कहलक- "हम तँ रोहितपुरक बेटी छी सभ काज कऽ देबै मुदा अहाँ तँ गामक जमाई छियै, कोना काज करबै?"

विसेसरक मन मदतिक अछि जबकि मोहिनीक व्यवहार आ प्रतिष्ठाक। हँसैत विसेसर उत्तर देलक- "जखन नीक समय रहै छै तखन ने सासुर आ जमाए। अखन तँ सभ विपत्तिमे पड़ल अछि। दोस-महिम, कुटुम परिवारक तँ परीछा ऐहने-ऐहने समयमे होइ छै। जँ कुटुम-परिवार वा दोस-महिम बेरिपर ठाढ़ नइ हएत ओहन लऽ कऽ की लोक नाचत।"

सालक आखिरी मास। राजक सभ अमिला-फमिला आमद-खरचक हिसाव

करैमे भीड़ल। तीन रुपैआ महिनाक नोकरी बराहिल करैत। जे सालक अंतमे एक्के बेरि दरमाहा उठबैत। दरमाहा की उठबैत वखसीस उठबैत। दरमाहा तँ मासे-मास भेटै जइसँ लोक गुजर करै अए। राजक बराहिल, जे सइओ बीधा जमीनपर हुकुम चलबैत। खेती तँ अपने नहिये करैत मुदा एक बटेदारसँ दोसरकेँ खेत देब, ई तँ बराहिलेक अधिकारक छल। धान-मडूआ सवाइ लगौनाइ, असुलनाइ ओकरे हाथक काज। ककरो वेईमान वा ईमानदार बनौनाइ बराहिलक वामा हाथक खेल छल। राजक कचहरीमे गामेक बराहिल मुदा गुमस्ता अनतुका छल। आमदनीक खल दुनूकेँ फुट-फुट। धन कटनी, मडुआ कटनी वा रब्बी-राईक आमदनी बराहिलक। खरिहानमे खरिहानी सेहो बराहिलेक खल छल। गामक बराहिल रहने मालिक आ गौँआक बीचक कड़ी सेहो। जखन बराहिल कलम-गाछी वा बाध घूमए जाइत आ एक बेर जोरसँ बजैत तँ सँउसे बाधक लोक बुझि कऽ सतर्क भऽ जाइत। जँ सतर्क नइ होइत तँ अनेरे दू-चारिटा गारि सुनि लैत। गाममे ताड़ी पीयाकक मेड़िया बराहिल बनौने। ताड़ीक खर्च बराहिलक होय। ओ खरच मलिकाना पोखरिक माछ बेचि बाँस बेचि अबैत।

गुमस्ता गाममे कम बूलैत। कचहरियेमे बैसल-बैसल सभ कुछ करैत। सभ दिन बराहिल एक डाबा ताड़ी गुमस्ताकेँ पहुँचा दैत। असकरे गुमस्ता भिनसरसँ साँझ धरि, जखन मन होय, चारि गिलास पीवि लिअए। गुमस्ता सेहो गामक दू गोटेकेँ मिला कऽ रखने। दुनू गोटेक खइ-पीवैक जोगार गुमस्ते करैत। एक गोटे गामक जुआन लड़की सभकेँ फुसला-फुसला अनैत। आ दोसर आम-कटहर सऽ लऽ कऽ गुमस्ता ऐठाम, गाड़ीपर पहुँचबैत। बराहिलक ताड़ी खूब पीवए, मुदा समाजक बेटीकेँ अपन बेटी बुझि, ककरो दिशि आखि नहि उठबै। गुमस्ताक किरदानी बराहिल बुझैत तँ जखन मन होय गुमस्ताकेँ दशटा गारि बराहिल दऽ दैत। जहिसँ बराहिलक धाक गुमस्ताकेँ होय। धान-मडूआ सवाइ लगबै काल गुमस्ता बोहीएमे जोड़-घटाव कऽ हाथ मारि लैत। जहिसँ बढ़िया आमदनी भऽ जाय।

सालमे पनरह दिन पटवारी आवि कचहरीक सभ हिसाव-किताब करैत। पटवारीकेँ अवितहि बराहिल गाममे सभक ऐठाम जा-जा मलगुजारी दइक सूचना दैत। कचहरी आबि-आबि किसान रसीद कटबैत। निलामी जमीनक बन्दोबस्त सेहो पटवारिये करै। गुमस्ता अपन आमदनीक चैथाई भाग पटवारीकेँ दऽ सालो भरिक हिसावक मुहमिलानी कऽ लैत। पटवारी तीनटा विआह केने। तीनू स्त्रीकेँ सय-सय बीधा जमीन दऽ, तीनि गाममे घर बनौने। पोखरि-इनार, कलम-गाछी सभकेँ। जाबे पटवारी कचहरीमे रहैत ताबे गुमस्ता खाइ-पीवैसँ लऽ कऽ ऐश-मौजक वस्तु जुटेबैमे परेशान रहैत।

विसेसर बोनिहार रहितहुँ ककरो बान्हल नहि। सभ काज करैक लुरि विसेसरकेँ। जे गिरहस्त पहिने आबि विसेसरकेँ कहैत, ओकरेमे विसेसर काज करए जाए। भोर होइते विसेसर मोहिनीकेँ चरिआ भानस करए लेल कहि अपने घरक अन्न निकालि मोटरी बन्है लगल। अन्नक मोटरी बान्हि अपन दुनू बेकतीक नुआ-विस्तर चैपेत-चैपेत रखलक। भानस होइते दुनू परानी खा रोहितपुर विदा भेल। आगू-आगू विसेसर माथपर मोटरी नेने आ पाछू-पाछू मोहिनी। रोहितपुरक दछिनवरिया बाध पहुँचते दुनू परानी रोहिपुरक दुर्दशा देखए लगल। दुरदशा देखि, दुनू परानीकेँ जना पएरमे जाँत बन्हा गेलि होए, तहिना डेग उठबे ने करै। ठकुआ कऽ दुनू गोटे आमक गाछ तर बैसि रहल। घरपर जाइक साहसे ने होय। मोहिनी मने-मन सोचै लगली जे ऐहेन अन्याय कहियो ने देखलिऐक। जबकि विसेसर सोचै लगल जे दुइओ मासमे सबहक घर बनत की नहि। जकरा सभ समचा छै ओ तँ लगले घर बना लेत मुदा जकरा किछु नहि छैक ओ तँ पछुआ जायत। बिना घरे रहत कतए। दुनू परानीकेँ रंग-विरंगक बात मनमे उठै लगल। तमाकुल चुना कऽ विसेसर खेलक। तमाकुल खाइते विसेसरक मनमे एलै जे तत्खनात जे उजड़ल-पुजड़ल घरक समान हएत ओकरे काटि-छाँटिकेँ खोपड़ी जेकाँ बना लेत। दू मास जे बोइन-बुता करत ओहिसँ बाँसो आ खढ़हो कीनि पाछू कऽ घर बना लेत। थतमत करैत दुनू परानी उठिकेँ विदा भेल।

नैहर बुझि मोहिनी मोटरी माथपर लेलक। आगू-आगू मोहिनी आ पाछू-पाछू विसेसर चलल। मोहिनीक भाइओ बोनिहार। एक्केटा घर मोहनाकेँ। मोहना घरक दुनू चार अन्हरमे उड़ि केरा गाछपर लटकल। एकटा चार गाछपर अँटकल आ दोसर भुइयाँमे खसल। केरो गाछक मूँड़ी सभ टूटि-टूटि निच्चा मुहे लटकल। आंगन पहुँचते, मोहिनीक माथपरसँ भौजाइ मोटरी उतारि रखलक। मोहना ठाठक बनहन काटि-काटि, एक दिशि कोरो रखैत आ दोसर दिशि बत्ती। झोलाइल घर रहने दुनू परानी मोहना, झोलसँ कारी खटखट भेलि। बचनी मोटरी राखि अंङनेमे बिछान बिछा, विसेसरकेँ वैसए लेल कहि लोटा लऽ कलपर सँ पानि अनै गेलि। विसेसर धोती-अंगा बदलि, पानि पीबि, हाँसू लऽ ठाठक कोरो बत्तीक बनहन काटि-काटि छँटियबए लगल।

मोटरी खोलि बचनी चाउर निकालि भानसक सुर-सार करए लगली। छोट खूट्टीक बचनी, मेघदूती रंग, दोहरा देह, नमहर केश, करजनी सन गोल-गोल दुनू आँखि। जेहने बाजैमे बचनी चड़फड़ तेहने काजोमे पीछड़। मुस्कुराइत बचनी मोहिनीकेँ कहलक- ‘‘भगवानो खूब होरी खेलेलथि। एक्के क्षणमे सौँसे गामक घर उजाड़ि कऽ फेकि देलखिन।’’

विसेसर आ मोहना ठाठमे भीड़ल। बचनी आ मोहिनी भानसमे। विसेसर

हाँसूसँ बनहन कटैत छल कि देखलक जे कोरोक दोगमे बगड़ाक खोंता। दुनू बगड़ा मुइल आ थौआ-थाकड़ अंडा। बगड़ाकेँ खाइ ले जे साँखर साप अबैत छल ओहो खोंताक बगलेमे मुइल। बनहन कटब छोड़ि विसेसर हँसुआक नोकसँ बगड़ो आ साँपोकेँ उनटा-पुनटा देखए लगल। कने काल देखि विसेसर दुनूकेँ हँसुआसँ हटा काज करए लगल।

एगारहक अमल भऽ गेलै। रौउदो खड़ा गेल। दुनू ठाठक कोरो-बत्ती सेहो तैयार भऽ गेल। सड़ल कोरो आ सड़ल बत्तीकेँ छाँटि जारन लेल रखि लेलक। रौदमे काज करब कठिन बुझि विसेसर लतामक गाछक छाहरिमे ठाठ बैसिवइ लगल। मने-मन हिसाब जोड़ि विसेसर दू हाथ छोट ठाठ बैसौलक। अपना बाँस नहि मोहनाकेँ। तेँ पुरने कोरो-बत्तीसँ काज चलबए चाहलक। ठाठ बैसाए दुनू गोटे हाथ-पएर धोइ खाइले गेल। खा कऽ कने-काल लोट-पोट कऽ दुनू गोटे ठाठ बन्हए लगल। सोझका ठाठ तेँ चारि बजैत-बजैत दुनू ठाठ बनि गेल। ठाठ बन्हिते दुनू गोटे नवोटा खूँटा गाड़ै लगल। नबो खूँटा गाड़ि ठाठ चढ़ौलक मोहनी आ बचनी कुड़कुट, बत्तीक टुकड़ी आ सड़लाहा कोरो सभ समेटि कऽ जारन लेल रखि लेलक। नीकहा खढ़ सभ समेटि अँटियबै लेल बेड़ाकेँ रखलक। दुनू गोटे खरड़ासँ साँसे खरड़लक। काज लगिचाएल देखि मोहना विसेसरकेँ कहलक- "पाहुन आब छोड़ि दिऔ। काल्हि कऽ लेब। कोनो की भादो मास छियै। काज चलै जोकर तेँ भइये गेल।"

हँसैत विसेसर कहलक- "जेहने कोइढ़ अहाँ छी तेहने भुटिया घरवाली। टहटहौआ इजोरिया छै। दुनू ननदि भौजाई नमहर-नमहर आँटी बनहत। अहाँ चारपर फेकब, हम उपरेमे सरिआ-सरिआ छाँरैत जायब। खाइ-पीबै राति धरि भऽ जायत।"

मोहना तरे-तर खुशी होइत जे काल्हि घर गिरल आइ बनि गेल। मुदा रौतुका जगरनासँ मोहनाक देह भसिआइत। भरि राति दुनू परानी मोहना आ बचनी जगले रहि गेल। एकटा ठाठ जखन छड़ा गेल तखन विसेसर मोहिनीकेँ कहलक- "आब अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ गे। भानसो करै पड़त। ताबे हम दुनू गोटे काज करै छी।"

मोहिनी आ बचनी नहाइले चलि गेलि। नहाकेँ आबि भानस करै लागलि। घरो छड़ा गेल। चारपर सँ उतड़ि विसेसर मोहनाकेँ कहलक- "आइसँ सीखि लीअ जे जत्ते नमहर विपत्ति आबे तइसँ बेसी अपन हिम्मत करी। जत्ते हिम्मत करब तत्ते असानीसँ काज हैत। अपन काज तेँ लगिचाइये गेल खाली टाट लगवैक अछि। चारि बजे भोरे, जाबे कौआ-डकतै-डकतै, टाट बैसा लेब। किरिण फुटैत-फुटैत एकटा टाट बान्हि लेब। तइले भरि दिन किअए बरदाइब।" कहि दुनू गोटे नहाइ

ले गेल। दुनू गोटे नहा कऽ आबि अंगनेमे विछानपर बैसल। राति बेसी भेने विसेसर भजनो ने केलक। विसेसर मोहनाकेँ कहलक- "कने रवियाकेँ सोर पाड़िऔ?"

रविया मोहनाक पितिऔत भाए। भरि दिन रविया दुनू परानी ठाठक बनहन कटलक मुदा तइओ रहिये गेलै। अवितहि रविया विसेसर आ मोहिनीकेँ गोड़ लगलक। विसेसरसँ रविया पूछलक- "पाहुन किअए सोर पाड़लौँ?"

मुस्की दैत विसेसर कहलक- "रवि, हम सिर्फ मोहने टाक बहिनोई नहि छी, अहूक छी आ समाजोक छियै। तँ जाबे गामक सबहक घर नइ बनि जायत ताबे रहि सभकेँ मदति करबै। भरि दिन काज करबै, दुनू साँझ खेबै। एक्को पाइ ककरोसँ बोइन नहि लेबै।"

विसेसरक बात सुनि रबियाक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेलै। रविया विसेसरकेँ कहलक- "मोहनाक घर भऽ जेतै तखन ने हमर घर बान्हब?"

विसेसर- "मोहनक घर बनि गेल। सिर्फ टाटेटा लगबैले अछि, जे घड़ी-पहर बान्हि लेब। काल्हि दुनू गोटे विसेसर आ मोहना अहींक घर बान्हब।"

विसेसरक बात सुनि रविया नमहर साँस छोड़ैत बाजल- "पाहुन, 'एक गडू के बहत्तरि आशा।' हमरा होइ छल जे घरमे बोइन नै अछि। अपनो बोइन नइ करब ते खाइब की?"

आशा दैत विसेसर कहलक- "रवि, हम बोइन करै नइ एलौ। जँ बोइन करैक रहैत तँ बड़ीटा दुनियाँ छै। कतौ करितौ तइले सासुरारिये किअए अबितौ। दश सेर दश टाका तँ अछि नहि जहिसँ ककरो मदति करबै। मुदा देह तँ अछि। अइ देहसँ जते जकर मदैत हेतै, करबै।"

रविआ- "पाहुन घरक सभ चीज बाहरेमे छिड़िआइल अछि। रौतुका समय छियै। अखन जाइ छी।" कहि रविया चल गेल।

भुरुकवा उगि गेल। मुर्गी वाँङ दिअए लगल। फरीच जेकाँ होइते छल कि विसेसर मोहनाकेँ उठौलक। दुनू गोटे बत्ती-कड़ची जोड़िआ पछबरिया टाट बैसौलक। जाबे सुरुज उगल ताबे टाट बान्हि पछिमसँ घरमे सटा देलक। टाटकेँ सोझ-साझ कऽ तीनू खूँटामे चारि-चारिटा बन्हन दऽ देलक।

रविया ऐठाम विसेसर विदा भेल। मोहना बीड़ी पीबै दुआरे पछुआ गेल। विसेसरकेँ पहुँचते, रवियाक स्त्री मुनेसरी साँसे मुह झोल लगा देलक। विसेसरकेँ कोनो गम नहि। धन्यसन। मुनेसरी, जेहने बजैमे हलबलिया तेहने मुहो चमकबैमे। कनडेरिये आँखिये मुस्की दैत मुनेसरी विसेसरकेँ कहलक- "पाहुन, अहाँसँ हम बाजी लगाएब। जँ अहाँ हमरा काजमे हरा देब तँ हम अहीं सेने चल जाएब। नइ तँ अहाँ.......?"

मुहक कारीख तौनीसँ पोछि विसेसर उत्तर देलक- "अहाँमे हम कोना सकब। अहाँ दू दाँतक बछौर छी हम बूढ़-पुरान भेलौ। बाजी लगा हम जान गमाएव।"

भरि दिन चारु गोटे मिलि घर ठाढ़ केलक। टाटो लगा लेलक। विसेसर नहाइ ले गेल आ रविया दुनू परानी सँौंसे खरड़लक। पहिने खरड़ासँ खरड़ि, पाछू बाढ़निसँ बहारलक। आँगन-घर तँ कारिये रहलै मुदा खढ़-पात साफ भऽ गेलै। नहाकेँ आबि विसेसर, खजुरी निकालि, भजन करए लगल।

परसू घरि रोहितपुर भकोभन लगैत छल, मुदा गोटि पङरा घर ठाढ़ भेने किछु-किछु चुहचुही गाममे अबै लगल। कचहरीक गुमस्ता आ बराहिल, रोहितपुर आबि, सगरे गाम घुरि-फिरिकेँ देखलक। सँौंसे गामक गिरल घर लिखि गुमस्ता राजक मदतिक लेल पटवारी ऐठाम जा मुहोसँ कहलक आ गिरल घरक सूचियो देलक। आफद-असमानीमे राज मदति करैत। पटवारी गुमस्ताक सभ बात सुनि कागज तैयार कऽ मैनेजर लग जा सभ कहलक। मैनेजर, एक हजार बाँस, एक हजार बोझ खढ़, एक हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी सावेक बँटैक आदेश दऽ देलक। आदेशक चिट्ठी पटवारीकेँ दैत, फुसफुसा कऽ कानमे कहलक- "अदहा बेचि हमरा दऽ देव आ अदहा गाममे बाँटि देवै।"

मैनेजरक हिसाव सुनि पटवारी अपन हिसाव मने-मन जोड़ि पनरह दिनक समए लऽ लेलक। दोसर दिन कचहरी आबि गुमस्ताकेँ आदेशक चिट्ठी दैत कहलक- "अढ़ाइ सए कऽ कऽ सभ चीज बाँटि देवइ आ साढ़े सात सयकेँ बेचि दश दिनक भीतर पठा देव।"

जाबे पटवारी गुमस्तासँ गप्प-सप्प केलक ताबे बराहिल गंज बजारसँ ताड़िओ मंगौलक आ पोखरिसँ माछो उपर करबौलक। अंडाएल अनेरुआ रोहू माछ, खूब नमहर-नमहर कुटिया बना, तड़बौलक। तीनू गोटे, माछक चखना आ ताड़ी, भरि मन खेलक-पीलक। खा-पी कऽ पटवारी चलि गेल। गुमस्ता बराहिलकेँ पटवारीक हुकुम सुनौलक। चिट्ठियो देखै देकल। बराहिलकेँ ताड़ीक निसाँ चढ़ि गेल रहै। ललकि कऽ गुमस्ताकेँ कहै लगल- "एक-एक हजार समानमे साढ़े सत-सत सय बेचिये कऽ जँ दइये देवै तँ गामक लोककेँ की देबै। अपना दुनू गोटेक हिस्सा की हएत? जकर घर उजड़लै, दुख ओकरा होइ छै। हम गाँँवा छी। गामक मरद-मौगी तँ हमरे मुह नोचत। ऐहेन काज हम किन्नहु नहि करब। जाइ छी।"

गुमस्ता बराहिलसँ डरितो। बराहिलक विचारो वजनदार। गंभीर होइत गुमस्ता बराहिलकेँ कहलक- "अखन हमरो निसाँ लगि गेल अछि। अखन जाउ। निचेनमे काल्हि भिनसर गप्प करब।"

बराहिल कचहरीसँ विदा भऽ गेल। कचहरीसँ निकलितहि बराहिल, गुमस्ता-पटवारीकेँ सातो पुरुखाकेँ गरिअवैत घरपर आयल। घरपर आबि बराहिल, चैकीपर

बैसि जोर-जोरसँ दुनू गोटेकेँ गरिअबै लगल- "सबटा चोर अछि। जकर घर खसलै ओ वेचारा त्राहि-कृष्ण कऽ रहल अछि। हिनका सभकेँ मोजेक-मोजे जमीन। तीनि-तीनिटा बोहू। दहाइक-दहाइ बेटा-बेटी तइयो सबुर नहि। हम समाजमे रहै छी। समाजक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझै छी। कोठरीक पंखा तरमे बैसिनिहार गरीबक दुख की बुझतै?"

बराहिलक गारि सुनि गौँवा-घरुआ जमा भऽ गेल। जत्ते लोककेँ बराहिल देखैत ओते तामस चढ़ल जाय। भरि मन खूब गरिऔंलक। निसों रसे-रसे उतड़ए लगलै।

सबेरे आठ बजे बराहिल कचहरी पहुँचल। गुमस्ता, भिनसुरका खोराक ताड़ी पीबि नेने छल। बराहिलकेँ देखिते गुमस्ता आग्रह करैत कहए लगल- "आबह-आबह बराहिल। साँझ खिन जहिना तोहर मन खराब भऽ गेल रहअ तहिना, पटवारीक हुकुम सुनि, हमरो भऽ गेल रहए। ऐठाम तँ हमही-तूँही रहै छी। अइठिनक नीक-अधला तँ हमरे-तोरे सोचै पड़तह। एक दिशि समाज बीच रहै छी दोसर दिशि राजक नोकरी सेहो करै छी। तेँइ दुनूकेँ मिला चलए पड़तह। जहिसँ साँपो मरै आ लाठिओ ने टूटे।" कहि गुमस्ता घरसँ ताड़ीक डावा अनलक। चारि गिलास अपनो गुमस्ता आ चारि गिलास बराहिलोकेँ पिऔलक। ताड़ी पीविते बराहिलक मन शान्त भेल। बराहिलक सभ तामस ताड़ी तरमे दबा गेल। मुस्कुराइत गुमस्ता बराहिलकेँ कहलक- "हजार बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक जे आदेश भेल अछि, ओ तँ हमही तोँही बँटबै। क्यो तँ देखै ले नइ आओत। जे मनफूरत से करब। तोहर की विचार?"

गुमस्ताक विचार बराहिलकेँ जँचल। मूडी डोलबैत बराहिल बाजल- "अओ गुमस्ता साहेब, अहाँ अनतै रहै छी। हम तँ गामक छी। हमरा तँ दुनू देखै पड़त।"

"हँ, बिल्कुल ठीक कहलह।"

"कोना मिला कऽ चलब?"

गुमस्ता- "सभ बस्तुकेँ डेढ़िया कऽ दहक। साढ़े सात-सात सयक हिस्सा आगू पठा देबै। अदहामे दू-दू सय सभ वस्तु बाँटि देवै। वाकी बेचि कऽ दुनू गोरे अधा-अधा बाँटि लेब।"

बराहिल- "हँ, ई एकतरहक विचार अछि। ई करब कन्ना?"

गुमस्ता- "पाँचो जातिक मैनजनकेँ बजा लाबह। एक-एक सय सभ चीज पाँचो मैनजनकेँ दऽ देब। एक-एक सय तूँ अपन मेलुआकेँ दऽ दिहक। मैनजनेकेँ भार दऽ देबै जे कचहरीक हुकुम अछि आदहा-अदहा दाम सभ वस्तुक लागत।"

बराहिल मानि गेल। समान लेवालक कमी नहि। खाहिस सभकेँ। ककरो

बाँसक जरुरी तँ ककरो खढ़क। बाँसक बीट-लग जा बराहिल बाँस कटबै लगल। अदहा दाम लइत जाय आ बाँस कटवैत जाय। किछु गोटे उधारियो लैलक। खढ़, खरही, सावे सेहो अनधुन बराहिल बेचए लगल। जखन सभकेँ मंगनी, मोल, उधारी बाँस, खढ़, खरही आ साबे भेटिलै तखन रोहितपुरवलाकेँ राजक एहसास भेलै। जे आफत-असमानीमे राज मदति करैए।

रोहितपुरक सभ बोनिहार घरहटिया नहि। तँ काज रहनौ बोनिहार बेकार बैसल। बोनिहारकेँ बैसारी देखि विसेसर सभकेँ बजौलक एका-ऐकी विसेसर सभकेँ पूछै लगल- ''अहाँकेँ बाँस काटल हएत?''

'हँ'

'बत्ती चीरल हएत?''

'हँ'

'बत्ती छिलल हएत?''

'हँ'

'बनहन देल हएत?''

'हँ'

'खढ़ अँटिऔल हएत?''

'हँ'

'खरौआ जौर बाँटल हएत?''

'हँ'

'टाट बान्हल हएत?''

'हँ'

''जखन सभ काज करैक लुरि अछिये तखन बैसल किऐक ने छी?''

जकर-जकर घर बाकी छल सबहक ऐठाम बिसेसर जा-जा कहलक जे अनेरे अहाँ सभ घरहट पछुँऐने छी? जहिना बड़का भूमकम भेने छोट-छोट झटका अबैत रहै अए तहिना जँ अन्हरोक होय। तखन तँ पहपैटमे पड़ि जायब। तँ जत्ते जल्दी भऽ सकै ओते जल्दी घ्रहट कऽ लिअ। समानो अछिये। बनौनिहारो अछिये। तखन अनेरे पछुऐलासँ की लाभ?'' मुदा गामक लोक तँ अखन धरि यएह बुझैत जे पाँचे-छअ गोटे घरहटिया अछि, जे काज करिते अछि।

विसेसर सभ बोहिहारकेँ बजा कहलक- ''अपन-अपन सभ मेड़िआ बना-बना सभसँ काज कराऊ। काजो अधिक हएत आ बोनिहार सभकेँ बैसारिओ ने हएत?'' लाटमे काज केलासँ सभ सीखवो करत आ रोजियो चलतै।''

विसेसर बढ़ियाँ घरहटिया, जे सभ बुझैत। अखन धरि गाममे बिना कोनो कारणे एक-दोसराक बीच कटुता, दुश्मनी रहैत आइल अछि जे बिहाड़िक विपत्तिमे

उड़ै लगल। भाइ-भैयारी जेकाँ संबंध बढ़ै लगल। नव विचारक जन्म समाजमे हुअए लगल। हँसी-मजाक, खिस्सा-पिहानिक बीच सभ काज करै लगल। साँझ परिते सभ काज छोड़ि, अपनामे सभ विचार करैत जे ककर-ककर घरहट आइ भेलि आ ककर-ककर बाकी रहल। अखन धरि जे जातीय कटुता, धरमक अन्माद सबहक मनमे छल ओ धीरे-धीरे कमै लगल। छुआ-छुत, अगली-पैछलीक विचार ढील हुअए लगल। सभ मनुख छी, सबहक देहमे एक्के रंग खून अछि, तँ सभ एकरंग छी। विसेसरक चर्चा सौँसे गाम हुअए लगल। जहिठाम विसेसर काज करैत छल तेहिठाम रहि खेबो करै आ साँझू पहर खजुरी बजा भजनो करए।

अमृतलाल बड़ धनीक तँ नहि, मुदा मध्यम रहलासँ समाजमे प्रतिष्ठित वुझल जाइत। हुनको दूटा घर गिरल आ दू टाक कोनचर उजड़ल। ओ विसेसरकेँ कहलखिन- “पाहुन, बजैत तँ लाज होइ अए मुदा विपत्तिमे पड़ल छी। काल्हिसँ हमरो घरहट कऽ दिअ?

हँसैत विसेसर उत्तर देलकनि- “जिनगीमे एहिना आपत्ति-विपत्ति अबैत-जाइत रहै छै आ अवैत-जाइत रहत। जहियासँ मनुख अछि तहियासँ हजारो-लाखे बेड़ि अन्हर-तूफान, पानि-पाथर, भूमकम होइत आइल तँ की मनुख मेटा गेल। जहिना हमर-अहाँक पुरखा सभ विपत्तिकेँ झेललनि तहिना हमहू सभ झेलब। तइले निराश किअए हैब। अखन हमहीं-अहाँ छी तँ अखन हमरे-अहाँकेँ सामना करए पड़त। आगूक लेल अगिला पीढ़ी करत।”

विसेसरक विचार अमृतलालक हृदयमे चुभि गेल। कने-काल गुम्म रहि बाजल- “पाहुन, अहाँ गरीब रहितो देहसँ मदति करए एलौं। एहिसँ पैघ मदति की भऽ सकैए। अखन अहूँ भजन करै लऽ तैयार छी। हमरो बहुत काज सभ अछि। जाइ छी।”

अमृतलाल चलि गेल। विसेसर भजन करए लगल। आंगन पहुँच अमृतलाल पत्नी सावित्रीकेँ विसेसरक संबंधमे कहलक। नैहरमे सावित्रीक घर एकटा पंडितक घर लग। बच्चेसँ सावित्री पंडितजीक अचार-विचारसँ प्रभावित। सावित्री पतिसँ कहलनि- “यएह छी मनुक्खक महानता। जे विपत्तिमे समांग जेकाँ मदति करैत। खाइ तँ घरोक लोक अछि। मुदा अपनो खनदान दिशि तँ तकबै, कि मंगनी कोनो समान भेटत तँ ढेरिया लेब। गामोक बोनिहार तँ बोइन-जलखै लैते अछि मुदा विसेसर पाहुन तँ खेबेटा करता। गामक जमाए छथि, इहो तँ बुझै पड़त। ओ हमर घर बनौता, तहिना तँ हमरो सोचए पड़त।”

अमृतलाल- “हँ, ई तँ ठीके कहलौं। अहाँक की विचार?”

सावित्री- “जखन घरहट भऽ जाएत, तखन हुनका धोती पहिरा विदा

करबनि। खेनाइ तँ अनको-आन दइए।''

भोरे विसेसर मेड़ियाक संग अमृतलाल ऐठाम आएल। अमृतलाल घरक समचा जोड़िअबैत। अबिते विसेसर धोती-अंगा बदलि पुरना धोतीक टुकड़ा पहिर अमृतलालकेँ पूछल- ''पहलुके जेकाँ घर बनाएव कि ओइसँ छोट-पैघ?''

अमृतलाल- ''घर तँ ओतवेटा बनाएव। मुदा कोरो-बत्ती नव-पुरान मिला कऽ देवै।''

विसेसरकेँ देखि सावित्री मने-मन सोचैत जे गरीबक सकलमे साक्षात् महादेव छथि। तँ अनका ऐठाम जेहेन खेनाइ-पीनाइ भेलि होनि मुदा हमरो तँ प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। जहिना अपन जमाए तहिना तँ समाजोक।

मासे दिनमे, उजड़ल गाम पुनः नव बनि गेल। दुनू परानी विसेसर अपना गाम विदा भेल। गाम सिर्फ घरेटा सँ नहि विचारोसँ नव बनि गेल।

--३--

रोहितपुरसँ सटले लालपुर। घनगर वस्ती, सभ जातिक लोक बसल। परोपट्टामे सभसँ पुरान गाम। घनगर तेहन जे बहुतो गोटे बेटा-बेटीक विआह गामेमे केने। बस्तिओ तेहन गदाल जे, क्यो सौँसे गामकेँ भोज नहि खुआ सकल। ओना सभ जातिक जबार, सौजनी, सभा अपन-अपन आन-आन गामसँ चलैत। शुरुमे गाम, उत्तरे दछिने बसल। मुदा परिवारो बढ़लासँ आ आनो-आनो गामक लोककेँ आबि बसलासँ गामक नक्शे बदलि गेल। जहिना पूवे-पछिमे गाम तहिना उत्तरे-दछिने भऽ गेल। जे क्यो आन-आन गाम जा पढ़लक, ओतवे पढ़ल-लिखल गाममे। ने गाममे इस्कूल आ ने लग-पासमे। गाममे एकटा हकिम, जे मात्रिक अलीनगरमे जा पढ़ने। ओहि हकिमक माम बढ़ियाँ हकीम जे अपने लग रखि भागिनकेँ पढ़ौने। दोसर पढ़ल-लिखल दीनानाथ। जे वैदागिरी करैत। परोपट्टामे एकोटा वैद्य दीनानाथक जोड़ा नहि।

बच्चेमे दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल। पड़ाइक कारण छल, जखन दीनानाथ आठे-नअ बर्खक रहथि। माए मरि गेलनि। पिता दोसर विआह कऽ लेलखिन। पिता तँ दीनानाथकेँ बेटे जेकाँ मानथिन मुदा सतमाए फुटलो आँखिये नहि देखए चाहथिन। सदिखन ओ सतमाए दीनानाथकेँ दू-चारिटा बात-कथा कहिते रहथिन। माएक बातसँ तंग आवि दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल। लालपुरोक आ लग-पासोक पच्चीस-तीस गोटे पटुआ काटए लऽ मोरंग-दिनाजपुर जाइत रहए। ओही मेड़ियाक संग दीनानाथ सेहो धऽ लेलक। भोरुके गाड़ी पकड़ैक विचार सबहक भेलै,

किऐक तँ तमोरियासँ निरमली जाइक गाडी भोरमे तीनि बजे रहै। जँ एहि गाड़ीसँ जाइत तँ दिनमे दश बजे गाड़ी तमुरियासँ निरमली जाइत। जकरा पकड़ने बारह-एक बजे निरमली पहुँचैत। जहिसँ गेलापर कोसियो धार पाड़ भेल हएत की नहि? ई शंका सभक मनमे। मुदा तीनि बजे भोरुका गाड़ी पकड़ने साढ़े पाँच-छअ बजे निरमली पहुँच जाइत। जहिसँ गेलापर असानीसँ सबेर-सकाल कोसीपार भेलापर आठ नअ बजे राति होइत-होइत बथनाहा पहुँच जाइत। बथनाहासँ जोगवनी जाइक अंतिम बस साढ़े-दश बजे जाइत तँ ओकरा ठेकाना कऽ सभ गेल। दीनानाथो ने माएकैँ किछु कहलक आ ने बापकैँ, चुप-चाप विदा भऽ गेल। दीनानाथकैँ मनमे एलै जे जँ माए-बाबूकैँ कहबनि ते आरो अट्ठा-बज्जर, जाइ काल खसत। तँ ने दीनानाथ कपड़ा-लत्ता साफ केलक आ ने बटखरचाक लेल ककरो कहलक। मने-मन दीनानाथ विचारि नेने जे माएबला चानीक पाइत आ सोनाक छक चोरा कऽ रखनहि छी ओ लऽ लेब आ निरमलीमे बेचि बटखरचोक ओरियान कऽ लेब आ पेंटो-गंजी कीनि लेब। नाओक खेबा आ बसक भाड़ा सेहो भइये जाएत।

रातियेमे पटुआ कटनिहार सभ खा-पी कऽ गाड़ी पकड़ए लेल तमुरिया विदा भेल। किऐक तँ एक-दू गोटे नहि, पच्चीस-तीसि गोटेक संगोर करैमे गाड़िये छूटि जाइत। सबेर-सकाल टीशन पहुँचने, ओतइ मुसाफिर खानामे थोड़े काल सुतियो रहब आ भोरमे गाड़ियो असानीसँ पकड़ा जाएत। दीनानाथो पाइत आ छक लऽ संग लगि गेल। तमुरिया स्टेशन पहुँच सभ अपनामे विचार केलक जे भाड़ा-भूडीक पाइ एकठाम जमा कऽ लिअ। किऐक तँ सभ जँ अपन-अपन दिअए लगवै तँ हूलि-मालि हुअए लगत। ई सभ सोचि तीनि-तीनि रुपैआ सभ बौआजी लग जमा केलक। बौआजी सबहक भेट। साले-साल पटुआ काटै लऽ, धान रौपै लऽ आ धान काटै लऽ सभ मोरंग जाइत।

दीनानाथ तमुरियामे टिकट नइ कटौलक, किएक तँ पाइये नै रहै। भोरमे गाड़ी अबिते सभ चढ़ि गेल। निरमली पहुँचैत-पहुँचैत भिनसर भऽ गेल। गाड़ीसँ उतड़ि दीनानाथ बौआजीकैँ कहलक- ''कक्का, हमरा एकजोड़ चानीक 'पाइत' आ एकटा सोनाक 'छक' अछि। ओकरा बेचि दिअ। जहिसँ बटखरचो भऽ जाएत आ कपड़ा नइ अछि सेहो कीनि लेब।''

दीनानाथक बात सुनि बौआजी पूछलक- ''बौआ, तूँ जे हमरा सभक संग जाइ छह से तोरा बुते पटुआ काटल हेतह। पटुआ कटैमे बड़ भीड़ होइ छै। तोहूमे मोटका-मोटका जोंक सेहो पकड़ै छै।''

दीनानाथ तँ घरसँ तंग आबि भागल तँ जीवठ बान्हि कहलक- ''हम कतौ नोकरिये धऽ लेब। नइ बहुत दरमाहा देत तँ नहि देत। कमसँ कम खाइओ लऽ तँ देत।''

दीनानाथक बात सुनि बौआजी गुम्म भऽ गेल। सभकेँ मुसाफिर खानामे बैसाए बौआजी दीनानाथकेँ संग केने बजार विदा भेल। दोकानो सभ बन्ने। सोना-चानीक दोकानदार रुपचन्द नहा कऽ पूजा करैत। बौआजीकेँ देखि रुपचन्द पूछलक- "हमरा दोकानक काज अछि।"

बौआजी उत्तर देलक- "हँ, एक जोड़ पाइत आ एकटा छक बेचैक अछि।"

आमदनी देखि रुपचन्द हाँइ-हाँइ पूजा कऽ दोकान लगौलक। भिनसुरका समए। तेँ रुपचन्द सोचलक जे कम्मो नफ्फापर समान कीनि लेब। जँ गहिकी घुमिकेँ चलि जाएत तँ भरि दिन खटपट होइते रहत। दुनू वस्तुकेँ जोखि सेठजी आठ रुपैआ दाम कहलक। आठ रुपैआ सुनि दीनानाथ मने-मन खुशी होइत जे बहुत भेल। आठो रुपैआ लऽ दीनानाथ एक रुपैआ कऽ चूड़ा-मुरही, दू आनाक गुड़, एक रुपैआमे एकटा तौनी, एक रुपैआमे एकटा गंजी आ आठ आनामे एकटा झोरा कीनलक। झोरामे सभ समान रखि गंजी पहिर लेलक। टीशनपर आबि, सबहक संग दीनानाथो विदा भेल।

निरमलीसँ सोझे पूब मुँहे सभ विदा भेल। पाँच कोस पूब कोसी धार। तीनटा नमहर-नमहर धार सटले-सटल। मुदा तीनू धार नाओटा सँ पाड़ हुअए पड़ैत। पहिल धारक कात पहुँचैत-पहुँचैत दश बजि गेल। धारक कातमे ठीकेदार खोपड़ी बनौने। जहिठाम ठीकेदार तीनू धारक खेबा लइत। सभ क्यो ओहि खोपड़ीमे वैसि जलखै करए लगल। जलखै खा सभ कोसिऐक पानि पीलक। धारक पानियो हरियर कचोर। पानि देखि सभकेँ नहेवाक मनो होय, मुदा रास्ता कटै दुआरे क्यो ने नहाइल। घाटक ठीकेदार छपरिया। जे खूब मनमानी घाटपर करैत। सुखलो धारक खेबा ठीकेदार खेहारि-खेहारि असुलैत। जँ क्यो खेवा नहि देमए चाहै तँ ओकरा ठीकेदार गरिएवो करैत आ मारवो करैत। मुदा बिना खेबा नेने किन्नहु नहि छोड़ैत। घुमती नाओ अवितहि सभ नाओपर चढ़ल। नाओ खुजलै। पानिक बेग देखि दीनानाथकेँ डर हुअए लगलै, मुदा आरो गोटे साले-साल पाड़ होइत, तँ बुझल। दीनानाथक मनमे होय जे जँ कहीं बीच धारमे नाओ डूबत तँ एक्को गोटे नहि बँचब। तँ दीनानाथ मने-मन 'कोशी महरानी की जाय' जपए लगल। तीनू धार पाड़ होइते-होइते बेर झुकि गेल। नाओसँ उतड़ितहि दीनानाथ कोशी धार कऽ गोड़ लागि सबहक संग विदा भेल।

बथनाहा पहुँचैत-पहुँचैत गोसांइ डूबि गेलै। भूखो सभकेँ लगि गेलै। बस अबैमे देरी बुझि सभ अपन-अपन मोटरी खोलि, चूड़ा निकालि खाए लगल। जाबे बस एलै ताबे सभ चूड़ा फाँकि-फाँकि पानि पीलक। बस अबिते बौआजी कन्टेक्टरकेँ सभ आदमीक गिनती करा, चढ़ौलक। दीनानाथ अधा मासुल आ सबहक पूरा मासुल बौआजी कन्टेक्टरकेँ दऽ देलक। बस चलल। जोगवनी

जाइत-जाइत आठ राति बजि गेल। जोगवनी आ विराटनगरक बीच नेपाल भारतक सीमा। सीमापर एकटा पाथरक पीलर गाड़ल। राति बुझि सभ सोचलक जे एतै राति बीताएव नीक हएत। बिजलीक इजोतो रहै। बस स्टेण्डमे सभकेँ बैसाए बौआजी रहैक जगह ताकए लगल। बिजलीक इजोतसँ दिने जेकाँ बुझि पड़ै।

बस स्टेण्डसँ बीधा भरि दछिन एकटा वैदक घर। घरक बगलेमे एकटा अशोभक गाछ। अशोभक गाछक निच्चामे ईटा-सिमटीक चवुतरा बनल। चबुतरा देखि बौआजीकेँ मनमे एलै जे बड़ सुन्दर जगह अछि। एतै राति बीता लेब। चबुतराक बगलेमे एकटा चापा-कलो। बौआजी चबुतरा देखि, घुरि कऽ आबि सभकेँ कहलक। सभ अपन-अपन मोटरी लऽ विदा भेल। चबुतरापर सभ अपन-अपन मोटरी रखि, कलपर हाथ-पएर धोअए लगल। हाथ-पाएर धोय सभ अपन-अपन मोटरी खोलि रोटी आ अल्लुक भुजिया निकालि-निकालि खाइक ओरियान करए लगल। भरि दिन सभ फँके-फुँकी खा रास्ता कटने तँ सभकेँ जोरगर भुख लगल। दीनानाथकेँ रोटी नहि, तँ चूड़ा-गुड़ निकालि खाइक विचार केलक। चूड़ा-गुड़ देखि बौआजी दीनानाथकेँ कहलक- ''बौआ, फाँक्का-फूँक्कीसँ पेट थोड़े भरै छै। चूड़ा रखि लाए। हमरा तीनि दिन खाइ जोकर रोटी अछि। तोहूँ रोटिये खा।''

दीनानाथ चूड़ा रखि लेलक। बौआजी तीनटा रोटी आ भुजिया देलक दीनानाथ खाए लगल। सभ क्यो रोटी आ भुजिया खा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीबिते सभकेँ ऑंघी आबए लगलै। पतिआनी लगा सभ सुइत रहल। भरि दिनक सभ थाकल। एक्के निन्ने राति बीति गेलै।

भोरे बैद्य सुशील टहलै निकलल तँ दीनानाथकेँ कलपर मुँह-हाथ धोइत देखलक। एकटकसँ वैद्य दीनानाथकेँ देखि, लगमे जा पूछलक- ''बौआ, कतए रहै छह?''

दीनानाथ बाजल- ''मधमन्नी जिला रहै छी।''

सुशील- ''कतए जाइ छह?''

दीनानाथ- ''नोकरी करए जाइ छी।''

नोकरीक नाम सुनि, कन्ने काल गुम्म भऽ सुशील पूछलक- ''एतै रहबह?''

दीनानाथ- ''हँ, रहब।''

सुशील- ''मेड़ियाक मेट के छिअह?''

दीनानाथ, बौआजीकेँ ऑंगरीसँ देखा देलक। बौआजी लग जा सुशील कहलक- ''एहि बच्चाकेँ एहिठाम रहए दिऔ। कोनो दिक्कत नइ हेतइ।''

बौआजी दीनानाथकेँ पूछलक- ''बौआ, एतै रहबह?''

दीनानाकेँ मनमे रहै जे कतौ ठर लागत तँ रहि जाएव। कहलक- ''हँ।''

दीनानाथ रहि गेल आ मेड़ियाक संग बौआजी पटुआ काटए विदा भेल।

सुशील अयुर्वेदिक वैद्य। दुइये परानी। दुनू परानी वैदागिरी करैत। दीनानाथकेँ पाबि दुनू परानी सुशील हृदयसँ खुशी भेल। बेटा जेकाँ दीनानाथकेँ मानए लगल। दीनानाथो अपने माए-बाप जेकाँ सेवा करए लगल। सदिखन सुशील अपने संग दीनानाथकेँ राखए लगल। सुशील जड़ी-बूटीक दवाइयो बनवैत आ इलाजो करैत। अपने बाड़ीमे सइयो किस्मक लत्तीसँ लऽ कऽ गाछ धरि लगौने। मासमे एक दिन उत्तरबरिया पहाड़पर सँ पहाड़ी जड़ी-बूटी आनए जाइत। दीनानाथोकेँ संग नेने जाइत। पहाड़ो बेसी दूर नहि। छबे सात कोसपर। भिनसरे दुनू गोटे जलखै खा बस पकड़ि लैत आ बेर धरि घुरि कऽ चलि अबैत। शुरुमे तँ दीनानाथकेँ जड़ी चिन्हवै पड़ैत मुदा किछु दिनक उपरान्त दीनानाथो जड़ी चिन्हए लगल। साँझू पहरकेँ जखन रोगीक आएब पतरा जाइत, सुशील दीनानाथकेँ पढ़ेबो-लिखेबो करैत। दीनानाथ एत्ते तल्लीन भऽ रहए लगल जे घरक सुधि-बुधि सभ बिसरि गेल।

दश बर्ख दीनानाथ सुशीलक ऐठाम ऐठाम रहल। दशे बर्खमे दीनानाथ वैद्य बनि गेल। रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ दवाइ देनाइ, दवाइ बनौनाइ सभ सीखि लेलक। बच्चा दीनानाथ जुआन भऽ गेल। विआह करै जोकर सेहो भऽ गेल। सुशीलक विचार रहै जे दीनानाथकेँ एहिठाम विआह करा दियै मुदा दीनानाथकेँ घरक सोह खिंचए लगलै। बिसरल माए-बाप, समाज मन पड़ए लगलै। एक दिन दीनानाथ सुशीलकेँ कहलक- “बाबूजी, हम गाम जाएब। बहुत दिन माए-पिता आ समाजक लोककेँ देखला भऽ गेल।”

दीनानाथक विचार सुनि सुशील कहलक- “बौआ, दुनियाँ बड़ीटा छै। सभ मनुक्खकेँ चाही जे कतौ रहि मनुक्खक सेवा करी। यएह सभसँ पैघ धरम होइत।”

दीनानाथ सिर्फ दवाइये-दारु नहि सीखलक बल्कि जिनगीक नीक-अधला सेहो सीखलक। सुशीलकेँ कहलक- “बाबूजी, मनुक्खक सेवा, जरुर धरम होइत मुदा जहिठामक लोक अधिक पछुआएल अछि, ओकर सेवा तँ अगुआएल मनुक्खक सेवासँ पैघ होइत। एहिठाम देखै छी जे लोक बहुत अगुआएल अछि मुदा जहिठाम हमर घर अछि, ओहिठामक लोक बहुत पछुआएल अछि। तँ ओकर सेवा करब हम पैघ बुझै छी।”

दीनानाथक बिचार सुशीलक हृदयमे चुभि गेल। अपन सहमत दइत दीनानाथकेँ गाम जाइ अबै कहि देलक। दीनानाथ गाम चलि आएल।

गाम अबिते दीनानाकेँ देखैले गामक लोक उनटि गेल। अखन धरि सबहक मनमे यएह रहै जे दीनानाथ बौर गेल। बदलल दीनानाथ, गामक एक इंसान बनि

आएल। पारिवारिक नहि, सामाजिक लोक बनि। दीनानाथकेँ एक सुयोग्य वैद्य बुझि, सभ अपन-अपन समांग बुझए लगल। सभ मने-मन सोचए लगल जे जहि दुखक चलैत परेशान रहैत छलौं ओहि परेशानीक मेटवैबला दीनानाथ भऽ गेल।

लालपुरमे सात पुस्तसँ लेलहाक घर। शुरुहेमे लेलहाक पूर्वज जेतए घर बनौने छल ओतए बारह कट्ठा जमीन बनौलक। बीचमे घर आ चारु कात किछु बाड़ियो आ किछु धनखेतियो। लेलहाक परिवार एक पुरखियाह। खानदानमे बेटी तँ बेसियो होइत मुदा बेटा एक्केटा लेलहोकेँ एक्केटा बेटा गुलबा। गुलबा लताम तोड़ए गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। पहिने तँ गुलबा बुझलक जे ऊँच-नीचमे पाएर पड़ल तँ देहमे झुनझुनी पैसि गेल, मुदा झुनझुनी बढ़िते गेलै। झुनझुनी बढ़ैत देखि गुलबा धड़फड़ा कऽ गाछपर सँ उतड़ल। गाछपर सँ उतड़ि आंगना आबि माएकेँ कहलक- "माए, सँउसे पीठ झुनझुनाइए।"

झुनझुनी दऽ सुनि माए आंगनमे विछान बिछा गुलवाकेँ सुतै लऽ कहलक। अपने घरसँ कड़ूतेलक शीशी आनि मालिस करए लगल। मुदा तइसँ एक्को मिसिया गुलवाकेँ झुनझुनेनाए नहि कमल। झुनझुनी बढ़ैत देखि गुलबा कानए लगल। कानब देखि गुलबाक माए तेतरी गाए चरबैत लेलहाकेँ बजबए विदा भेलि। दछिनबरिया बाधमे लेलहा गाए चरबैत। फरिक्केसँ तेतरी, लेलहाकेँ गाए चरबैत देखि, जोरसँ सोर पाड़ए लागलि। मुदा पछवा हवा दुआरे लेलहा सुनबे ने करैत। तेतरी सोरो पाड़ैत आ आगू मुँहे ससरलो जाइत। जखन तेतरी लग गेलि तखन लेलहा सुनि पूछलक- "किअए एत्ते हल्ला करै छी? कन्ने फरिछा कऽ कहूँ।"

तेतरी कहलक- "गुलवाकेँ लतामक गाछपर भूत लागि गेलै। चलू गामपर।"

भूतक नाम सुनितहि लेलहाकेँ देह थरथराए लगलै। गाए हँकने घर दिशि विदा भेल। तेतरी कहि चोट्टे घूमि गेलि। तीनू माल- एकटा गाए, एकटा गौड़ आ एकटा बच्चा हँकने लेलहा घरो दिशि अबैत आ मने-मन विचारवो करैत जे अही बेरि दशमीमे दूटा नवकी कनियाँ डाइन सीखिलक। ओही दुनू मौगियामे ककरो किरदानी छी। भरिसक मन्तर पक्का बनवै दुआरे गुलवाक जान लेत। घरपर आबि लेलहा तीनू माल कऽ बान्हि, एक आहूल घास आगूमे दऽ गुलवाकेँ देखए अंगना आएल। टोलक लोकसँ अंगना भरल। लेलहाकेँ देखि एकटा बुढ़िया, जिनका सभ दादी कहैत, कहलक- "गुलबाकेँ भूत लागल छौ। झब दऽ ढोरबाकेँ बजौने आ। मत्था हाथ देतइ, लगले छूटि जेतैइ।"

दादीक बात सुनि तेतरी डपटि कऽ घरबला लेलहाकेँ कहलक- "बकर-बकर मुँह तकने हएत। जल्दी ढोरबा भैयाकेँ बजौने आउ?"

डरे लेलहाक देह थर-थर कपैत। भूतक ओत्ते डर लेलहाक मनमे नहि होइत जत्ते गुलबा मरने बंशक अंत होइक। दौड़ल लेलहा ढोरबा ऐठाम विदा भेल।

ढोरबा बाँस काटए लेल बसवाड़ि गेल छल। ढोरवा घरपर पहुँचते लेलहा भाँज लगबए लगल। मुदा घरपर कोनो भाँजे ने लगै। बड़ी काल इम्हर-ओम्हर ताकि लेलहा ढोरवाक भनसियासँ पूछलक। ढोरबाक भनसिया बाँस कटैक नाम कहलकै। बाँस कटैक नाम सुनि लेलहा ढोरबाक बँसबाड़ि दिशि विदा भेल। तीनि सलिया पाकल बाँस ढोरबा कटने, जे खिंचले ने होय। असकरे ढोरबा अपसियाँत-अपसियाँत भऽ गेल। सगरे देह पसीनासँ भीजल। चारु कात आँखि उठा ढोरबा तकैत जे ककरो देखबै तँ सोर पाड़ि बाँस खींचि लेब। लेलहाकेँ अबैत देखि ढोरबा वैसि कऽ तमाकुल चुनबए लगल। जाबे लेलहा लग आएल, ताबे ढोरबो तमाकुल चुना अपनो मुँहमे लेलक आ लेलहो हाथकेँ देलक। लेलहाक कपैत देह देखि ढोरबा पूछलक- "ऐना कँपै किअए छह?"

मिरमिरा कऽ लेलहा उत्तर देलक- "भैया, की कहबह? छौँडाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलै। तेँ तोरा बजबैले दौगल एलौं। जल्दी चलह।"

लेलहाक बात सुनि ढोरबा कहलक- "अही लऽ एत्ते अपसियाँत छह। जखन आबि गेलह तँ भूत की, भूतक बापो रहत तँ छोडि कऽ भागै पड़तै। बाँस झोंझमे ओझरा गेल अछि, पहिने ओकरा उतारि दाए तखन चलब।"

लेलहा- "ताबे बाँस छोड़ि दहक। पहिने चलह। पछाति बाँस उताड़ि कऽ लऽ जइहह।"

ढोरबा- "झार-फूँकक बात तूँ नइ ने बुझबहक। गामपर जा हाथ-पएर धोय, देहपर गंगाजल छीटि घरक गोसाइकेँ गोड़ लागब। तखन देह बान्हि कऽ ने विदा हएव। एक पर एक दाइ-माइ, डाइन-जोगिन करामाती छथि। जँ कहीं उनटे चोट कऽ दिअए? तखन!"

दुनू गोटे बाँस खिंचए लगल। कतबो जोर दुनू गोटे दइ बाँस निकलबे ने करए। पात तोड़निहार बाँसक छिपकेँ कड़तीसँ गछाड़ि देने रहै। ढोरबा हियासि कऽ बाँस देखए लगल तँ देखलक जे मूँडी गछाड़ल अछि। तखन ढोरबा बाँसपर चढ़ि गछड़लाहा कड़ची कटलक। कड़ची काटि कऽ उतड़ि जहाँ दुनू गोटे एक्के जोर देलक कि बाँस हड़हड़ा कऽ निकलि गेल। बाँस उतड़ितहि ढोरबा हाँइ-हाँइ पाडए लगल। लेलहा कड़ची बिछए लगल। कड़चीक बोझ बान्हि लेलहा लेलक आ ढोरबा बाँस कान्हपर लऽ विदा भेल।

घरपर अबिते ढोरबा इनारपर जा हाथ-पाएर धोय, आंगन जा गंगाजल छीटि, गोसाइकेँ गोड़ लागि, देह बान्हि निकलल। दुनू गोटे विदा भेल। लेलहाक आंगनमे लोकक करमान लगल। लेलहा ऐठाम पहुँचते ढोरबाकेँ तेतरी कहलक- "भैया, झब दे देखथुन। गुलबाकेँ जी खिंचने जाइ छै।"

ढोरबा टीक खोलि लेलहाकेँ कहलक- "दूटा कुश लाबह।"

लेलहा कहलक- ‘‘भाय की कहबह, अइबेर तेहेन बाढ़ि अएल जे कुशो दहा गेल। गाममे क्यो ने कुश उखाड़लक। एक्को दिन बाप-दादाकँ जलो ने देलिऐ। कतएसँ कुश आनब।’’

लेलहाक बात सुनि ढोरबा कहलक- ‘‘नइ कुश भेटितह तँ चरिकाँटू बाढ़निमे सँ दूटा नेने आबह।’’

तेतरी बाढ़निमे सँ दूटा चरिकाँटू निकालि ढोरबाक हाथमे देलक। ढोरबा गुलबाकँ झाड़-फूक करए लगल। झाड़ैत-फुकैत जत्ते मंतर ढोरबाकँ अबैत सभ ठोर पटपटबैत पढ़ि गेल। मंत्र पढ़ि मुँहसँ फूकि ढोरबा गुलबाकँ पूछलक- ‘‘बौआ, मन केहेन लगै छौ?’’

पहिलुके जेकाँ कुहरैत गुलबा बाजल- ‘‘वहिना लगैए।’’

ढोरबा तेतरीकँ कहलक- ‘‘सभकँ अंगनासँ हटा दिऔ। मनतर काजे ने करैए।’’

सभकँ अंगनासँ हटौलाक बाद ढोरबा जोर-जोरसँ मनतर पढ़ए लगल। मुदा तइयो गुलबाकँ कन-कनेनाइ नहि कमल। कने-काल गुम्म भऽ ढोरबा तेतरीकँ कहलक- ‘‘कने पंचमी माइट लाउ।’’

पंचमी माटि लेलहाकँ अपना नहि दशमीयेमे चिक्कनि माटि नहि रहने ओहीसँ घर नीपि लेलक। पड़ोसिया आंगनसँ तेतरी पंचमीक माटि आनि, सिलौटपर लोढ़हीसँ फोड़ि चंगेरीमे देलक। बाढ़निक खढ़ राखि ढोरबा पंचमी माटिसँ झाड़ए लगल। बीच-बीचमे ढोरबा गुलबाकँ पूछै- ‘‘मन केहेन लगै छौ?’’

गुलबा उत्तर दइ- ‘‘हल्लुक लगैए।’’

जखन ढोरबा झाड़ि कऽ निचेन भेल तखन फेरि गुलवाकँ पूछलक। गुलबा कहलक- ‘‘वहिना लगैए। एक्को मिसिया दुखेनाइ नइ कमल।’’

खिसिया कऽ ढोरबा विदा होइत लेलहाकँ कहलक- ‘‘नवटोल गहबरसँ भगता बजा लाबह। हमरा बूते नइ छुटतै।’’

ढोरबाकँ विदा होइत देखि तेतरी घौना कऽ कनवो करै आ बजबो करै जे हे ब्रह्मबाबा हम कोन अपराध केलिअ जे एतै सतवै छअ। लेलहाक आँखिमे सेहो नोर ढबढ़बा गेल। दुनू हाथ माथपर लऽ लेलहा मने-मन सोचए लगल जे आब गुलबा नइ बँचत। कने-काल गुन-धुन कऽ लेलहा नवटोल जाइले तैयार भेल। कोसे भरिपर नवटोल। लेलहा नवटोल विदा भेल। रास्तामे लेलहा मने-मन कबुला करए लगल जे अगर गुलबाकँ दुख छूटि जाएत तँ जोरा भरि छागर ब्रह्मबाबाकँ चढ़ाएव। चलबो करए आ मने-मन लेलहा ‘जय ब्रह्मबाबा, जय ब्रह्मबाबा’ जपबो करै। नवटोल पहुँच लेलहा गहबरक भगताकँ भजिअबए लगल। भगता गाममे नहि। उजानमे हैजा भेल, ततए गेल छल। उजानक चारु सीमा बान्हि भगता

नवटोल घुरि कऽ आबि रहल छल। सोगाइल मन लेलहाक असोथकित भऽ गहबरक आगूक अशोभक गाछक निच्चाँमे बैसि भगताक रास्ता देखए लगल। थोड़ै कालक बाद भगता पहुँचल। लेलहा भगताकेँ चिन्हैत नहि। भगते लेलहाकेँ पूछलक- ''किअए बैसल छी?''

सिमसल आँखिये लेलहा कहलक- ''भगतजीसँ काज अछि।''

भगता- ''केहेन काज अछि? हमहीं छी।''

भगताक बात सुनि, जना बादलसँ झँपाइल सूर्य हबाक सिहकीसँ बादल कऽ छँटितहि भुक दऽ उगैत, तहिना लेलहाकेँ भेल। मुस्कुराइत लेलहा भगतजीकेँ कहलक- ''भगतजी, हमरा बेटाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेल तेँ बजबै एलौं।''

भगत- ''हम तँ बेरागन दिनकेँ भाउ करै छी। आइ तँ बेरागन नै छी। डाली लगा दिऔ शुक्र दिन आएब।''

बेवशीक अबाजमे लेलहा बाजल- ''भगतजी, कोनो उपाए करियौ। अहीं केने सभ हेतै। बड़ आशासँ आएल छी। वहिना कोना घुरि जाएब?''

लेलहाकेँ देरी होइत देखि तेतरी एक गोटेकेँ पठौलक। धड़फड़ाएल आबि ओ लेलहाकेँ कहलक- ''तोरे आशा-बाटी सभ तकै छह, तूँ आबि कऽ ऐठाम बैसि गेलहक?''

मन्हुआइल मने लेलहा कहलक- ''भगतजी नइ छेलखिन तेँ देरी भऽ गेल। अखने एलखिन। ओइह कहै छिअनि।''

भगतजी, एकटा फूल दऽ कहलखिन- ''गमछा खूँटमे बान्हि लिअ। घरपर जा कहालीकेँ खुआ देबै। लगले छूटि जेतै।''

फूल लऽ दुनू गोटे विदा भेल। रास्तामे दुनू गोटेकेँ होय जे गुलबाकेँ की भेल हेतै की नहि। मुदा करैत की। घरपर अबिते लेलहा गुलबाकेँ फूल खुऔलक। फूल खुऐला कनिये काल बाद लेलहा गुलबाकेँ पूछलक- ''मन केहेन लगै छौ?''

''ओहिना लगैए'' - गुलबा कहलक।

गाममे अनेको रंगक बात चलैत क्यो बजैत जे गुलवाकेँ डाइन केने छै, तँ क्यो कहैत गुलवाकेँ देवी लगल छै। क्यो बजैत जे मोतिया बेटीक संगे दुनू गोटे खेलाइत रहै छल आ मोतियाक बेटी मरि गेल, वएह लगि गेल छै। बिना लऽ गेने थोड़े छोड़तै। गुलटेनमा आबि कऽ देखि लेलहाकेँ कहलक- ''एकटा गुनी कटहरबामे अछि नेपालक सीख छी ओकरा बजा आनह। ओ जरुर छोड़ा देतै।''

कटहरबा लालपुरसँ सटले पछिम। कनियेटा टोल। कटहरक गाछ अधिक रहने कटहरबा नाम पड़लै। दौड़-बड़हा करैत-करैत लेलहा असोथकित भऽ गेल। मुदा की करत? कतौ जाइक साहसे ने होय मुदा विपत्तिये तेहेन पड़ल जे मरितो

दम तक छोड़ैत कोना? लेलहा कटहरबा विदा भेल। कटहरबा जा गुनीकेँ भजिऔलक। गुनीसँ भेटि होइते लेलहा सभ बात कहलकै। लेलहाक बात सुनि गुनी कहलकै- “हम तँ खाली जनिजातियेटा केँ झाड़-फूँक करै छी। पुरुखक मनतर नइ अबैए। तेँ हम जा कऽ की करब? जँ जनिजाति रहैत तँ गारंटी दऽ छोड़ा दइतौं। कतेको कऽ छोड़ेलहुँ। केहेन-केहेन भूतलग्गूकेँ जे बताह जेकाँ करैत छलै, छोड़ेलहुँ।”

कटहरबा गुनीक नाम भालेसर। कमाइ लऽ भालेसर नेपाल गेल। बिराटनगर पहुँच भालेसर उत्तर मुँहे विदा भेल। जाइत-जाइत धरानसँ तीनि किलोमीटर पाछुऐ रहै कि गोसांइ डूबि गेल। जंगली-पहाड़ी रास्ता। आगू बढ़ैक हिम्मते ने भालेसरकेँ भेलै। रास्ताक पछिम एकटा दू महला काठक घर देखलक। ओहिठाम जा भालेसर घरबारीकेँ कहलक जे राति-बीच रहब। खाइक समान हमरा अपने अछि। सिर्फ रहै लऽ दिअ। घरवारी एकटा मौगी। ओहि मौगीक पति काठमांडूमे नोकरी करैत। तीस-चालीस बीघा जमीन जे ओ मौगिये सम्हारैत। ओ मौगी गुनी सेहो। दूटा छोट-छोट बेटा-बेटी। दू घर एतए दू घर ओतए, एहिना गाम। सभकेँ दू महला-तीनि महला काठक घर। घरक नीचला हन्नामे मोटका-मोटका सखुआक लकड़ीसँ घेड़ि माल-जाल बन्हैत आ उपरमे अपने सभ रहैत। उपर-निच्चाँ भालेसरकेँ देखि ओ गुनी पूछलकै- “एतए नोकरी करब?”

नोकरी नाम सुनि भालेसर ‘हँ’ कहलक। एक मास पहिने पहिलुका नोकर गाम गेल जे अखन धरि घुरि कऽ नहि आएल छलै। आओत की नहि सेहो ठीक नहि। ई बात सेचि गनी भालेसरकेँ दू महलापर लऽ गेल। एकटा चौकीपर समानो रखैले आ बैसैइयो लेल गुनी भालेसरकेँ कहलक। अखन धरि भालेसरकेँ कोनो चिन्ता मनमे नहि रहए। मुदा जखन बुझलक जे मरद घरमे नहि छैक, तखनसँ भालेसरक मनमे डर पइसए लगल। गामक बात मन पड़लै जे लोक सभ बजैए जे पूभर मौगी सभ पुरुखकेँ भेड़ा बना खेतमे चरै लऽ ठोकि दइ छै। जँ कहीं हमरो तहिना करए, तखन तँ गामक बाल-बच्चा सभ बिलटि जाएत। एलौं कमाइ लेल आ भऽ जाएत किछु सँ किछु। मुदा आब अन्हारो भऽ गेल, जँ जेबो करब आ रास्तामे बाघ सिंह खा गेल तखन ते आरो चैपट भऽ जाएत। एते बात मनमे अबिते भालेसरक मन उड़ि गेलै। किछु बजबे ने करै। चौकियेपर पइर रहल।

अभ्यागत बुझि गुनी भालेसरकेँ आगत-भागत करए लगली। पहिने चाह बना पिऔलक। चाह पीलाक बाद मुरही आ चारिटा अंडा तड़ि कऽ जलखै करै लऽ देलक। जत्ते गुनी सुआगत करैत तत्ते भालेसरक मन उड़ल जाइत। रातिमे हाँसक तीनक आ वासमती चाउरक भात खाइले देलक। भालेसर रहि गेल हर जोतैसँ लऽ कऽ गाए-बड़दकेँ खुऔनाइ-पीयौनाइ धरि काज। दू-तीनि दिन धरि

दुनूक बीच नोकर-मालिकक संबंध रहल, तेकर बाद दुनूक बीच संबंध बदलए लगल। हाट-बजार सेहो दुनू संगे जाए-आबए लगल। ओहि गुनीसँ भालेसर गुन सीखने।

भालेसर ऐठामसँ लेलहा अबिते छल कि टोलेक एक आदमी दौड़ल लेलहा ऐठाम आएल। ताबे लेलहा सेहो आएल। लेलहाकेँ तेतरी पूछलक- "की भेल?"

टूटैत आशाक स्वरमे लेलहा कहलक- "गुनी कहलक जे हम मरदनमा मनतर नइ जनै छी, तँ जा कऽ की करब?"

जे आदमी दौड़ल आएल छल ओ तेतरीकेँ कहलक- "भौजी, एकटा मालि झाँप बेचए जाइत अछि, ओ कहलकहेँ जे हम छोड़ा देबै। ओकरा हम अपना ऐठाम वैइसौने छी। ओ कहलक जे बिना घरबारी कहने नइ जाएब।"

ओहि आदमीक संग लेलहा माइलकेँ बजबए विदा भेल। माइलकेँ देखि, दुनू हाथ जोड़ि लेलहा कहलक- "एक्केटा बेटा अछि, जँ मरि जाएत तँ निपुत्र भऽ जाएब। सिर्फ निपुतरेटा नइ हएब खानदाने खतम भऽ जाएत। कहुना गुलबाकेँ भूत छोड़ा दिऔ। बड़ गुन मानब।"

लेलहाक बात सुनि माइल कहलक- "एक्कैसटा रुपैआ लागत। जे कोनो अपना खाइले नइ लेब। तत्ते देवी-देवताक पूजा-पाट करए पड़ैत अछि जे ओहिमे खर्च भऽ जाएत।"

छगाइल मन लेलहाक गछि लेलक। माइलकेँ संग केने लेलहा घरपर आएल। आंगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक- "एक्कैसटा रुपैआ माइल लेत, तखन किछु करत।"

एक्कैस रुपैआ सुनि तेतरीक मन उड़ि गेल। हाथमे एक्को पाइ नहि। जबकि बिना पाइ नेने माइल किछु करबे ने करत। मुदा छोड़बो कोना करत। दरबज्जापर माइलकेँ वैसाए दुनू परानी लेलहा रुपैयाक भाँज लगवए लगल। मुदा कतौ रुपैयाक भाँज लगबे ने केलै। अंतमे निराश भऽ लेलहा खूँटा परक बियाएल गाए गामेक पैकारक हाथे बेचि लेलक। एक्कैस रुपैआ माइलिक हाथमे दइते, माइल कहलक- "डालीमे मूसक माटि आ पंचमीक माटि नेने आउ।"

चंङेरीमे माटि नेने आबि तेतरी माइलिक आगूमे रखि देलक। दहिना हाथ चंगेरीक माटिमे गोरियबैत माइल ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। मंत्र पढ़ि माइल लेलहाकेँ कहलक- "कने काल आओर नहि अबितहुँ तँ बच्चा मरि जाइत।"

माइलिक बात सुनि दुनू परानी लेलहा आशा-निराशाक बीच उगए-डूबए लगल। लेलहाकेँ माइल कहलक- "बच्चाकेँ पूब मुँहे चद्दरि ओढ़ा कऽ सुता दिऔ आ एहि माटिकेँ घर-आंगन, अगुआर-पछुआर सौँसे छीटि दियौ। अंगनासँ सभ देखिनिहारकेँ हटा दियौ। हम जाइ छी। जखन सीमा पार हम भऽ जाएब तखन बच्चाकेँ उधारि

देबै। ओ बच्चा अपने टहलए-बूलए लगत आ कहत जे छुटि गेल।''

लाठीमे टंगल झाँप लऽ माइल विदा भेल। अंगनासँ लेलहा सभकँ हटा चंगेरी माटि छीटए लगल। रास्तामे माइल घुरि-घुरि पाछूओ मुँहे देखए आ नमहर-नमहर डेग दैत आगूओ बढ़ै। थोड़े कालक बाद जखन तेतरी गुलबाक चादरि हटौलक तँ गुलबा ओहिना कुहरैत। गुलबाकँ कुहरैत देखि तेतरी पतिकँ कहलक- ''कहाँ छुटलै?''

हृदयमे आशा रखैत-लेलहा उत्तर देलक- ''कम होइत-होइत ने छुटतै कि एक्के बेरि हड़हड़ा कऽ छुटि जतै।''

दुनू परानी लेलहा ओसारपर बैसि गप्प-सप्प करए लगल। थोड़े कालक उपरान्त पुनः गुलबाकँ तेतरी देखलक। कनियो उन्नैस नहि होइत देखि हलचला कऽ तेतरी बाजलि- ''मालिवा ठकि लेलक। गाइयो चलि गेलि आ गुलबा ठीको ने भेल।''

लेलहा मुँह दिशि तेतरी तकैत आ तेतरी मुँह दिशि लेलहा। आशा-निराशा, जीवन-मरण, सुख-दुखक बीच दुनू परानी उगए-डूबए लगल।

दोसरि साँझ भऽ गेल। भानसक बेरि भऽ गेल। सोगसँ दुनू बेकती मन्हुआइल। जकरा लऽ कोना भानस हएत ओ खेबे ने करत आ जे खाइबला अछि ओकरा अन्न धँसबे ने करतै। तेतरी भानस छोड़ि देलक। गुलबाकँ उठा ओसारपर देलक। दुनू परानी गुलबे लग बैसि गप्प-सप्प करए लगल। एते काल सिर्फ बेटाक सोग रहए आब बिआइल गाइक सोग सेहो हुअए लगलै। भोर भऽ गेलै।

गामोमे एकटा भगत। कते गोटे मुँहे लेलहा सुने जे गामक जे भगत अछि ओ कतेको भूतकँ लोहाक मोटका काँटीसँ पीपरक गाछमे ठोकने अछि। अचताइत-पचताइत लेलहा गामक भगत ऐठाम पहुँच, सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि भगत अपन मेड़िया-डलवाह, मिरदंगिया, भगैत गौनिहार सभकँ बजौलक। सभ मिलि पूजा सामग्रीक लिस्ट बनौलक। आठ गोटेक खेनाइ लगा दू सए रुपैआक फरमाइस भगत लेलहाकँ देलक। दू सए रुपैआ सुनि लेलहा तेतरीसँ पूछैक बात कहलक। दुपहर तक रुपैआ बन्दोबश्त करैक समए भगत लेलहाकँ देलक। आंगन आबि लेलहा तेतरीकँ कहलक। ''एक सए रुपैआ गाएबला अछि बाकी सए रुपैआ कतएसँ आओत?'' -तेतरी लेलहाकँ कहलक।

दुनू परानी चिन्ताक समुद्रमे डूबि गेल। ने अक चलै ने बक, दुनूमे सँ ककरो। देहक शक्ति कमए लगलै। निराशाक अंतिम सीमापर पहुँच लेलहा पत्नीकँ कहलक- ''अगर खेतो बेचि कऽ दऽ देवइ आ नइ छुटै, तखन जीबि कोना?''

बेटाक ममता तेतरीक हृदयकँ झकझोड़ैत। एक मन तेतरीक कहै जे खेत

राखि बेटाकेँ मरए दियै, ओहो उचित नहि। दोसर मन कहै जे बेटो चल जाएत आ खेतो, तखन अपन बुढ़ाढ़ी कोना चलत? फेरि मनमे एलै जे बेटाक सोग बरदास हएत आ खेतक सोग नहि! देखल जेतै बुढ़ाढ़ीमे। जँ कमाइक शक्ति नहि रहत तँ भीखे मांगब। मुदा अछैते चीजे बेटाकेँ छोड़ि कोना देब? साहस कऽ तेतरी लेलहाकेँ कहलक- "की करबै, खेत भरना लगाकेँ दऽ दिऔ। क्यो ई नै ने कहत जे खेतक लोभहे बेटाकेँ मारि देलक।"

जहिना ककरो चारु कातसँ दुश्मन हथियार लऽ घेरि लैत। तहिना दुनू परानी लेलहाकेँ होय। खूँटापर बान्हल गौड़ -बाछी- भूखे-पियासे जोर-जोरसँ डिरिआइत।

मिरदंगक डोरी मुस काटि देने। मिरदंगियाँ डोरी कीनए कमलपुर गेल। विसेसरसँ मिरदंगियाकेँ चिन्हारै। डोरी कीनि मिरदंगियाँ विसेसरसँ भेटि करै गेल। विसेसर हरबाहि कऽ आबि खाइत रहए कि डेढ़ियापर सँ मिरदंगियाँ सोर पाड़लकै। खाएकेपर सँ विसेसर अंगने अबैले कहलकै। आंगन आबि मिरदंगियाँ विसेसर लग बैसल। दुनूक बीच कुशल-झेम भेल। विसेसर मोहिनीकेँ कहलक- "खाइ बेर छै। थारीमे नेने आउ।"

जाबे मोहिनी थारी सँठलक ताबे मिरदंगिया हाथ-पाएर धोलक। हाथ-पाएर धोय मिरदंगिया विसेसरे लग बैसल। दुनू गोटे खेबो करए आ गप्पो करए। लेलहाक सभ बात मिरदंगिया विसेसरकेँ कहलक। मने-मन विसेसर सोचलक जे जँ ऐहन बात छै तँ लगमे जा कऽ हमहूँ देखब। मिरदंगियाँकेँ विसेसर कहलक- "हमहूँ अहीं संग चलि कऽ गुलबाकेँ देखबै।"

खा कऽ दुनू गोटे विदा भेल।

लेलहा ऐठाम आबि विसेसर देखलक जे दुनू परानी पेटकान लधने अछि। बेटाक सोग, धनक सोग आ खानदानक सोगसँ दुनू परानी लेलहा मरनासन्न भेल। गुलबाकेँ देखि विसेसर मने-मन सोचए लगल जे जाधरि मनुखकेँ जीवै जोकर बुद्धि नहि भऽ जाएत ताधरि एहिना दुखक पहाड़ तर दबि-दबि कुहरैत रहत। भगवानोक लीला अजीव छनि जे बुद्धिक बखारी मनुखकेँ दऽ ऐहेन बड़का ताला लगा देने छथिन जे सभ बुते खुगबो ने करैत अछि। जकरा बूते ताला खुजैत ओ अपने बखारी भरै पाछू जिनगी भरि अपसियाँत रहैए। ककरा के देखत। सभ अपने ताले बेताल रहैत अछि। समाज रुपी जंगलमे मनुक्ख रुपी गाछ ऐहेन अछि जहिमे मीठ फल देमएबला गाछ झँपा गेल अछि। आ कँटहा गाछ ऐहेन विशाल भोअगर बनि गेल अछि जे अनाड़ी-धुनाड़ी बौआ जाइत अछि। जहिसँ छल-प्रपंची लोक समाजमे हाबी भऽ गेल अछि। एत्ते बात विसेसरकेँ मनमे अबिते पुनः एकटा नीक बात मन पड़ल। ओ नीक बात यएह जे दुखक अन्तिम अवस्थाक उपरान्ते नव जिनगी शुरु होइत। विसेसर लेलहाकेँ पूछलक- एत्ते सोगाएल किऐक छी?"

विसेसरक बात सुनि लेलहाक मनमे आशाक मेही ज्योति आबए लगल। नोरसँ भीजल आँखि, व्यथित हृदयक आवाजमे लेलहा कहलक- “भाइ साहाएव, बड़ आशा छल जे ऐहन सुन्दर दुनियाँमे बाबा-दादीक कोरासँ माए-बापक कोरा होइत जिनगी शुरु भेल। आशाक गाछ नमहर होइत गेल। अदहा रास्तामे आबि बेटाकेँ कोरामे लेलौं मुदा पोताकेँ कोरामे नहि लऽ सकब। दुख एकरे अछि। ‘हम केहेन अधरमी खनदानमे भेलौं जे अंत भऽ रहल अछि।”

मुस्कुराइत विसेसर पूछलक- “अधरमीसँ धरमात्मा बनब बड़ कठिन नहि अछि सिर्फ रास्ता बदलैक अछि। अखनेसँ धरमक रास्ता घडू सभ आशा पूरा भऽ जाएत।”

विसेसर बात सुनि लेलहाक हृदयमे जना अमृतक बून्न पड़ि गेल। उत्साहित भऽ तेतरीकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़ि लेलहा कहलक- “विसेसर भाय जे कहै छथिन से सुनू। सभ दुख मेटा जाएत।”

दुनू बेकती विसेसरक मुँह दिशि तकैत अगिला गप्प सुनैले कान पाथि देलक।

विसेसर- “अहाँ बेटाकेँ भूत नइ लगल अछि। हवा रोग लगल अछि। अखन धरि अहाँ सभ भूत छौड़ौनिहारकेँ बजा-बजा अनलौं। रोग छोड़ौनिहारकेँ नहि बजेलहुँ। चलू हमरा संगे।”

दुनू हाथ जोड़ि तेतरी विसेसर दिशि देखैत। पतिकेँ कहलक- “जाउ, जतए भैया जाइ छथि। जिनगीमे कहियो ककरो अधला नइ केलियै, तखन भगबान ऐहेन विपत्तिमे कोना दऽ देलनि।”

विसेसर तेतरीकेँ कहलक- “जाऊ, अहाँ भानस करु गऽ। पहिने बाछीकेँ खाइ-पीयै ले दियौ। भूखे परान गमौने की हएत? अंगनाक काज सम्हारु। हम दुनू गोटे जाइ छी।”

करिछौन भेल तेतरी ठोर अनायास बदलि लाल हुअए लगल। देहक सुतल शक्ति पुनः जगए लगल। अंगना-घर बहारि तेतरी बाछीकेँ पानि पीया खाइले देलक।

लेलहाकेँ संग केने विसेसर दीनानाथ वैद्य ऐठाम पहुँचल। दुनू गोटेकेँ देखि दीनानाथ पूछलखिन- “किमहर एलहुँ?”

लेलहाकेँ देखबैत विसेसर कहए लगलनि- “हिनकर बेटा लताम तोड़ै लए गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। जनिजाति सभ भूत कहि ओझा-गुनी बजवए कहलक। दुनू परानी बेचारा ओही पाछू पड़ि गेल। अपने चलि कऽ देखियौ।”

दीनानाथ रोग बुझि गेलखिन। दवाइक बैग लऽ वैद्यजी गप्प-सप्प करैत लेलहा

ऐठाम चलला। रास्तामे विसेसर दीनानाथकेँ पूछलखिन- "अपने वैदागिरी कोना सिखलहुँ?"

हँसैत दीनानाथ अपन सभ खिस्सा भरि रास्तामे विसेसरकेँ सुना देलखिन। लेलहा ऐठाम आबि गुलवाकेँ वैद्यजी देखलखिन। गुलवाकेँ देखि दीनानाथ लेलहाकेँ कहलखिन- "रोग कोनो असाध नहि छै। दुइये दिनमे छुटि जेतै।"

कहि दू दिनक लेल चारि खोराक दवाइ दऽ देलखिन। एक खोराक अपना सोझेमे गुलबाकेँ खुआ देलखिन। दवाइ खुआ दीनानाथ लेलहाकेँ कहलखिन- "दश मिनटक उपरान्ते रोग कमए लगत आ सौझुका खोराक खुऔला बाद बुझि पड़त जे अदहा रोग छुटि गेलै। घबड़ेवाक नहि अछि।"

--४--

मिडिल पास केलाक बाद ज्ञानचन्द गामेमे रहैक विचार केलक। गामसँ दश-बारह कोस हटि ज्ञानचन्दक पिता प्रकाशचन्द नोकरी करैत। दुरस्तक दुआरे प्रकाशचन्द बालो-बच्चाकेँ संगे रखैत। माए-बाप मरि गेने आश्रमो छोट। बहीनि सासुर बसैत। गाममे क्यो नहि रहथि जहिसँ घरो गिर पड़लनि। गौँवा-घरुआ सभ घरक ठाठ उजाड़ि जरा लेलक। घरारी छोड़ि एक्को बीत जमीन फाजिल नहि। घर गिरने घरारियो मात्र ढ़िमका जेकाँ बनि गेल, जहिपर अनेडुआ गाछ सभ जनमि गेल। घरारी बेलगान तँ बँचलो। प्रकाशचन्दक मेहनतसँ प्रेरित भऽ ज्ञानचद्र गामेमे रहि मेहनतक बले जीबैक संकल्प मनमे केलक। गाम आबि ज्ञानचन्द एकटा घर बनौलक। गामेमे रहि बच्चा सभकेँ पढ़बैक जोगारमे जुटि गेल। गरीब आ मझोलका किसानक गाम। गामक मुख-मुख आदमीकेँ बैसाए, अपन विचार रखलक। बच्चाकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ मुदा पढ़ौनिहारोकेँ तँ परिवार छैक। तर्क-वितर्क करैत सभ एहि निर्णयपर पहुँचल जे किसान परिवार एक सेर चाउर, एक विद्यार्थीपर मासमे, आ गरीब परिवार शनि दिनकेँ शनिचरा दैइ। एहि विचारपर गौँवा आ ज्ञानचन्द्रो सहमत भऽ गेल। बच्चा सभकेँ ज्ञानचन्द्र पढ़बए लगल। दू साल तँ सुभ्यस्त समए रहने व्यवस्थित ढंगसँ पढ़ौनी चलल मुदा तेसर साल तेहेन बाढ़ि एलै जे अदहासँ अधिक लोकक घर गिर पड़ल। खेतक फसल दहा गेल। तीनि मास धरि घर-घरारी छोड़ि सौँसे गाम पानिमे डूबले रहल। काजक अभाव भेने गरीब लोक बोनिहार पड़ा-पड़ा परदेश जाए लगल। अन्नक अभाव आ घास भूस्साक अभावमे धियो-पूता, बुढ़हो-पुरान आ मालो-जाल अदहासँ बेसी मरि गेल। घरक दुआरे बहुतो गोटे गाम छोड़ि आन-आन गाम कुटुमैतीमे जा-जा रहए लगल।

ज्ञानचन्दक दशा ऐहेन भऽ गेल जे मृत्युक रास्ता छोड़ि जिनगीक दोसर कोनो वाकी नहि रहल। करेजपर पाथर रखि गाम छोड़ए लेल तैयार नहि। अन्न बिना दुनू परानीकेँ सात साँझ भऽ गेलनि। भूखसँ अँतरी ऐँठैत, पेटमे बगहा लगैत। सुधियाक सुखल मुँह ज्ञानचन्द देखैत आ ज्ञानचन्दक मुँह सुधिया देखि आँखि निच्चाँ कऽ लैत। थरथराइत मने सुधिया ज्ञानचन्दकेँ कहलनि- "गामक दशा बड़ रद्दी भऽ गेल, आब जीवि कठिन अछि। चुपचाप हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ नहि हएत।"

ज्ञानचन्द- "कहलौं तँ ठीके मुदा की करब? देखते छी जे साँझक-साँझ लोक भूखल रहैए। जहिठाम पेट पहाड़ बनि रहत तहिठाम बच्चाक पढ़ाएब मात्र कल्पना हएत। पेटक आगि सभकेँ जरा दैत छैक। बुद्धि-विवेककेँ नष्ट कऽ दैत छैक। हमरा वुझनै एक्केटा उपाए अछि जे दुनू बेकती बाबू लग चलू। ओहिठाम किछु दिन रहि जखन समए बदलत, तखन बुझल जेतै।"

सुधिया- "अखन पितोजी लग जाएब कठिन अछि। भूखल पेट एत्ते दूर कोना जाएब? घरमे थारी लोटा छोड़ि तँ किछु अछियो नहि जकरा बेचि वा बन्हकी लगा पेटक ओरियान कऽ जाएब।"

ज्ञानचन्द- "लोटाक काज तँ रस्तो-पेड़ा हएत तँ एहि बिना नहि बनत। मुदा थारीक तँ तत्काल ओते जरुरी नहि अछि, पातोसँ काज चला लेब। थारी लाउ, बन्हकी लगा बटखरचाक ओरियान कऽ लैत छी आ ओमहर पिता लगसँ घुरि कऽ ऐलापर बन्हकी छोड़ा लेब।"

सुधिया घरसँ निकालि ज्ञानचन्दकेँ दऽ देल। थारी नेने ज्ञानचन्द दोकान जा बन्हकी लगा, बेसाहने आएल। सुधिया भानस केलक। दुनू परानी खा घर बन्न कऽ पिता लग विदा भेल।

मिड़ल पास केलाक तीनि साल बाद ज्ञानचन्दक विआह सुधिया संग भेल छल। विआहक समए सुधियाक मनमे बेहद ख़ुशी छल जे पढ़ल-लिखलसँ विआह भऽ रहल अछि। विआहो आकर्षित वातावरणमे भेल छल। विआहक समए गीति गौनिहारि ऐहेन आकर्षित वातावरण अपन गीतक माध्यमसँ बनौने रहथि जेना वसन्तक आगमनक समए प्रकृति बनबैत। एहि मोहक वातावरणमे ज्ञानचन्दक मन आ सुधियाक मन जेना शरीरसँ हटि एकठाम बैसि, भावी जिनगीक लीला रचए लगल। अलग-अलग योजना रहितो एकठाम जा मिलि जाइत। जिनगीक अंतिम छोड़ धरिक संगी नचैत-गबैत, सुख-दुखक रास्तासँ चलैक समझौता केलक। मुदा बसन्ती जिनगी ग्रीष्मक प्रखर रौदसँ झड़कए लगल। जहिना नदी सरोवरक शीतल जल रौदमे अपन जिनगी आहूत दैत तहिना ज्ञानचन्द आ सुधिया देमए लगल। जिनगी रस बेरस हुअए लगलै। मुदा आगिमे तपैत जिनगीमे सोनाक ओ रुप आबि

जाइत जे आगिमे जरि शेष रहैत। यएह थिक जिनगीक लीला। एहिक बीच जिनगी हँसैत-कनैत चलैत।

पिता लग जेबाक रास्तामे ज्ञानचन्दक मन विषादसँ भरैत जाइत। ज्ञानचन्दक मनमे ढेरो प्रश्न उठए लगल। की हम जिनगीसँ हारि मानि ली? की हम अपन संकल्प बदलि ली? की हम अपन उगैत ज्ञानकेँ नष्ट कए दी? की हमर ज्ञान एत्ते दुर्बल अछि जे जिनगीक छोट-छीन झोंक नहि सहि सकैत? एहि सभ प्रश्नक बीच ज्ञानचन्दक मन भारसँ एहि रुपे दबाइल जाइत जेना पहाड़क तरमे पड़ि गेल हो। मुदा छटपटाइत मन हारि मानए लेल तैयार नहि! जेना दू सेनाक बीच लड़ाइ होइत तहिना ज्ञानचन्दक मनमे हुअए लगल। देहमे पसीना आबए लगल। संकल्प सक्कत रुपमे बदलए लगल। हर्ष-विषादक बीच ज्ञानचन्द आगू बढ़ैत। सुधियाक मन अपनो आ भगवानोकेँ कोसैत। की हम नारी बनि एहि धरतीपर जन्म लऽ मातृत्व प्राप्त नहि कऽ सकै छी? की भगवान हमरा ओहि लेल जन्म देलनि जे फुलाइसँ पहिनहि नष्ट भऽ जाइ? ज्ञानचन्द आ सुधियाकेँ पहुँचते पिता प्रकाश बुझि गेलखिन। मुदा बिना किछु कहनहि पत्नीकेँ कहलखिन- "पहिने दुनू गोटेकेँ खाइले दिऔ।"

जाबे ज्ञानचन्द हाथ-पाएर धोलक तावे माए ज्योति दूटा थारीमे चूड़ा भीजैले दऽ देलखिन। घरमे दही नहि तँ चूड़ा आ चीनी दुनू गोटेकेँ खाइले देलखिन। ज्योति हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारि बरतनमे पाइन गर्म करए लगली। जाबे दुनू परानी ज्ञानचन्द खेलक ताबे इनहोरो भऽ गेलै। हाथ-मुँह धोइते दुनू परानी ज्ञानचन्द आ सुधियाकेँ माए कहलखिन- "बौआ, दूरसँ एलौं हेन, तँ इनहोरसँ पाएर ससारि लिअ। थाकनि दूर भऽ जाएत। बाटीमे इनहोर निकालि पहिने ज्योति ज्ञानचन्दकेँ ठेहुनसँ निच्चाँ ससारि देलखिन। पाएर ससारिते ज्ञानचन्दक थाकनि कमि गेल। बाटीमे इनहोर लऽ सुधियाकेँ अढ़मे लऽ जा ज्योति पाएर ससारैक ओरिआन करए लगली। मुदा सासुक हाथ पकड़ि सुधिया कहलखिन- "माए, हम अपने पाएर ससारि लइ छी। ई कोना हमर पाएर छूती?"

सुधियाक बात सुनि ज्योति कहलखिन- "ऐना किऐक कहलौं कनियाँ? जखन नीक रहब तखन हम सासु आ अहाँ पुतोहू। मुदा दुखमे अहाँक सेवा हम नइ करी, हमर सेवा अहाँ नइ करी, तखन हम अहाँक कोना भेलौं? आ अहाँ हमर कोना भेलौं? रास्ताक थाकल छी, देह-हाथ दुखाइत हएत तँ हमर सेवा करब उचित हएत की ने?"

कहि ज्योति सुधियाक दुनू पाएर इनहोरसँ ससारि देलखिन। ज्योतिक सेवा देखि ज्ञानचन्द मने-मन सोचए लगल जे यएह थिक माए-बाप आ बेटा-पुतोहूक संबंध। जँ ऐहेन विचार परिवारमे बनल रहत तँ, किऐक परिवारमे विखंडन हएत।

परिवार कम लोकक हुअए वा बेसी लोकक, अगर सभ अपन-अपन सीमा बुझि जिवैक कोशिश करत तँ परिवार टूटतै किऐक? थाकनिसँ दुनू बेकती ज्ञानचन्द आ सुधियाकेँ ओंघीसँ देह भसैत। देह भसैत देखि ज्योति दुनू गोटेकेँ सुति रहैले कहलखिन। दुनू बेकती ज्ञानचन्द सुति रहल।

किरिण डूबि गेल। प्रकाश सेहो काजपर सँ ऐला। लालटेन लेसि ज्योति ओसारपर दऽ ओछाइन ओछा चाह बनबए लगली। कपड़ा बदलि प्रकाश हाथ-पाएर धोय ओछाइनपर बैसल। ज्योति चारि गिलास चाह बना, एक गिलास प्रकाशकेँ दऽ अपनो आ बेटो-पुतोहूकेँ देलखिन। चारु गोटे चाह पीबि एक्केठाम बैसल। ज्ञानचन्दक चेहरा देखि प्रकाश आँकि नेने रहति। मुदा कोनो गंभीर बात पूछैसँ परहेज करैत कहए लगलखिन- ‘‘बौआ, सालभरि हमरो नोकरी रहल, तकर बाद तँ गामेमे रहब। तँ आब घर बनौनाइ जरुरी भऽ गेल अछि। जाबे घर बना रहए नहि लगब तावे जीबैक लेल कोनो काजक सृजन सेहो नहि कऽ सकै छी।’’

अपन समस्या ज्ञानचन्द रखैत बाजल- ‘‘बाबूजी, गामक ऐहन दशा भऽ गेल अछि, जे रहब कठिन भऽ गेल अछि।’’

ज्ञानचन्दक बात सुनि प्रकाशचन्द कहए लगलखिन- ‘‘बौआ, जहिना एहि शरीरक विचित्र स्थिति अछि तहिना एहि संसारोक। तोँ देखबहक जे, जे आदमी अधिक शारीरिक श्रम करैबला अछि ओ जहि दिन नहि खटत तहि दिन ओकरा देह-हाथ दुखेतै। ठीक एकर विपरीत जे आदमी देहसँ श्रम नहि करैत अछि ओ जहि दिन भारी काज करत, तहि दिन ओकरा खूब देह-हाथ दुखेतै। तहिना एहि संसारोक छैक। विचित्र शक्ति एहि संसारमे छैक! जहिना नाश करैक अद्भुत शक्ति देखै छहक तहिना सृजनो करबाक छैक। तँ जे मनुष्य सृजनशील अछि, वएह एहि दुनियाँक आनन्द उठा सकैए।’’

प्रकाशचन्दक बात सुनि ज्ञानचन्दकेँ नवज्योति भेटिलैक। अखन धरि जे ज्ञानचन्द सोचने छल जे दश दिन पिता ऐठाम रहब मुदा पिताक विचार सुनितहि सँसे देह सुनगुनी पैसि गेलै जे अखने गाम घुरि कऽ चलि जाय। एक दिस ज्ञानचन्दक मोनमे बाढ़िक विकराल रुप नचैत तँ दोसर दिस बाढ़िक रुपसँ मुकाबला करैक उत्साह मनमे जगए लगलै सासु पुतोहूकेँ कहलखिन- ‘‘कनियाँ, अपन घर नहि रहने एहिठाम बहुत रास बस्तु ढेरिआइल अछि, जकरा अपना ऐठाम लऽ जाएब अछि। एक्के बेरि तँ सभ वस्तु लऽ गेल नहि हएत तँ थोड़े-थोड़ेकेँ लऽ जाएब नीक हएत। घरमे माइर पुरान थारी, लोटा, बरतन-बासन आ कपड़ा-लत्ता अछि। ओहिमे सँ जतेक लऽ गेल हएत ओते नेने जाएब।’’

ज्योतिक बात सुनि सुधियाक मनमे आएल जे एकटा थारी छल ओहो बन्हकिये लगा देलहुँ मुदा ऐठाम तँ तते अछि जे एक बेरिमे लइओ ने गेल हएत।

कपड़ो-लत्ताक सएह हाल अछि। बरतन आ कपड़ाक लेल मन कलहन्त रहैत छल, ओ तत्ते अछि जे जिनगी भरिमे सठबो ने करत। तँ मने-मन सुधिया खूब खुश होइत।

तेसर दिन ज्ञानचन्द पिताकेँ कहलखिन- "बाबू, हम चलि जाएब। गाममे की भेल हएत की नहि, चिन्ता भऽ रहल अछि।"

ज्ञानचन्दक बात सुनि प्रकाश कहलखिन- "बौआ, इहो तँ अपने घर छिअह तखन जाइले एत्ते किऐक धड़फड़ाइ छह?"

ज्ञानचन्द- "भरि दिन एतए बैसले रहै छी, गाम गेलापर किछु करबो करब की ने।"

प्रकाशचन्द- "बड़बढ़ियाँ। काल्हि चलि जइहह।"

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन्द आ सुधिया गाम जाइक तैयारी करए लगल। वरतन आ कपड़ाक मोटरी देखि सुधिया मने-मन सौचए लगली जे एत्ते दूर एत्ते लऽ कऽ कोना जाएब। मुदा अभावक जिनगीसँ गुजरल सुधिया साहस कऽ मोटरी लऽ जाइले तैयार भऽ गेली। ज्ञानचन्दकेँ प्रकाश सए रुपैआ दऽ देलखिन। दुनू परानी गाम विदा भेलि।

गाम आबि ज्ञानचन्द थारिओ बन्हकी छोड़ौलक आ पाँच दिनक बुतात सेहो कीनिलक। दू दिन धरि ज्ञानचन्द गामेमे रहि आराम केलक। तेसर दिन भोरे जलखै खा ज्ञानचन्द ओसारपर बैसि मने-मन हियाबए लगल जे कोन-कोन गामेमे स्कूल नहि अछि। मुदा अकसरहाँ गाम तेहने। कोनो-कोनो गाममे खानगी शिक्षक परिवारमे पढ़बैत। मुदा आम लोकक लेल स्कूल नहि। जत्ते हियासि-हियासि ज्ञानचन्द गाम सभकेँ देखैत तत्ते विचित्र स्थितिमे पड़ल जाइत। मुदा मनमे ज्ञानचन्दकेँ छलनि जे गरीब-गुरबा बच्चा सभकेँ पढ़ाबी। सुभ्यस्त परिवारक बच्चा सभ तँ कोनो ने कोनो रुपे पढ़िये लइत, मुदा खगल बच्चा सभ छुटि जाइत। जखन कि पढ़ब सबहक लेल जरुरी अछि। एहि गुन-धुनमे ज्ञानचन्दक दू दिन बीति गेल। तेसर दिन पत्नी ज्ञानचन्दकेँ कहलकनि- "जाबे घरमे बुतात अछि ताबे जँ कोनो जोगार नहि कऽ लेब, तखन तँ फेरि दिक्कत हएत।"

पत्नीक बात सुनि ज्ञानचन्द कहलक- "कहलौं तँ ठीके मुदा विचित्र उलझनमे पड़ल छी। एक दिस संकल्प अछि दोसर दिस पेट।"

झगड़ौआ सुभ्यस्त गाम। गाम नमहर। सभ तरहक परिवार गाममे। मुदा पँचभाँइयाँ परिवार सभसँ सम्पन्न। पाँचों भाँइ मिलि शिक्षक रखने। पाँचो भाँइक परिवारक तँ बच्चा सभ पढ़ैत मुदा गामक आन परिवारक बच्चा छूटल। पाँचो भाँइ सझिये। एकटा नमहर दरवज्जा, जहिपर शिक्षक पढ़ेबो करैत आ रहबो करैत। नमहर परिवार रहने नमहर दरबज्जा बन्हने किऐक तँ जखन विआह, मूड़न, श्राद्ध

वा कोनो नमहर काज परिवारमे होइत तखन तत्ते अधिक कुटुम-दोस्त सभ अबैत जे छोट-छीन दरवज्जामे अँटबे नहि करैत। तँ नमहर दरवज्जा बनौने। ओहि पँचभाँइयाँ परिवार छोड़ि गामक सभ परिवार शिक्षासँ अलग। ने गाममे स्कूल आ ने दोसर परिवारक बच्चाकेँ पँचभाँइयाँ अपना ऐठाम पढ़ए दैत। गुरुजी केँ खाइले दैत आ दू मन धान मासमे दैत। समांगे जेकाँ शिक्षको बच्चा सभकेँ पढ़बैत। गरीब लोक बच्चाकेँ पढ़ौनाई जरुरीये ने बुझैत। सभकेँ बुझले जे जखन बच्चा ढेरबा हएत तखन गाए-महीसि चराओत, ककरो ऐठाम नोकरी करत। जखन जुआन हएत, विआह-दुरागमन हेतैक तखन बोइन करत। ने शिक्षाक महत्व बुझैत आ ने नोकरी मनमे। जीबैक लूरि तँ बापक संग काज करैत-करैत भइये जाइत। झाँपल झान झाँपल विचार। मध्यम किसान परिवारक लोक बच्चाकेँ पढ़बए चाहैत, मुदा भीतरिया मन-मुटाब सभहक बीच। अनेरे एक-दोसरसँ मुँह-फुलौने। एक जातिक लोककेँ दोसर जातिक लोकसँ भैसा-भैसीक खानदानी कनाइर जातियोक बीच कुल-गोत्र टौहकी लगौने जहिमे माछे जेकाँ सभ फँसि छटपटाइत। ने क्यो ककरो नीक करैत आ ने नीक देखए चाहैत। अनेरे एक-दोसरकेँ भरि दिन निन्दा करैत। कमलपुरक बगलेमे झगड़ौआ। झगड़ौआक पहिलुका नाम सुन्दरपुर छल। मुदा गाँवाक बीच सदिखन मारि-झगड़ा भेने आन-आन गामबला झगड़ौआ गाम कहए लगल। जहिसँ गामक नामे झगड़ौआ पड़ि गेल।

झगड़ौआमे सभसँ रुआबी चुनचुन। मध्यम किसान, दस बीघा खेत। अकसरहाँ चुनचुनकेँ दोसरसँ गारि-गरौबलि आ मारि-पीटि होइते रहैत। जहिसँ दस-बीस मुकदमा सभदिन लधले रहैत। एक दिन केसक तारीक करए मधुबनी गेल। घुमती काल टीशनपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसल छल कि एक आदमी सेहो लगमे आबि बेंचपर बैसल। कने-काल दुनू गोटे चुप्पे रहल, मुदा पाछू गप्प-सप्प करए लगल। गप्प-सप्पक क्रममे ओ आदमी चुनचुनकेँ कहलक- ‘‘हम हाइ इसकूल तक पढ़ल छी। नोकरी करए जाइ छी।’’

पढ़ल-लिखल सुनि चुनचुन कहलक- ‘‘हमरा ऐठाम चलू। तीनटा बच्चा अछि ओकरा पढ़ा देबै आ अहाँकेँ दू मन धान महीना देब।’’

चुनचुनक संग ओ आदमी झगड़ौआ आएल। दोसरे दिन सगरे गाम हल्ला भऽ गेलै जे चुनचुन मास्टर अनलक। पँचभाँइयाँ परिवारमे सेहो समाचार पहुँचल। साँझू पहर सभ समांग बैसि विचार केलक जे चुनचुनमो आ मासटरोकेँ ऐहेन विदाइ देब जे फेर ऐहेन काज नै करत। सएह भेल। दोसर दिन सभ समांग पँचभाँइयाँ आ चारिटा लठैतो आबि चुनचुनमो आ मास्टरोकेँ तेहेन मारि मारलक जे मास्टर तखने पड़ा गेल आ चुनचुनमा थाना जा केस केलक। पँचभाँइयाँक एक समांग हाकिम। जे सभकेँ बुझल तँ थनो नइ आएल। केसो नै बढ़ौलक। ओहि

दिनसँ चुनचुनमाक मन टूटलै। तखन गामक लोकसँ मेल करए चाहलक। मुदा सभ छनगल। किऐक तँ चुनचुनमाक खचरपन्नी सभकेँ बुझल। तँ केयो चुनचुनमासँ सटए नहि चाहैत। चुनचुनमाक दशा गाममे ओहन भऽ गेल जेहन कोनो बड़का डकैत जहलमे जा दाढ़ी बढ़ा बवाजी भऽ जाइत।

चुनचुनमाक मारि चुनचुनमा सन लोकक हृदय झकझोड़ि देलक। अखन धरि जहि विषयक चर्चा लोक करितहुँ नहि छल ओ चरचाक प्रमुख विषय बनि गेल। अज्ञानक चद्दरिसँ झाँपल बुद्धि बहराइ लेल पाँखि फड़फड़बए लगल। जहिना माटिक तरमे कोनो बीआ चुपचाप पड़ल रहैत मुदा समए पबितहि अंकुरित भऽ उपर चलि अबैत तहिना। जे विद्या दानक लेल अमूल्य बुझल जाइत, ओहिक लेल समाजमे विस्फोट भऽ सकैत अछि। चुनचुनमाक दियाद-वाद, दोस-महिम, कुटुम-परिवार अपनामे विचारि पुनः गुरुजी राखि बच्चाकेँ पढ़बैक निर्णय केलक। मुदा ऐहेन विचार किछु गनल परिवार धरि रहल। आम आदमी जे समाजमे बहुसंख्यक अछि, काते रहल। ने ओकरासँ पूछल गेल आ ने ओ उत्साहित भेल। चुनचुनमाक घटना ज्ञानचन्दकेँ वुझल। ओना ज्ञानचन्दक विचार चुनचुनमाक काजक अनुकूल, किऐक तँ शिक्षा एकसँ पाँचो दिशि तँ बढ़ल। मुदा समाजक बीच तँ खाढ़ी बनले रहैत। एकाएक ज्ञानचन्दक मनमे आएल जे झगड़ौआ नहि जा कमलपुर जाएब।

कमलपुर जाइक विचार ज्ञानचन्द मनमे ठानि पत्नीकेँ कहलक- “काल्हि भोरे कमलपुर जाएब। जँ ओहिठाम रहैक जोगार भऽ गेल तँ ओतइ रहब नहि तँ परसु तक घुरि जाएब। ओना मन कहैए जे कमलपुरमे जरुर जोगार भइये जाएत।”

पतिक बात सुनि सुधिया कहलखिन- “जिनगीमे एहिना चढ़ा-उतरी होइ छैक। मुदा एहिसँ अगुतेबाक नहि चाही। एकटा कमलपुरे नहि ढेरो गाम छैक जहिठाम पढ़ै-लिखैक कोनो व्यवस्था नहि छैक। करेज मजगूत कए कऽ जाउ भगवान कतौ नइ कतौ गर लगाइये देताह।”

पत्नीक विचार सुनि ज्ञानचन्द कने गुम्म भऽ कहलखिन- “समाजक विचित्र लीला छैक। पढ़लासँ ज्ञान होइत छैक। ज्ञान मनुखकेँ नीक रास्ता चलैक लेल प्रेरित करैत छैक। मुदा समाजमे ऐहेन मुहगर-कन्हगर लोकक कमी नहि जे बीचमे बाधक बनि ठाढ़ रहैए। आ वएह सभ अपनाकेँ समाजक हितैषी कहि ढोल पीटैत अछि। हमरा लेल धन पैघ नहि विचार पैघ अछि।”

सुधिया- “जइ रुपक समाजक बात अहाँ कहलौं, ओहिसँ अलग भऽ सोचए पड़त। जँ से नहि सोचब तँ जीवि कोना? जँ जीवे ने करब तँ सिर्फ सोचलेसँ की हएत?”

ज्ञानचन्द- “अहाँक बात मानलासँ समाजमे कटुताक जन्म हएत। मनुक्ख-

मनुक्ख थिक। केयो ककरोसँ ने पैघ अछि आ ने छोट। हँ ज्ञानक स्तर आगू-पाछू भऽ सकै छै। मुदा जे अगुआइल छथि हुनका तँ पछुऐलहाक बाँहि पकड़ि आगू मुँहे बढ़ेबाक चाहियनि। जँ से नहि करै छथि तँ ओकरा बेइमानी छोड़ि की कहबै? बेइमाने मनुख ने नीच मनुक्खक श्रेणीमे अबैत अछि। जे ज्ञानक संग छेड़-छाड़ करब भेल। धनसँ मनुक्खकेँ नापब, सोना तौलैबला निकटीपर माछ तौलब हएत। जे व्यवसाय हम करै छी ओहि कऽ लेल ऐहन तराजू चाही जहिपर एक्के बटिखारासँ सभ तौलल जाय। जे अध्ययन करत ओ चाहे गरीबक बेटा होय वा अमीरक, जरुर विद्वान् बनत।"

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन्द जलखै कऽ कमलपुर विदा भेल। जहिना समुद्रमे पहुँचैक लेल नदीक पानि अनवरत गतिसँ चलैत तहिना ज्ञानचन्दो कमलपुर जेवाक रास्ता कटैत। कमलपुर पहुँचते ज्ञानचन्दकेँ बुझि पड़ल जे आन-गामसँ भिन्न एहि गामक लोकक चालि-ढालि छैक। पहिले-पहिल ज्ञानचन्द देखलक जे जत्ते मेहनत एहि गामक लोक करैए ओत्ते मेहनत आन गामक नहि करैत अछि। मान-सम्मानक मर्यादा सेहो एहि गामक लोक आन गामक अपेक्षा अधिक बुझैत अछि। रस्ते-रस्ते ज्ञानचन्द एहि बातकेँ आँकि लेलक। ज्ञानचन्द बिहारी ऐठाम पहुँचल। तीस पेंइतीस परिवारक टोलमे बिहारीक घर। विहारीक दरबज्जापर सिलेब बड़दक जोड़ा आ एकटा महीसि बान्हल। कँचके ईंटाक आ खढ़क छारल दरबज्जा। नीक कारीगरक जोड़ल देबाल आ नीक छाड़निहार छाड़ने, तँ दरबज्जा सुन्दर। दरबज्जाक ओसारमे एक भाग एकटा कोठली बनल। टोलमे जे बरिआती अबैत ओहि दरबज्जामे रहैत। टोल तँ गरीबे लोकक मुदा अपनामे खूब मिलान सभकेँ। दरबज्जाक ओसारपर राखल चैकीपर अपन झोरा राखि ज्ञानचन्द घरबैयाकेँ सोर पाड़लखिन। पछबरिया घरक केबाड़क उखड़ल बिलैयाकेँ बिहारी ठीक करैत छल। अनठियाक आवाज सुनि बिहारी रुखान-बैसला अंगनेमे रखि दरवज्जापर आएल। नव चेहरा देखि, बिहारी डेढ़ियाँपर सँ चोट्टे घुरि आंगनसँ एक लोटा पानि नेने दरवज्जापर आएल। ज्ञानचन्दकेँ हाथमे लोटा पकड़बैत बिहारी कहलकनि- "पहिने पाएर धोउ, तखन गप्प-सप्प हेतैक।"

ज्ञानचन्द पाएर धोअए लगल आ बिहारी आंगन जा पत्नीकेँ कहलक- "एकटा अभ्यागत अएलाह हुनकरो भानस करिऔन।" कहि दलानपर आबि बिहारी ज्ञानचन्दसँ परिचए-पात करए लगल। पढ़ौनीक चर्चा सुनि बिहारीक हृदयमे उत्साहक बिरड़ो उठि गेल। अगिला गप्पकेँ तोपैत बिहारी ज्ञानचन्दकेँ कहल- "गुरुजी, थाकल हएब अखन आराम करु। ताबे हमहूँ अपन काज सम्हारि लइ छी। गप्प-सप्प निचेनसँ करब।"

आंगन आबि विहारी विलैया ठोकए लगल। विलैयो ठोकै आ मने-मन बिहारी

बिचारवो करए जे तीनटा बेटा-बेटी अछि ओकरा पढ़बैमे एक गोटेक खेनाइ की छी? टोलक लोक गरीब अछि मुदा हमरा तँ दू सेर दू टाका अछि। जकरा रहै छै ओ स्कूल कोना बना दै छै। विहारीक मनमे एत्ते उत्साह जगि गेल जे असकरो खरच करैले तैयार।

साँझू पहर विहारी ज्ञानचन्दकेँ संग केने विसेसर ऐठाम पहुँचल। विसेसर भजन करैत। भजन अदहापर आबि गेल। मगन भऽ विसेसर आँखि बन्न केने गबैत छल। विसेसरकेँ मग्न देखि दुनू गोटे-विहारी आ ज्ञानचन्द बिछानपर बैसि गेल। भजन समाप्त होइते, आँखि खोलि विसेसर विहारीकेँ पूछलक- "पहुन कहाँ रहै छथि?"

विहारी उत्तर देलक- "भैया, हिनकर नाम ज्ञानचन्द छिअनि। पढ़ल-लिखल छथि। गामक बच्चा सभकेँ पढ़बए चाहैत छथि।"

जहिना माटिक तरमे गाड़ल रुपैआक तमघैल भेटिलापर खुशी होइत तहिना ज्ञानचन्दक चर्चा सुनि विसेसर कऽ भेलि। हँसैत विसेसर बाजल- "बहुत दिनसँ मनमे छल जे बच्चा सभकेँ पढ़ैक जोगार करी मुदा गरीबीक चलैत नइ भऽ पबैक छल। ई तँ सौभाग्यक बात छी। जहिना घर आइल लछमीकेँ लोक जाय नहि दिअए चाहैत तहिना तँ आइल सरस्वतीकेँ सेहो पकड़ैक अछि।"

विसेसरक बात सुनि कँपैत बिहारी पूछलक- "भैया, जना झगड़ौआमे चुनचुनकेँ भेलि तना तँ ने हएत?"

कने-काल गुम्म रहि विसेसर चुनचुनक घटनापर नजरि दौड़वैत कहलक- "चुनचुन अधला रस्ता धऽ नीक काज करए चाहलक तँ फल अधला भेलै। हम सभ नीक काज करैले नीक रस्तो पकड़ब।"

अखन धरि ज्ञानचन्द चुपचाप सुनैत। मुदा विसेसरक बात सुनि ज्ञानचन्द कहए लगलखिन- "बिल्कुल ठीक। जाधरि मनुख मनुक्खक संग नहि चलत ताधरि ऐहन-ऐहन दुखद घटना होइते रहत।"

विहारी मुँह बाबि ज्ञानचन्द आ विसेसरक बात सुनैत। ज्ञानचन्दक बात सुनि विहारी बाजल- "गुरुजी, हम मुरुख छी। खेती छोड़ि दुनयादारीक किछु ने बुझै छी। जहिया कहियो कोनो तेहेन काज भेल तँ विसेसर भैयासँ पूछि करै छी।"

विहारीक बात सुनि ज्ञानचन्द कहए लगलखिन- "शुरुमे कोनो गाम जे बनल ओ एहि रुपे बनल जे हमर-अहाँक पूर्बज परती जंगल तोड़ि खेत बनौलनि। गामोमे सभ तरहक लोकक जरुरत होइत छैक। जना बढ़ही, कुम्हार, नौआ, धोबि, चमार इत्यादि। जिनका पसारी बुझल जाइत। ओ सभ खेती नहि कऽ क्यो खेतीक सामान हर, कोदारि बनौलक तँ क्यो माटिक बरतन। मुदा जखन छल-प्रपंचक कारोबार शुरुह भेलि तखन खेतक छीना-झपटी होअए लगल। अधिक

लोक गरीब बनैत गेल आ कम लोक अमीर। समाजक कल्याणक लेल धरमक आश्रय लेल गेल। मनुखो आ मालो-जालक लेल इनार-पोखरि खुनाओल जाय लगल। चलैक लेल रास्ता बनल। मुदा बादमे दशनमो चीज खानगी बनए लगल। 'ई हमर छी' ऐहेन विचार लोकमे आबि गेल। जहिसँ द्वेष पनपल। हमर पूर्वज ऋृषि-मुनि ज्ञान आ कर्मक माध्यमसँ समाजक कल्याण लेल नियम बनौलनि। मुदा सभ छल-प्रपंचक अखाड़ा बनि गेल।''

ज्ञानचन्दक विचार सुनि विसेसरक उत्साह बढ़ल। विसेसर विहारीकेँ कहलक- ''अखन तँ तीनिये गोटे छी। काल्हि बेरु पहर टोलक सभकेँ बैसार करह। ओहि वैसारमे बच्चाकेँ पढ़वैक विचार सभकेँ पूछब। क्यो तँ नइ नहिये कहत मुदा सभक विचार लऽ लेब जरुरी अछि। गुरुओजी तैयारे छथि।''

बिहारी- ''भैया, तूँ जे कहबहक तइसँ हम थोड़बे पाछू हएब। गुरुजीक भोजन आ एक धारा चाउर गुरुजीकेँ घरोपर लेल देबनि। मुदा कोनो तरहक भीड़ जँ पड़त तेइले तूँ आगू रहिहह।''

विसेसर- ''बिहारी, तूँ हमरा छनकट आदमी बुझै छह जे बाजब किछु आ करब किछु। जहिना मरद जेकाँ कहै छियह तहिना निमाहबह। हम अपन मालिक अपने छी। क्यो एक साँझक बुतात जोड़ैए, जकर हुकूम मानबै। जे आँखि देखाओत ओकर आँखि निकालि लेबै।''

मुस्कुराइत विहारी आ ज्ञानचन्द विदा भेल। रास्तामे विहारी झगड़ौआक चुनचुनक खिस्सा ज्ञानचन्दकेँ कहैत घरपर तक आएल।

दोसर दिन टोलक लोकक वैसार विहारी केलक। गुरुजीक नाम सुनि टोलक चेतन लोकसँ बेसी धिये-पूते बैसारमे आएल। बच्चा सभकेँ पढ़बैक नामपर सभ सहमत होइत दुनू हाथ उठा समर्थन केलक। सबहक समर्थन देखि विसेसर कहलक- ''अगर कोनो आपत्ति-विपत्ति आओत तँ सभ मिलि ओकर सामना करब।''

विसेसरक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन दैत कहलक- ''जखन गाममे सरस्वतीक आवाहन भऽ गेल तखन फेरि जाए नहि देब। सभ शनिकेँ एक पौआ चाउर शनिचरा कहि गुरुजीकेँ देबनि।''

ज्ञानचन्द- ''काल्हि हम गाम जा परिवारमे जानकारी देब। परसूसँ बच्चा सबहक पढ़ौनी शुरु कऽ देब।''

ज्ञानचन्द गाम जा पत्नीकेँ सभ बात कहलखिन- ''अखन धरि जे सुधिया ग्रीष्मक गरमीसँ जरैत छलीह ओ बरखाक बुन्न पड़ितहि कलशैक उपक्रम करए लगलीह।

--५--

चैत-वैशाखक आड़िपर जूर-शीतल पावनि। ओना अपना एहिठाम अनेको तारीख आ साल चलैत अछि। जेना साल, विक्रम संवत, हिजरी, लक्ष्मण संवतक संग अंग्रेजीयोक। चैतक रान्हल वैसाखमे खाएब तेँ आध पहर रातियेसँ भनसिया सभ भानसमे जुटि गेलि। संक्रान्तिक हिसावसँ जूर-शीतल पावनि होइत तेँ पूर्णिमाक महत्व क्षीण भऽ जाइत।

भोर होइते स्त्रीगण सभ घर-आंगनसँ लऽ कऽ रास्ता-पेड़ा धरि पानि छीटैत। बूढ़-बूढ़ानुस, लोटामे पानि लऽ धिया-पूतासँ जुआन धरिक माथपर एक चुरुक जल दऽ असिरवाद दैत। छौँड़ा-मारड़िसँ जुआन धरि भाँगक ओरियानमे जुटि जाइत। क्यो भाँग पीसैमे मस्त तँ क्यो दोकानसँ चीनी-गुड़ आनि बाल्टीनमे घोड़ैमे। किसानो सभ अपना-अपना काजमे व्यस्त। केयो घरक केबाड़ खोलि धोयमे तँ क्यो गाछ सभ पटबैमे। क्यो गाए-बड़दकेँ नहबैमे तँ इनार उपछैमे। पावनिक उत्साह सिर्फ लोकेटा मे नहि बल्कि गाछो-बिरीछ अपन पुरना वस्त्र त्यागि नवका वस्त्र पहिरि-पहिर उमंगमे झूमैत।

दस बजैत-बजैत सभ अपन-अपन घरक काज सम्हारि, एकत्रित भऽ भाँग पीबि महादेव-पार्वती बना 'जय शिव जय शिव' गवैत गाममे घूमए लगल। महादेवोक रुप अजीब। भाँग-धधूरक गाछसँ सजल। महादेवक रुपसँ पारवतियो बेहद खुशी। कखनो संग छोड़ैले तैयार नहि। थाल-कादो गोबरसँ क्यो डराइत नहि बल्कि महादेवक रंग बुझि अपनो आ दोसरोसँ देह ढ़ौरेने। जेहने महादेव तेहने हुनकर संगी। सभ मस्त। यएह थिक जूर-शीतल पावनिक भिनसुरका उखड़ाहा। दुपहर होइते धिया-पूता फूचूँगा रखैत तँ कीर्तनियाँ ढोलक-हरिमुनियाँ। पोखरिमे सभ नहा-नहा घरपर आबि खाइ-पीवैमे लगि गेल।

बेर टगिते शिकार खेलैक तैयारीमे जुटि गेल। क्यो भाँग हाँइ-हाँइ पीसैत तँ क्यो नवका लाठी बनबैत। क्यो पुरने लाठीक झोल झाड़ैत तँ क्यो लाठीमे करु तेल लगवैमे व्यस्त। क्यो सिलौटपर भाला पीजबैमे व्यस्त तँ क्यो तीर पीजवैमे। भाँग पीबि लाठी, भाला, तीर लऽ लोक शिकार खेलए विदा भेल। घरसँ निकलितहि ललकारा दैत सभ बाध दिशि चलल। गाममे जतेक खरहीक खेत, खढ़होरि, बोन-झाड़ सबहक तलाशी आइ हएत।

गामक ढेरबा बच्चासँ लऽ कऽ बूढ़-पुरान धरि लाठी लऽ शिकार खेलए विदा भेल। चारि कट्ठाक एकटा खरही खेतकेँ चारु भरसँ घेड़लक। पाँच-सात गोटे लाठी नेने खरहीमे पैसल। घेरिनिहारो हल्ला करैत आ झोड़निहारो। एकटा नढ़िया

खरहीसँ निकलि दोसर खरहीमे नुका रहल। नढ़िया देखि सभकेँ जोश चढ़लै। हल्ला करैत सभ ओहि खरहीक खेत घेड़लक जहिमे नढ़िया पड़ा कऽ आबि नुकाएल। किछु गोटे खरहीमे ढुकि नढ़ियाकेँ ताकए लगल। खरहीक एकटा बीटमे बैसि नढ़िया आँखि गुड़ारि कऽ तकैत। एकटा झोड़निहारकेँ देखि नढ़िया जान बचबैले पड़ाएल। खरहीसँ निकलितहि हल्ला करैत सभ खेहारलक। नढ़िया भगैत एकटा झाड़ीमे तना नुका रहल जे क्यो देखवे ने करैत। तिलकोरक लत्ती तना ओहि झाड़ीपर चतड़ल जे तरमे अन्हार बुझि पड़ैत हारि कऽ शिकारी सभ आगू बढ़ि गेल। नढ़िया बचि गेल। शिकरी सभ आगू बढ़ि झाड़ीक बोन घेड़लक। बोन घेड़ि शिकारी सभ ललकारा देमए लगल। ललकारेपर ओहि बोनसँ एकटा हरिण आ एकटा नील गाए वनगदहा- निकलि तत्ते जोरसँ पड़ाएल जे ककरो पाबए ने देलक। सभ ठाढ़ भऽ मुँह तकैत रहि गेल। श्किारी सभ अपनामे गप्प-सप्प करए लगल जे आब एक्केटा खढ़होरि बँचल अछि, जँ एहिना भेल तँ पावनिक महत्वे की?

नव उत्साहसँ शिकारी खढ़होरि लग पहुँचल। खढ़होरिकेँ चारु भरसँ घेरि तीरबला सभ पैसल। जोड़ा खढ़िया खरहोरिसँ निकलि पछिम मुँहे पड़ाएल। खढ़ियाक अगिला दुनू पाएर छोट आ पैछला दुनू नमहर। अठ-अठ हाथ छड़पैत। शिकारी सभ खेहारलक। खढ़िया भगबो करैत आ पाछू घुमि-घुमि तकबो करैत। किछु दूर भगलापर दुनू खढ़िया दू दिशि भऽ गेल। खेहारनिहार राइ-छित्ती भऽ गेल। खेहारैत-खेहारैत शिकारी सभ अपसियाँत-अपसियाँत भऽ गेल। मुदा खढ़िया पाबए नै देलक। दोसर गामक शिकारी सेहो खढ़ियाकेँ अबैत देखलक। सीमा टपि खढ़िया दोसर गामक सीमामे चलि गेल। शिकारी सभकेँ दूर देखि खढ़िया बड़का आड़िक बिलमे ढुकि गेल। एक दिशि प्रेमनगरक शिकारी दोसर दिशि रुपनगर शिकारी। प्रेमनगरक शिकारीकेँ बुझि पड़ल जे रुपनगरबला खढ़िया मारि लेलक आ रुपनगरबला शिकारीकेँ बुझि पड़ल जे प्रेमनगरबला मारि लेलक। खढ़िया चौकले छल आँखि उठा-उठा देखवो करए। दुनू गामबलाकेँ एक-दोसरपर शंका हुअए लगल जहिसँ कहा-कही शुरु भेल। एक तँ शिकारक नशाँ दोसर ताड़ी, दारु, भाँग पीनहि छल, तकर नशाँ। जमातो रहवे करए आ हाथमे लाठियो रहबे करए। जहिना चौत मासमे खरिहाने-खरिहाने खुजल गहूमक बोझ रहैत, पछिया हवा बहैत रहैत आ क्यो बदामक ओरहा बान्हपर करए लगै तँ आगि किअए नहि लगै। तहिना लड़ाइक सभ साम्रगी अनुकूल तँ जते काल मारि नहि फँसल ओते देरिये होइत। कहा-कही गारि-गरौवलिमे विकसित भेल। बुढ़वा सभहक गारि तँ मारिक जोश नहि चढ़बैत मुदा छौँड़ा-मारड़ि जे बुढ़वाकेँ गरिअबए, ओ मारिक अनुकूल समए बनवैत चल जाइत। ताबे पाछूसँ एकटा छौँड़ा ईंटाक टुकड़ी -रोरी-

लऽ दोसर दिशि फेकि देलक। ओ रोरी एक गोटेक कपारपर गिरल। कपारमे रोरीक कोन गरि गेलै। जहिसँ छड़-छड़ खून बहए लगलै। पछिला लोक हल्ला करए लगल जे कपार फोड़ि देलकै। एक दिशि हल्ला होइत दोसर दिशि लाठी चलए लगल। धमगजड़ि मारि भेल। दुनू दिशिसँ करीब सौ कऽ लगभग घाइल भेल। ककरो डेन टूटलै तँ ककरो घुट्टी। ककरो कपार फूटल तँ ककरो कन्हा। दुपहरसँ एखन धरिक गरमी ठंढ़ा गेल। कन्हेठ-कन्हेठ लोक घाइलकेँ उठा-उठा लऽ जाए लगल। दुनू गामबला अपन-अपन आदमी कऽ उठा अपना-अपना गाम लऽ गेल। दुनू दिशि इलाज चलए लगल। बिना पार्टीकेँ कहनहु थानासँ दरोगा दू दर्जन फोर्स लऽ कऽ पहुँच गेल। पहिने एकटा गामक घाइलकेँ देखि नाओ लिखलनि पछाति दोसर गाम जा सबहक नाओ लिखि केस आगू बढ़ा देलखिन। सभपर केस भऽ गेल। मुदा दरोगाजी एते जरुर केलखिन जे जतवे घाइल भेल रहए ओतवे आदमीपर केसो लिखलखिन। इलाजसँ लऽ कऽ जमानत करबै धरि तीनि मास दुनू गामबलाकेँ लागल। मुदा भूमहुरक आगि जेकाँ विवाद मिझाइल नहि।

इलाकामे वीरपुरकेँ लोक बदमाश गाम बुझैत अछि। जहिसँ ने लग-पासक गामबला क्यो वीरपुरमे कुटुमैती करैत अछि आ ने खेनाइ-पीनाइ। अपन परोपट्टामे वीरपुरबलाकेँ कुटुमैती नहि भेने इलाकासँ बाहर जा-जा कुटुमैती करए पड़ैत। जहिसँ वीरपुरमे बाहरसँ सुआसिन अवैत ओहिमे विचित्र घाल-मेल। किछु सुआसिन भेजपुरी इलाकाक तँ किछु मगही इलाकाक किछु अंतिका इलाकाक तँ किछु अवन्तिका इलाकाक तेँ ने बोलीमे एकरुपता आ ने सामाजिक रीति-रिवाजमे। जहिना बोली तहिना भोजन बनवैमे आ तहिना ओढ़ब-पहिरबमे। गाम रहितहुँ शहर जेकाँ अनेको बोली गाममे चलैत। जखन कोनो परिवारमे विआह, मूड़न पूजा-पाठ होइत तखन गामक गीति-गौनिहारि एकत्रित होइत। गोसाउनिक गीत शुरु होइतहि सुनिनिहार सभ हँसबो करैत आ व्यंग्यो करैत। जँ कहियो कोनो काजमे लाउडस्पीकर लगा गीति गबैत तँ चारु कातक जनिजाति सभ एकत्रित भऽ-भऽ सुनबो करैत आ हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ तन्नो मारैत।

ओना बीरपुरबला अपनाकेँ लड़ाकू बुझैत। साले-साल जूरशीतल दिन अपन शक्तिक प्रदर्शन सेहो करैत। गामसँ पूब एकटा परती जकरा सभ कुरुक्षेत्रक मैदान कहैत। बीरपुर गाममे पूबे-पछिमे बीचो-बीच ऊँचगर बान्ह। बान्हक दुनू भाग गाम बसल। अनदिना सभकेँ-सभसँ मेल-मिलान। दूटा दियादी पट्टी ऐहेन जे अदहा गाम पसरल। दुनू पट्टी बान्हक दुनू भाग बसल। जूर-शीतल दिन लऽ सौंसे गौंवा बेहरी कऽ एकटा नमहर खस्सी कीनैत। जूरशीतल पावनि दिन ओहि खस्सीकेँ बीच परतीपर खूँटा गारि बान्हि दैत। बेरि टगिते सौंसे गामक लोक गाँजा, भाँग,

ताड़ी, दारु पीबि मस्त भऽ जाइत। चारि बजेसँ अदहा गामक लोक एक भाग आ अदहा गामक दोसर भाग भाला, फरुसा लऽ जमा हुअए लगैत। जखन साँसे गामक लोक जमा भऽ जाइत तखन ढोलिया कसि कऽ एक झोंक ढोल बजबैत। ढोल बन्न होइतहि सभ तैयार भऽ जाइत। जखन दुनू दिसक लोक तैयार भऽ जाइत तखन ढोलिया तीनि बेरि ढोल बजबैत। ढोल बजितहि नवयुवक सभ सन-सन करए लगैत।

एकटा नवयुवक जे गोर वर्ण रिष्ट-पुष्ट शरीर बी.ए. पास छल। एहि बेरि फागुनक सूदमे विआहो भेल छलै ओ खस्सी खोलए आगू बढ़ल। खस्सी लग जा डोरी खोलए लगल। डोरिये खोलै काल दोसर पाटीक एक गोटे कपारपर सोझे फरसा मारलक। दुनू एक्के हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केने। दियाद सेहो। ओहि युवकक कपार दू फाँक भऽ गेल। फरसा मारितहि दुनू दिशि हल्ला हुअए लगल। जाबे हल्ला शान्त होय ताबे ओ युवक मरि गेल। मनोरंजनक विकृति रुप मैदानमे उपस्थिति भऽ गेल।

रुपनगर आ प्रेमनगर एकबधू। ओना आनो-आनो बाधमे दुनूक खेत मुदा एकटा बाधमे दुनू गाँवाक खेत। जखन रुपनगरबला खेत जोतए अबैत तँ धपा कऽ प्रेमनगरबला पकड़ि मारवो करैत आ हरो-बड़द छीनि लइत। तहिना रुपनगरोबला करए लगल। ढेरो मुकदमा दुनू गाँवाक बीच फँसि गेल। पनरहे दिनमे रविया, भोलवा, अनुपा, गोसैमा, रुपना आ मेथराक हर-बड़द छीनि लेलक। तहिना प्रेमनगरक चंचलबा, फकीर, सिंहेश्वर, भैयेजी, सुकल आ सोनेलालक हर-बड़द छीना गेल। मुदा दुनू गाँवा, अखन धरि, बराबड़ियेमे रहल। किऐक तँ सात गोटे रुपनगरबला आ सात गोटे प्रेमोनगरबला मारियो खेलक आ हरो-बड़द छिनौलक। मुदा गाँवामे कैबलत्ती एलै जे जकर-जकर हर-बड़द छिनाइल ओकरे सभकँ भेटलै। मुदा बराबरी रहनहुँ प्रेमनगरबला नफ्फामे रहल। तकर दू कारण- पहिल जे नीक बड़दक जोड़ा पड़ि लगलै आ दोसर जे प्रेमनगरक जे क्यो मारि खेलक ओ जुआन जहान छल तँ अस्पताल जाइक काज नहि पड़लै। मुदा रुपनगरक तीनटा अधबयशू मारि खेलक। जकरा एक महीना डॉक्टरी इलाज करबए पड़लै।

एक दिन साँसे रुपनगरक लोक एकठाम बैसल। सभ मिलि तँइ केलक जे भोरगरे दू बोझ लाठी बाधमे रखि आएब आ जत्ते लोकक खेत ओहि बाधमे छै ओ सभ अपन-अपन हर लऽ कऽ ओहि बाधक खेत जोतए। बढ़िया विचार बुझि सभ मानि लेलक। मगर बुधना मने-मन विचार केलक जे जेहने नफगर विचार भेल तहिसँ कत्ते घाट्टा छै ओहि दिशि ककरो नजरिये ने गेल। हम जे बजबो करब तँ छौँड़ा-मारड़ि बुझि सभ दुसबो करत आ बूढ़वा सभ गरियेबो करत। तइसँ नीक अपने बुद्धिये काज करब। जखन सभ बैसारसँ उठि विदा भेल तखन बुधना

बाजल- ''हमहूँ हर लऽ कऽ ओहि बाध जाएब मुदा हमरा बजारसँ दवाइयो अनैक अछि। ओना हम भोरे जा हर जोतै बेर तक आबि जाएब, जँ कहीं अबेर भेल तँ क्यो ई नहि कहिहह जे बुधना धोखेबाज अछि।''

बुधना बात सुनि सभ हल्ला करैत कहलक- ''ठीक अछि! ठीक अछि। बड़ देरी हेतै तँ जलखै बेर हेतै। सएह ने।''

मने-मन बुधना बुझलक जे दॉव सुतरि गेल। बजारे छियै कैकटा चिन्हारै भेटत। की ओकरासँ कुशल-क्षेम नहि करब? चाह-पान नै करब। अबेर हेबै करत। वुद्धियार सभ कते अछि जे पाँच गामक लोककेँ बजा पनचैती नहि करत। जाएत चैत-वैसाखक रब्बी बनैले।

भोरे सभ संगोर कऽ एक्के संगे हर लऽ विदा भेल। सभ अपन-अपन खेत जोतए लगल। प्रेमनगरक अधिकलाल सेहो ओहि बाध हर-बड़द लऽ खेत जोतैले जाइत। दुरसेसँ रुपनगरबला केँ जेरगर देखि घुमि गेल। गामपर आबि हल्ला क-क कऽ कहए लगल जे रुपनगरबला सभ खेत जोतैए। तत्ते जेरगर अछि जे कहीं अपन-अपन जोति हमरो सबहक ने खेत जोति लिअए। एक तँ दुश्मनीक क्रोध आ दोसर खेत जोतैक डर। सभसँ बेसी डर होय जे जँ कहीं एहिना सभ दिन आबए आ अपन जोति-कोड़ि कऽ अवादि लिअए आ हमरा सबहक परतिये रहि जाएत। सौँसे गामक सभ लाठी लऽ विदा भेल। रुपनगरबला मने-मन खुशी जे हमहूँ सभ तैयारे छिअनि। मुदा जखन लोकक करमान लागल देखलक तखनसँ सबहक करेज डोलि गेलै। ओना कमजोड़िक कारण इहो रहए जे रुपनगरक सिर्फ किसानेटा रहए। तँ कमजोर। मुदा भागियो जाइ आ इम्हर प्रेमनगरबला गाँव हूलि जाए। तखन तँ मरद-मौगीक कोनो ठेकान नहि रहत। मुदा आशा इहो रहए- गाम हूलत तँ गामक मरद-मौगी तैयार भऽ जाएत आ हमहूँ सभ बिचहि गाममे घेरि मरम्मत कऽ देबै। किछु गोटे प्रेमनगरबला बड़द खोलए गेल आ किछु गोटे बाता-बाती करए लगल। सभ बड़दकेँ खोलि हरो आ बड़दो एकठाम केलक। एहि बातक दृढ़ विश्वास रुपनगरबलाक सभ हर-बड़द चलि जाएत। तँ अपन इज्जत बचवै दुआरे अगुआ कऽ मारि ठनलक। खूब लाठी चललै। रुपनगरक किछु भागि गेल आ किछु गोटे मारि खा खेतमे ढेंघ जकाँ बेहोश भऽ पड़ल। एकतरफा मारि खेलक। रुपनगरबला सभ मने-मन सोचए लगल जे मारियो खेलौं, हरो बड़द गेल आ कहीं खेतो ने जोइत लिअए। रुपनगरबला सबहक लाठियो लऽ लेलक आ हरो-बड़द अगुआ लेलक। हँसैत-पिहकारी दैत प्रेमनगरबला गामपर आएल। एक दिशि मरद सभ मारि करैत आ दुनू गामक मौगी सभ कुदि-कुदि गरियबैत। जखन रुपनगरबलाकेँ घरपर लऽ गेल तखन स्त्रीगण सभ कनवो करै आ सरापि-सरापि गरियेबो करैत। गामपर आवि प्रेमनगरबला, बीस

सेर चिन्नी चालिस-पचासटा नेबो आनि शरबत बनवए लगल। जत्ते काल शरबत बनलै तते काल लाठी चलौनिहार सभ अपन मारिक कथा कहलक। मुदा मारिक डर दुनू गौँआकेँ भीतरे-भीतर होइत। डरे ने फेड़ि रुपनगरबला ओहि बाध आएल आ ने प्रेमनगरबला। गामक बगलबला खेत दुनू गोटे अबादलक आ बीचला बाधक खेत छोड़ि देलक।

रुपनगर आ प्रेमनगरक बगले कोस भरि हटि सोनपुर हाट लगैत। सप्ताहमे दू दिन- मंगल आ शुक्रकेँ बेरु पहर लगैत। हाट तँ तीनिये-चारि घंटाक होइत मुदा इलाकाक नामी हाटमे गनल जाइत। हाटमे बजरुआ सामान-कपड़ा, बरतन, सोना-चानीक-बिक्री तँ नहि होइत मुदा देहाती चीज- बड़द, गाए, लकड़ीक बनल कुरसी, चौकी, हँसुआ, खुरपीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, अन्न-पानिक विक्री खूब होइत। तरकारी आ मसल्ला उपजैक इलाका तेँ बाहरोक व्यापारी आबि-आबि कीनैत। रुपोनगरक व्यापारी आ प्रेमोनगरक व्यापारी हाटमे खरीद-बिक्री करैत। मुदा जहि दिनसँ दुनू गामक बीच मारि भेल, तहियासँ दुनू गामक व्यापारी हाट करब छोड़ि देलक। डर दुनू गामक व्यापारीकेँ होइत।

जूरे-शीतलक साँझमे दुनू गामक मारिक जानकारी विसेसरकेँ भेल। समाचार सुनि विसेसरक देहमे आगि लगि गेल। मने-मन विसेसर सोचए लगल जे दुनू गामक लोक मनुक्ख छी आकि मनुक्खक नकल। कहू जे नढ़िया, खढ़िया दुआरे कहीं ऐहेन मारि हुअए। तीनि मास धरि दुनू गामक लोककेँ कते नोकसान भेल आ कते शरीरमे कष्ट। प्रेमनगर विसेसरक समधिऔर आ रुपनगरमे ममियौत बहीनि बसैत। ऐहेन घटनाक उपरान्त जिज्ञासा करब जरुरी, विसेसर बुझैत। मुदा खढ़िया लेल झगड़ा भेल तेँ तामसे ने रुपनगर जा कऽ जिज्ञासा केलक आ ने प्रेमनगर। प्रेमनगरक भार उताड़ि विसेसर बेटाकेँ पठा देलक मुदा अपने नहि गेल। रुपनगर तँ अपने जाएब जरुरी मुदा तामसे सभ जरुरी विसेसरक आगिमे जरि गेल। लड़ाइ वसिएलोपर तामस ओहिना तड़गर। मुदा चारि दिशिसँ उपराग विसेसरकेँ अबए लगल। पहिल उपराग ममिऔत बहीनि दिशिसँ अवैत तँ दोसर बहनोइ दिशिसँ। तेसर समधि दिशिसँ उपराग अबैत तँ चारिम समधीन दिशिसँ। एक्को ऐहेन दिन बाकी नहि रहैत जहि दिन एक्कोटा उपराग नहि अबैत। मुदा उपराग सुनि विसेसरकेँ तामसोमे नवका पानि चढ़ि जाइ।

छह मास बीति गेल। मुदा विसेसरकेँ तामसमे तँ कमी नहि आएल। मने-मन विसेसर विचारए लगल जे की करब उचित हएत। गुनधुन करैत माथपर हाथ दऽ बैसल विसेसरकेँ एकटा जुक्ति फुरल। फुरितहि विसेसर रुपनगर जाइले तैयार भऽ गेल। जुक्ति यएह फुरलै जे जिज्ञासाकेँ भार नहि बुझि भेंटि करब बुझब। मोहिनीकेँ विसेसर कहलक- “हम कने रुपनगरसँ भेलि अबै छी।”

रुपनगरक नाम सुनि हँसैत मोहिनी कहलकनि- “आइ किम्हर सुरुज भगवान उगलखिन जे मन बदलल।”

विसेसर- “मन-तन नै बदलल। तते उपराग अबैए जे नहि गेलासँ दोखी भऽ जाएब। वएह दोख मेटबैले जाइ छी।”

कहि विसेसर रुपनगर विदा भेल। रास्तामे विसेसर ओहि जुर-शीतल दिनक घटनाक संबंधमे सोचए लगल। अदहासँ अधिक रास्ता कटि गेल। तखन मनमे विसेसरकेँ आएल जे नहि जाएब। एतैसँ घुरि जाएब। ने एक्को डेग विसेसर आगू बढ़ैत आ ने पाछू। बीच रास्तापर ठाढ़ भऽ जेबीसँ तमाकूल-चून निकालि चुनबए लगल। तमाकूओ चुनवै आ मने-मन सोचवो करै जे आब जँ घुरि जाएब तँ घरवाली ताना मारत। तोहूसँ बेसी जे जँ आउरो गोटे लग जँ बाजि देने होय तखन कत्तेकँ मुँहमे जबाव देव। तमाकू खा विसेसर आगू बढ़ल। बहीनि ऐठाम पहुँचते बहनोइ दरवज्जापर सँ उठि रास्ता दिशि टहलए लगल। विसेसर बुझि गेल जे तामसे ऐना केलनि। मुदा मान-अपमान बहीनिक ओहिठाम नहि होइत। तँ पोलहा कऽ हमहीं किअए ने पूछिऐनि। थोड़े आगू बढ़ि विसेसर बहनोइकेँ कहलखिन- “पाहुन, ऐना मन किअए उड़ल अछि? कोनो केसमे वारंट-तारंट भेलि हेन की?”

गुम्हरैत बहनोइ उत्तर देलखिन- “गनू झा ठीके कहने छथिन जे ‘एक्के बेरि मुइने माइयोकँ चिन्हलौं।’ सभ दिनसँ कुटुम छलौं बेड़ि पड़ल तँ अहूँ छोड़ि देलौं।”

चुपचाप विसेसर सुनैत। हँ-हूँ, किछु नहि बजैत। मने-मन हँसियो लगैत जे- ‘गदहा खसल मेघसँ तँ रुसि रहल सौँसे गौँवासँ।’ हँसी कऽ दाबि विसेसर कहलकनि- “वएह सभ बुझैले तँ एलौंहेँ, जे की कोना भेल? आऊ एकठाम बैसि सभ बुझा दिअ। बुझल रहत तखन ने किछु सोचब।”

ताबे अंगनासँ बहीनि निकलि डेढ़ियापर आबि ठाढ़ भऽ गेलि। विसेसरसँ छोट बहीन। गोड़ नहि लागब देखि विसेसर बुझलक जे दुनू गोटे एक्के रंग तमसाएल अछि। हमहूँ तँ गप्पे करए एलौं। तँ जे भऽ रहल अछि ओ सभ नीके।

बहनोइ- “भैया! गामक इज्जतक सबाल भऽ गेल। जँ अछैते जिनगी गामक इज्जत चलि जाएत तँ जीवियै कऽ की करितौं।”

बहनोइक बात सुनि विसेसर मने-मन हँसवो करैत जे बड़ इज्जत बचेनिहार छथि। मुदा हँसी कऽ दवैत विसेसर पूछलकनि- “इज्जत बचा लेलहुँ, ई तँ बड़का काज केलहुँ। हमहूँ धड़फड़ाइले आएल छी। रहब नहि। तँ एकटा बात कहू जे अखन नीक छी की ने?”

विसेसरक बात जना बहनोइक हृदयमे धक्का देलक। बहनोइक मन तिलमिला

गेल। बोलीक कठोरता बदलि नरम हुअए लगल। अफसोस करैत बहनोइ बाजल- "भैया की कहबनि? छह माससँ जे दशा भऽ रहल अछि, ओ तँ अपने हृदय जनैए। एक्के बीघा खेत अछि। जहिमे पनरह कट्ठा खसले रहि गेल। पाँच कट्ठाक उपजासँ की हएत। एकटा बड़दो छल ओहो प्रेमनगरबला छीनिये लेलक। खूँटापर गाए छल ओहो दवाइ-दारुसँ लऽ कऽ केसक खरचामे बिक गेल। गुजर करब मोसकिल भऽ गेल अछि।"

बहनोइक बात सुनि विसेसर मन तामसे आगि भऽ गेल। मुदा किछु बाजए नहि चाहैत। चुपचाप उठि विदा भऽ गेल।

बाध खसल रहने घास उपजल। मुदा घसबाहिनियो सभ डरे घास छिलए नहि जाइत। ने रुपनगरक घसवाहिनी जाइत आ ने प्रेमनगरक। एक दिन आठ-दशटा रुपनगरक घसवाहिनी घास छिलए बीचला बाध गेलि। प्रेमनगरक घसबाहिनी देखलक। ओ चुपचाप गाम आबि पनरह-बीसटा छड़े-छाँट घसबाहिनीक संगोर कऽ बाध दिशि चलल। थोड़े दूर गेलापर सभ छिड़िया कऽ बढ़ैत गेलि। रुपनगरक घसबाहिनी घास छिलैमे मस्त। चारु भरसँ प्रेमनगरक घसबाहिनी रुपनगरक घसबाहिनीकेँ घेरि लेलक। जखन प्रेमनगरक घसबाहिनी रुपनगरक घसबाहिनीक लग आइलि, रुपनगरक घसबाहिनीक नजरि पड़लै। प्रेमनगरक घसवाहिनीकेँ देखि रुपनगरक घसबाहिनी डरल नहि। आठो-दशो घसबाहिनी साड़ीक फाँड़ बान्हि, हाथमे हाँसू लऽ ठाढ़ भऽ गेलि। प्रेमनगरक घसबाहिनीमे एकटा अधबेसू छलि जेकरा सभ झगड़ाउ दादी कहैत। दुनू गामक घसबाहिनी दू दिस ठाढ़ भऽ झगड़ा करैले तैयार भऽ गेलि। झगड़ाउ दादी बाजलि किछु नहि मुदा हँसुएसँ इशारामे कहलक- "जे आँखि निकालि लेबउ। दादीक इशारा देखितहि रुपनगरक घसबाहिनी गारि पढ़ब शुरु केलक। दुनू दिससँ गारि चलए लगल। रुपनगरक देवसुनरी प्रेमनगरक माधुरीकेँ कहलक- "गै मोटकी, तोरा की होइ छौ जे हम हाथी छी। सभकेँ पीच देवइ। सूढ़ जे नमरल छौ ओकरा जड़ि भिरा कऽ काटि लेबौ।"

देवसुनरीक बात सुनि माधुरी कहलकै- "हे गइ ठोर नमरलही, देखै छीही हँसुआ दुनू ठोर आ नाक काटि लेबउ।"

माधुरीक बात सुनितहि रुपनगरक घसबाहिनी आगू बढ़ि प्रेमनगरक घसबाहिनी झोंटा पकड़ैले लगमे चलि आइलि। प्रेमनगरक घसबाहिनी बेसी छलि। दू-दू, तीनि-तीनि गोटे मिलि एक-एकटा रुपनगरक घसबाहिनीकेँ क्यो झोंटा पकड़लक तँ क्यो गट्टा। रुपनगरक घसबाहिनीकेँ लिरी-बिरी कऽ पटकए लगल। दुनू गामक घसबाहिनीक बीच मुक्का-मुक्की चलए लगल। मारि तँ प्रेमनगरक घसबाहिनी सेहो खेलक मुदा बेसी रुपनगरक घसबाहिनी खेलक। रुपनगरक झगड़ाउ बुढ़िया

सबहक हँसुआ, पथिया समेटि गाम दिश विदा भेलि।

साल भरिक झगड़ा-झंझटसँ दुनू गामक लोक पस्त भऽ गेल। विसेसर पाँच गामक पंच कऽ बैसाए दुनू गामकेँ मिलान करौलक।

--६--

दलानक चैकीपर देवालमे ओङठि उत्तर मुँहे गंगानन्द बैसि आँखि बन्न कऽ दुखक अथाह सागरमे उगैत-डुबैत। मनमे यएह होइत जे खेत निलाम होइपर अछि, जँ समएपर मलगुजारी नइ दऽ सकब तँ निलाम भइये जाएत। जँ खेत चलि जाएत तँ जीवि कोना? अखन धरि जे परिवार समाज आ कुटुम्बक बीच प्रतिष्ठित बुझल जाइत छी, ओ कतऽ चल जाएत। जहिना कोनो बगीचा फल-फूलसँ लदल हवाक सिहकी पाबि झुमैत रहैत आ एकाएक अन्हर-तूफान आबि गाछ-बिरीछकेँ खसा-पड़ा दैत, वएह स्थिति तँ हमरो भऽ रहल अछि। एत्ते रहलापर जखन हमर ई गति भऽ रहल अछि तखन जकरा कम छैक, ओकर गति की हेतैक? हमरे खेत जखन निलाम भऽ जाएत तखन हमहीं की करब। तीनि भाँइक भैयारी अछि। परिवारो नमहर अछि। अखन धरि अपन सभ वुझि दिन-राति सेवा करैत रहलौं। मुदा जतेक अपन बुझि करैत रहलहुँ तत्ते भाए-भावो आलसी बनैत गेल। सिर्फ खाइ-पीवै आ आरामसँ रहैक चिन्ता टा सभकेँ रहलै। जँ जमीन निलाम हएत तँ सिर्फ हमरेटा नहि हएत। सबहक हेतैक। निलामक लेल किछु समए बँचल अछि तँ ई अंतिम परियास कऽ कऽ देखिऐक। दुनू भाएकेँ पूछि लेब उचित अछि।

मने-मन गंगानन्द सोचवो करैत आ निलामक डरे करेजो थरथड़ाइत। आँखिक आगूमे झल-अन्हार बुझि पड़ैत।

गंगानन्दकेँ गुम-सुम बैसल देखि स्त्री -पार्वती- आबि पूछलकनि- ''मोन-तोन खराब अछि जे एत्ते मन्हुआइल छी। मुँहक सुरखी उतड़ल बुझि पड़ैए।''

अपन व्यथा कऽ दबैत गंगानन्द पत्नीकेँ उत्तर देलखिन- ''नहि, मन तँ खराव नइ अछि मुदा परिवारक जे भविस देखै छी तइसँ मन चिन्तासँ घेराएल अछि। कोनो रस्ते ने सुझैए।''

गंगानन्द आ पार्वतीक बीच होइत गप्प-सप्प सुनि रीता सेहो ऐली। जहिना गंगानन्द भाएक क्रिया-कलापसँ दुखी तहिना रीतो दुनू परानी। पिताक समएमे जहिना गंगानन्दक परिवार चैनसँ चलैत तहिना रीतोक। अखुनका जकाँ ने अन्ट-सन्ट खर्च परिवारमे आ ने एत्ते नमहर छल। तँ रौदी-दाही भेनहुँ एत्ते दिक्कत नहि

होइत। जन-बोनिहारक हाथे सभ काज चलि जाइत। गंगानन्द रीताकेँ कहलखिन- “दाय, कने कक्का सभकेँ बजौने अबहुन?”

रीता उठि कऽ यमुनानन्द आ श्यामानन्दकेँ बजबए गेली। तीनि गोट समस्या गंगानन्दकेँ तीनि दिशिसँ घेड़ने। पहिल, खेत निलामीक। दोसर, आइ धरि दुनू छोट भाएकेँ बेटा जेकाँ सेवा करैत आएल छलाह जे बिगड़ि कऽ गाराक घेघ भऽ गेलनि। तेसर, रीताक दुर्दशा। मने-मन गंगानन्द सोचति जे जँ रीता बेटा रहैत तँ एहि सम्पत्तिक हिस्सेदार होइत मुदा से नहि भेलासँ कि ओ कष्ट काटए आ हम चुपचाप देखैत रही। वेचारीकेँ चारि-चारिटा बेटी अछि, कोना विआह-दान पार लगतै। जँ कतौ गरीब-गुरबा घरमे बेटीक विआह करत तँ जिनगी भरि वेचारी नातिन सभकेँ दुख हेतै।

रीता अंगनेमे रहि गेली यमुनानन्द आ श्यामानन्द दरवज्जापर आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू भाँइ यमुनानन्द आ श्यामानन्द एत्ते मन्हुआइल गंगानन्दकेँ कहियो नहि देखने जत्ते आइ देखलनि। मने-मन दुनू भाँइ सोचए लगल जे भरिसक कोनो नमहर मुसीबतमे भैया फँसल छथि। मुदा किछु बाजल नहि। आइ धरि गंगानन्द जोरसँ कहियो किछु भाए सभकेँ कहने नहि तँ बजैत संकोच होइत। मुदा करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाएकेँ पूछलक- “बौआ, दू सालक रौदी घरकेँ तोड़ि देलक। एक्को सेर उपजा-बाड़ी नहि भेल। खर्च तँ परिवारमे हेबे करत। कोना पार लगतह? मलगुजारी से पछुआ गेल अछि जहिसँ खेत निलाम होइक स्थितिमे आबि गेल अछि। की करवह?”

गंगानन्दक बात सुनि दुनू भाँइ ठरड़ा गेल। मुँह निच्चा कऽ लेलक। जहिना जड़ि काटल गाछ अरड़ा कऽ जमीनपर खसैत तहिना यमुनानन्द आ श्यामानन्दक चढ़ल मन झमान भऽ खसल। तरेतर गंगानन्द सेहो आगिपर चढ़ल घी जेकाँ पघिलैत। मुदा जिनगी ओहन मोरपर पहुँच गेलनि जे भैयारीक स्नेह शीशा जेकाँ चूर-चूर हुअए लगलनि। एक परिवार तीनि परिवारमे विभाजित भऽ जाएत। दुनू भाएकेँ चुपचाप मूड़ी गोति बैसल देखि दोहराकेँ गंगानन्द कहलखिन- “बौआ, चुप रहने काज नहि चलतह। भारी विपत्तिमे परिवार फँसि गेलह। जँ ओहि विपत्तिकेँ मेटबैक कोशिश नहि करवह तँ दू दिनक उपरान्त सभ चीज हराएल बुझि पड़तह। तँ अखन समए अछि बचैक जोगार करह।”

मिरमिरा कऽ यमुनानन्द बाजल- “भैया, अखन धरि तँ हम ने परिवार बुझलिऐक आ ने कोनो चिन्ता कहियो भेल। निलामसँ बँचैक जोगार तँ अहीं करबै।”

यमुनानन्दक बात सुनि गंगानन्द कहलखिन- “रौदी तँ अपने परिवारटा लेल नहि भेलि, सभले भेलैए। जँ एकटा परिवारमे कोनो बेर-बेगरता होइ छै तँ

समाजमे काज चलि जाइ छैक। मुदा से तँ नहि अछि। ककरा के सम्हारत। सभ तँ अपने तबाह अछि।''

यमुनानन्द- ''तखन की करबै?''

गंगानन्द- ''खेत बँचैक एकटा उपाय हमरा नजरिमे अबैए। ओ ई जे घरमे जत्ते गहना-जेबर अछि ओ बन्हकी लगा मलगुजारी अदाइ कऽ दियै आ पछाति बन्धक छोड़ा लेब। किछु सुदिये ने लागत मुदा खेतो बँचि जाएत आ गहनो-जेबर।''

गंगानन्दक विचार सुनि श्यामानन्द बाजल- ''बड़ सुन्नर विचार अछि मुदा स्त्रीगण सभ अपन गहना दइले तैयार हेती तहन ने। अगर जँ ओ गहना दइले तैयार नहि होथि, तहन की करबै?''

गंगानन्द- ''एक बेरि जा बुझा कऽ कहुन, अगर नहि मानती तँ खेत जेतनि।''

यमुनानन्द आ श्यामानन्द उठि कऽ आंगन जा अपन-अपन पत्नीकेँ सभ बात बुझा-कहलखिन। मुदा जमीनक सुख-दुखसँ अनभिज्ञ आ गहनाक सिनेही औरत ने यमुनानन्दक बात मानलकनि आ ने श्यामानन्दक। दुनू भाँइ दरबज्जापर आबि गंगानन्दकेँ कहलकनि। दुनू भाँइक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ गेला। आँखि नोरा गेलनि। मने-मन गंगानन्द सोचलनि जे जँ खोलि कऽ दुनू भाँइकेँ नहि कहि देवनि तँ पछाति हमहीं दोखी हएब। करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाएकेँ कहलखिन- ''सौतु संङे घुन पीसव उचित नहि। तीस बीघा जमीन अछि। दस-दस बीघा तीनू भाँइक हिस्सा हेतह। तँ अपन-अपन हिस्सा बचावह वा बुराबह। सभ बुड़वैइये पाछू लगल छह तँ सभ कुछ बाँटि लाय। जेठ भाय होइक नाते हम कहि देलियह।''

तीनू भाँइक बीच घरोक वस्तु-जात आ खेतो बँटवारा भऽ गेल। बँटवाराक उपरान्त यमुनानन्दोक पत्नी आ श्यामानन्दोक पत्नी तरे-तर खुश। मुदा दुनू परानी गंगानन्द दुखसँ व्यथित।

किरिण उगिते पटवारी छोटकी चैकीपर बैसि आगूमे अयना -ऐना- आ पावडरक डिब्बा रखि ब्रुशसँ दाँत मजैत। तेसर स्त्रीकेँ, जे वएसमे पटवारीक बेटी जेकाँ बुझि पड़ैत, तीनि सन्तान। जेठ बेटी आ छोट दुनू बेटा। लूँगी-गंजी पहिरने दतमनि करैत सिपाही-दुखन सेहो आएल। सिपाहीकेँ अबिते पटबारी पत्नीकेँ कहलक- ''चाह बनाउ?''

पत्नी चाह बनबैले गेली। पटवारियो आ सिपाहियो कुड्डुर कऽ ओसारपर आबि कुरसीपर बैसि गप्प-सप्प करए लगल। आंगनसँ पटवारीक बेटी दूटा प्लेटमे चारि-

चारिटा नमकीन बिस्कुट आ चारि-चारि फाँक सेब आनि दुनू गोटेक आगुमे रखि पानि अनैले भीतर गेली। जाबे चाह बनल तावे दुनू गोटे -पटवारी आ सिपाही- सेब आ बिस्कुट खा पानि पीबल। पानि पीबिते पटवारीक पत्नी लीला चाह नेने ऐलीह। लीलाकेँ देखि सिपाही गुलाबी मुस्की दैत बाजल- ''पटवारी सहाएब, अहाँक हुकूम पूरा केने एलौं।''

हुकूम पूरा करैक बात सुनि लीलो ठाढ़ भऽ गेली। आँखि गुड़ारि मुँह बाँबि लीला सिपाही दिशि देखए लगली। बेटी विआहक जिज्ञासासँ पटवारी सिपाहीकेँ पूछल- ''केहेन परिवार गंगानन्दक छन्हि?''

घटकक ढ़ंगसँ सिपाही कहए लगलनि- ''भगवानकेँ जँ नीक करैक रहै छनि तँ अपन रंग-विरंगक लीला पसारि दैत छथिन। अहाँकेँ नीक हेवाक अछि तँ रौदियाह समए आ मालगुजारिक विपत्ति गंगानन्दक कपारपर आएल। नहि तँ ओहन कुल-शील घरमे कुटमैती होएब असंभव अछि।''

'कुल-शील' सुनितहि लीलाक हृदयमे गुदगुदी लगए लगलनि। चैबन्नियाँ मुस्की दैत लीला सिपाहीकेँ जिज्ञासासँ पूछल- ''नीक खानदान छन्हि?''

गंगानन्दक बराइ करैत सिपाही कहलक- ''अपना इलाकामे एक्केटा वंश ऐहन अछि जे सभसँ पैघ बुझल जाइत। ओहि वंशक गंगानन्द छथि। सिर्फ वंशेटा पैघ नहि छन्हि हुनक व्यवहार आ विचार सेहो तेहने छन्हि। जखन हुनका ऐठाम जाएब तँ बुझि पड़त जे मनुक्खक नहि देवताक घर छियैक। जुआन-जहानक कोन गप्प जे अस्सी बर्खक बुढ़हो-पुरान स्त्रीगण सदिखन मुँहपर साड़ी रखने रहैत छथि।''

सिपाहीक बातसँ लीलाक दिल धड़कए लागलि। मनमे हुअए लगलनि जे जे विआह काल्हि हएत से आइये भऽ जाए। उत्तेजित भऽ लीला सिपाहीकेँ कहलखिन- ''खर्च जे होय तकर एक्को पाइ चिन्ता नहि करब। धन भेलापर सभ इज्जत बनबैए। अवसर हाथ लगल जकरा छोड़ब मुरुखपना हएत। आइये जाउ आ बात पक्का-पक्की केने आउ।''

लीलाक उत्सुकता देखि सिपाही कहलकनि- ''मेम सहाएब, दुखन सिपाही ओते कच्चा खेलाड़ी अछि जे फँसल शिकार छोड़ि देत। जखन डेग उठेलौं तँ काज कइये कऽ छोड़ब। काल्हिये फेरि जा दिन-ठेकान तँइ केनहि आएब।''

खुशामदी बोलीमे लीला बाजलि- ''जँ ओहि खानदानमे कुटुमैती भऽ गेल तँ अहाँकेँ मुँहमंगा इनाम देव।''

मने-मन सिपाही बुझैत जे जहिना पनहाएल गाए औँढ़ मारैत अछि तहिना लीलो अछि तँ मौकाक लाभ उठा ली।

लीला आंगन गेलि। सुनयना दरवज्जा दिसक खिड़की लग ठाढ़ भऽ सभ बात सुनैत। सुनयना बहराक बातो सुनैत आ मने-मन पाँच साल उपास कऽ

दुर्गास्थानमे साँझ देवाक कबुलो केलक। आंगन आबि लीला भगवती आगू जा आँचर पसारि, कुमारि भोजन कबूला केलनि। घरसँ निकलि लीला अंगनाक कुरसीपर बैसि सोचए लगली जे हम सभ तँ कर्तव्ये करब, भाग्य तँ संग सुनयनेक देत।

पटवारीक तेसर स्त्री लीला। जखन पटवारीक उमेर पचास वर्खसँ टपि गेल तखन पनरह बरखक लीलाकेँ फुसला कऽ विआह केलक। धन देखि लीला, उमेरक परवाह केने बिना, पटिया गेलि। पटवारीक पहिल विआह, जे पिता करौने रहनि अपने जातिमे भेलि रहनि। जइ स्त्रीसँ दू बेटा आ दू बेटी। चारु जुआन। नाति-नातिन आ पोता-पोती सेहो। बाप-दादाक घर-घरारीक अतिरिक्त, सए बीधा निलामी जमीन सेहो गाममे बनौने। दोसर स्त्रीमे एकटा बेटा आ तीनिटा बेटी। चारुकेँ विआह-दुरागमन भऽ गेल। बेटी सासुर बसैत आ बेटाकेँ सेहो दोसर गाममे पचास बीघा जमीन, गाछी-कलम, पोखरि, इनार, घर-दुआर सभ कुछ बना देने। जहिठाम दोसर स्त्री आ बेटा-पुतोहू रहैत। तेसर विआह कचहरीक नोकरानीक बेटीसँ केने। जहि स्त्रीक बेटी सुनयना। वएह सुनयनाक विआहक गप्प-सप्प चलैत। हीन जातिक बेटी रहने पटवारीकेँ छाती धकधक करैत जे जँ कहीं गंगानन्द बुझि जेता तँ कुटुमैती भङठि जाएत। पटवारी दुखन सिपाहीकेँ कहलक- "दुखन, अहाँसँ तँ कोनो बात छिपल नहिये अछि मुदा जातिक भाँज गंगानन्दकेँ नहि लगनि से ओरिया कऽ गप्प-सप्प करब।"

पटवारीक बात सुनि दुखन हँसैत कहलकनि- "हम ओते अनाड़ी छी जे गंगानन्द पेटक बात बुझि जेताह पहिलुका सासुरक कुल-मूलक पता देवनि की ने।"

सिपाहीक बात सुनि पटवारीक मन असथिर भेल। दुखन सिपाहीकेँ पोल्हबैत कहलक- "अहाँकेँ हम छोट भाए बुझैत छी। अहूँ जे जना कहब से हम करब। मुदा विआह काज हूसए नहि।"

दुखन- "हाकिम, रसीदक एकटा सादा जिल्द अपन दसखत कए कऽ दऽ दिअ। पहिने रसीद दऽ गंगानन्दकेँ हाथमे लऽ लेब। जखन पकड़मे चलि आओत तखन अनेरे काज सुढ़िया जाएत। आइये अहाँ एकटा जिल्दमे दसखत कए कऽ दऽ दिअ काल्हि भोरे हम जाएब।"

ओसारपर सँ उठि पटवारी कोठरी जा एकटा रसीदक जिल्दमे अपन हस्ताक्षर करए लगल। पचास रसीदक एकटा जिल्द। सौँसे जिल्दमे हस्ताक्षर कऽ पटवारी दुखनकेँ दऽ देलक। बाहरमे बैसि दुखन मने-मन चपचपाइत जे आमदनी भेटि गेल। आंगनसँ लीला आबि दुखनकेँ एक भरि सोनाक चेन दैत कहलक- "ई नेने जाउ। विआहक बात पक्का करैत बड़क हाथमे सगुन दऽ देवइ।"

रसीदक जिल्द आ सोनाक चेन लऽ दुखन अपना डेरामे आएल। डेरामे आबि दुखन रसीदकेँ उघारि-उघारि देखए लगल। पचासो रसीद देखि दुखन जिल्द कऽ अढ़मे झाँपि कऽ रखलक। गदगद् मने दुखन चौकीपर बैसि सोचए लगल जे हमहूँ तँ गरीबेक बेटा छी। जमीन्दारियो जाइये रहलै हेन। तँ हमरासँ जते गरीबकेँ उपकार भऽ सकतै से करब। जँ किछु कमाइयो-खटाइ भऽ जाएत तँ सेहो कऽ लेब।

राष्ट्रीय आन्दोलन पूर्ण जवानीमे आबि चुकल छल। १९४० ई.क उपरान्त राजा-महराजा आ जमीन्दार बुझए लगल छल जे आब हमरा जाइक बेरि आबि गेल। देशक आन्दोलन दू दिशामे बढ़ि रहल छल। गाम-गाममे बकास्त जमीनक लड़ाइ शुरु भऽ गेल। जमीन्दार आ जमीन्दारक लगुआ-भगुआ सभ अपन हाथ ससारैमे लगि गेल। जकरा जतए जे फबै ओ हथियाबए लगल। मुदा जमीन्दारक जे पैछला व्यवहार रहलै ओहिसँ किसान डराइते छल। राष्ट्रीय आन्दोलनमे जहि तरहेँ जन-समर्थन भेटि रहल छल ओहि तरहेँ जनतामे जागरुकता नहि आबि सकल छल। पैछला जे जमीन्दारक शोषण आ क्रिया-कलाप छल ओहिसँ किसान त्रस्त छल। मुदा जमीन्दारक लगुओ-भगुओ आ जमीन्दारो बुझि रहल छल जे जमीन्दारी अंतिम अवस्थामे आबि गेल। बकास्त जमीनक लड़ाइ आम जनताक बीच पहुँच गेल छल जहिसँ किसानोक बीच नव-चेतना जगि रहल छल। एहि लड़ाइ सँ मिथिलांचलो अलग नहि छल। मिथिलांचलोमे गाम-गाम बकास्तक लड़ाइ पकड़ि नेने छल। मुदा बटाईदारी, हदबंदीक कानून नहि बनि सकल छल।

--७--

दलानक ओसारक एक जनियाँ कोठरीमे गंगानन्द बैसि परिवारक दुर्दशाक संबंधमे सोचैत। जहिना बसन्त आ ग्रीष्मक बीचक सीमानपर मौसम रहैत तहिना सुख-दुखक बीच गंगानन्दक परिवार। अखन धरि जे परिवार समाजमे सुभ्यस्त, इज्जतदार बुझल जाइत ओ जमीन निलाम भेने, टुटि कऽ कतए चल जाएत। समाज आ संबंधीक बीचक संबंध की भऽ कऽ रहत। जहि जमीनक कोरामे अखन धरि खेलेलौं ओहिक उपजासँ जिनगी चलैत रहल, जमीन निलाम भेलापर सभ चलि जाएत। हम केहेन करमजरु भऽ गेलहुँ जे देखते-देखते सभटा चलि जाएत। धिया-पूताक कपारमे विधाता की लिखि पाठौलखिन जे गुजर-बसरसँ लऽ कऽ विआह-दुरागमन होएव कठिन भऽ जेतइ। जहि परिवारसँ गरीब-गुरबासँ लऽ कऽ भूखल-पियासल तककेँ एक मुट्ठी अन्न खाइले भेटैत छलैक ओ कतए चल जाएत।

मने-मन गंगानन्द सोचबो करैत आ दुनू आँखिसँ नोरो टघरैत। सुखल मुँह, करुआइल आँखि आ करिछौन भेलि ठोर, पार्वती आबि गंगानन्दक आगूमे ठाढ़ भऽ गेली। आइ धरि जहि सिनेहक नजरिसँ गंगानन्द पार्वतीकेँ देखैत छल आ पार्वती गंगानन्दकेँ ओहिमे दुनूकेँ बदलल रुप बुझि पड़ए लगल। ने गंगानन्द किछु बजैत आ ने पार्वती। जना दुनू गोटे अपन-अपन व्यथाक घूँट मने-मन पीवैत। दुनू गोटेकेँ जिनगीक आशा तिल-तिल कऽ कम हुअए लगल। अथाह पानिक बेगमे दुनू अगैत-डूबैत। तरे-तर दुनूक हृदयमे बुकौर लगैत। गंगानन्दकेँ होइन जे बोम-फाँड़ि कऽ कानि सभ व्यथा कऽ आँखिक नोरक संग बहा दी, मुदा समएक गतिकेँ के रोकि सकैत अछि। दहिना हाथसँ पार्वती आँखिक नोर पोछैत गंगानन्दकेँ कहलखिन- ''दुख कएलासँ की हएत। जखन भगवानक यएह लीला भऽ गेलनि तखन मनुखकेँ कननहि की हएत? हरश्चन्दक कथा बुझले अछि। जहि दिन जेत्ते दुख हेवाक अछि ओ तँ हेबे करत।''

आँखि उठा गंगानन्द पार्वतीकेँ देखि पुनः आँखि निच्चाँ कऽ मने-मन सोचए लगल। सहोदर भाए, जकरा बेटा जेकाँ बुझै छलौं से दियाद बनि गेल। समटल परिवार राइ-छित्ती भऽ रहल अछि। धीरक पातर टेमीक ज्योति गंगानन्दक मनमे आएल। आशाक कोमल अंकुर अंकुरित भेल। साहसक लालिमाक रंग आँखिक आगूमे गंगानन्दकेँ बिजलोका जेकाँ छिटकल। दुनू हाथसँ दुनू आँखिक नोर पोछि उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। पार्वती मूड़ि गोतने बगलमे ठाढ़ि। जहिना क्यो किछु पएवा लेल देवताक गुहाड़ि लगबैत तहिना गंगानन्द, नचारीक नजरिसँ पार्वतीकेँ गुहाड़ि लगबैत कहलक- ''आइ भरि समए अछि। भैयारीमे भिनाउज भइये गेल मुदा अखन धरि दुनू भाएकेँ बच्चा जेकाँ पोसलहुँ ऐहन समएमे छोड़ब उचित नहि हएत। अहाँ अपन सभ गहना दिअ। अगर बन्हकी लगौलासँ काज सम्हरि जाएत तँ बन्हकिये लगा लेब नहि तँ बेचि लेब। जँ से नहि करब तँ सभ खेत-पथार चलि जाएत। खेत बँचत आ समए-साल नीक हेतइ तँ उपजा बेचि कऽ छोड़ा देब नहि तँ किछु खेते बेचि कऽ छोड़ा देब।''

एते बात बजैत-बजैत गंगानन्दक देह थरथर कपए लगल। मुदा भलमानुस घरक बेटी पार्वती, पतिक व्यथाकेँ अपन व्यथा बुझि मुस्कुरा कऽ बजलीह- ''गहना की कोनो हमरेटा छी, अहाँक नहि छी आकि धिया-पूताक नहि छियैक। सबहक छियैक। ओ -गहना- तँ बेरे-बेगरताक लेल रहै छै की ने।''

पार्वतीक बात सुनि गंगानन्दक मन हल्लुक भेल। मुँहसँ मुस्की निकलल। गहना आनैले पार्वती आंगन गेली। निराशाक समुद्रसँ गंगानन्द आशाक छोट-छीन पोखरि जाए लगल। गहनाक पेटी नेने पार्वती दुआरपर आबि गंगानन्दक आगूमे राखि देल। पेटी आगूमे देखि गंगानन्दकेँ मनमे भेल जे कहीं खिसिया कऽ तँ नहि

आगूमे रखलनि। मुस्कुराइत गंगानन्द पार्वनीकेँ कहलखिन- ''पेटी खोलब, तखन ने अंदाजसँ देखि गहना लेब। ओना कोना बुझवै।''

पार्वती पेटी खोलि सोनाक गहना एक भाग आ चानीक एक भाग कऽ रखि कहलखिन- ''जत्तेसँ काज सम्हरत ओते लऽ लिअ।''

अखन धरि गंगानन्द पार्वतीक गहना नहि देखने छल। गहना देखि गंगानन्द झुब्ध भऽ गेल। सोचलक जे दुइयोटा सँ काज चलि सकैए। अगर दूटा बोहाइयो जाएत तइयो बहुत रास गहना पार्वतीकेँ रहबे करतनि। दूटा सोनाक गहना छाँटि गंगानन्द पार्वतीकेँ शेष सभ गहना रखि लइले कहलक। दुनू गहनाकेँ रुमालमे बान्हि पार्वतीकेँ गंगानन्द कहलखिन- ''कने झब दे जलखै बना दिअ बजार जाएब। कखन आएब कखन नहि तेँ किछु खेने रहब तँ बढ़ियाँ रहत।''

सभ गहना कऽ पेटीमे रखि पार्वती मने-मन सोचए लगली जे जँ दूटा बोहाइयो जाएत तइयो बहुत रहबे करत।

चुल्हि पजारि पार्वती जलखै बनबए लगली। गंगानन्द लोटा-बाल्टी लऽ नहाइले कलपर गेल। दुनू पारानी यमुनानन्द घरक पलंगपर बैसि गप्प-सप्प करैत। गप्पक क्रममे यमुनान्द पत्नीकेँ पूछल- ''भिन्न भेलासँ खुशी अछि कि दुख?''

मुस्कुराइत पत्नी उत्तर देल- ''खुशी तँ एते अछि जहिसँ उपर हुअए नहि। जहिये बाबू मुइलाह तहिये जँ भिन्न भऽ गेल रहितहुँ तँ बेसी नीक होइत। किऐक तँ अखन धरि जे दुख कटलौं ओ नहि काटए पड़ैत।''

यमुनानन्द- ''की दुख कटलहुँ?''

पत्नी- ''अखन धरि नोकर-चाकर जेकाँ रहैत छलौं। जना हमर किछु एहि सम्पत्तिमे रहबे ने करै। ने घरमे एक्को पाइ मोजर छल आ ने कोनो काजमे पूछ-आछ। आब अपन सम्पत्ति भेलि जे मन फुरत से करब। क्यो हाकिमो-महाजन तँ नहि रहत।''

घटक बनि दुखन सिपाही गंगानन्द ऐठाम आएल। सिपाहीकेँ देखि गंगानन्दक हृदय हर्ष-विषादक बीच लटकि गेल। दुखन सिपाहीक बोलीमे मलिकाना ताव नहि बल्कि घटकक मधुआइल आवाज। दुखनकेँ कुरसीपर बैसाय गंगानन्द आंगन जा पत्नीकेँ चाह बनबैले कहलखिन। आंगनसँ दरबज्जापर आबि गंगानन्द दुखनसँ गप्प-सप्प करए लगल। फुसफुसा कऽ दुखन सिपाही कहलकनि- ''अखन दुइये गोटे छी। कोठरीमे चलू, किछु खास गप्प करैक अछि। बहरामे जँ क्यो गप्पक बीचमे आओत तँ गड़बड़ हएत एकांती गप्प अछि।''

सिपाहीक गप्प सुनि गंगानन्दक जरल मन शीतल भेल। दुनू गोटे कुरसीसँ उठि ओसारेक कोठरीमे जा गप-सप करए लागल। गंगानन्दकेँ पोल्हबैत सिपाही कहलकनि- ''हम तँ सिपाही छी। हमरा बुत्ते जते उपकार भऽ सकत तत्ते जरुर

करब। पत्नियोकेँ बजा लिअनु। परिवारिक गप्प छी।''

आंगनसँ पार्वती चाह नेने ऐलीह। चाहक गिलास रखि पार्वती गंगानन्दक पाँजरमे ठाढ़ भऽ गेली। एक घोट चाह पीबि दुखन टेबुलपर गिलास रखि, झोरासँ चद्दरिमे लपटल रसीदक जिल्द निकालि बाजल- ''पैछला जे रसीद अछि ओहिसँ खाता खेसरा आ रकबा मिला कऽ एहि रसीदमे चढ़ा लिअ।''

रसीदक जिल्द देखिते दुनू परानी गंगानन्दक दिल धड़कए लगल। मनक सभ क्लेश निकलि कऽ उड़िया गेल। मुरझाएल चेहरा एकाएक खिल उठल। हँसैत गंगानन्द सिपाहीकेँ कहलक- ''बहुत पैघ उपकार अहाँ केलहुँ। जीवनमे कहियो अहाँक उपकार नहि बिसरब।''

रसीद दऽ सिपाही गंगानन्दकेँ कहलकनि- ''अहाँ पटवारी जीसँ कुटुमैती जोड़ि लिअ। अहाँक जेहने बेटा भव्य छथि तेहने पटवारी जीकेँ बेटी। राजक अंग सेहो छथि। कतौ तँ बेटाक विआह करबे करब मुदा ओहिठाम कुटुमैती कएलासँ कोनो चीजक कमी नहि रहए देताह।''

सिपाहीक बात सुनि गंगानन्द दुनू परानीकेँ स्वर्गक सुखक एहसास भेलनि। मने-मन दुनू परानी गदगद होइत। कनडेरिये आँखिये गंगानन्द पार्वती दिशि देखि आँखियेसँ किछु पूछल। पारवतियो आँखियेसँ स्वीकारोक्ति उत्तर देल। दुनू परानीकेँ चुप देखि सिपाही सोनाक चेन निकालि पार्वतीक हाथमे दैत कहलकनि- ''एकरा रखू। सगुनक रुपमे पटवारी जी देलनि।''

सोनाक चेन पार्वती लऽ मने-मन सोचए लगली। मुस्कुराइत गंगानन्द पार्वतीकेँ कहलखिन- ''कुटुमैतीक पहिल दिन छी तँ बिना भोजन करौने सिपाही जी कऽ कोना जाए देवनि। जाउ, भानसक ओरियान करु।''

गंगानन्दक बात सुनि पार्वती चेनकेँ समेटि भानस करए गेली। सिपाहीकेँ गंगानन्द पूछल- ''पटवारी जीक कुल-मूल केहेन छन्हि?''

सत्यकेँ छिपबैत सिपाही घटकक शैलीमे कहलकनि- ''ऐँह, कुल-मूलक की गप्प करै छी। कुले-मूलक चलैत एत्ते पैघ कुरसीपर छथि की ने। राजक विश्वासू लोक छथि। जेहने कुल-मूल तेहने परिवारक आचार-विचार आ व्यवहार सेहो छन्हि। भागमंते घरमे ओहन-ओहन कनियाँक आगमन होइत छैक।''

भोजन कऽ दुखन सिपाही विदा भऽ विसेसर ऐठाम पहुँचल। विसेसरकेँ दुखन सिपाही ओहि दिनसँ जनैत, जइ दिन विसेसर सियाराम सिपाहीकेँ कदीमा दुआरे मारने छल। हर जोति कऽ आबि विसेसर नहा कऽ खाइले आंगन पहुँचल कि दुखन रस्तेपर सँ सोर पाड़लक। अनठिया आवाज सुनि विसेसर आंगनसँ निकलि डेढ़ियापर आबि सिपाहीकेँ पूछलक- ''कोन काज अछि?''

सिपाही कहलक- ''अहाँसँ किछु खानगी गप्प करैक अछि। तँ एलौं।''

खानगी गप बुझि विसेसर सिपाहीकेँ कहलक- "आउ, अंगने आउ। गरीब लोकक दरबज्जा अंगना एक्के होइ छै। खाइ बेरि छैक जे किछु साग-सत्तू भेलि अछि दुनू गोटे वाँटि कऽ खाएब।"

विसेसर संग दुखन आंगन आवि बाजल- "हम अखने गंगानन्द ऐठाम खेलहुँ। अहाँ खाउ, हम वैइसै छी।"

विसेसर खेबो करए आ मने-मन सोचवो करए जे हमरासँ राजक सिपाहीकेँ कोन काज हेतइ। हमरा की कोनो खेत-पथार अछि जे राजसँ मतलब रहत। लऽ दऽ कऽ घरारी अछि, सेहो बेलगाने अछि। मुदा दुखन विसेसरकेँ गहराइसँ पढ़ैत जे एकटा अदना आदमी राजक सिपाहीपर हाथ उठौलक ई नान्हिटा गप्प नहि भेल। आखिर ओकरा भीतर कोन शक्ति छिपल छैक जे एत्ते साहसी अछि।

विसेसर खा कऽ उठल। मोहनी ओसारेपर विछान बिछा देलक। दुनू गोटे- विसेसर आ सिपाही विछानपर बैसि गप-सप करए लगल। सिपाही विसेसरकेँ पूछलक- "अहाँ कऽ कत्ते खेत अछि?"

मुस्कुराइत विसेसर उत्तर देलक- "हमरा खेत-पथार नइ अछि। खाली घरारियेटा अछि। कमाइ छी खाइ छी। मस्तसँ जिनगी बितवै छी।"

विसेसरक बात सुनि सिपाही आश्चर्जित भऽ गेल जे विसेसर कत्ते मेहनती अछि जे सिर्फ दूटा हाथ-पाएरक बले एत्ते साहसी आ खुशीसँ जिनगी बितबैत अछि।

विसेसरकेँ सिपाही कहलक- "विसेसर भाय, हमर नामेटा दुखन नहि छी आ ने राजेक सिपाहीटा छी। जिनगीमे एकटा ब्रत केने छी जे गरीब-गुरबाकेँ जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करब। जे अखन धरि निमाहैत एलौंहेँ। आब तँ सहजहि राज जाइये रहल अछि। किछु दिनक नोकरी अछि। तँ जहाँ धरि जे उपकार भऽ सकत ओ गरीब-गुरबाक करबै। अहाँ ऐठाम किछु काजसँ एलौं।"

जिज्ञासासँ विसेसर पूछलक- "केहेन काज?"

सिपाही- "एहि गाममे बहुतो गोटेकेँ मलगुजारी दइ दुआरे जमीन निलाम होइपर अछि। ओ हमरा बचेने बचि जाइत। तँ ओकरा सभकेँ बजाउ। हम मंगनियेँ रसीद दऽ देवइ।"

निलामी सुनि विसेसर चैंकि गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि विसेसर गप्प-सप्प आगू बढ़ौलक। दुनूक बीच आत्मीयता सेहो बढ़ए लगल। जहि बाटक बटोही विसेसर ओहि बाटक चलनिहार सिपाहियो। मुदा तइयो विसेसरकेँ मनमे आएल जे जँ कहीं रसीद चोरा कऽ अनने हुअए तखन तँ सभ धोखामे पड़ि जाएत। मुदा फेरि विसेसरकेँ मनमे उठल जे रसीदक पाइयो तँ नहिये लगै छै। बुझल जेतइ। थतमत करैत विसेसर बचनाकेँ बजबैले भोलिया कऽ पठौलक। भोलियाक संगे

बचना आएल। सिपाहीकेँ देखिते बचनाक करेज कँपए लगल। बचनाक स्त्री फुलिया सेहो पाछू-पाछू नुका कऽ आबि विसेसरक घरक कोनचर लग ठाढ़ भऽ गेलि। विसेसर बचनाकेँ कहलक- ''बचन, दुखन सिपाही अपन हितैषी छथि। बिना पाइये कऽ तोरा सभ खेतक रसीद दऽ देथुन।''

मंगनी रसीद सुनि बचनाक छाती सूप सन भऽ गेल। मनसँ जमीन निलामीक डर सेहो पड़ा गेल। सदे रसीद बचनाकेँ दैत कहलक- ''सभ जमीनक रकबा जोड़ि कऽ चढ़ा लेब।''

रसीद मोड़ि बचना मुट्ठीमे लऽ विदा भेल। काते-कात फुलिया दौड़ल आगूमे जा वचनाकेँ पूछलक- ''की भेल?''

हँसैत बचना कहलक- ''चुप्पेचाप चलू। विपत्ति टरि गेल।''

एकाएकी विसेसर एक्कैस गोटेकेँ रसीद सिपाहीसँ दिया देलक। निलामीक पहाड़ गाममे ढहि गेल। सौँसे गामक किसानक बीच खुशीक हड़बिरड़ो मचि गेल। सबहक सुखाएल चेहरा हरियर भऽ गेल।

जखन बाइली लोकसँ विसेसरक आंगन खाली भेल तखन दुखन सिपाही विसेसरकेँ पूछलक- ''विसेसर भाय, अहाँ गाममे राजक परती-परात गैरमजरुआ जमीन कत्ते हेतैक?''

आँखि उठा विसेसर परतीपर नजरि दौड़बए लगल। मुदा सभ परती तँ नजरिमे नहि एलै खाली एकटा परती, पोखरिक दछिनबरिया महारक एक-डेढ़ बीघाक एलै। परती नजरिमे अवितहि विसेसर कहलक- ''एक-डेढ़ बीधाक परती एकटा अछि।''

एक-डेढ़ बीघा सुनि सिपाही कहलक- ''डेढ़ बीघा जमीनक बन्दोबश्ती रसीद दऽ दइ छी। काल्हि हम जाएब तँ जाइसँ पहिनहि ओहि जमीनक दखल करा देब। बड़द तँ अपना नहियेँ अछि, मुदा तइयो पाँच-छहटा हरक भाँज लगाउ। हरक भाँज असानीसँ लगि जाएत। जकरा सभकेँ मदति केलिऐक ओ एक दिन हर नहि देत। जरुर देत।''

दुखन सिपाहीकेँ गाँजाक तलक लगल। झोरा खोलि पित्तैरसँ मेड़हाउल चीलम, नेपलिया जट्टाबला गाँजा, सरेसाक बड़की तमाकुलक पात निकालि दुखन चीलमक जोगार करए लगल। गाँजा देखि भोलियाक मन सेहो चटपटाइ लगल। दुखन बुझि गेल। भोलयाकेँ देखि सिपाही विसेसरसँ पूछलक- ''भोलिया भिन्न अछि की साझी?''

विसेसर कहलक- ''देखियौ जे पच्चीस सालक छौँड़ा अछि तखन केहेन झखड़ल बुझि पड़ैए। बेहूदा गाँजा-भाँग पीवि सोन सन शरीरकेँ माइट बना लेलक।''

गाँजाक सोंट मारि, कने काल मुँहमे धुँआ रखि दुखन उपर फेकलक। एक सोंट मारि दुखन कने-काल हाथमे चीलम रखि विसेसरकेँ कहलक- ''विसेसर भाय, गाँजा-भाँग जोगी-फकीरक छी। एतेटा उमेरमे हम कहियो ताड़ी-दारु मुँहमे नहि लेलौं। जहिया कहियो राज-दरवारमे कोनो उत्सव होइ छै तहिया खाइ-पीबै तँ सबहक संगे छी मुदा अंग्रेजिया-दारु आइ धरि मुँहमे नहि लेलौं। बड़ तलक लागल तँ गाँजा पीलौं।''

दोसर दम मारि दुखन तड़ंगि कऽ भोलियाकेँ कहलक- ''रे तूँ जे गाँजा-भाँग पीबैछेँ से किअए? जखन अपना ओते ओकाइत नहि छौ जे दूध-दही, घी खेमे। ने अपना खूँटापर गाए-महीसि रखने छेँ। तखन तूँ गाँजा किऐक पीबै छेँ। तूँ हमरा नहि चिन्है छेँ, हम राजक सिपाही छी। अखने बापेक सोझहामे एक सए लाठी मारि गाँजा-भाँग छोड़ा देबौ, आ पकड़ि कऽ लऽ जा छअ मास जहलमे बन्न कऽ देबौ। तोँ की बुझै छीही?''

सिपाहीक बात सुनिते भोलियाक देह कँपए लगल। कपैत दुनू हाथसँ दुखनक पाएर पकड़ि कनैत कहलक- ''सरकार आइ दिनसँ गाँजा-भाँग नइ पीयब।''

दुखन- ''कनने-खिजने नइ हेतौ। दुनू कान पकड़ि पचास बेरि उठ-बैठ आ शपथ खा कऽ कह जे कहियो गाँजा नइ पीब।''

डरे भोलिया दुनू कान पकड़ि उठए-बैठए लगल। पनरहे बेरि उठल-बैठल कि दुनू जाँघ लोथ भऽ गेलै। आगू उठिये-बैठि ने होय। दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलै।

घरक भुरकी देने भोलियाक स्त्री भोलियाकेँ कान पकड़ि उठैत-बैइठैत देखैत। उढ़ेमे ओ मुँहपर आँचर लऽ खूब हँसैत। हँसबो करैत आ अपने-आप बजबो करैत जे खूब होइ छनि। अनेने सभ दिन साँझू पहरकेँ गरियबैत अछि। तइ काल जँ जबाव देबनि तँ चारि लाठी लगाइयो दैता। भने नीक होइ छनि। जेहेन चालि छनि तहने दशो होइ छनि।

जकरा सभकेँ दुखन खेतक रसीद देलक ओ सभ घरमे रसीद रखि एका-एकी विसेसर ऐठाम आबए लगल। सबहक मनमे खुशी। सभ अपनामे हँसी-चौल करैत। हँसैत बेङबा कुरहरियाकेँ कहलक- ''दोस, जँ खेत लीलाम भऽ जइतौ तखन तोरा कातिक मासक अपियारीक कबै माछ खेनाइ निकलितौ।''

उत्तर दैत कुरहरिया कहलक- ''हमरेटा निकलैत, तूँ जे हाटपर माछ बेचि कऽ ताड़ी पीबै छेँ, से अपन कह?''

सभकेँ चुप करैत सिपाही पूछलक- ''कते गोरेकेँ हर-बड़द अछि?''

ककरो एकटा बड़द जे दोसरसँ भजैती लगौने। ककरो दूटा बड़द जे हरबाह रखि जोतबैत। ककरो एकोटा नहि जे अनके हर जोति अपनो धुरहा हर लऽ

खेती करैत। सभ अपन-अपन बात सिपाहीकेँ कहलक। सभक बात सुनि दुखन सिपाही कहलक- ''जे हरबाहि करै छी ओ शरीरसँ, जेकरा बड़द अछि ओ बड़दसँ, काल्हि भोरे आबि पोखरि लगक परती विसेसर भायकेँ जोइत दियौ। ओ परती हम विसेसर भायकेँ बन्दोबश्त कऽ देलौं।''

जहिना एक गामक लोककेँ दोसर गामबलासँ झगड़ा भेलापर गामक धिया-पूतासँ लऽ कऽ बूढ़-पुरान धरि लाठी, भाला, फरुसा लऽ कऽ पहुँच जाइत तहिना भोर होइतहि क्यो हर-बड़द, क्यो कोदारि तँ क्यो छुछे देहे विसेसरक खेतमे पहुँच गेल। लोकक उजैहिया देखि विसेसर सोचए लगल जे जलखै देब, कोना पार लागत। ककरा जलखै खाइले देवइ आ ककरा नहि देवइ। तोहूमे धिये-पूते बेसी अछि। दुनू हाथ माथपर लऽ विसेसर कातमे बैसि गुनधुनमे पड़ल। दुखन विसेसरक चिन्ता बुझि गेल। विसेसर लग आबि दुखन कहलक- ''विसेसर भाय, एक्के घंटामे खेत कऽ चीर-फाड़ि दखल कऽ लिअ। हम सभकेँ कहि देबै जे हमहूँ जाइ छी आ अहूँ सभ जाइ जाउ।''

दुखनक विचारसँ विसेसरक मन हल्लुक भेल। सौँसे खेत चीर-फाड़ि सभ हर खोलि देलक।

--८--

गंगानन्दक बेटा सुमनक विआह सुनयनाक संग भऽ गेल। जहिना पनियाहा मेघ लटकि कऽ धरतीक लग चलि अबैत तहिना पटवारीसँ कुटुमैती भेने गंगानन्द धनक लग आबि गेल। सोना-चानीक गहना, फूल-पितरि आ स्टीलक बरतन, सूती-उन्नी आ रेशमी कपड़ा पटवारी टाएर गाड़ीपर लादि गंगानन्द एहिठाम पठौलक। सुनयनाक खोंइछमे पटवारी गामक सटले दोसर गाममे पचास बीघा जमीन सेहो देलक। ओ जमीन तेसरे-साल पटवारी निलामी अपना नामसँ बन्दोबश्त केने। दू जोड़ सिलेब रंगक बड़का बड़द, दूटा बड़की गाए आ जमाइकेँ चढ़ैले एकटा बड़का घोड़ा सेहो देलक। समांगक पातर रहने गंगानन्दकेँ तीनिटा नोकर जे माल-जालक सेवासँ लऽ कऽ खेती करै धरि लऽ पठौलक। एकटा खबासिनी सुनयनाक लेल सेहो।

चैघारा घर तीनू भाँइक बीच गंगानन्दकेँ। तीनू भाँइक बीच भिनाउज भेने एक-एक अलंग, हिस्सा भेल। आवा-जाही कम रहने एक अलंगक घर मूसक माटिसँ भरल। देवालक पलस्तर सेहो झड़ि-झड़ि खसलो आ खसितो। दरबज्जा आ मालक घर तीनू भाँइक साझिये। पाहुने-परक ऐलापर यमुनानंद आ श्यामानंदकेँ

दरबज्जाक काज होइत नहि तँ अंगने घरसँ काज चलैत। सिर्फ गंगानन्देटा दरबज्जापर रहबो करैत आ चीजो-वस्तु रखैत। मालक घर नमहर। मुदा माले कम तँ कोनो भाँइकँ अभाव नहि खटकैत।

समधिआउमे जे समान गंगानन्दकँ भेटल ओ परिवारमे रक्खैक समस्या ठाढ़ कऽ देलक। कपड़ा, बरतन तँ घरमे अटि गेल मुदा गाए-बड़द कतए बान्हल जाएत? मुदा तत्-खनात बाँसक खूँटापर तिरपाल टांगि गाए-बड़द आ धोड़ा बन्हैक जोगार गंगानन्द कऽ लेलक। यमुनानन्द आ माला दुनू परानी सुमनक विआहक सरमजाम देखि मने-मन जरए लगल। झगड़ाक जोगार माला ताकए लागलि। समाजक स्त्रीगण कनियाँ देखैले आबए लगली। घरसँ ओसार धरि गंगानन्दक भरल। तँ बैइसैक जगह नहि। जे क्यो कनियाँ देखए आबति ओ यमुनानन्दक खाली ओसार देखि बैसि जाइत। स्त्रीगणक बीच हाँ-हाँ, हीं-हींसँ लऽ कऽ हँसी-मजाक धरि होइत। लोकक हाँ-हाँ, हीं-हीं सँ मालाक देह जरैत। गाममे एकटा नवकी दादी। नवकी दादी विधवा। ओना उमेरो साठिसँ उपरे, बेटा-पुतोहू आ पोता-पोतीसँ घर भरल। नवकी दादी, जेहने बजैमे चड़फड़ तेहने शुद्ध स्वभावक सेहो। दरद ससारैक लूरि नवकी दादीकँ। गाममे जकरा ककरो पेटमे दरद उखरैत ओ नवकी दादीकँ बजा अनैत। करु तेलसँ नवकी दादी तेना ससारैत जे लगले दरद ठीक भऽ जाइत। दरदे ससारि नवकी दादी दशनामा लोक बनि गेली। ने ककरोसँ एक्को पाइ लेथि आ ने ककरो काज खगै देथिन। अपन केहनो हलतलबी काज रहनि, मुदा जँ क्यो बजवै आबनि तँ अपन काज छोड़ि संगे ओकरा एहिठाम जा दरद ससारि देथिन। तँ समाजो हुनका बजैक अधिकार देने। ककरो उचित बात कहैमे नवकी दादी नहि चुकथि। ठाँइ-पठाँइ मुँहेपर नवकी दादी कहि देथिन। मालाक ओसारपर गामक बेटी जातिसँ लऽ कऽ नव-पुरान स्त्रीगण सभ बैसि गंगानन्दक समाधि-समधीनक कुट्टी-चालि करैत। गंगानन्दक परिवाररोक लोक आ समाजोक नवकी दादीक गप्पसँ आनंदित होइत। मुदा माला भीतरे-भीतर जरैत। मालाक रुष्ट मुँह आ बोलीकँ अकानि नवकी दादी मालाकँ कहए लगलखिन- ''जेहने हुड़ाड़ बाप छह तेहने ने ओकर कुलो-खुट हेबह।''

नवकी दादीक बात सुनि माला मुँह बन्न कऽ लेलक मुदा मनमे क्रोध बढ़िते गेलै। कनियाँ देखि-देखि सभ चलि गेल। यमुनानन्द दोकान गेल छल ओहो आएल। यमुनानन्दकँ आंगन अबिते माला कहए लगलखिन- ''जखन सभ भाँइ भीन भेलहुँ सभ कुछ बँटलौं तखन आंगन आ मालक घर किऐक ने बँटलौं?''

यमुनानन्दक हृदयमे परिवाक ममता तँ मालाक बात उत्कट लगलनि। मुदा जोरसँ किछु उत्तर देव उचित नहि बुझि मिरमिरा कऽ मालाकँ कहलखिन- ''सभ भऽ जेतैक। अखन काजक घर अछि, पाहुन-परकसँ लऽ कऽ समाज धरिक

लोक आंगन अबै-जाइत छथि, नजरि नहि अछि जे बताहि जेकाँ बगए बनौने छी आ चिचिआइ छी।''

यमुनानन्दक बातकेँ अनसून करैत, चोटाएल साँप जेकाँ फुफकार कटैत माला बाजलि- ''हम अपन घर-अंगन भैयाकेँ दऽ दिअनि आ हुनकर जे घर भरलनि से हुनकर छिअनि। अगर अहाँ बूते नइ हएत तँ बाजू? हम देखा दइ छिअनि जे केहेन बापक बेटी हमहूँ छी। आइये जँ अंगनामे छहर देवाली नहि खींचि दिअनि तँ फेरि ओ कहता। जइ लोकक लाज अहाँ कऽ होइए ओ सभ नइ वुझैए जे तीनू भाँइ भिन्न छी।''

कोहवरक कोठरीसँ सुनायना मालाक सभ बात सुनैत। दोसर कोठरीसँ गंगानन्द आ पार्वती सेहो सुनैत। मालाक अगिला बात सुनैले सभ कान पथने। कखनो गंगानन्द आँखि उठा पार्वतीकेँ देखैत तँ कखनो पार्वती गंगानन्दकेँ। मने-मन गंगानन्द बजैत- ''की अही प्रतिष्ठाक लेल एते केलहुँ? की भाएसँ भाए एते दूर भऽ सकैए? की हमर बेटा-पुतोहू यमुनानन्दक नहि छियैक? की समाजक नजरिमे तीनू सहोदर भाए नइ छी? अगर भैयारीमे ऐहन व्यवहार हएत तँ दोसर-तेसरक संग केहेन हएत? अनेरे सभ किऐक एहि जंजालमे पड़ल अछि? बिना किछु बजनहि गंगानन्द घरसँ निकलि, मुँह निच्चाँ केने, दुआर दिशि विदा भेल। डेढ़िया लग पहुँचते पाछूसँ पार्वती घुनघुना कऽ कहलखिन- ''जे सेवा भाए-भावोक केलहुँ ओना जँ दोसरकेँ केने रहितहुँ तँ ऐहन बात नहि सुनितहुँ।''

अपन मनक व्यथाकेँ छिपबैत गंगानन्द पार्वती दिशि देखि मुस्कुराइत दरवज्जापर गेल। कोहवरक घरमे सुनयना मने-मन सोचति जे एक तँ हम नव छी दोसर ससुर आ पतिकेँ रहैत किछु बाजव उचित नहि। नहि तँ देखा दितिएनि जे माए कते दूध हुनका पिऔने छनि।

दछिनबरिया घरसँ श्यामानन्दक स्त्री गुलाबो सभ बात सुनल। कतौसँ धड़फड़ाएल श्यामानन्द आबि पत्नीकेँ कहलनि- ''कने खाइले दिअ, आनठाम जेवाक अछि।''

गुलाब थारी धोअए लगली। श्यामानन्द लोटामे पानि लऽ हाथ-पाएर धोअए डेढ़ियापर गेल। हाथ-पाएर धोय श्यामानन्द घर आबि खाइले बैसल। थारी परोसि गुलाब पतिक आगूमे दऽ बगलमे बैसि कहए लगलनि- ''अहाँ तँ आंगनमे नइ छलौं। यमुनानन्द भैया तँ चुप्पे रहथि मुदा दीदी जेठ दियादनी गरजि-गरजि कहै छलखिन जे आंगनामे छहर देवाली खींचि देब।''

पत्नीक बात सुनि श्यामानन्द कहलखिन- ''भैया-भौजी जे करथि मुदा हुनके जेकाँ की हमहूँ करब? अखन धरि घरक कोनो भार नहि बुझलौं। खाइ-खेलाइमे जिनगी बीतल। तीस बीघा जमीनमे दश बीघा अपन हिस्सा भेल। मात्र

तीनि गोटेक परिवार अछि, तहि लेल गारि-गरौबलि कऽ खानदानक नाक कटाएब।''

श्यामानन्दक विचारसँ सहमत व्यक्त करैत गुलाव बाजलि- ''भाग्यमे जे लिखल हएत से हेबे करत। तइले नीच काजपर उतरि जाय, ई नीक नहि।''

श्यामानन्द खा कऽ उठि बाहर जाएब छोड़ि, पलंगपर बैसि अपन जिनगीक संबंधमे विचारए लगल। अखन धरि भगवानक भरोसे खेती चलैत रहल, जहिसँ अछैते खेत रहनहुँ अन्न-पानिक दिक्कत भऽ जाइत रहल। जँ कोनो साल सम-गम बरखा भेल तँ उपजा नीक भेल नहि तँ रौदी वा दाही भेल। अढ़ाइ-तीनि सालसँ रौदी भेल अछि मुदा रौदी-दाहीसँ बँचैक उपाय नहि सोचलहुँ। बारह मासक साल होइए। जहिमे सिर्फ चारिये मास बरसातक अछि। जँ बेसी बरखा भेल तँ दहार भेल आ जँ कम भेल तँ रौदी भेल। मुदा आठ मास जे बँचल अछि, ओकरा लेल किछु सोचवे ने करै छी। अखन धरि हमहूँ यएह बुझै छलहुँ जे पानि सिर्फ मेघेटा सँ होइत अछि। माटिक तरोमे पानि छैक जकरा उपर आनि खेती-बाड़ी कएल जा सकैत अछि, से बुझवे ने करै छलौं। ओना इनार-पोखरिमे जरुर देखै छलिएक। तँ तरका पानि उपर अनैले बोरिंग गराएब आवश्यक अछि। अखन हाथमे रुपैआ नहि अछि घरमे गहना, खेत आ बड़का-बड़का गाछ सभ तँ अछि। तँ चाहे गाछ बेचि कऽ वा खेत बेचि कऽ वा गहना बेचि कऽ बोरिंग जरुर गड़ाएब। जखने बोरिंग भऽ जाएत तखने खेती हाथमे चलि आओत। जखने हाथमे खेती चलि आओत तखने अन्न, तीमन-तरकारी उपजए लगत। एक बीघा खेत गाछी-बिरछी, घर-घरारीमे फँसल अछि। नअ बीघा तँ उपजैबला अछि। नअ बीघाक उपजासँ तँ पचास गोटेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलि सकैए। हम तँ तीनिये गोटे छी, ताहूमे एकटा बच्चे अछि। पानि हाथ अएलासँ रौदियो मेटा जाएत। सिर्फ कोनो-कोनो साल बढ़िक खतरा रहत। सेहो मात्र चारिये मास। अन्न, तीमन-तरकारीक ढेरि लगि जाएत। जते परिवारमे खरच हएत ओतवे ने बाकी फजिलाहा बेचि कऽ जिनगीक विकासमे लगाएव। अखन धरि कोढ़ि बनि भाँग-गाँजाक पाछू समए बरबाद केलहुँ मुदा आवो जँ चेती तँ बहुत-किछु कऽ सकै छी। एते विचार श्यामानन्दक मनमे अविते उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। श्यामानन्दक मनमे गंभीर विचार चलैत आ चेहरामे मलिनता अबैत। गंभीर विचार श्यामानन्दकेँ गंभीर चेहरा बनवैत। श्यामानन्दक गंभीर चेहरा देखि गुलाब मने-मन सोचति जे भरिसक परिवारक बोझ हिनका चिन्तित कऽ रहल छनि। इन्द्रधनुषी आँखि, गुलाबी मुस्कानसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- ''जिनगी बहुत कठिन होइत मुदा नहि! बहुत असान होइत। सिर्फ चलैक ढंग बदलैक जरुरत अछि। जँ सभ चलैक ढंग सीखि लिअए तँ चैनक जिनगी सहजहि-सहज बनि जाएत।''

अखन धरिक जिनगी दुनू बेकती श्यामानन्दक अल्हड़-अबोधक रहल जे बदलैत दिशा दिशि बढ़ए चाहैत अछि।

मुस्की दैत गुलाब पतिकेँ पूछलक- "कतौ किछु हरा गेल की? जे ऐना अनोन-बिसनोन जेकाँ मुँह लटकौने छी?"

गंभीर स्वरमे श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- "हँ, हरेबो कएल आ भेटबो कएल। आइ धरिक जिनगी छोड़ि नव जिनगी बनबए चाहै छी। अहूँकेँ कहै छी जे आइसँ संगी बनि संगे चलू।"

संगीक नाम सुनि गुलाब चौकैत पूछल- "की अखन धरि संगी नहि छलौं?"

विचार कऽ सामंजस्य करैत श्यामानन्द बाजल- "हँ छलहुँ, मुदा नहि! जहिना कोनो धारमे नाओ भट्ठा -जिमहर पानिक वेग जाइत- दिशि चलैत, तहिना रहलहुँहेँ। जे भसियाएब छल। मुदा जखन नाओ सिरा दिशि -जिमहरसँ पानिक वेग अबैत- जाइत, तखन चलब भेलैक। सिरा दिशि चलवामे पुरुषत्वक जरुरत होइत जे बास्तविक जिनगीक दिशा भेल। जकरा चढ़ाइक जिनगी कहल जाइत छैक। चढ़ाइक लेल संघर्ष आ शक्तिक जरुरत होइत, ताहि लेल संगीक जरुरत पड़ैत।"

श्यामानन्दक विचार गुलाव नीक-नहाँति नहि बुझि सकलीह। मुदा मनमे एकटा हड़बड़ाएल विचार एलनि, जे मरद-औरत मिला कऽ विआहक रुपमे संकल्पित होइत। जहिसँ सृष्टिक सृजन होइत। मुदा जिनगी तँ बहुत नमहर होइत छैक, जहिमे भूख-पियास, आपति-विपति, सुख-दुख सभ गाड़ीक पहिया जेकाँ घूमैत। एहि लेल संगीक जरुरत होइत। जे एक-दोसराक मदतिगार बनि जिनगी दुरुस्त कऽ चलैत। एते बात मोनमे अबितहि गुलाब उछलि कऽ बाजलि- "संगीक लेल संगी अपन सभ कुछ न्योछाबर कऽ सकैए। हम आज्ञाकारी छी। जखन जे कहब ओ करैक लेल अंतिम साँस धरि कोशिश करब।"

अखन धरि श्यामानन्द खेत बेचि कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनब मनमे रखने छल, मुदा पत्निक सहयोग देखि कऽ गतिशील सम्पत्ति बुझि विचार बदलए लगल। घरमे पड़ल गहना सोना-चानी जे गतिहीन बनि पड़ल अछि ओकरा किऐक ने गतिशील बना काज करी। मुदा श्यामानन्दक मनमे शंका होइत जे मलगुजारीक बेरिमे पत्नी गहना नहि देने रहथि। एहि शंकाक समाधानक लेल श्यामानन्द गुम्म भऽ सोचए लगल। मुदा पत्निक बदलैत विचारकेँ परीछा करैक खयालसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलक- "अहाँ अपन गहना दऽ दिअ। घरमे ओ पड़ले रहत आ भऽ सकैए जे जँ कहियो चोर-चहार आबि गेल तँ ओहो चलि जाएत। अखन ओकरा बेचि कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनि लेब। जखन खेतीक साधन बढ़त तखन उपजो-बाड़ी बढ़त।

जहिसँ हालतो सुधरत जखन हालत सुधरि जाएत तखन जँ गहनो लेबाक मन हएत तँ कीनि लेब।''

श्यामानन्दक विचार सुनि गुलाब हँसैत अपन गहनाक मोटरी अलमारीसँ निकालि आगूमे रखि देलखिन। पत्नीक सहयोग देखि श्यामानन्दक हृदयमे खुशीक उफान उठल। हृदयक खुशी मुँहसँ हँसी बनि लिकलए लगल। हँसैत श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलक- ''अखन गहना रहए दिऔ। हम बजार जाइ छी, पहिने बोरिंग-पम्पसेटक दाम बुझबै तखन सोनरा दोकान जा सोना-चानीक दाम बुझवै। दुनूकेँ बुझि ओहि हिसाबसँ गहना बजार लऽ जा बेचि लेब। ओहिसँ बोरिंग कीनि लेब।''

गंगानन्दक खेती करैले पटबारी रामदेवकेँ पठौने। रामदेवकेँ खेती करैक नीक लूरि। ओना रामदेव राजक नोकर मुदा किछु दिनक लेल पटवारी ओकरा पठौने। बालगोविन्द आ चंचलकेँ गाए-बड़द आ घोड़ाक देखभाल करैक लेल पठौने। अखन धरि गंगानन्दक परिवारमे सवारीक लेल साइकिल आ टायरगाड़ी छल। मुदा धोड़ाक आगमन पहिले-पहिल भेल। सुमनकेँ तँ घोड़सवारी चंचल सिखा देलक मुदा गंगानन्द असमंजसमे पड़ल। बेटाक सवारीपर बाप कोना चढ़त? यएह असमंजसक कारण। मुदा सवारीक घोड़ा रहैत साइकिलसँ चलब इहो एकटा पैघ द्वन्द्व। कखनो कऽ गंगानन्दकेँ होइत जे घोड़ापर चढ़ि दश गाम घूमि लोककेँ देखा दिअए। मुदा बेटाक सवारी। अगर जँ हम दोसर घोड़ा कीनि चढ़ब तँ बेटा-पूतोहूकेँ जलन हेतनि। मने-मन ओ सभ कहत जे केहेन स्वार्थी अछि। विचित्र स्थितिमे गंगानन्दक मन औनाइत।

दोसर दिन भिनसरमे चंचल घोड़ाकेँ फुलाओल बदाम नाइदमे दऽ थोड़े रखि अपनो खाइत। बूलैत-बूलैत गंगानन्द आबि चंचल लग ठाढ़ भऽ गेल। आगूमे गंगानन्दकेँ ठाढ़ देखि चंचल मुँह बन्न कऽ हाँइ-हाँइ मुँहक बदाम चिबबए लगल। मुँहक बदाम घोंटि चंचल गंगानन्दकेँ कहलकनि- ''मालिक अहूँ घोड़ा चढ़ब सीखि लिअ?''

चंचलक बात सुनि गंगानन्द कने काल गुम्म भऽ उत्तर देलखिन- ''कहलौं तँ ठीके मुदा एहि घोड़ापर हमर चढ़ब उचित हएत?''

चंचल- ''किऐक ने हएत। ई तँ सबारी छियैक।''

गंगानन्द- ''बेटाक सवारीपर बापक चढ़ब उचित नहि?''

गिलास उठा पानि पीबि चंचल कहलकनि- ''जइ दिन बेटा वा पुतोहूक मन खराब हएत, बजारसँ दवाइ अनैक वा डॉक्टर ऐठाम जाइक जरुरी हएत, तखन की करबै?''

चंचलक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ बैसि मने-मन सोचए लगल। मुदा चंचलक बात दमगर बुझि गंगानन्द बात बदलैत कहलखिन- ''आब हमर उमेर

घोड़ापर चढ़ैबला अछि? हो ने हो जँ कहीं गीरि पड़ी आ हाड़-पाँजर टूटि जाए, तखन तँ लोको दुसत आ अपनो कष्ट हएत।''

गंगानन्दक बातकेँ चंचल टारब बुझि कहलकनि- ''ई घोड़ा कोनो बोनैया छी जे अपने सूढ़िये चलत। सिखाओल घोड़ा अछि।''

चुप्पे-चाप गंगानन्द उठि कऽ दरबज्जापर आबि वैसि रहल। मुदा चंचलक बात गंगानन्दक मनकेँ पकड़िनहि, तँ गुन-धुनमे पड़ल। ताबे आंगनसँ खबासिनी चाह नेने अएलीह। रामदेव सेहो आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू गोटे चाह पीबए लगल। चाह पीबि रामदेव बगुलीसँ तमाकू निकालि चुनबए लगल। तमाकुलक चून झाड़ि रामदेव गंगोनन्दकेँ देलकनि आ अपनो मुँहमे लेलक। थूक फेकि गंगानन्द रामदेवकेँ कहलखिन- ''एकाएक पसार भेलासँ काज सम्हारब कठिन भऽ रहल अछि। कखनो मन चैन नहि रहैत अछि। सदिखन इमहर-ओमहर देखैत आ सम्हारैत परेशान रहै छी।''

गंगानन्दक बात सुनि रामदेव कहलकनि- ''अगर पसार बेसी बुझि पड़ैए तँ आदमी रखि लिअ। सम्पत्ति भेलासँ लोक सुख करैए आ अहाँ बेचैने रहै छी। अपने कते करब? दसटा कुटुम-परिवार भेला तइपर सँ समाज भेल आ ताहूसँ वेसी कारोवार भेल। कोना कऽ सकब?''

गंगानन्द- ''कहलौं तँ ठीके मुदा छोड़ियो देलासँ तँ नहि हएत। कामतपर घर नहि अछि, ओहूठाम घर बनौनाइ जरुरी भऽ गेल अछि।''

रामदेव- ''कामतपर अपन लगक लोककेँ भार दऽ दिऔन। जँ से नहि करब तँ आने-आने सभटा लूटि कऽ खा जाएत। तीनि भाँइ छी, एक भाँइकेँ कामतक भार दऽ दिऔन। अगर खेवो-पीबो करताह तँ अपने भाए ने। जखन धनक पसार भेल तखन जँ समाजक काजमे आगू नहि हएब तँ पतिष्ठा कोना भेटत। तँ सालमे दू-चारिटा उत्सव समाजमे ठाढ़ करब जरुरी अछि।''

गंगानन्द- ''कोन तरहक उत्सव ठाढ़ करब?''

रामदेव- ''ऍँ, उत्सवक कमी छैक। पैछला जे पावनि-तिहार अछि ओकरो मेला रुपमे ठाढ़ कऽ सकै छी नहि तँ नवके ठाढ़ कऽ सकै छी।''

रामदेवक बात गंगानन्दकेँ जँचल। नातिनकेँ कहलखिन- ''दाइ, कने श्याम नन्नाकेँ बजौने आबह?''

नातिन दौड़ल अंगना जा श्यामानन्दकेँ बजौने आइलि। दरबज्जापर अबिते श्यामानन्द गंगानन्दकेँ पूछलखिन- ''भैया, अहाँ बजेलहुँ?''

गंगानन्द- ''हँ, आबह ऐठाम बैसह। एकटा विचार पूछैक अछि।''

श्यामानन्द बैसल। गंगानन्द कहलखिन- ''बौआ श्याम, तौँ कामतक काज सम्हारि दाए।''

श्यामानन्दक आत्मबल जगि चुकल छल। इनकार करैत श्यामानन्द उत्तर देलकनि- "भैया, हमरा हाथमे खेतीक लेल बोरिंग-दमकल आबि गेल। पहिलुका जिनगीकेँ नव जिनगी बनबए चाहै छी। आब लोहाक रिन्च-हथौरी हाथसँ चलबए चाहै छी। तँ कामतक काज सम्हारब हमरा बूते कोना हएत?"

श्यामानन्दक बात सुनि गंगानन्द गुम्मे रहि गेला। श्यामानन्द उठि कऽ अंगना चलि गेल। पुनः गंगानन्द नातिनकेँ यमुनानन्दकेँ बजा अनैले कहलखिन। नातिन यमुनानन्दकेँ बजौने आइलि। यमुनानन्दकेँ अबिते गंगानन्द पूछलखिन- "बौआ जामुन, हमरा तँ घरेपर सँ छुट्टी नइ होइए, तौँ कामतक काज सम्हारि दाए?"

अराम तलब काज बुझि यमुनानन्द गछि लेलकनि। यमुनानन्द उठि कऽ आंगन जा पत्नीकेँ सभ बात कहलखिन। पचास बीघाक आमदनी उपजा-बाड़ी बुझि माला हँसैत बाजलि- "दियाद केहनो दुश्मन होइ तइयो दियादे छियैक। जहि गाछक बखलोइया रहै छै ओहीमे लगै छै। आन आने होइत दियाद दियादे होइत।"

टटाएल खेत, दरारि फाटलमे जजात कोना लगाओल जाएत? तँ श्यामानन्द सबेरेसँ पम्पसेट चला पटबए विदा भेल। डोरीबला पेन्ट तइपर सँ करिया गमछा लपेटि श्यामानन्द कोदारि आ रिन्च-हथौरीक झोरा लऽ खेत पहुँचल। खेत पहुँच श्यामानन्द मने-मन हिसाब जोड़ए लगल जे डेढ़ बीघा खेत पटबैमे कमसँ कम सात-आठ घंटा लागत। पट ठीकि कऽ श्यामानन्द पम्पसेट स्टार्ट केलक। नव वोरिंग आ नव मशीन रहनहुँ पानिक रफ्तार कम। पानिक कम रफ्तार देखि श्यामानन्द मने-मन सोचए लगल जे भरिसक पम्पसेटमे कोनो गड़बड़ी अछि। किएक तँ बोरिंगमे कोनो पाट-पुरजा छइहे नहि जे ढील-ढ़ाल वा टुटल-फुटल हएत। अनायास श्यामानन्दकेँ मन पड़ल जे रौदी दुआरे पानि कम अबैए। खेतमे तेहेन-तेहन दरारि फाटल जे पानि आगू मुँहे ससरबे ने करैत। मुदा बाढ़ि जेकाँ नालाक पानि देखि श्यामानन्दक मनमे सबुर भेल जे खेत जरुर पटत। कोदारि लऽ खेतमे पानि चालए लगल।

कनिये कालक पछाति करीब एक कट्ठा खेत पटल हएत, बगुला आबए लगल। पहिने तँ एक्केटा बगुला आ एकटा मेना आएल। मुदा कनिये कालक पछाति जेरक-जेर बगुला, मेना आ कौआ आबि गेल। जिम्हर-जिम्हर खेतमे पानि बढ़ै तिम्हर-तिम्हर बगुलो मेना बढ़ि पिलुआ, कीड़ी, फनिगा बीछि-बीछि खाए लगल। जखनसँ श्यामानन्द कोदारि आ रिन्चक झोरा लऽ खेत दिशि विदा भेल तखनेसँ गुलाबोक इच्छा होइत जे हमहुँ खेत जा देखिऐक। मुदा परिवारिक प्रथा- खेत जाइसँ गुलाबकेँ रोकि दइत। जलखै खा गुलाब पलंगपर पड़ि मने-मन सोचए लगली। विचित्र द्वन्द्वमे गुलाबक मन उलझल। कखनो मनमे उठैत जे हमरा खेत-पथार अछि तँ घरसँ बाहर नइ जाएव। मुदा जे क्यो नोकरी करत, ओ की

करत? फेरि दोसर प्रश्न मनमे उठल जे हमरा खाइ-पीबै जोकर सम्पत्ति अछि मुदा जेकरा किछु नहि छैक आ भीख मांगए पड़ैत छैक। एहि तरहेँ गुलाबक मनमे प्रश्नो उठैत आ जबावो उठैत। गुनधुन करैत गुलाब घरसँ निकलि खेत विदा भेलि। खेत पहुँच गुलाब देखल जे पति खेतमे कतौ दहिना पाएरसँ पानि उपछि पटबै छथि तँ कतौ बामा। श्यामानन्द खेत पटबैक धुनिमे, तँ गुलाबपर नजरिये ने पड़लनि। श्यामानन्दक लग पहुँचते गुलाबकेँ हृदयक हँसी फूटल। ओ गीत गबैत पतिकेँ इशारामे कहलखिन- ''पानी ने पानी, तेरा रंग कैसा?''

पति-पत्निक बीच श्यामानन्द आ गुलाबक प्रेम जे आइ धरि छल ओहिसँ बदलल प्रेम दुनूक बीच आइ बुझि पड़ै लगल। अखन धरिक प्रेममे मांसलता प्रमुख छल मुदा आइ कर्मक उपजल प्रेम दुनूक बीच हुअए लगल। जे गुलाब सौँसे देह वस्त्रसँ झाँपब नीक बुझैत छलीह ओ साड़ी कऽ ठहुनसँ उपर डॉड़मे खोँसि, सुखल खेत सभमे दुनू हाथे पानि उपछै लगली। ने श्यामानन्दकेँ बुझि पड़नि जे गुलाब स्त्री छथि आ ने गुलाबकेँ श्यामानन्द पति बुझि पड़ैत। दुनू एक दोसरक सहयोगी बनि काजमे जुटल। जेरक-जेर मेना, बोगला आ कौआ कीड़ी-मकौड़ी बीछि-बीछि खाइत। एक जोड़ा मेना एक ठाम वैसि एक-दोसर लोलमे लोल मिला अपन प्रेमक कथा सुनबैत।

साँझ पड़ि गेल। मात्र जलखैइये खेने श्यामोनन्द आ गुलाबो खेत पटबिते रहि गेल। खेतो पटब लगिचाएल तँ छोड़ि कऽ जएबो उचित नहि बुझि, दुनू परानी खेतेमे। दोसरि साँझ होइत-होइत डेढ़हो बीघा खेत पटि गेल। काजक खुशी दुनू परानी श्यामानन्दक भूख हेरि लेलक। खेत पटिते श्यामानन्द दमकल बन्न कऽ बोरिंगक आगूमे जे पानि जमा छल, ओहिमे देह-हाथ धोअए लगल। दुनू परानी देह-हाथ धोय आंगन विदा भेल।

--९--

श्यामानन्दक बोरिंगक चरचा सँउसे गाम हुअए लगल। दमकल चलै काल गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पूताक मेला लगि जाइत। पम्पसँ निकलैत पानिक फब्वारा देखि सभ अचंभित होइत जे लोहामे एते पानि कतएसँ अबैत अछि। बरखा आ बाढ़िक पानि तँ सभ देखने मुदा वोरिंगक पानि पहिले-पहिल देखैत। नवे बर्खक बुढ़िया दादी। सोन सन उज्जर धप-धप केश। मधुमाछी छत्ता जेकाँ देहक चमड़ा लड़-लड़ करैत। नमगर-छड़गर दोहरा देह घोकचि कऽ मौकनी हाथी जेकाँ लुदुर-लुदुर चलि कऽ दमकल लग आबि कातेसँ आवाज अकानए लगली। पहिले दादीकेँ भेलनि जे भरिसक रेलगाड़ी अवैए मुदा जखन दमकलक

लग पहुँचली तखन दमकलक आवाज बुझलखिन। ठेंगा रखि दादी दुनू हाथ जोड़ि दमकलकेँ गोड़ लगलनि आ आगूमे पम्पसँ गिरैत पानिकेँ चुरुकमे लऽ सॅउसे देह छिटलनि। पानिक पवित्रता देखि दादी चारि चुरुक पीवो केलनि। पानि पीवि दादी पानिक पह देखैत खेत धरि गेली। पानिक वेग देखि दादी मने-मन करीनक पानिसँ तुलना करए लगली। खेतकेँ पटैत देखि दादी सोचलनि जे तत्ते पानि अबैत अछि जे एक्के दिनमे सगरे बाध पटि जाएत। थोड़े काल ठाढ़ भऽ दादी खेत पटैत देखि घुरि कऽ दमकल लग अएलीह। दमकल लग अवितहि दादीक मनमे भेलनि जे बड़ चिक्कन पाइन छैक तेँ नहा लितहुँ। मुदा फेड़ैबला साड़ी नहि रहने नै नहेलीह।

जहियासँ डेढ़ बीघा खेत विसेसरकेँ भेल तहियासँ विसेसर एक उखड़ाहा बोइन करए जाइत आ एक उखड़ाहा अपने खेतमे काज करए लगल। डेढ़हो बीघा खेत कऽ चारि कोला बना लेलक। दूटा कोला दस-दस कट्ठाक आ दूटा पँच-पँच कट्ठा बनौने। तीनि कोलाक -पच्चीस कट्ठा- उपरका माटि उठा पाँच कट्ठा कऽ भीठ जमीन बना लेलक। बेर टगैत सुति उठि कऽ विसेसर मुँह-हाथ धोय तमाकुल चुनबए लगल। तमाकुलो चुनबैत आ मने-मन विसेसर सोचवो करैत जे जाबे खेतमे पटबैक जोगार नहि हएत ताबे खेतक कोनो मोल नहि। पानि तँ खेतीक मुख्य अंग थिक। मुदा पानिक जोगार करब तँ हँसी-ठट्ठा नहि छी। बोइन करैबला जँ बोरिंगक बात सोचै तँ ओ मात्र मनक उड़ाने हएत। मुदा जरुरी तँ अछि। गुनधुनमे पड़ल बिसेसर मन तमाकुलो चुनाएव विसरि गेल। अनायास विसेसरक मनमे आएल जे हम ने गरीब छी मुदा हमरा खेतक आड़ियेमे तँ बचनू आ बचनाक वेसी खेत अछि। तँ दुनू गोटेकेँ बुझा कऽ बीचमे बोरिंग गरबैले कहियै। एते दिन ने बोरिंगक गुण नहि बुझैत छल, मुदा श्यामानन्दक उपजा देखि तँ सभकेँ नजरि खुजलै। एते बात मनमे अबिते विसेसर हाँइ-हाँइ कऽ तमाकुल चुना मुँहमे लेलक। तमाकुलक थुक फेकि विसेसर मोहिनीकेँ कहलक- ‘‘हम एकटा काज करए जाइ छी, साँझ धरि आएब।’’ कहि विसेसर बचनू ऐठाम विदा भेल।

एक्के टोलमे विसेसर, बचनू आ बचनाक घर। बचनूक घर पहिने पड़ैत तँ विसेसर पहिने बचनूक ऐठाम पहुँचल। दुनू बापूत बचनू महीसि लऽ कऽ पारा तकै लऽ भोरे निकलल जे अखन धरि घुरि कऽ नहि आएल छल। बचनूक दलानपर जा विसेसर चारु दिशि बचनूकेँ ताकए लगल। मुदा ककरो देखवे ने करैत। बचनूक ढेरबा बेटी रेखा पानि आनए अंगनासँ कल दिशि निकलल कि विसेसरपर नजरि पड़लै। डोल रखि रेखा आंगन जा माएकेँ कहलक- ‘‘विसेसर दादा दूरापर ठाढ़ छथिन।’’

रेखाक बात सुनि माए कहलक- "जा कऽ पूछि लहुन जे कोन काज अछि?"

आंगनसँ रेखा दलानपर अबिते छलि कि बचनूकेँ महीसिक संग अबैत विसेसर देखलक। आगू-आगू बचनू आ पाछू-पाछू महीसपर चढ़ल बेटा। भूखे-पियासे दुनू बापूत लहालोट होइत। बचनूकेँ देखि विसेसर पूछलक- "अखन धरि बासिये मूँहे छह?"

भूखसँ बचनुक पेट खलपट भेल। मुदा महीसिक पाल खेलासँ मन खुशी। भूख कऽ बिसरैत बचनू बाजल- "कि कहिहह भैया। तीनि बजे रातियेसँ महीसि अड़-बौँ करए लगल। बिछानपर सँ उठि कऽ देखिऐक तँ गुप्प-गुप्प अन्हार। जत्ते समए बितैत जाए तत्ते महीसि जोर-जोरसँ डिरिआइत। तखनेसँ जागल छी। ओँघीसँ देहो भसिआइए। मुदा राजाजीक कृपासँ महीसि पाल खा लेलक। पाँच रुपैआक गाँजा हुनका कबुला केलियनि। भीड़ो भेल तँ काजो भेल। किम्हर-किम्हर अएलह हेन?"

जिज्ञासाक नजरिसँ विसेसर बचनूकेँ कहलक- "नमहर काजसँ आएल छलौं मुदा तोँहू तँ थकले छह। ताबे बचना ऐठाम जाइ छी। नहा-खा कऽ तहूँ ओतए अबिहह।"

विसेसर आगू बढ़ि गेल। आंगन जा बचनू ओसारपर खूँटा लगा वैसि घरवालीकेँ कहलक- "राजाजी दहिन छलाह। पारा देखिते महीसिमे लगि गेल। मुदा तेना घेराउर करए लागल जे आबै ने दिअए। हम ताबे नहाइ छी अहाँ एक आहूल घास लऽ जा कऽ महीसिक आगूमे दऽ दिऔ आ ओतए बैसब। महीसिकेँ तकैत रहब जे बैइसे नहि।"

विसेसर बचना ऐठाम पहुँचल तँ देखलक जे दुनू परानी रक्का-टोकी करैए। आंगनक परदा-टाट उजाड़ि बचना सरल कड़ची छँटिया कऽ एक भाग रखैत आ नीक कड़ची दोसर भाग। बचनाक घरवाली फुलिया अंगनेसँ जोर-जोरसँ बजैत जे भदबामे टाट किअए बन्है छी? घरवालीक बातपर ध्यान नहि दऽ बचना टाटक कड़चियो सरियबैत आ असथिरसँ कहबो करैत- "अंगनाक मुँह परक टाट छी। जखन उजाड़ि देलहुँ तँ बन्हबे करब।"

आँखि गुड़ेरि कऽ फुलिया कहलक- "टाट उजाड़लौं किअए? जे बेपर्द भेल। चारि दिनले की होयतै?"

जबाव दैत बचना कहलक- "हमरा कि भदबा बुझल रहए जे टाट नहि उजाड़ितौं। अगर अहींकेँ भदवा बुझल छल तँ किऐक ने टाट उजाड़ैसँ पहिने कहलौं जखन टाट उजाड़ि देलिऐक तखन बन्हबे करब।"

दुनू बेकतीक रक्का-टोकी सुनि विसेसर मने-मन हँसैत। विसेसरपर नजरि

पड़ितहि बचना डाँटि कऽ फुलियाकेँ कहलक- "दरबज्जापर विसेसर भैया छथि आ अंगनामे अहाँ तूफान उठौने छी। चुप रहू।"

बचनाक बात सुनि फुलिया चुप भऽ ओलतीमे आबि दुआर दिस तकलक तँ विसेसरकेँ देखि मुँह झाँपि लेलक। विसेसरकेँ बचना कहलक- "चैकीपर बैसह भैया। हमर हाथ मटिआह अछि। कनिये कड़ची सरियबै लऽ अछि तखन हाथ धोय निचेनसँ गप्प करब।"

विसेसर बचना लग आबि टाटक जगह नाइप, माइटपर कड़चीसँ चेन्ह दऽ बचनाकेँ टाटक बत्ती बैसबैले विसेसर बचनाकेँ कहलक। दूटा बाँसक टोन बत्तीक तरमे दऽ बचना चारिटा बत्ती बिछौलक। ताबे बचनू सेहो लफड़ल आएल। तीनू गोटे टाट बान्हि, तीनिटा खूँटा गाड़ि देलक। तीनू खूँटा लगा टाट बान्हि बचना पत्नीकेँ कहलक- "टाट भऽ गेल। खरड़ासँ कुरकुट-मुरकुट खरड़ि लिअ। तखन बाढ़निसँ बहारि लेब।"

तीनू गोटे कलपर जा हाथ-पाएर धोय, दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसल। दुनू हाथ गमछासँ पोछि बचना तमाकुल चुनबए लगल। बचनू अपन महीसिक बात बचनाकेँ कहलक। दुनू गोटे विसेसर आ बचनूकेँ तमाकुल दऽ बचना अपनो मुँहमे लेलक। बचना विसेसरकेँ पूछलक- "कोन काजे भैया आएल छेलह?"

थूक फेकि विसेसर दुनू गोटेकेँ कहए लगल- "अपना तीनू गोटेक खेत एकठाम अछि। तँ विचार भेलि जे एकटा बोरिंग तीनू गोटे मिलि कऽ गड़ा लाय। श्यामकेँ देखै छहक जे अवारा जेकाँ भरि दिन बौआइल-टौआइल घुरैत रहै छेलै से केहेन गिरहस्त भऽ गेल। गाममे क्यो हाथ मिलबैबला छै? जेहने अपने मेहनती अछि तेहने स्त्रियो छैक। साले भरिमे दुआरपर बखारी बना लेलक।"

विसेसरक विचार सुनि बचनू आ बचना गुम्म भऽ सोचए लगल जे ओते रुपैआ कतएसँ आओत जे बोरिंग गराएब। बड़का-बड़का गिरहत बुते तँ होइते ने छन्हि आ हम कोन मालमे माल छी। दुनू गोटेकेँ चुप देखि विसेसर कहलक- "जहिना तूँ दुनू गोरे अनाड़ी छह तहिना तँ हमहूँ छी। मुदा श्यामानन्द तँ बोरिंगक तड़ी-घटी जनैए। तँ तीनू गोरे श्यामक ऐठाम चलि कऽ पहिने बुझि लाए।"

श्यामानन्दक बात सुनि बचनू बाजल- "बड़ सुन्नर विचार भैया अहाँ कहलिऐक। श्यामक घर कि कोनो दूर अछि, तीनू गोरे चलू। अगर काज सम्हरैबला हएत तँ करब नइ तँ नहि करब। तेइलए कि कोनो डाँड़-बान्ह छै।"

तीनू गोटे श्यामानन्दक एहिठाम विदा भेल। श्यामानन्द घरपर नहि। घरपर पता लागल जे ओ खेतमे छथि। तीनू गोटे खेत दिशि चलल। खेतमे श्यामानन्द ओराहैबला मकैक बालि बीछि-बीछि तोड़ैत। एक छिट्टा कोबी काटि कऽ आड़िपर रखने। दू-दू, अढ़ाइ-अढ़ाइ किलोक कोबीक फूल। फरिक्केमे तीनू गोटेकेँ अबैत

देखि श्यामानन्द आगू बढ़ि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल- ‘‘गोड़ लगै छी भाय-साहेब। जखन एहि बाध दिशि एलौं तँ कने हमरो खेती देखि लियौ।’’

मुस्कुराइत विसेसर श्यामानन्दकेँ कहलक- ‘‘बौआ श्याम, अहींक खेती देखैलए आ किछु विचार करैलए तीनू गोरे एलहुँहें।’’

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू विसेसर, बचना आ बचनू चलल। कोबीक छिट्टा लग ठाढ़ भऽ श्यामानन्द कहलक- ‘‘विसेसर भाय, आइ पनरहम दिन छी। पनरह दिनसँ एक-छिट्टटा दू छिट्टा कऽ कोबी कटै छी।’’

विसेसर पूछलक- ‘‘कोबी बिकाइत कोना अछि, श्याम।’’

विसेसरक सवाल सुनि श्याम उत्तर देलक- ‘‘भाय की कहू? घरेपर सभ कोबी बिक चाइए। हमहूँ एत्ते केने छी जे हाट-बजारसँ दू रुपैआ किलो कम दइ छियै। लेबालोकेँ असान आ अपनो असान। संगे समाजक लोक खाइए। सेहो खुशी।’’

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू तीनू गोटे आड़िये-आड़ि घुरि खेत सभ देखए लागल। बीघा भरि मकइ। पँच-पँच हाथक हरियर-हरियर फुलाएल गाछ। तीनि-तीनि, चारिटा बाइल गाछमे झूमैत। जेना जुआन कनियाँ अपन जुआनीक गुणसँ झुमैत तहिना मकइक गाछ झुमि-झुमि एक-दोसरसँ लट्टा-पट्टी सेहो करैत। मकइक आड़ि टपिते दू बीघा फुटल गहूम। दुनू बीघाक एक रंग गहूम, जकरा देखलासँ बुझि पड़ैत जे जँ उपरसँ थारी फेकल जाए तँ उपरे-उपर थारी कतौसँ कतौ चलि जाएत। जहिना पोखरिक पानिपर झुटका फेकलासँ होइत। गहूमक सटले पूवारि भाग बीघा भरि अल्लू। अल्लुक गाछ जुआ कऽ लटुआइत। पाँत सभमे दरारि फटि-फटि गेल। आइड़िक कातेक एकटा गाछ कऽ विसेसर खोधिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़ले जे किलोसँ बेसिये गाछमे अल्लु अछि। अल्लू देखि विसेसर श्यामानन्दकेँ पीठि ठोकि कहलक- ‘‘तोरे सन-सन युबक जखन गामक खेत पकड़त तखन अनेरे सबहक उद्धार हेतइ।’’

अल्लू खेतक बगले उत्तरमे टमाटर। पाँचो कट्ठा टमाटरक गाछ फड़सँ लदल। गोटि-पडरा गाछमे पकितो। जहिना मेघमे तरेगण देखि पड़ैत तहिना पाकल टमाटर खेतमे। टमाटर खेत टपिते कागजी-जमीरी नेबोक दू कट्ठा बगान। साले भरिक गाछ रहनहूँ गोटे-आधे फड़ पकड़ने। जुआनी पकड़ै लए गाछ तेजीसँ डेग बढ़ौने। गाछक जड़िमे पटबैले छड़ी बनाओल। एकोटा घासक दरस गाछक जड़िमे नहि। निङहारि-निङहारि विसेसर आ बचनू गाछ सभकेँ देखैत। एकटा गाछमे एकटा सूखल डारि देखि श्यामानन्द गाछक लग जा ओहि डारिकेँ काटि विसेसर लग नेने आएल। डारिकेँ हाँसूसँ चीड़ि आंगुर भरिक कीड़ा निकालि सभकेँ श्यामानन्द देखौलक। आगू बढ़ि श्यामानन्द विसेसरकेँ कहलक- ‘‘भाय साहेब, बीस

गाछ दारीम, पनरह गाछ अनरनेबा, पाँच गाछ धात्री, दश गाछ लताम, पनरह गाछ मद्रासी आम, पचास गाछ अनारस -जे आड़ि बना रोपने- तीनिटा मचान बना तीनि रंगक छोटका-बड़का अंगुर, आठ गाछ बेल, चारि गाछ सरीफा चारि गाछ आँता आ चारि गाछ समाटुक चिक्कू- लगा पाँच कट्ठामे रोपने छी। पाँच कट्ठामे केरा -सिंगापुरी, बंशीवट, मरीचमान, भोस, गौरिया, बरहरी, दूधी, बागनर, दूधमुंगर, झुरकुटिया- दश किस्मक रोपने छी। जइमे अखन तीसि-पोंइतीसटा घौर लटकल अछि। जाड़क मास दुआरे जुआइल तँ नहि अछि मुदा कोशा काटि देने छियै।''

किरिण डूबल देखि गुलाब आंगनसँ खेत आबि, कातेसँ मूड़ी उठा-उठा श्यामानन्दकेँ तकैत। मुदा मकइक दुआरे देखबे ने करैत। कोबीक छिट्टा लग आबि गुलाब ठाढ़ भऽ गेलीह। कने-कालक पछाति चारु गोटेकेँ टमाटर खेत दिशिसँ अवैत गुलाब देखलनि। लग अबिते गुलाबकेँ श्यामानन्द पूछलखिन- ''अनेरे किऐक धड़फड़ाएल एलहुँ। विसेसर भाय सभ आबि गेला। हुनके सभकेँ घुमा-घुमा देखबए लगलहुँ तँ कने अबेर भऽ गेल।''

बिना संकोच केनहि गुलाब श्यामानन्दकेँ कहलखिन- ''कोबी कीनिनिहार सभ आबि आंगनमे बैसल छथि। तँ एलहुँ। अहाँ जखन आएब तखन आएब ताबे हम कोबीक छिट्टा नेने जाइ छी। कनी अलगाए दिअ।''

श्यामानन्द कोबीक छिट्टा गुलाबकेँ उठा देलक। गुलाब माथपर छिट्टा नेने आंगन विदा भेली। माथपर छिट्टा, दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकड़ने, दुलकी डेग बढ़बति गुलाब 'सैंया भेल किसनमा' घुनघुनाइत आंगन दिशि लफड़ल चललीह।

विसेसर श्यामानन्दसँ पूछलक- ''बौआ श्याम, खेती करैक एते लूरि कोना सिखलहुँ?''

विसेसरक बात सुनि श्यामानन्द मने-मन हँसैत उत्तर देलक- ''भाय, अपनो छगुन्ता लगैए जे की छलौं आ की छी? हमर सार पूसा कृषि कॉलेजसँ पढ़ने छथि। ओ खेतीक विशेषज्ञ छथि। मुदा हमरा कहियो हुनकासँ खेतीक गप नहि भेलि छल। चारि बर्ख धरि ओ पढ़लनि। विद्यार्थियो नीक रहथि आ मेहनतो खूब करथि तँ फस्ट डिवीजनसँ पासो केलनि। पास करिते नोकरियो भऽ गेलनि। एक दिन हम सासुर गेलहुँ तँ अलमाड़ीमे भरल किताब देखलिऐक। किताब देखि मनमे आएल जे दिवारे-दिम्मक सभ किताब खा जाएत तहिसँ नीक जे हमहीं एक मोटा किताब साइकिलपर लादि लऽ जाय। सासुरे छल तँ ककरोसँ किछु पूछैक जरुरते नहि। एक मोटा किताब अपना ऐठाम लऽ अनलहुँ। सभ किताबकेँ नीक जेकाँ सरिया कऽ रखलहुँ। मुदा पढ़ी कहियो ने। किएक तँ भरि दनि गजे-भाँगमे बीति जाइत छल। मुदा जखन बोरिंग गरेलौं तखन खेतीक किताब सभ छँटिया

कऽ निकाललौं। अन्नक खेतीक एकटा किताब, तरकारी खेतीक किताब, फलक खेतीक किताब निकालि पढ़ए लगलौं। थोड़-थाड़ खेतीक लूरि तँ देखियो कऽ भऽ गेल छल मुदा कोन मासमे कोन चीजक खेती हएत, कैक बेरि पटाओल जाएत, कोन-कोन खाद कते-कते पड़तै, नीक बीआ कतए भेटत, ई सभ बात किताब पढ़ि कऽ बुझि गेलौं। जखन सभ बात बुझि गेलौं कि खेती दिशि आरो वेसी मन दौड़ल। बोरिंग गड़ाइये नेने रही।''

झलफल भऽ गेल। हाँइ-हाँइ कऽ श्यामानन्द बारहटा मकइक बाइल आ तीनिटा कोबीक फूल लऽ तीनू गोटेकेँ देलक। खेतक आड़ियेपर पतिआनी लगा चारु गोटे बैसि गप-सप्प करए लगल। विसेसर श्यामानन्दकेँ पूछलक- ''वौआ, बोरिंग-दमकलमे कत्ते खर्च भेल?''

बोरिंगक चर्चा सुनि श्यामानन्द उन्मत्त भऽ बाजए लगल- ''भाय अहाँ लग बजैत लाज होइए। पहिने जखन बोरिंगक विचार मनमे उठल तखन हुअए जे कत्ते लागत कते नहि। किऐक तँ लोकक मुँहे पोखरि खुनबैक खर्च सुनने रहियै तेँ हुअए। मुदा जखन किनैले गेलहुँ तँ साढ़े चारि हजारमे सात गेज टाटाक नबे फुट पाइप, पेंइतीस फुट पितरिया फिल्टर आ ऊषा मशीन भऽ गेल। छोट-छोट आरो कैकटा समान होइ छै से सभ आ गड़ाइक खर्च मिला कऽ पाँच सौ मे भऽ गेल। कुल मिला कऽ पाँच हजारमे बोरिंग-दमकल भऽ गेल।''

विसेसर- ''बोरिंग गड़बैक विचार मनमे कोना उठल?''

मुस्कुइाइत श्यामानन्द उत्तर देलक- ''जखन परिवारमे भिनाउज भऽ गेल तखन तँ अपना उपर अपन परिवारक भार पड़ल। जखन भार पड़ल तखन सोचए लगलहुँ जे पहिलुका जेकाँ जिनगी बितौलासँ भीख मांगए पड़त वा दोसर अपराधिक काज करए पड़त। जे दुनू मनुक्खक लेल अधर्मे काज छी। अनायास मनमे आएल जे हमहूँ मनुख छी। खेत छोड़ि दोसर अबलम्ब नहि देखि खेती दिशि धियान गेल। तखन खेतीक संबंधमे सोचए लगलहुँ। जखन खेतीक संबंधमे सोचए लगलहुँ तखन खेतीक लेल पानिक महत्व वुझए लगलिऐक। जखन पानिक महत्व बुझए लगलिऐक तखन पानिक जोगारक उपाय सोचए लगलहुँ। जखन पानिक उपाय सोचए लगलहुँ तखन वोरिंग दिशि धियान गेल। जखन बोरिंग दिशि धियान गेल तखन बोरिंग गड़बैक उपाय सोचए लगलहुँ। बोरिंग गड़बैक विचार करितहि रही कि मनमे एकटा नव विचार जगल। ओ नव विचार छल पूँजीक संबंधमे। पूँजी, सम्पत्ति, श्रम नहि, दू तरहक होइत-पहिल क्रियाशील आ दोसर ठमकल क्रियाशील पूँजी ओ थिक जहिसँ उत्पादन होइत आ गतिहीन पूँजी ओ थिक जे चलायमान नहि अछि। एत्ते बात मनमे अबितहि अपन सम्पत्ति दिशि ताकए लगलहुँ। तँ दुनू तरहक पूँजी पर्याप्त बुझि पड़ल। दश बीघा जमीन

भैयारीमे हिस्सा भेलि छल जहिमे आठ बीघा उपजाउ बुझि पड़ल आ दू बीघामे घरारी, परती, गाछी-बिरछी, बँसबाड़ि इत्यादि मिला कऽ देखलिऐक। ओना गाछी, बँसबाड़ि तँ थोड़-थाड़ क्रियाशीलो अछि मुदा परती आ पाकल सुखल बाँस, गाछ सेहो बहुत बुझि पड़ल। ओना परतियोकेँ तोड़ि कऽ क्रियाशील बनाओल जा सकैत मुदा तत्काल तँ ओ मारे अछि। परती आ सूखल-पाकल गाछपर नजरि अटकि गेल। बोरिंगक उपाय देखि मनमे खुशी उपकल। मनमे खुशी अबितै एकटा आरो बात धियानमे आएल। ओ बात ई जे घरवालीक गहना अनेरे घरमे पड़ल अछि। अखन ओकरा बन्हकी लगा बोरिंग गड़ा ली आ उपजा-बाड़ी भेलापर ओकरा छोड़ा लेब। बेसीसँ बेसी एतवे हएत ने जे छह महीना साल भरिक सूदि लगि जाएत। ई बात मनमे अबिते घरवालीकेँ कहलिएनि। घरोवाली मंथरा जेकाँ नहि द्रोपदी जेकाँ मानि गेली। पेटीसँ गहनाक मोटरी निकालि आगूमे रखि देलनि। गहना देखि हम क्षुब्ध भऽ गेलहुँ। दूटा गहना निकालि छह हजारमे बन्हकी लगेलहुँ। पाँच हजार बोरिंग-दमकलमे खर्च भेल आ एक हजार खेती करैले रखि लेलहुँ।"

एत्ते बात सुनि विसेसर मूड़ी डोलबैत बाजल- "हमरो तीनू गोटेक खेत एकठाम अछि। तीनि बीघ बचनूक, दू बीघा बचनाक आ डेढ़ बीघा हमर। हमहूँ तीनू गोरे मिला कऽ बोरिंग गड़बए चाहैत छी।"

विसेसरक बात सुनि श्यामानन्द अचंभित भऽ गेल। खुशीसँ श्यामानन्दक छाती फुलए लगल। मुस्की दैत श्यामानन्द बाजल- "भाय, हाथमे पानि ऐलासँ गिरहस्तक जिनगी बदलि जाइत छैक। हमरे लोक अवारा कहैत छल मुदा आइ लोक प्रणाम करैए।"

श्यामानन्दक बात सुनि उत्साहित होइत बचनू बाजल- "विसेसर भैया, अहाँ गरीब छी। हम आ बचन भाय तँ चीजबला छी। तीनि हजार हम जोगार करब आ दू हजार बचन भाय करह। काल्हिये श्यामकेँ संग केने बजार चलू।"

सहानुभूति दैत श्यामानन्द बचनकेँ कहलक- "दोकानदारसँ हमरा कारोबार चलैए तँ अधो-छिधो रुपैआक भाँज लगि जेतह तइयो काज चलि जाएत।"

चारु गोटे बजार जेबाक समए बना लेलक। शुभ काजमे बिलंब नहि। विसेसर श्यामानन्दकेँ कहलक- "बौआ, भिनसर अपने चलि आएब, समदिया भरोसे नहि रहब। हम सभ अखनेसँ रुपैआक ओरियानमे लगि जाइ छी।"

विसेसरक बात सुनि श्यामानन्द कहलक- "नहि, नहि, समदिया भरोसे हम नहि रहब। भोरे किछु पानि पीवि चलि आएब।"

सभ क्यो उठि कऽ विदा भेल।

घरपर पहुँचते श्यामानन्दकेँ पत्नी पूछलक- "एत्ते अबेर कतए भऽ गेल?"

श्यामानन्द पत्नीकेँ उत्तर देल- ''विसेसर भाय बोरिंग गड़ौता ओही गप-सप्पमे समए लगि गेल।''

बोरिंगक नाम सुनितहि गुलाब पतिकेँ कहलखिन- ''जँ विसेसर भैया बोरिंगक विचार अहाँसँ पूछैले ऐलाह तँ अहुँक फर्ज भऽ जाइए जे रुपैआ-पैसा दुआरे काज बिथुत ने होइन। गाममे तँ बहुत लोक छथि, अनकासँ पूछैले किऐक ने गेलाह। जेँ अहाँपर विसवास भेलनि तँ ने।''

रास्तामे बचनू विसेसरकेँ कहलक- ''भैया, अहाँक खेत ऊँचगर अछि आ हमरा दुनू गोटेक नीच। तँ ऊँचगरपर बोरिंग गड़ाएब नीक हएत।''

बचनूक बात सुनि हँसैत विसेसर कहलक- ''सभ क्यो रहबे करब। जतै नीक हएत ततै गड़ाएब।''

भोरे श्यामानन्द दतमनि करैत विसेसर ऐठाम पहुँचल। विसेसर सेहो बचनू ऐठामसँ आबि नहाइक ओरियान करैत। श्यामानन्दकेँ देखि विसेसर कहलक- ''अखन धरि घुमिते छह बौआ। हम नहाइक ओरियान करै छी।''

श्यामानन्द- ''हमरा मनमे भेलि जे कोनो बाधा तँ नहि भेलि। तँ आबि कऽ बुझि लेलहुँ।''

श्यामानन्द चलि गेल। घरपर पहुँचते हाँइ-हाँइ कऽ नहा जलखै खा विसेसर ऐठाम आएल बचनू आ बचना पहिनहि आवि गेल छल। चारु गोटे बजार विदा भेल।

बजार पहुँच बोरिंगक पाइप, दमकल आ आरो-आरो समान सभ कीनि, टाएर गाड़ी भाड़ा कऽ सभ सामान लदलक। दाम जोड़ि दोकानदारकेँ देलक। श्यामानन्द बचनूकेँ संग केने मिसतिरी ऐठाम गेल। एक किलोक रोहु माछ कीनि मिस्त्री पोलिथीनक झोरामे नेने घरपर पहुँचले छल कि श्यामानन्द सोर पाड़लक। आंगनसँ निकलि मिस्त्री श्यामानन्दकेँ पूछलक- ''किम्हर-किम्हर एलौं?''

मुस्कुराइत श्यामानन्द मिस्त्रीकेँ कहलक- ''एकटा आरो बोरिंग गड़बैक अछि। सएह कहैले एलहुँ। अखन टाएर गाड़ी अछि तँ गाड़ैक सभ समान लाइद दिऔ। काल्हि भोरेसँ हाथ लगा देवइ।''

श्यामानन्दक बात सुनि मिसतिरी कहलक- ''समान तँ पठा देब, मुदा हाथ काल्हि नइ लगत। किऐक तँ हमर सभ आदमी दोसर बोरिंग गाड़ैले गेल अछि।''

श्यामानन्द- ''दोसर कोनो उपाय नहि छैक?''

मिस्त्री- ''हँ, छै। हम तँ रहबे करब। जँ काज करैबला तीनिटा आदमी भऽ जाए तँ काल्हियो हाथ लगि सकैए।''

बचनू- ''आदमीक कमी नहि अछि। अखन समान नेने चलू आ जतए बोरिंग

गाड़ल जेतइ ततए बाँस-ताँस ठाढ़ कऽ, खाधि खुनि लेब। जते काज भेल रहत ओते समए काल्हि बँचि जाएत।''

टाएर मंगा, सभ सामान लादि गप-सप्प करैत सभ विदा भेल। थोड़े दूर आगू बढ़लापर विसेसर मिस्त्रीसँ पूछलक- ''अहाँ पढ़लो-लिखल छी?''

पढ़ल-लिखल सुनि मिस्त्री चैंकि कऽ विसेसरकेँ कहए लगल- ''हम पढ़ल-लिखल नइ छी। जखन बारहे-तेरहे बर्खक रही तखने बाबू मरि गेल। चारि भाए-बहीनिमे, दू बहिनिक बिआह-दुरागमन बाबूऐक सोझामे भऽ गेल छल। दू भाए-बहीनि कुमार छलौं। घरारी छोड़ि एक्को धुर बाधमे खेत नहि छल। मुदा माए जेहने लुरिगर तेहने जिबटगर। दोकानसँ तेबखा, खेरही आ मसल्ला कीनि आनै आ अदौरी-पापड़ बनबै। हमहूँ पापड़ बेली आ रौदमे सुखाबी। छोटकी बहिन आ माए अदौरी खोंटे। साँझू पहर कऽ झोरामे लऽ हम जा कऽ बेचि आबी। ओहिसँ गुजर करी। बहीनिक विआहो केलौं बहीनिक बिआहक साल भरिक बाद अपनो विआह केलौं। फागुनक समए रहै, झुर-झाड़ लगन चलैत रहए। कपड़ा दोकानदार रामफलक नोकर पड़ा गेलै। हम जखन पापड़ बेचए गेलौं तँ रामफल सोर पाड़लक। हम गेलौं। हमरा कहलक 'नोकरी करबह?' हम गछि लेलिऐ। दोसर दिनसँ नोकरी करए लगलौं। भरि दिन दोकानमे काज करी आ दोसर साँझमे अपना ऐठाम चलि आबी। गामपर आबि खाइ-पीबै राति धरि पापड़ बेलि-बेलि राखी। दिनमे माए ओकरा सुखाबे। आमदनी बढ़ि गेल। मुदा जते मन अपन काजमे लगाए तत्ते नोकरीमे नहि। एते बात सुनितहि विसेसर पूछलक- ''मिस्त्रिआइ कोना सिखलहुँ?''

मुस्कुराइत मिस्त्री विसेसरकेँ कहए लगलनि- ''मामा गाम गेलौं। ममिओत भाए चापाकल गाड़ैले जाइत रहथि। हमरो चलैले कहलनि। हमहूँ गेलौं। जहिठाम कल गाड़ैत रहथि तहिठाम हमहूँ कातमे वैसि देखए लगलौं। सरा-सरि पाइप गड़ैत जाय। हमरा काज हल्लुक बुझि पड़ल। कमाइयो बढ़ियाँ। कल गड़ौनिहारक पतिआनी लागल। दोसर दिनसँ हमहूँ काज करए लगलौं। दशे दिनमे मिस्त्री भऽ गेलौं। गाम अबै काल ममिओत पुरना सभ औजार हमरा दऽ देलनि। गाम आबि हमहूँ कल गाड़ए लगलौं। नोकरी छोड़ि देलिऐक। जखन बैसारी हुअए तखन पापड़ बनाबी। तीनि साल चापाकल गाड़ैत-गाड़ैत बोरिंग गाड़ैक सभ औजार कीनि लेलहुँ। जखन सभ औजार भऽ गेल तहियासँ बोरिंगक काज शुरु केलौं।''

मिस्त्रीक बात सुनि विसेसर हँसैत मिस्त्रीक पीठि ठोकि देलक। दिन उगले सभ -विसेसर, बचनू, बचना, आ मिस्त्री- घरपर पहुँच गेल।

घरपर अबितहि गाड़ीपर सँ सभ सामान उताड़ि, गाड़ीबलाकेँ पचास रुपैआ भाड़ा दऽ विदा केलक। श्यामानन्द सेहो आबि गेल। श्यामानन्दकेँ अविते विसेसर

कहलक- ''बौआ, अखन सभ क्यो छी। चलै चलू जे जगह नीक हेतै ओइठाम बोरिंग गराएब।''

विसेसरक बात सुनि सभ क्यो जगह देखैले चलल। खेत पहुँच सभ विसेसरक खेतकेँ ऊँच बुझि बोरिंग गाड़ैक विचार केलक। सभ राजी भऽ गेल। विसेसर भोलियाकेँ खनती आनए कहलक। बचनू बाँसक टोन अनलक। बचना कोदारि आनि खाधि खुनए लगल। झलफल होइत-होइत बोरिंग गाड़ैक सभ जोगार लगि गेल। मिस्त्री चलि गेल।

दोसर दिन भोरे मिसतिरी आबि भोलियाकेँ कहलक- ''जत्ते औजार अछि सभकेँ गनि लिअ, आ धिया-पूतापर नजरि रखने रहब नहि तँ औजार गड़बड़ कऽ देत।''

सभ औजार गिनती कऽ झोरामे रखि भोलिया कान्हपर लऽ विदा भेल। खेतमे झोरा रखि भोलिया आ बचनू पोखरिसँ पानि आनि-आनि खाधि भरए लगल। अखन धरि बचनाक कतौ पता नहि। मूड़ी उठा-उठा विसेसर बचना घर दिशि तकैत जे अखन धरि किऐक ने आएल। बचनाकेँ नहि अबैत देखि विसेसर बजबैले विदा भेल। बचनाक घरपर पहुँच विसेसर देखलक जे गाइयो-बड़द घरेमे छै। ने बचनाक पता आ ने घरवालीक। दरबज्जापर ठाढ़ भऽ विसेसर चारु कात ताकए लगल। मुदा कतौ नजरिपर पड़वे ने कएल। विसेसर घुरि कऽ चलि आएल। बोरिंग गाड़ब शुरु भेल। श्यामानन्द झोरामे कोबी, टमाटर, अल्लू नेने आएल। श्यामानन्दकेँ विसेसर कहलक- ''बौआ, जाबे बोरिंग गारल जाएत तावे अहूँ एतै रहू।''

किरिण उगैसँ पहिने बचनूक पत्नी हाथ-पाएर धोय, गोसाँइ घर जा, गोसाँइक आगूमे एक टंगा दऽ दुनू हाथ जोड़ि फुसफुसा कऽ गोसाँइकेँ कहलखिन- ''हे गोसाँइ बाबा अगर शुभ-शुभ कऽ बोरिंग भऽ जाएत तँ सवा सेर लड्डू चढ़ेबह।'' कहि घरसँ निकलि उपास करए लगली। सबहक भानस आ जलखै बचनुऐक ऐठाम होइक विचार भेलि छल तँ बचनुक पत्नी ओहि जोगारमे लगि गेली।

विसेसर आ श्यामानन्द बगलमे बैसि देखवो करैत आ गप्पो-सप्प करैत। श्यामानन्द बाजल- ''विसेसर भाय, जखन बोरिंग गरेलहुँ तखन लोक-सभ बाजए जे बोरिंगक पानिसँ उपजा थोड़े हएत! बरखा पानि भगवानक पानि छिअनि आ बोरिंगक पानि लोहा पाइपसँ अबैत अछि तँ जजात जरिये जाएत।''

श्यामानन्दक बात सुनि विसेसर ठहाका मारि हँसए लगल। विसेसरकेँ हँसैत देखि श्यामानन्द आगू बाजल- ''एतवे नहि भैया, खाद आनि जखन खेतमे देलिऐक तखन बाजए जे हाड़क खाद बनै छैक। हिन्दु कोना खाएत।''

दुनू गोटे गप-सप करिते छल कि बचना धड़फड़ाइल आएल। विसेसरपर

नजरि पड़ितहि बचना कहलक- ‘‘मौगीक फेड़िमे पड़ि गेल छी भैया। जखनसँ घरवाली बोरिंगक नाम सुनलक तखनसँ जना भूत लगि गेल होय। भरि राति ने अपने सुतल आ ने हमरा सुतए देलक। भरि राति की कहलक की नहि कहलक से ओते मनो ने अछि। अधरतियेमे पड़ा कऽ कतए दिन चलि गेलि। भोरेसँ ओकरा तकैत-तकैत तबाह भऽ गेलौं मुदा कतौ ने भेटलि। बोरिंगक दुआरे ताकब छोड़ि चलि एलौं। मालो-जाल अखने बहार केलौं हेन।’’

बचनाक बात सुनि विसेसर कहलक- ‘‘जे भेलै से भेलै, काजमे लगि जाह। पाछू बुझल जेतइ।’’

भरि दिनमे अस्सी फुट बोर भेल। अस्सी फुटपर जा कऽ लस्साबला माटि पकड़ा गेल। आगू पाइप धसवे ने करैत। जेना पहाड़ी इलाकामे होइत। सबहक बाँहि आ जाँघ सेहो दुखाए गेलैक। सबहक थाकनि देखि मिस्त्री काज छोड़ि देलक। सभ समान सरिया कऽ रखि मिसतिरी बचनू आ भोलियाकेँ कहलक- ‘‘इनहोर पानिसँ नीक जेकाँ ससारि लेब नहि तँ काल्हि काज कएल नहि हएत।’’

दोसर दिन भोरेसँ सभ काजमे जुटि गेल। पहिलुके तोड़मे दसो फुट लस्साबला माटिसँ आगू बढ़ि बौलपर पहुँच गेल। पेंइतीस फुट मोटका बालु भेटलासँ मिस्त्रीक मन गद्‌गद् भऽ गेल।

चारि बजैत-बजैत बोरिंग गड़ि गेल। खूँटा-खूँटी उखाड़ि मिसतिरी दमकल लगा बोरिंग चला देलक।

--१०--

विसेसर बोनिहार नहि, आब छोटका किसान भऽ गेल। अपन बदलैत जिनगी दिस नजरि दौड़बैत विसेसर मने-मन सोचए लगल जे कमसँ कम एकटा बड़द जरुरी अछि। डेढ़ बीघा खेती कोदारिसँ तत्काल तँ भऽ सकैए। मुदा बिना बड़दे काज चलब कठिन अछि। अगर ककरो हर जोति बड़द लेब तँ तीनि दिन जोतब तखन एक हरक काज होएत। एहि बेर तँ समाज मदति केलक तँ खेती भऽ गेल। मुदा सभ दिन तँ संभव नहि अछि। तखन एकटा उपाय अछि जे अदहा-छिदहा काज कोदारियोसँ कऽ लेब आ अदहा-छिदहा हरो मोल लऽ कऽ कऽ लेब। जखन पाइ-कौड़ी हएत तखन बुझल जेतैक। फेरि विसेसरक मनमे आएल जे जँ क्यो बड़द पोसिया लगाओत तँ सएह लऽ लेब। अपन जुइतिक काज रहत। ककरो जुइतमे नहि रहब। मुदा ककरा पूछब जे बड़द पोसिया लगेबह। मुदा समाजमे तँ यएह देखै छी जे क्यो गाए वा बड़द पोसिया लगबैए वा खेत भरना

लगबैए तँ सुराक लगा काज होइ छैक। दू-चारि गोटे लग बजबै तँ अपने भाँज लगि जाएत। जखन बड़द हएत तखन हरो बनबए पड़त। तत्काल जँ हर नहियो हएत तइओ साल-दू साल काज चलि सकैए किऐक तँ बेसी किसान ओहन अछि जे दू-दूटा हरखाड़ा आ पालो रखने अछि। जेना-जेना उपाए होइत जाएत तेना-तेना चीजो बनबैत जाएब। मद्दा सभसँ जरुरी अछि जे जखने बड़द भेटि जाएत तखने ओकरा रहैले घरोक जरुरी हएत। घरो नै अछि। एकटा बड़द रखैले बड़ भारी समस्या तँ नहिये अछि, मुदा समस्या तँ अछि। भनसे घर लगा कऽ एकचारी बान्हि ठाढ़ कऽ लेब। चारि-पाँचटा खूँटा एकटा पाढ़ि आ आठ-नअ हाथक ठाठ लगत। तीनि-चारिटा बाँस कीनि लेब तेहिसँ सभ काज भऽ जाएत। विसेसर सोचिते छल कि मोहिनी आबि पुछलक- "किअए मन्हुआएल बैसल छी?"

मोहिनीक बात सुनि विसेसर मोहिनीकेँ कहलक- "भने अहूँ आबि गेलहुँ, आउ, ऐठाम बैइसू। अखन धरि तँ बोइन करै छलौं, ने माल-जाल खूँटापर छल आ ने बेसी असार-पसार तँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाइत छल। मुदा आब खेतो भेलि आ पानियोक उपाए भऽ गेलि। जखन खेत आ पानि भऽ गेल तखन उपजो बढ़बे करत। ततबे नहि, जखन उपजा बाड़ी बढ़त तँ ओकरा रखैले घरमे कोठियो चाही, नार-पात रखैले जगहो चाही। ओना घरारीक कमी नहि अछि मुदा ओकरा व्यवस्थित ढंग धड़बए पड़त।"

मूड़ी डोलबैत मोहिनी बाजलि- "हँ, से तँ करैइये पड़त।"

विसेसर- "अखन धरि गाछी-बिरछीसँ जारन तोड़ि अनै छलौं, पत्ता बीछि अनै छलौं तखन भानस होइ छल। मुदा जाबे जारनक ओरियान नहि कऽ लेब ताबे तँ अनके गाछी-बिरछीक आशा रहत। तँ विचार अछि जे एकटा बड़द पोसिया लऽ ली। बड़द रखलासँ जरनोक ओरियान भऽ जाएत आ खेतो जोतैक। मुदा बड़द रखैसँ पहिने घर बन्हए पड़त। घर जे बान्हब से अपना बाँसो-लकड़ी नहिये अछि।"

मोहिनी विसेसरकेँ कहलक- "चारिटा हाट भोलिया केलक जहिसँ दू सए रुपैआ कमाइल। तँ हमर विचार अछि जे भोलियाकेँ साझी कऽ लिऔ। आइ जँ दू-चारि भाँइ भोलिया रहैत तँ एकटा बातो, मुदा से तँ नहिये अछि। लऽ दऽ कऽ असकर अछि।"

मोहिनीक बात सुनि विसेसर थोड़े काल गुम्म भऽ मोहिनीकेँ कहलक- "बजलौं तँ ठीके मुदा ओकरा भिन्ने किअए केलियै। बेहूदा छौँड़ा-मारैक भाँजमे पड़ि दुइर भऽ गेल तँ ने तामस उठल आ भीन केलियै। यएह उमेर ने कमाइ-खटाइबला होइ छै। अखन जे काजसँ देह चोरौत तँ कमाएत कहिया?"

मूड़ी डोलबैत मोहिनी बाजलि- "कहलियै तँ ठीके मुदा जहियासँ दुखन सिपाही

रबाड़लकै तहियासँ भाँग-गाँजा छोड़ि देलक।''

मुस्कुरा कऽ विसेसर बाजल- ''छुतहरक चालि छोड़ि जँ मनुक्खक चालि धड़त, तखने ने इज्जत-आबरु हेतै। हमरा कि कोनो ओकरासँ दुश्मनी अछि। सोर पाड़ियौ दुनू परानीकेँ।''

मने-मन खुशी होइत मोहिनी आंगन जा दुनू परानी भोलियाकेँ बजौने आइलि। विसेसर लग अबैत भोलियाकेँ छाती धकधकाइत। मुदा तइयो भोलिया आबि विसेसरक आगूमे बैसल। मेना -भोलियाक पत्नी- बगलमे ठाढ़ भेलि। विसेसर भोलियाकेँ कहलक- ''रओ भोलिया, भाँग-गाँजा पीबै दुआरे तोरा भिन्न केने छलियो जँ आब छोड़ि देलेँ तँ आइसँ साझी भऽ जो। हमहूँ दुनू परानी दिनोदिन बुढ़हे होइत जाएब मुदा तूँ दुनू बेकती तँ जुआन छेँ। जते मिहनत करमे ओते अपने ने सुख हेतौ। एते दिन खेतो ने छल, वोइन करै छलौं। मुदा आब तँ खेतो भऽ गेलौ आ पटबैले वोरिंगो। तँ मन लगा खेती कर। बड़बढ़ियाँ छोट-छीन रोजगारो शुरु केलँ। परिवार अगुअबैले बहुत मेहनत आ बहुत चीजक जरुरत होइ छै। पाइक काज तँ पाइये करत। घर लग जे डेढ़ कट्ठा खेत अछि एहिमे आंगन, घर, दुआर, मालक थैर आ अगवास बनाले आ तीमन-तरकारी बोरिंगे लग करब।''

विसेसरक बात सुनि मोहिनी बाजलि- ''एते दिन सोलहो आना बोनियेपर गुजर करै छलौं, पाइक कोनो आमदनीयो नहि छल मुदा आब तँ थोड़-थाड़ पाइयोक आमदनी भइये गेल। समाजमे पेंइचो-पालट ओकरे भेटै छै जकरा आमदनी रहै छै। एक्के बेरि जे सभ काज करए चाहब से तँ नहि हएत मुदा किछु नगदो आ किछु उधारियो लऽ कऽ एक-एकटा करैत जाएव तँ सभ काज भऽ जाएत।''

मोहिनीक बात ध्यानसँ सुनि विसेसर कहलक- ''अहाँक विचार एक तरहक अछि मुदा एत्तेटा जिनगीमे ककरोसँ किछु मंगलौं नहि, आब एहि बुढ़ाढ़ीमे कोना मांगव?''

विसेसरक विचारमे संकल्प छिपल अछि। जे मोहिनी बुझि गेली। सामंजस्य करैत मोहिनी बाजलि- ''अपने दुनू परानी बूढ़ भेलौं। पाकल आम जेकाँ कखन छी आ कखन गिर पड़ब तकर कोन ठेकान। तँ भोलियाकेँ घर-दुआर सुमझा दिऔ। जाधरि क्यो घरक भार उठा नहि चलैत ताधरि अबोधे-अनाड़ी रहि जाइत। करैत-करैत क्यो सीखैए।''

मोहिनीक विचार विसेसरकेँ जँचल। मुदा विसेसरक मनमे द्वन्द्व जगि गेल। द्वन्द्व एहि दुआरे जगल जे विसेसर अपना ढंगसँ परिवारोक रस्ता आ समाजोक बीच रहैक बनौने। एक टकसँ विसेसर आगू मुँहे देखि सोचए लगल। तहि बीच बचनू आएल। बचनूकेँ देखि विसेसर कहलक- ''आबह, आबह बचनू।(हाथक इशारासँ ओछाइन देखबैत)- ऐठाम बैसह।''

ओछाइनपर बैसि बचनू विसेसरकेँ कहलक- ''भैया, बड़ चिन्तित देखै छियह?''

बचनूक बात सुनि विसेसर बिना कोनो लागि-लपटिकेँ कहलक- ''चिन्ता कोनो तेहेन नहि अछि। परिवारेक संबंधमे किछु मनमे आबि गेल।''

परिवारक नाम सुनितहि बचनू बाजि उठल- ''परिवारेमे ने भैया सभ सुख-दुख भोगैए। तँ चिन्ता तँ करै पड़तह।''

बचनुक बात सुनि बिसेसर कहलक- ''कहलह तँ ठीके मुदा हमर चिन्ताक कारण दोसर अछि। एते दिन बोइन करै छलौं आ गुजर करै छलौं। मुदा आब अपना खेतो भऽ गेल, खेत पटवैले पानियोक जोगार भऽ गेल। तँ आब उपजा-बाड़ी सेहो बढ़त। ओहि खेतकेँ जोतै-कोड़ैले बड़द चाही, हर-कोदारि आरो औजारो चाही। बड़द रखैले घरो चाही। नार-पात रखैले जगहो चाही। एते दिन तँ एक्केटा घरसँ काज चलि जाइत छल मुदा आब से हएत? अपना तँ डेढ़ कट्ठा घरारी छोड़ि आरो किछु अछि नहि। यएह चिन्ता मनमे घुरिआइत अछि।''

विसेसरक बात सुनि बचनू कहलक- ''भैया कहलक तँ सभ ठीके मुदा समाज समुद्र होइत। तोरा अपना बुझि पड़ै छह जे किछु नहि अछि मुदा गाममे तँ सभ कुछ अछि। तइले एत्ते चिन्ता किऐक करै छह। जाबे तोरा अपना बड़द नहि भऽ जेतह ताबे हम अपन बड़दसँ खेती सम्हारि देवह। घर बन्हैले बाँस आ लकड़ी सेहो सम्हारि देबह। जखन उपजा-बाड़ी हेतह तखन हमरा ओकर दाम दऽ दिहह। तोरा पाबि हम एते करै छी आ तोँही लटपटा जेबह।''

बचनुक बात सुनि विसेसर कहए लगल- ''हम तँ पढ़ल-लिखल नइ छी बचनू मुदा आँखि तँ अछि। अपने गामटा मे नहि, आनो गाममे देखै छी जे हमरा-तोरा सन जे पछुआइल परिवार आ लोक अछि, ओकरामे किछु ऐहेन दुरगुन अछि जकरा सुधारने बिना अगुआइब कठिन अछि।''

विसेसर बात सुनि बचनू चौंक कऽ पूछलक- ''से की भैया?''

''सएह तँ कहै छिअह। अपनो गाममे देखै छहक ने जे अनेरे छोट-छीन कारणे, भरि-भरि दिन लोक मरद-औरत गारि-गड़ौबलि आ झगड़ा-झंझटमे समए बितबैत अछि। जहिसँ परिवारक काज मारल जाइ छै। जखन परिवारक काज मारल जाएत तखन ओ परिवार आगू मुँहे कोना ससरत?''

मूड़ी डोलबैत मुँह बाबि विसेसरक बात सुनि बचनू बाजल- ''हँ, ई तँ ठीके कहलक।''

विसेसर- ''एतवे नहि बचनू, आरो बात अछि। हमरा-तोरा परिवार सन परिवारमे देखबहक जे जकरा उपरमे घरक भार रहै छै ओ भरि दिन काजसँ लऽ कऽ आरो तरहक जोगारमे तंग-तबाह रहैए मुदा घरक आन गोटेकेँ धन्य सन।

जना एक्के गोटेकेँ कमाइक भार छै आ दोसर-तेसरकेँ सिर्फ खाइक। ततवे नहि, आरो देखवहक जे कमाइ-खटाइबला जे अछि ओ भरि-भरि दिन भाँगे-गाँजाक पाछू बौराइल रहैए।''

बचनू- ''हँ, इहो बात ठीके कहलह।''

विसेसर- ''जाधरि कोनो परिवारमे, परिवारक सभ सदस्य अपन परिवार बुझि नहि लगि जाएत ताधरि कोनो परिवारकेँ आगू बढ़ब कठिन अछि। जखने परिवारक सभ आदमी अपन शक्तिक अनुरुप श्रम करए लगत तखने ओ परिवार धुधुआ कऽ आगू बढ़ए लगत। अखन धरिक जे अपन सबहक परिवारक दिशा रहल ओ ऐहन बनि गेल अछि जहिमे जिनगीक महत्वकेँ छोड़ि कल्पनामे चलि रहल अछि। तेँ सभ कष्टकर जीवन बना कल्पित जीवन जीवि रहल अछि।''

एते बात सुनिते बचनू विसेसरकेँ कहलक- ''भैया, हम एकटा काजे आएल छलौं।''

''कोन काज?''

''फगुआक समए लगिचा गेल। पानिक दुआरे गहूमक खेती करबे ने केलहुँ। किऐक तँ अपना बाधमे ने एक्कोटा बोरिंग छल आ ने पोखरि। लऽ दऽ कऽ एकटा पोखरि अछि, जँ अहू पोखरिक पानि उपछि गहूमे पटा लइतहुँ तँ गाए-महीसि कतए पानि पीबैत। ततबे नहि, आगि-ताइगिक दुआरे सेहो किछु पानि रहब जरुरी अछि। मुदा आब तँ अपन बोरिंग भऽ गेल। खेतो सभ खाली भऽ गेल। मोसुरी-खेसारी सभ उखरि गेल। अखन कोनो खेती करैक समए अछि कि नहि? सएह पूछै लेल आएल छलौं।''

बचनुक बात सुनि विसेसर बुझबए लगल- ''खेती तँ बारहो मास होइत छैक। एते दिन अपना हाथमे पानि नहि छल तेँ नहि होइत छल। जखने जागी तखने परात। दमकल बोरिंगमे लगा जते खसल खेत छह, सभकेँ पटाबह। हमहूँ पटा लेब। बचनोकेँ आइये कहि दहक। तीनू गोटे सभ खेत पटा खेरही, मकई आ सूर्यमुखी फूल तेलक लेल वाओग कऽ लेब।''

मकई आ सूर्यमुखी नाम सुनि बचनू पूछलक- ''भैया, खेरहीक बीआ तँ अपनो घरमे अछि मुदा मकई आ सूर्यमुखीक बीआ कतए सँ आनव?''

विसेसर- ''कोन कमी छै। बजारमे सभ किछोक बीआ भेटै छै। पहिने खेत पटा कऽ जोत-कोड़ तँ करह। जखन बीआ आनए बजार जाए लगिहह तखन गरमा धानक आ तीमन-तरकारीक बीआ सेहो नेने अविहह।''

बचनू- ''बेस कहलह भैया। आइयेसँ मुसताइज भऽ जाइ छी। मुदा भैया एकटा बात तँ पुछवे ने केलियह। पाछु कऽ मन पड़ल। तीमन-तरकारीक जे

खेती कहलह से तँ बड़बढ़ियाँ मुदा गामक लोक तँ किचाड़त किऐक तँ तरकारी खेती तँ अपना ऐठाम कोइर-कुजरा करैए।''

बचनुक बात सुनि विसेसर ठहाका मारि हँसैत कहए लगल- ''धुर बूड़िबक कहीं कऽ। कम-सम तरकारी खेती तँ सभ करैए, तखन लोक किऐक हँसतह। जहि चीजक खरचा सभ परिवारमे होइए ओहि कऽ उपजवैमे लोक किऐक हँसत।''

बचनू- ''तेसर सालक एकटा किस्सा कहै छिअह। हमर कुटुम तमोरियामे पानक खेती केलक। बेचारा गरीब अछि। बोइन करैए। पान उपजबैक सभ लूरि बेचारा सीखने अछि। पानक आमदनी देखि एक कट्ठा खेती केलक। बड़ सुन्नर पान उपजलै। एक्के-दुइये गामक सभ बुझलक। जखन बुझलक तँ ऐका-एकी लोक सभ आबि-आबि देखए लगल। देखला बाद गामक सभ बरैय चौगामा बरइक पनचैती बइसौलक। पनचैतीमे सभ मिलि निर्णए केलक जे तीनि दिनक भीतर ओ बरैब उजाड़ि लिअ नहि तँ बलजोरी बरैब उजाड़ि देवइ। पान उपजौनाइ हमर पुस्तैनी खेती छी, दोसर जाति किऐक उपजाओत। बेचारा हमर कुटुम बरैब उजाड़ि लेलक।''

बचनुक बात सुनि, आरो जोरसँ ठहाका मारि विसेसर कहलक- ''ऐहेन-ऐहेन घटना मूर्खपन्नाक चलैत होइ छै। आब ऐहेन घटना थोड़े हाएत।''

दुनू गोटे विसेसर आ बचनू गप्प-सप्प करिते छल कि श्यामानन्द सेहो बजारसँ घुरै काल ओहि देने आएल। श्यामानन्दकेँ देखि विसेसर कहलक- ''आबह-आवह वौआ श्याम। अखन हम दुनू गोरे खेतिऐक गप्प करै छलौं। भने तहूँ आबि गेलह।''

श्यामानन्द- ''भैया, अखन हमहूँ औगिताएल छी। निचेनमे कखनो फसल चकरक गप्प करब। भोलियाकेँ कहि दिहक जे टमाटर आ फुलकोबी दुइर भेलि जा रहल अछि तँ काल्हि भोरे आबि कऽ जते दुइर होइबला अछि ओकरा काल्हि हाटमे बेचि लिअए। दुइर भेलासँ की फल। कने बेसी मेहनत हेतै मुदा पाइओ तँ हेतइ। अखन जाइ छी।''

विसेसर- ''बचनू, जहिना सभ रंगक किसान अछि। खेतक हिसाबे, ककरो दू बीघा खेत छै, ककरो तीनि बीघा, ककरो दश बीघा। तहिना खेतियो अलग-अलग ढंगसँ करए पड़त। ने एक रंग खेत सभ किसानकेँ अछि आ ने एक रंग खेती कएलासँ काज चलत। ओना परिवार सभ किसानक एक रंगाहे अछि। चारि गोटेसँ लऽ कऽ सात-आठ गोटे तक। मुदा खेत तँ कम-बेसी अछि तँ परिवारक हिसाबसँ खेती करए पड़त। दोसर बात अछि जे कोनो परिवारमे अधिक खेत अछि मुदा काज केनिहार -श्रमिक- कम अछि। तहिना कोनो परिवारमे खेत कम

अछि आ खटनिहार अधिक अछि। तहिना उपजोक अछि। कोनो फसलमे कम श्रम लगैत अछि आ कोनो फसलमे अधिक। लाभोक दृष्टिए सेहो छैक। तँ सभ हिसाब मिला कऽ किसानकेँ चलए पड़त।''

--११--

अबेर कऽ उठि महंथ रघुनाथ दास डोलडालसँ आबि स्नान करति रहति। वारह बजे राति धरि जगल रहने अवेर कऽ निन्न टुटलनि। फुलचन दास बाल्टीनमे जल भरि महंथ जीक पीठक मैल छोड़बति रहनि। भोरे गंगानन्द नित्यकर्मसँ निबृत्ति भऽ चाह पीबि, पान खा महंथ जीसँ भेटि करए महंथ जीक स्थानपर पहुँच, मंदिरक आगूमे पजेबा सिमटीक बनल चवूतरापर बैसल। गंगानन्दकेँ देखि रघुनाथ दास हाँइ-हाँइ स्नान कऽ, कमंडलमे जल भरने मंदिर जा पूजा करए लगलथि। महंथ जीक फेड़ल लंगोटा आ खोडुकी फुलचनदास खींचि कऽ ढ़ाठपर पसारि मंदिरपर जा महंथजीक संग अस्तुति गावए लगल। पूजा विसरजन कऽ महंथजी गंगानन्द लग आबि पूछलखिन- ''किम्हर-किम्हर एलहुँ?''

चौबन्नियाँ मुस्की दइत गंगानन्द कहए लगलनि- ''अपनेसँ एकटा विचार करए एलहुँहेँ। चारु भरक गाममे धरमक काज जोर-सोरसँ भऽ रहल छैक, कतौ अष्टयाम कीरतन तँ कतौ यज्ञ तँ कतौ पूजा होइत। मुदा बीचमे अपन गाम छुटल अछि, तहि विचारसँ एलहुँहेँ। सुनैमे आइल अछि जे अइबेरि एगारहटा ग्रह एकठाम जम्मा भऽ रहल अछि। तँ की हएत की नहि तकर कोन ठेकान।''

गंगानन्दक विचार ध्यानसँ सुनि रघुनाथ दास कहए लगलखिन- ''बहुत दिनसँ हमरो मनमे छल, मुदा गामक लोकक मोन देखि अनठा दैत छियै। आइ जँ अहाँक मनमे धरमक रुचि जगल तँ हमहूँ तैयार छी। जहाँ धरि जे भऽ सकत तन-मन-धनसँ सहयोग करब।''

महंथ जीक विचार देखि गंगानन्द सुकलकेँ बजबै लऽ फुलचन दासकेँ कहलक। फुलचन दास सुकलकेँ बजबए विदा भेल। फुलचन दासकेँ विदा होइतहि हूँ-कारी भरैत महंथ जी बजलाह- ''हँ-हँ गाँआक सहयोग तँ जरुरी अछि। बिना समाजक सहयोगे ऐहन काज होएव कठिन अछि।''

मेरियाक संग बैसि सुकल चाहक दोकानपर गाँजा पीबैत। सात-आठ गोटेक मेड़िया सुकलक। रस्तेपरसँ फुलचन दास हिया कऽ सुकलकेँ देखि लगमे जा ठाढ़ भऽ गेल। फुलचन दासकेँ लगमे ठाढ़ देखि सुकल कहलक- ''बाबा तूँ किअए ठाढ़ छह, बैसह। बड़ सुन्दर बसन्ती माल छै।'' कहि सुकल कने अपनो

घुसुकि गेल आ मोहनोकेँ हाथक इशारासँ घुसकौलक। बीचमे फुलचन दास बैसि गेल। एक चीलम गाँजा एक्के-एक्के दम सभकेँ होइत। विचित्र मिलान गाँजा पीआकक। एक-एक दम मारि चीलम आगू बढ़ा दैत। चीलम आगू बढ़ि गेल छल तँ फुलचन दासकेँ नहि भेल। दोहरा कऽ अबैत-अबैत गाँजा सठि गेल। गाँजा सठिते रुपना आगूमे रखल पुड़ियासँ गाँजा निकालि वामा तरहत्थीपर रखि दहिना आँैठासँ मलए लगल। सोधन टाटक खरौआ जौर तोड़ि, गिरह बान्हि गुल बनौलक। विचहिमे चाहबला चाह बढ़ौलक। गाँजा मलि रुपना प्रेम कटारी लऽ गुलाव तख्तीपर गाँजा काटए लगल। सकरी कट तमाकुल तँ कटैक जरुरते नहि। हाँइ-हाँइ चाह पीबि सोधना गुल जरबए चाहक चुल्हि लग गेल। जाबे रुपना गाँजा-तमाकुल मिला चीलममे भरलक ताबे सोधनो गुल जरा अनलक। अखन धरि गाँजाक पहिल दम सुकल मारैत छल मुदा फुलचन दासकेँ एलासँ सुकल फुलचने दास दिशि बढ़ौलक। फुलचन दास दहिना हाथमे चीलम लऽ दुनू आँखि बन्न कऽ ठोर पटपटा कसि कऽ चीलममे दम मारलक। तते जोरसँ फुलचन दास दम मारलक जे चीलमसँ धधरा उठि गेल। धधरा उठितहि मुस्की दैत सुकल बाजल- "नीक माल छै बाबा।"

चीलम आगू बढ़बैत, मुँहसँ धुँआ फेकि फुलचनदास कहलक- "बहुत दिनक बाद ऐहन माल भेटल।"

तीनि-चारि चीलम आरो गाँजा पीबि सुकल फुलचन दासकेँ पूछल- "किम्हर-किम्हर बाबा सवारी एलै?"

- "तोरे बजबैले एलहुँ। महन जी आ गंगानन बैसल छथि ओएह कहलनि।"

दुनू गोटे -सुकल आ फुलचनदास उठि कऽ स्थान दिस विदा भेल। फरिक्केमे दुनू गोटेकेँ अबैत देखि महंथजी गंगानन्दकेँ कहलखिन- "कने असथिरसँ गप्प कऽ किछु खाइ-पीबैले दऽ देवइ। सभ काज सुढ़िया जाएत।"

स्थानपर पहुँचते सुकल दुनू हाथ जोड़ि मूड़ि झुका महंथ जीकेँ प्रणाम केलकनि। प्रणामक जबाव महंथ माथ झुका कऽ दैत आग्रहसँ कहलखिन- "आबह-आवह सुकल। बहुत दिन जीवह। तोरे चरचा दुनू गोटे करैत छलहुँ।"

जहिना आँखि लाल सुकलक तहिना फुलचनोक। दुनू गोरे चवुतरापर बैसल। गंगानन्द आ महंथजी विचार केने रहथि जे फागुनक समए नीक होइ छैक, ने बेसी जाड़ आ ने गरमी। ने पानि-पाथरक डर आ ने अन्हर-बिहाड़िक। गंगानन्द सुकलकेँ कहलखिन- "सुकल, जहिना महंथ जी स्थानक काजमे व्यस्त रहै छथि तहिना हमहूँ माया-जालमे ओझड़ाएल छी। एक्को क्षण छुट्टी नहि होइत अछि। इम्हर दौड़ तँ ओमहर ताक। खरचाक चिन्ता तोरा नहि! हमहूँ जोगार करब आ महंथोजी करताह। गाममे ऐहन मेला हुअए जे चारु भरक मेलाकेँ दाबि दै। तोँ

दशटा कार्यकर्ता बनावह जे गाममे चन्दो करत आ मेलोक व्यवस्था।''

महंथजी सुकल दिशि देखि मुस्कुरा कऽ अपन समर्थन देलखिन। अपन बढ़ैत इज्जतकेँ देखि सुकल हँसैत बाजल- ''हम की कोनो अहाँ सभसँ बाहर छी, जेना जे कहबै से हेतइ।''

सुकलकेँ राजी देखि, मने-मन महंथो जी आ गंगानन्दो खुशी भेला। खुशीक कारण छल चाइल सुतरब। रघुनाथदास मंदिरक आगुएमे अढ़ाइ-तीनि बीघाक परती। जहिपर गाए-महीसि चरैत। गामक धिया-पूता गुल्ली-डंटा, कबड्डी, गुड़ी-गुड़ी इत्यादि ओहि परतीपर खेलाइत। वएह परतीपर मेला लगबैक विचार तीनू गोटे केलनि। स्थानक चुनाव कऽ बैसार समाप्त भेल।

बेरु पहर गामक युवक सभकेँ सुकल बैसार केलक। बैसारमे सुकलक सभ गजेरीक संग गोटि-पङरा बैलियो युबक जमा भेल। सबहक बीच मेलाक चरचा करैत सुकल जनसेवा दलक चुनाव केलक। गाममे बड़का मेला, चारि दिनक होएत तेँ सभ युवक खुशी। गामक चन्दोक भार जनसेवे दलपर तेँ आमदनियो। जाधरि मेला सम्पन्न नहि हएत ताधरि सभ अपन-अपन घरक काज छोड़ि, एहि काजमे लगि जाए। हाथ उठा सभ अपन सहमत देलक। काल्हिसँ सभ दिन सबेरे सात बजे सभ एकठाम जमा भऽ काजक बँटबारा कऽ अपन-अपन काजमे जुटि जाए।

जहिया बुढ़वा महंथ गरीब दास मुइलाह तहियासँ रघुनाथ दास महंथ भेला। स्थानक सभ भार रघुनाथे दासपर आबि गेल। महंथ बनैसँ पहिने रघुनाथ दास पारिवारिके छलाह। रघुनाथ दासक पिताक धान चाउरक खरीद-बिकरी करैत छेलखिन। जहिसँ परिवारक गुजर-बसर चलैत छलनि। भैयारीमे रघुनाथ असकरे तेँ माए-बापक दुलारु। भरि दिन ओ इम्हर-ओम्हर घूमि समए बितवैत। काज-उद्यमसँ कोनो सरोकार नहि तेँ महा-कोइढ़ भऽ गेल। रघुनाथक पिता अपन दायित्व बुझि बेटाक विआह-दुरागमन कऽ देलक। जाधरि रघुनाथक माए-बाप जिवैत छल ताधरि रघुनाथ मौजक जिनगी बितौलक। दुनियाँ रुपी कन्याक सुन्नरताकेँ तँ रघुनाथ हृदयसँ चाहैत मुदा ओ -दुनियाँ रुपी कन्या- मिसिओ भरि देखए नहि चाहैत। मुदा जे दुनियाँ अमृतसँ लऽ कऽ बिख धरि, सुन्दरसँ लऽ कऽ कुरुप धरि, महात्मासँ लऽ कऽ दुरात्मा धरि, पंडितसँ लऽ कऽ मूर्ख धरिक भार उठौनिहार रघुनाथोक भार उठौने। माए-बापकेँ मरितहि रघुनाथक मौज ससरए लगल।

एक दिन रघुनाथ साझू पहरकेँ नाच देखै गेल। घरमे खाइक कोनो वस्तु नहि जे रघुनाथक स्त्री भानस करथि। भूखसँ बेचारीकेँ बरदास नहि भेलैक। अपन नैहरक थारी-लोटा, नुआक मोटरी बान्हि घरसँ विदा भऽ गेली। अधरतियामे

रघुनाथ नाच देखि कऽ आएल। सुन्न आंगन-घर देखि रघुनाथ पत्नीकेँ ताकए लगल। पहिने तँ रघुनाथकेँ बुझि पड़ल जे ओ कतौ नुका रहल अछि। मुदा बड़ी काल धरि तकलापर, जब नहि मिलल तखन निराश भऽ सुइत रहल। सुइत तँ रहल मुदा निन्ने ने होए। भरि राति रघुनाथ जगले रहि गेल। भोर होइतहि अड़ोस-पड़ोसक आंगनमे रघुनाथ घरवालीकेँ ताकए लगल। मुदा कतौ नहि भेटल। गाममे कतौ नहि भेटलापर रघुनाथ सासुर जाइक विचार केलक मुदा एक तँ रौतुका जगरना, दोसर भूखल। देहमे रघुनाथकेँ एक्को रत्ती हुबे ने बुझि पड़ै। ओसारपर बैसि रघुनाथ मने-मन सोचए लगल जे आब की करी? गुनधुनमे पड़ल। जहिना धुनि लगलापर किछु नहि देख पड़ैत तहिना सोगसँ रघुनाथोकेँ किछु सुझवे ने करैत। अनायास मनमे एलै जे माया-मोह छोड़ि बबाजी भऽ जाइ। मांगि-चांगि कऽ खाएब आ जेतइ मन फुरत तेतइ रहि जाएब। मुदा आत्महत्या करैक विचार मनमे नहि आएल। ओहनो हालतमे जीवैक आशा रहबे करै। मुदा स्त्रीक सोग रघुनाथक मनसँ हटबे ने करैत। गाड़ीक पहिया जेकाँ विचार मनमे उनटैत-पुनटैत। फेरि मनमे एलै जे पिते जेकाँ हमहूँ धान-चाउरक खरीद-बिक्री कए कऽ गुजर करब। मुदा तेहि लेल किछु रुपैआ चाही। फेरि रघुनाथक मनमे आएल जे सासुर जा घरवालीकेँ जबाव दऽ दियै, मुदा ओहो कायरता हएत। जेना-जेना रघुनाथक पेटमे भुखक आगि धधकै तेना-तेना विचारो बदलै। फेरि मनमे एलै जे घरक सभ कुछ बेचि चलि जाइ मुदा जकरा हाथे बेचब ओ पुनः एहि घरमे आवए नहि देत। तत्-मत् करैत दुपहर भऽ गेल। जोशमे आबि रघुनाथ घरसँ निकलि गरीब दासक स्थानपर पहुँचल। महंथ गरीबदास भोजन करए बैसल। रघुनाथकेँ देखि हाथक इशारासँ गरीब दास रघुनाथकेँ सोर पाड़लखिन। लगमे अबिते गरीब दास रघुनाथकेँ खाइले देलखिन।

नमहर स्थान। तीस बीधा जमीन। गाछी-कलम, पोखरि-इनार सभ भगवानक नामसँ। गामोक लोक, किछु नहि किछु जमीन, साले-साल दइते। जहिसँ स्थान मोटाइते जाइत। गाममे जे निपुत्र भऽ जाइत वा कोनो झंझटिया जमीन होए, ओ स्थानमे दऽ दइत। रघुनाथ गरीब दासक चेला बनि स्थानमे रहए लगल। दुनू साँझ रघुनाथ गरीब दासकेँ खाँटी करुतेलसँ मालिस करैत। कपड़ा खिचैत। रघुनाथाक सेवा देखि गरीब दास अगुआ चेलाक उपाधि दऽ देलक। ओना गरीबदासकेँ अनेको चेला मुदा मंदिरमे पूजाक करैक अधिकार रघुनाथेटा केँ।

सिपाहीक नोकरी सुकल दिल्लीमे एकटा सेठक ऐठाम पहिने करैत। गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोछ, बड़दक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि सुकलक रहै। कोठीक गेटपर कान्हमे बंदूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सुकल सेठक करैत। सेठक बड़की बेटीक विआह बम्बइक कपड़ा व्यापारीक संग भेलि। धनक अमार

मुदा लड़का एड्स रोगसँ पीड़ित। नोकरे-चाकर हाथे सभ कारोबार करैत। विआहक समए ई बात डोलीक माए-बापकेँ नहि बुझल। तैँ विआह केलक। जखन डोली सासुर बसए लगली तखन एहि बीमारिक भाँज लगलनि। पतिक बीमारी देखि डोली मने-मन कानए लगली। अपन मुरझाइल जिनगी देखि डोली सासुरसँ भगैक भाँजमे। एक दिन रोगक बहाना बना डोली इलाज करबए दिल्ली बापक एहिठाम चलि ऐली। डोलीक सोगाइल मन देखि माए-बाप पूछलखिन। मुदा अपन व्यथाकेँ झपैत डोली ककरो किछु नहि कहलक।

दाम्पत्य जीवनसँ निराश डोली, जिनगीक आशा देखि सुकलसँ तरे-तर प्रेम करए लगली। सठिआइल सुकल डोलीक चालाकी नहि बुझि प्रेम करए लगल। जतए डोलीक प्रेमक कारण काम तृप्तिक छलि ततए सुकलक जवानीक अल्हड़पनक। एक सुसम्पन्न परिवारक तँ दोसर उजड़ल-उपटल घरक। प्रेमक डोर कते मजगूत होइत दुनूमे सँ क्यो ने बुझैत। उमेरक बलउमकी दुनूमे।

एक दिन दुनू -डोली आ सुकल- सिनेमा देखए गेल। बालकोनीक टिकट कटा दुनू हॉलमे बैसल। सिनेमा शुरु भेल। सिनेमाक शुरु होइतहि, बगलक एकटा युबक, जे नशामे बुत्त, तिलमिला कऽ डोलीक देहपर गिरल। देहपर गिरितहि डोली चिचिआ उठल। डोलीकेँ चिचिआइब देखि सुकलक क्रोध बेकाबू भऽ गेल। उठि कऽ सुकल ओहि युबकक कालर पकड़ि दहिना हाथक ठूँसासँ नाकपर जोरसँ मारलक। नाकक चोट बरदास नहि कऽ ओ -युवक- तिलमिला कऽ निच्चाँमे गिरल। सिनेमा हॉलमे हल्ला भेल। सिनेमा बन्न भऽ गेलै। लगले थानाक दरोगा पाँचटा सिपाहीक संग पहुँच गेल। हल्लाकेँ भजियबैत दरोगा घटना स्थलपर पहुँचल। अचेत युबककेँ देखि दरोगा सुकलकेँ पकड़ि लेलक। दुनू -अचेत युवक आ सुकल- केँ थाना लऽ गेल। थाना पहुँचैत-पहुँचैत ओ युबक दम तोड़ि देलक। हत्याक मुकदमामे सुकल जहल गेल। ने क्यो पैरबी करैबला सुकलक आ ने क्यो पूछिनिहार।

जहल काटए लगल। एकान्तमे बैसि सुकल मने-मन सोचए लगल जे दू-पाइ कमाइ लऽ दिल्ली एलहुँ जे माए-बापक सेवा करब, मुदा मकड़ा जेकाँ अपने बनाओल जालमे फँसि गेलहुँ। सदिखन डोली कहैत छलि जे सुख-दुखमे संग देब मुदा एक्को दिन खोजो-पुछाड़ि करए नहि आइलि। जेकरा लेल अपन जिनगीकेँ बलि चढ़ेलहुँ ओकरा कोनो गम नहि। यएह छी धनिक-गरीबक प्रेम।

जहियासँ सुकल गाम छोड़ि दिल्ली गेल तहियासँ परिवारमे आशाक किरण फुटल। जाधरि सुकलक कमाइ माए-बापकेँ नहि होइत छल ताधरि गाछी-विरछीक पात बीछि, सुखल ठौहरी तोड़ि जारन, खेतसँ धान लोढ़ि, रब्बीक मासमे खेसारी, मसुरी, तीसी, गहूम बीछि, अल्हुआ चालि कऽ संग-संग बोइन-बुत्ता कए कऽ गुजर

करैत छल। मुदा सुकलक दरमाहा पाबि भरि पेट अन्न खाए लगल। बेटाक कमाइसँ दुनू परानी -माए-बापक- मनमे रंग-बिरंगक कल्पना आबए लगल। बेटाक बिआह करब, घर बनाएब, सुखसँ बुढ़ाढ़ीक दिन बिताएव। मुदा जहिया सुनलक जे जिनगी भरिक लेल बेटा जहलेमे रहत तहियासँ जिनगीक आशा टुटि गेलै। अधमरु भऽ जिनगी बितबए लगल। काज करैक शक्कि देहमे नहि रहलै। मुदा एहि दुनियाँक आकर्षण जहरो पीवासँ मनाही करए लगलै। अंतमे दुनू परानी -सुकलक माए-बाप- भीख मंगए लगल। किछु दिनक उपरान्त दुनू एहि दुनियाँकेँ छोड़ि देलक।

चौदह बर्ख दिल्लीक जहलमे बिता सुकल सोझे गाम विदा भेल। गाड़ी, बसमे टिकटक जरुरिए ने रहै किएक तँ जहलक मोहर बाँहिमे छापल रहै। आशा-निराशाक बीच जिनगी, तँ भूखो ने लगै। गाम आबि सुकल घर बसबए चाहलक मुदा घर-बसाएब ओते हल्लुक नहि।

गाममे जखन सुकल टहलै-बूलैले निकले तखन गामक लोककेँ बुझि पड़ै जे बोनसँ हुराड़ चलि आएल। फरिक्केमे सुकलकेँ अबैत देखि जनिजाति सभ अपन बच्चा लऽ लऽ घर चलि जाइत, ढेरबा-धिया-पुता नुका रहैत आ मरदा-मरदी मुँह घुमा लइत। जहलमे रहि सुकल आनो-आनो कैदीसँ गप्प-सप्प करैत, आ अपनो एकांतमे बैसि जिनगीक संबंधमे सोचैत, मुदा हजारो-लाखो किसिमक जिनगीक रास्तामे सुकल बौआइते रहि गेल। सही जिनगीक रास्ता भेटबे ने केलइ। जहिना फुलवाड़ीमे काँटक गाछ फुलेनहुँ काँटे कहबैत तहिना दिल्लीक अपराधी सुकल गामोमे अपराधिए जेकाँ बुझि पड़ैत। अपन दशा देखि सुकल अपन दुनियाँ बनबए लगल। ओ दुनियाँ थिक अपराधीक।

रघुनाथदास मंदिरकेँ चुनेठि, रंगसँ रंगि देलक। गामक चंदा मुड़ियाक संग सुकल करए लगल। आन-आन महंथानासँ रघुनाथदास मोट-मोट चंदा आ मेला देखैक हकार-नोत पठबए लगल। समधिआउरसँ पर्याप्त धन पाबि गंगानन्द अपन प्रतिष्ठा बनवैक भाँजमे, तँ चन्दा करैक जरुरते नहि।

मेला शुरु होइसँ दस दिन पहिनहिसँ सभ मेलाक तैयारीमे जुटि गेल। मेलाक तैयारी अद्भुत। जहिना दोकान-दौरीक व्यवस्था तहिना नाच-तमाशाक। जहिना स्थानक सजाबट तहिना इजोतक।

मेला शुरु भेल। रंग-विरंगक बबाजी सभ आबए लगलाह। केयो हाथीपर चढ़ि रेशमी पोशाकमे, तँ केयो ऊँटपर चढ़ि धप-धपौआ सुती वस्त्रमे। केयो लंगोटा-खौड़की पहिरि तँ केयो वस्त्र-विहीन, नंगटे। सभकेँ अपन-अपन कफला। सभ कफलामे अपन-अपन साजो-समान। केयो नबका चालिमे, तँ केयो पुरना। एक कफला एक समियानाक भीतर। एक-दोसरमे जाइ नहि दथि। खाइ-पीबैक

ओरियान सेहो फुट-फुट। व्यवस्था करैमे महंथ रघुनाथ दास पानि-पाइन भेल। एक महंथ दोसर महंथक खुल्लम-खुल्ला निन्दा करैत। तालमेल बैसवैमे महंथ रघुनाथ दासकेँ पाएर पकड़ैत-पकड़ैत तबाही। मने-मन बेचारे रघुनाथ दास सोचति जे कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ल जे ऐहन काज केलहुँ।

पतिआनी लागल दोकान। सभ रंगक समानक अलग-अलग बजार। राति-दिनमे अंतरे नहि बुझि पड़ैत। चारु भाग फोनपर नाचक स्टेज बनल। एक कोनपर थियेटर, दोसरपर रास, तेसरपर यात्रा-पार्टी आ चारिमपर अल्हा-रुदल। परोपट्टाक लोक उलटि कऽ मेला देखैले दिन-राति अबैत।

गंगानन्द एहिठाम तते पाहुन-परक आबि गेलनि जे घरपरसँ कखनो मेला स्थल गेले ने होइन। दुनू परानी चाह-पानसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइमे पस्त। दिन-राति एक्के रंग तबाही।

दिन-रातिक खटनीसँ सुकल दोसरे दिन अस्सक पड़ि गेल। एक सए तीनि डिग्रीसँ बोखार कखनो कम्मे ने होइत। कखनो-कखनो ज्वरक तापसँ बड़बड़ेबो करैत। सिर्फ रघुनाथे दास, गंगेनन्द आ सुकलेटा परेशान नहि, सौँसे गामक लोक पाहुन-परकसँ परेशान।

मेलाक पहिल राति एकटा आठ-नअ बर्खक बच्ची, दोसर राति दूटा आ तेसर राति चारिटा बच्चीक चोरी भऽ गेल। पहिने तँ बच्चीक माए-बाप बुझलक जे गामे घरमे भूथला गेल, एक-दू दिनमे भेटि जाएत। मुदा मेला उसरलाक बादो नहि ककरो भेटि सकल। तेसर दिनक दूटा लड़की एक्के परिवारक। दुनू बच्चिया जेहने देखैमे सुन्दर तेहने माए-बापक दुलारु। एगोक नाम लछमी आ दोसर सरस्वती। लछमीक पिता जिलाक कार्यालएमे अफसर। आ माम सी.आइ.डी. विभागमे अफसर। लछमी, सरस्वतीककेँ चोरी होइतहि माए टेलीफोनसँ अपन पतियो आ भाइयोकेँ जानकारी दऽ देलखिन। दुनू सारे-बहिनोइ सेहो अपनामे सम्पर्क कए कऽ छुट्टी लऽ सोझे गाम विदा भेला। रस्तेमे दुनू गोटेक भेंटो भेलनि। दरभंगा स्टेशन पहुँच लछमीक पिता महेन्द्र घरपर ऐवाक जानकारी सेहो परिवारमे दऽ देलखिन। झंझारपुर स्टेशन पहुँचैसँ पहिनहि महेन्द्रक छोट भाए, स्टेशन पहुँच, प्रतीछामे। गाड़ी अबितहि दुनू गोटे गाड़ीसँ उतड़ि निच्चामे बैग रखितहि रहथि कि महेन्द्रक छोट भाए दिनेशक नजरि पड़ल। लगमे आबि दिनेश दुनू गोटेक बैग, दुनू हाथमे लऽ प्लेट-फार्मक कुरसीपर जा रखलक। घटनाक जानकारी दिनेश दुनू गोटेकेँ देलकनि। बच्चियाक चोरीक चर्चा सुनितहि महेन्द्र हबोढकार भऽ कानए लगला। महेन्द्रकेँ चुप करैत सार दिनेशकेँ कहलखिन- “अहाँ दुनू बैग नेने घरपर चलि जाउ। हम दुनू गोटे थोड़े कालक पछाति आएब।”

रिक्शासँ दिनेश घर दिशि विदा भेल। दुनू गोटे महेन्द्र घरपर नहि जा सोझे थाना

पहुँच गेल। थाना पहुँच दुनू गोटे अपन परिचए दइत दरोगाकेँ घटनाक जानकारी देलखिन। केस लिखि दरोगा छह गोटे सिपाहीकेँ संग केने जा महंथ रघुनाथ दास, गंगानन्द आ सुकलकेँ पकड़ि जहल पठा देलक। इम्हर घटनाक छानबीन हुअए लगल।

गंगानन्दक कामतपर मझिला भाए यमुनानन्द मौजसँ रहैत। ने खेवा-पीवाक कोताही आ ने कोनो चिन्ता। भरि दिन यमुनानन्द गजो पीबैत आ ताशो खेलैत। गामक बीचमे कामत रहने दू-चारिटा फालतू युवक सदिखन कामतपर रहैत। कामतक सटले घुरनीक घर। घुरनीकेँ सात बेटी, बेटा नहि। जेठकी आ मझिली बेटी विआहै जोकर भऽ गेलि। जुआनीक सभ गुण आ विशेषता दुनूमे आबि गेल छलि। सदिखन घुरनी आ पति -राघवक- करेज टूटैत। एक दिशि सातो बेटीक विआह आ गुजरक चिन्ता दोसर दिशि गरीबीक राक्षस जमि कऽ पकड़ने। दुनू साँझ भरि पेट खेनाइओ ने होइत। घुरनी यमुनानन्दकेँ कहि सरिताकेँ भानस करैले कामतमे रखौने। चोरा-नुका घुरनी कामतपर सँ अन्न-तीमन-जारन उठा-उठा लऽ जाइत। तहिसँ कोनो तरहे दुनू साँझ चुल्हि पजड़ै एक दिन घुरनी पति -राघव- केँ बिगड़ि कऽ बेटीक विआह करैले कहलक। विआहक खर्चक कोनो उपाए नहि देखि राघव सोगसँ मूसक दवाइ खा ओसारपर सुति रहल।

कामातुर यमुनानन्द सरितासँ सिर्फ चौकेक काजटा नहि करबैत बल्कि इच्छापूर्ति सेहो करैत। भुखल-नांगट, पशु-तुल्य मनुक्ख देहक क्रियाकेँ इज्जत नहि बुझि पेट भरैक उपाए बुझैत। पेटक भुख मनक भुखसँ प्रबल आ कठोर होइत तेँ सरिता इज्जत नहि गमाए पेटक आगिकेँ शान्त करैत। जाधरि मनुक्खकेँ पेटक आगि जराओत ताधरि इज्जत-आबरुक बात सोचब आ बुझब कठिन अछि। तहूमे जे हजारो बर्खसँ गुलामीक जालमे फँसल रहैत आएल अछि ओकरा लेल तँ आरो कठिन बात थिक। हर मनुष्यकेँ एहि दुनियाँ आ धरतीक ऐहन आकर्षण होइत जे नीचसँ नीच कर्म केलोक उपरान्त जीबए चाहैत अछि। ओकरे जीवंत उदाहरण सरिताक छी।

कुमारि सरिताक शरीर त्वरित गतिसँ फुलाए लगल। जहिसँ गामक जनिजाति इनार-पोखरिक घाटपर सरिताक संबंधमे चरचा करैत। जे बात घुरनीक कान धरि सभ दिन अबैत। मुदा घुरनी ओहन ठूठ गाछ जेकाँ भऽ गेलि छलि जहिमे ने एक्कोटा जीवित पात होइत आ ने जीवित डारि।

गामक युवकक बीच सेहो सरिताक चर्चा चलैत। किछु युवक हँसी-मजाकक विषए सरिताकेँ बनौने तँ किछु युवक भूमहुरक आगि जेकाँ मने-मन जरैत। सरिताक प्रति रमेशक आगि एत्ते प्रवल भऽ गेल जे ओ अपन जानसँ खेलैक लेल आगू बढ़ि गेल। मने-मन रमेश संकल्प कऽ लेलक जे यमुनानन्दकेँ गामसँ भगा

सरिताकेँ आदर्श नारी बनाएब। घरसँ निकलि रमेश टोलक युवक सभकेँ संगोर केलक। पाँच-सात युवक रमेशक संग पूरैले तैयार भऽ गेल। सभकेँ संग केने रमेश यमुनानन्द लग पहुँचल। संगीक-संग रमेशकेँ देखि यमुनानन्द डरल नहि! बाघ जेकाँ गरजि कऽ रमेशकेँ कहलक- "की रौ रमेसरा, कतए ऐलेँह?"

एक तँ ओहिना रमेशक हृदयमे आगि लगल, तइपर सँ यमुनानन्दक कड़ूआइल बात सुनि मुँहसँ बोली नहि फुटल। तामसे सगर देह रमेशक कँपैत। बिना किछु बजनहि रमेश यमुनानन्दक कंठ पकड़ि पटकि देलक। माटिपर खसितहि यमुनानन्दकेँ रमेश लतियबए लगल। यमुनानन्दकेँ लतियबैत देखि रमेशक संगी सभ सेहो लतियबए लगल। साइओ लात खा यमुनानन्द रमेशक दुनू पाएर दुनू हाथे पकड़ि कनैत कहलक- "भाय हमर जान छोड़ि दाए। अखने हम ऐठामसँ चलि जाइ छी।"

यमुनानन्दक बात सुनि रमेश सभकेँ रोकि, छोड़ि देलक। रमेशकेँ छोड़ितहि यमुनानन्द निछोह पड़ाएल। सभ युवक यमुना नन्दकेँ ताधरि देखैत रहल जाधरि यमुनानन्द अढ़ नहि भऽ गेल। सरिता कातमे ठाढ़ भऽ सभ देखैत। एक्के-दुइये सौँसे गामक लोक हल्ला सुनि पहुँच गेल।

सौँसे गामक लोक एकठाम बैसि, सभ अपनामे विचार केलक। जे बहरबैयाक जे जमीन-जत्था अछि ओ छीनि लिअ। गामक जते जे चीज -खेत-पथार, पोखरि-झाँखड़ि इत्यादि- अछि ओ गौँवाक छी। जँ क्यो बहरबैया आओत तँ सौँसे गौँवा मीलि ओकरा भगाएब। चाहे एहि लेल मारि हुअए, मुकदमा होए वा जहल जाए पड़ए। हाथ उठा सभ निर्णए केलक।

--१२--

डॉक्टर निलमणि सेन, कलकत्तासँ एम.बी.बी.एस.क सोझे मिथिला चलि ऐलाह। बंगला, अंग्रेजी छोड़ि आन कोनो भाषा नहि जनैत। मिथिलाक गाम-घरमे एलोपैथ इलाजक चलनि नहि। रोगक इलाज झाड़-फूक आ जड़ी-बूटीसँ होइत। रोगोकेँ लोक भूत, हवा वा देवी-देवताक प्रकोप बुझैत।

डॉक्टर निलमणि सेनक घर बंगला देशक सीमासँ सटले बंगालमे। डॉक्टर सेनक पिता प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन नामी विद्वान् दर्शनशास्त्रक। सम्पन्न आ सुभ्यस्त परिवार ज्योतिमणिक। अंग्रेजी हुकूमतक अंतिम समएमे हिन्दू-मुसलमानक बीच जमि कऽ लड़ाइ बंगालमे भेल। पहिल दिन डेढ़-दू सए हिन्दू भाला, फरुसा, तरुआरि लऽ, सड़कपर आबि सइयो मुसलमानक हत्या केलक। घर जरौलक।

चीज-वौस लुटलक। गाम सुनसान भऽ गेलै। जे किछु लोक बँचल ओ भागि-पड़ा कऽ अपन कुटुमक ऐठाम चलि गेल। मुदा घटना कमल नहि! जहिना गहूमन साँपकेँ लाठीक चोट खेलापर होइत तहिना तरे-तर मुसलमानक हृदयमे आगि धधकए लगल। सात दिन पछाति, हजारो मुसलमान हथियारक हाथे, बदला लेमए निकलि गेल। अनेको गामक हिन्दू मृत्युक मुँहमे समा गेल। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवार सेहो समाप्त भऽ गेल।

प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन आ प्रोफेसर जफर एक्के कॉलेजमे प्रोफेसर। सइयो बर्खसँ दुनू परिवारक बीच दोस्ती चलि अबैत। जहिया कहियो कोनो उत्सव प्रो. सेनक एहिठाम होइत तहिया प्रो. जफर सपरिवार आबि उत्सव मनवैत। तहिना प्रो. जफरक परिवारमे प्रो. सेनक। एकठाम बैसि दुनू गोटे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ जिनगीक नीक-अधलाक सभ गप करैत। ने प्रो. सेन प्रो. जफरकेँ आन बुझैत आ ने प्रो. जफर प्रो. सेनकेँ। तहिना घरक स्त्रीगणक बीच सेहो संबंध। बाल-बच्चाकेँ तँ बुझिये ने पड़ैत जे दुनू परिवार दू धर्मक थिक। हिन्दु-मुसलमानक बीच तनाव देखि शिक्षण-संस्था सभ बन्न भऽ गेल। दुनू गोटे गामेमे।

प्रो. ज्योतिमणिक परिवाक समाचार प्रो. जफर सुनलनि। पहिने तँ एक्को पाइ बिसवासे नहि भेलनि। मुदा सत्-सत् पता लगलापर एकाएक कुरसीपर सँ प्रो. जफर अचेत भऽ लुढ़कि कऽ निच्चाँमे मुँहे भरे गिर पड़लाह। दुखसँ हृदय विदीर्ण भऽ गेल रहनि। कोठरीमे असकर रहने पहिने तँ परिवारक क्यो ने देखलकनि मुदा चाहक कप नेने जखन पत्नी एलनि तखन देखलकनि। निच्चामे पड़ल प्रो. जफरकेँ देखि पत्नी कप रखि छाती पीटैत हल्ला करए लगलखिन। हसीनाक हल्ला सुनि अपनो परिवारक आ पड़ोसियोक परिवारक सदस्य लोकनि दौड़ि कऽ ऐलखिन। साँस तँ प्रो. जफरक चलैत रहनि मुदा चेतन शून्य रहथि। लगले डॉक्टर बजाओल गेल। पत्नी -हसीना- पंखा हौँकए लगली। पहिने डॉक्टर प्रो. जफरक मुँहपर पानिक छिच्चा देलखिन। पानिक छिटका पड़ितहि जफर आँखि खोललनि। आँखि खोलितहि डॉक्टर आलासँ देखलखिन। आला रखि डॉक्टर दूटा सूइया प्रो. जफरकेँ देलखिन। सूइया पड़ितहि प्रो. जफर होशमे अएलाह। मुदा ततेक दुख प्रो. जफरक हृदयकेँ पकड़ि नेने रहनि जे पुनः अचेत भऽ गेला। दवाइसँ प्रो. जफर होशमे आवथि आ हृदयक दुखसँ पुनः बेहोश भऽ जाइथि। होश-वेहोशक बीच प्रो. जफरकेँ देखि हसीना सेहो अचेत भऽ गिर पड़लि। एते काल डॉक्टर सिर्फ प्रो. जफरेक इलाज करति रहति मुदा हसीनाक दशा देखि, हुनको इलाज चलए लगल।

आठ बजे रातिक उपरान्त दुनू परानी -प्रो. जफर आ हसीना- होशमे आवि गेला। बिस्कुट आ चाह खेलनि-पीलनि। परिवारक सभकेँ विसवास भऽ गेलनि जे

आव दुनू गोटे नीक भऽ गेला, तँ आराम करैले दुनू गोटेकँ पलंगपर छोड़ि सभ, सभ दिशि भऽ गेल। एगारह बजेक घंटी घड़ीमे टुनटुनाएल। तखन दुनू परानी होशमे रहथि। प्रो. जफर पत्नीकँ पूछलखिन- ‘‘जगले छी?’’

- ‘‘हँ।’’

- ‘‘अपने दुनू बेटा मित्र ज्योतिमणि आ हुनक परिवारक हत्या केलक। अपन आँखिसँ तँ नहि देखलिऐक मुदा आन-आन गोटे कहलक। तँ हत्यारा बेटाक बाप बनि जीनाइसँ नीक मरब। अहाँकँ जँ एहि परिवारक बेटा-पुतोहूसँ सिनेह हुअए तँ जीबू मुदा हम एक्को क्षण जीवि पाप बुझै छी।’’

कहि प्रो. जफर गरदनिमे फँसरी लगबए लगलथि। पतिकँ गरदनिमे फँसरी लगबैत देखि हसीना अचेत भऽ पलंगसँ लुढ़कि निच्चाँमे गिर पड़ली। प्रो. जफर फँसरी लगा प्राण त्यागि लेलनि। जखन हसीनाकँ होश आइलि तखन मनमे दू तरहक सिनेह- पतिक आ मित्रक- एते ग्लानि मन पैदा कऽ देलकनि जे ओहो वेचारी फँसरी लगा मरि गेली।

जखन निलमणि पढ़िते रहथि तखने सोचि नेने रहथि जे हम शहरमे नहि गाममे रहब। सभ तरहे गाम शहरसँ नीक। ने प्रदूषणक दोष आ ने चोर-उच्चकाक डर। भुखलकँ एक टुकड़ी रोटी देलासँ मन जुराइत मुदा जहिठाम सभ कुछ भरल-पूरल रहैत छैक तहिठाम टुकड़ी रोटीक महत्वे की होइत। विशाल मानव रुपी वनमे तपस्या करैक विशाल क्षेत्र होइत। तँ जहिठाम वृक्षकँ माटि-पानिक अभाव होइत तहिठाम रहि सेवा करब विशेष महत्त्व रखैत। की गमलाक सजाओल फूल बनक पानि-पाथर खेलहा फूलक बराबरि भऽ सकैत अछि?

एम.बी.बी.एस.क डिग्री लऽ डॉक्टर निलमणि अपन सभ सामान सरिया, गाम जेवाक कार्यक्रम बना संगी-साथी सभसँ भेंट-घाँट करए लगल। अपन अन्तरंग मित्रसँ लऽ कऽ आत्मीय गुरुक एहिठाम जा-जा निलमणि अपन भविष्यक संकल्प व्यक्त करैत असिरवाद लेलक। दोसर दिशि, गाममे, हिन्दू-मुसलमानक बीच धारमिक वा जातीय लड़ाइ शुरु भऽ गेल। संगी-साथी सभसँ मिलि जुलि डॉ. निलमणि कोठरीमे बैसि अपन जिनगीक संबंधमे मने-मन विचारैत। रोडियो बजैत बगलमे राखल। रातिक आठ बजैत। सवाआठ बजेक समाचारमे हिन्दू-मुसलिम लड़ाइक चर्चा भेल। स्पष्ट समाचार नहि! मुदा जहि इलाकामे निलमणिक घर ओहि इलाकाक गामक चर्चा समाचारमे आबि गेल छल। पहिल बेरिक समाचार सुनि निलमणिकँ भेलनि जे सुनैमे धोखा भेल। मुदा कनिये काल बाद समाचार दोहराओल गेल। समाचार सुनितहि डॉ. निलमणिक हृदयमे जोरसँ धक्का लागल। जहिना पहाड़क निच्चाँक आदमी उपरमे, पहाड़पर सँ लुढ़कति पाथरक टुकड़ा खसलापर होइत, तहिना डॉ. निलमणिकँ भेल। कुरसीपर सँ उठि निलमणि बाहर

आबि सड़क दिशि देखए लगल। सड़कपर गाड़ी-बस चलैत। मुदा पाएरे लोकक चलब पतरा गेल। गोट-पङरा क्यो-क्यो चलैत। सही ढंगसँ समाचार बुझैक इच्छा डॉ. निलमणिक मनकँ झकझोड़ैत। अखन धरि डॉ. निलमणि ओते चिन्तितो नहि, किऐक तँ इलाकाक समाचार सुनने।

नअ बजि गेल। कोठरी बन्न कऽ डॉ. निलमणि खाइले होटल विदा भेल। कोठरीसँ निकलितहि, जेना कियो किछु कहि देलकनि, एकाएक डॉ. निलमणिक मनमे डर प्रवेश कऽ गेल। मनमे डर प्रवेश करितहि ओ मुँह उठा-उठा चारु दिशि ताकए लगल। मुदा सुनसान राति। सन-सन करैत अन्हार। कनेक ठाढ़ भऽ डॉ. निलमणि मन असथिर कऽ होटल दिशि बढ़ल। होटल पहुँचतहि मुँह-हाथ धोय ओ एकटा खाली टेबुल लगक करसीपर चुपचाप बैसि, आन-आन गोटेक मुँहक बात सुनए लगलथि। टी.बी. चलैत। गौरसँ डॉ निलमणि टी.बी.क समाचारपर कान रखने। थारीमे परोसि, होटलक नोकर डॉ. निलमणिक आगूमे रखलक। ओ खाए लगल। मुदा जहिना बहैत पानिमे माटिक वा कोनो वस्तु पड़लासँ पानिक बहाव रुकि जाइत तहिना भोजनक अन्न निलमणिकँ कंठसँ निच्चा उतड़बे ने करैत। खाइक छोड़ि, हाथ-मुँह धोइ, होटलबलाकँ पाइ दऽ निलमणि सोझे अपन कोठरी चलि आएल।

कोठरीमे आबि डॉ. निलमणि पलंगपर सुति रहल। मुदा निन्नक कतौ पता नहि। कछमछ करैत डॉ. निलमणि एक करसँ दोसर कर घुमैत। भोर हेवाक प्रतिक्षामे डॉ. निलमणि। देवालमे टंगल घड़ी। घड़ी दिशि नजरि उठा कऽ डॉ. निलमणि देखलक। रातिक एगारह बजैत। पलंगसँ उठि केबाड़ खोलि डॉ. निलमणि बाहर निकलल। सड़कपर गाड़ी-बस चलब बन्न भऽ गेल। आँखि उठा कऽ आकाश दिशि तकलक। डंडी-तराजू उगि गेल मुदा सप्तर्षिक कतौ पता नहि। पुनः डॉ. निलमणि कोठरी आबि पलंगपर सुति रहल।

भोर होइते डॉ. निलमणि पलंगसँ उठि, नलमे कुड्डुड़ कऽ चाहक दोकान दिशि विदा भेल। चाहक दोकानमे, उठा काज करैबला मटिया, रिक्शा चलौनिहार सभ बैसि चाहो पीबैत आ रेडिओ समाचारक चर्चा करैत। किछु गोटे, हिन्दू-मुसलमानक लड़ाइक, निन्दो करैत तँ किछु गोटे बाहबाहियो करैत। किछु गोटे मोरचापर जा लड़ैयोले सन-सन करैत। चुपचाप बैसि डॉ. निलमणि चाहो पीबैत आ गप्पो सुनैत। चाह पीबि डॉ. निलमणि डेरा आबि कपड़ा पहिर डॉ. मुकुल एहिठाम विदा भेल। डॉ. मुकुल कुरसीपर वैसि, मुँहपर हाथ दऽ, कौल्हुके घटनाक संबंधमे सोचति रहति। डॉ. निलमणिकँ देखिते डॉ. मुकुल कहलखिन- "अहाँ गाम नइ जाउ। सौँसे इलाकामे तनाव बनल अछि। निश्चित समाचार तँ अखन धरि नहि बुझि सकलहुँ मुदा रुप रंगसँ बुझि पड़ैए जे लड़ाइ बन्न नहि हएत आरो बढ़त।"

डॉ. मुकुलक बात सुनि डॉ. निलमणिक हृदय थर-थर काँपए लगल। गाममे रहैक विचार सेहो चूर-चूर हुअए लगलै। मुदा परिवारक सोग डॉ. निलमणिकेँ उत्तेजित करैत

तीनि दिनक उपरान्त इलाका शान्त भेल। डॉक्टर दलक कार्यक्रम इलाकाक लेल बनल। ओहि दलक संग डॉ. निलमणियो विदा भेल। डॉ. निलमणिक आग्रहसँ दल निलमणिक गाम शान्तिपुर पहुँचल। शान्तिपुरमे एक्कोटा घर दुरुस्त नहि। सभ आगिमे जरल। जीवित आदमीक पता नहि। जहाँ-तहाँ लाश छिड़िआएल। हजारो कौआ-कुकुड़ आ गीध पसरल। अपन घर लग पहुँचे डॉ. निलमणि अपन माए-बापक लाश आ जरल घर देखि अचेत भऽ गिरि पड़ल। कम्पाउण्डर सभ उठा निलमणिकेँ गाड़ी -जीप- मे दऽ इलाज करए लगल। कनिये कालक उपरान्त डॉ. निलमणि होशमे आएल। निलमणिकेँ होशमे अबितहि डॉक्टरक दल आगू बढ़ि गेल। मुदा डॉक्टर मुकुल निलमणिपर ध्यान रखि मने-मन सोचैत जे निलमणि एहि दुखद घटनाकेँ सहि नहि सकत। एक मनुष्य होइक नाते डॉक्टर मुकुल मने-मन संकल्प केलनि जे जाधरि निलमणिकेँ दुख सहैक शक्ति नहि आइब जाएत ताधरि छोड़ब उचित नहि। डॉक्टरक दल घुरि कऽ आबि गेल। डॉ. निलमणिक अपने एहिठाम डॉ. मुकुल रहैक व्यवस्था कऽ देलखिन। रसे-रसे डॉ. निलमणिक हृदय असथिर हुअए लगल मुदा माए-बापक पीड़ा मनसँ मेटाइल नहि।

सात दिनक उपरात्त डॉ. निलमणि बैंकसँ रुपैआ निकालि कलकत्तासँ सोझे दरभंगा आबि गेल। मिथिला अबैक कारण छल, डॉ. निलमणिकेँ पिताक मुँहे मिथिलाक गुणगान सुनब। दुनियाँक स्वर्ग मिथिला। जेहने माटि तेहने पानि। जेहने हवा तेहने वातावरण। रंग-विरंगक गुणसँ भरल मिथिलाक गाछ-विरिछ सभ समए फुलाइत-फरैत। दरभंगा स्टेशनपर उतड़ि डॉ. निलमणि प्लेटफार्मपर बनल ब्रेंचपर बैसि गेल। अनभुआर जगह। कतए जाएब। एक दिशि माए-बापक सोग डॉ. निलमणिकेँ पकड़ने दोसर दिशि अपन जिनगी। एहिठामक भाषासँ सेहो अनभुआर। जँ अंग्रेजी अबितो तँ बजनिहार नहि देखैत। जहि ब्रेंचपर निलमणि बैसल ओही बेन्चपर जगह देखि पंडित शंकर सेहो दुनू परानी बैसलाह। दुनू परानी शंकर अस्पतालसँ आएल रहथि। डॉ. निलमणि पंडित शंकरक दुनू परानीक गप-सप्प अँखियासि कऽ सुनए लगल मुदा मैथिली नहि बुझि किछु बुझवे ने करैत। पंडित शंकर झोरा खोलि लोटा निकालि पानि आनए कल दिशि विदा भेला। पत्नी -शंकरक- झोरामे रखल चूड़ा आ गुड़क मोटरी निकालि कऽ खोलि, छिपलीमे थोड़े चूड़ा आ गुड़ शंकरक लेल निकालनि। पंडित शंकर सेहो पानि लऽ अएलाह। ब्रेंचपर बैसि पंडित शंकर छिपली लऽ डॉ. निलमणिकेँ आग्रह करैत कहलखिन- ''बौआ, अहूँ खाउ?''

पंडित जीक बोली तँ निलमणि नहि बुझल मुदा आगू बढ़बैत छिपली देखि मुस्कुराए लगल। पंडित शंकर डॉ. निलमणिक सुखल मुँह देखि आग्रह केलखिन मुदा भाषाक विशाल समुद्र बीचमे रहने, सिनेहमे आड़ि देने। हाथसँ बढ़ाओल छिपली पंडित शंकर आ डॉ. निलमणि बीच अँटकल। पंडित शंकर बुझि गेलखिन जे हमर सादगी देखि डॉ. निलमणि अंग्रेजी नहि बाजि रहल छथि, मुदा हम तँ जनैत छी। तँ हमहीं पहिने बाजी अंग्रेजीमे पंडित शंकर डॉ. निलमणिकेँ अपन पता पूछलखिन। धारा प्रवाह अंग्रेजी बजैत डॉ. निलमणि अपन जिनगीक बहुत बात पंडित शंकरकेँ कहलखिन। दुनू गोटे चूड़ा-गुड़ खा पानि पीबि, निरमलीक गाड़ी पकड़ि लेलनि।

गाड़ीमे बैसि दुनू गोटे -डॉ. निलमणि आ पंडित शंकर मिथिला आ बंगालक विषयमे गप-सप्प करए लगलाह। गाड़ीसँ उतड़ि तीनू गोटे पाएरे गाम -शंकरक- दिशि चललाह। गाम आबि पंडित शंकर डॉ. निलमणिक रहैक व्यवस्था अपने ऐठाम कऽ देलखिन। दू-चारि दिन तँ डॉ. निलमणिकेँ अनभुआर जेकाँ वुझि पड़लनि मुदा जिनगीक ठौर भेटलासँ हृदयमे खुशी! टो-टा कऽ मैथिली डॉ. निलमणि बाजए लगल। अखन धरि मिथिला गाममे रोगक इलाज जड़ी-बुटीसँ लऽ कऽ झार-फूक धरि होइत। ने अंग्रेजी -एलोपैथी- ढंगसँ इलाज केनिहार आ ने अंग्रेजी इलाज लोक बुझैत। एक तँ नव ढंगक इलाज दोसर नव लोक केनिहार। तँ कठिन। डॉ. निलमणि तँ बच्चा रहति तँ मिथिला समाजक संबंधमे किछु ने बुझैत। मुदा डॉ. शंकर तँ मिथिला समाजक नस-नस बुझैत।

आठ बजेक भिनसुरका समए। पंडित शंकर आ डॉ. निलमणि चाह पीबि गप-सप्प करए लगल। डॉ. निलमणि पंडित शंकरकेँ पूछलखिन- ''दादा, एहिठाम रोगक इलाज कोन रुपे कएल जाइ छैक?''

डॉ. निलमणिक प्रश्न सुनि, कने काल गुम्म भऽ, पंडित शंकर उत्तर देमए लगलखिन- ''एहिठाम -मिथिलांचलमे- रोगक इलाज करैक अनेको पद्धति चलि रहल अछि। जना मुख्य रुपसँ लोक जड़ी-बुट्टीक उपयोग कऽ रोगक इलाज करैत, जे बहुत पहिनेसँ चलि अबैत अछि। इलाजो विसवासु अछि। आयुर्वेद नामसँ एहि इलाजकेँ जानल जाइत अछि। पैघ-पैघ ज्ञानी पुरुष सभ एहि इलाजकेँ खोजि-खोजि -अनुसंधान- समृद्ध आ विकसित केलनि। दोसर तरहक अछि झाड़-फूक, जे मंत्रक माध्यमसँ होइत। तेसर तरहक अछि भगताइ। जे देवस्थानमे खास व्यक्तिक द्वारा देवी-देवताक नाओपर होइत। एहि तरहे आरो कते रास्तासँ रोगक इलाज एहि इलाकामे होइत अछि।''

पंडित शंकरक बात सुनि पुनः निलमणि पूछलखिन- ''की एलोपैथी -अंग्रेजी- इलाजक चलनि नहि अछि?''

पंडित शंकर- "अखन धरि नहि अछि। मुदा बिना एलोपैथी इलाजसँ आइक समएमे रोगक इलाज असंभव भऽ गेल अछि। किऐक तँ बहुतो ऐहन रोग अछि जकर इलाज ने हेमियोपैथमे अछि आ ने आयुर्वेद, यूनानी इत्यादिमे अछि।"

डॉ. निलमणि- "जखन एहिठामक लोक एलोपैथ जनितो नहि अछि, तखन इलाज कोना कराएत?"

पंडित शंकर- "एहि लेल वैचारिक आ व्यवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मन अछि जे जखन लहेरियासराए अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरु भेल, तखन गाममे ऐहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाएक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैत अछि। जेकर असर भेलैक जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअए लगल। ई इलाका -मिथिलांचल- जाति आ धर्मसँ ओहि रुपे बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिना संघर्षे संभव नहि अछि।"

डॉ. निलमणि- "तखन की करब?"

पंडित शंकर- "हँ उपाय अछि। हम अहाँकेँ रास्ता बता दइ छी। अहाँ बंगाली छी जहिसँ जाति आ घर्म- दुनू झँपाएल अछि। एहिठाम मोटा-मोटी हिन्दूमे तीनि वर्ण अछि। पहिल अगुआएल जाति, जना सोति, ब्राह्मण, राजपुत, भूमिहार इत्यादि। दोसर पनिचल्ला जाति- जना यादव, धानूक, कियोट, अमात, बरैइ, कोइर इत्यादि आ तेसर अछि हरिजन। जकरा समाजमे अछोप जाति कहल जाइ छैक। एहि जातिक पानि उच्च जातिक लोक नहि पीबति छथि। ने पानि पीबैत छथि आ ने छुअल अन्न खाइ छथि।"

डॉ. निलमणि- "अरे, बाप रे, तब तँ समाज टुकड़ी-टुकड़ीमे बँटल अछि?"

डॉ. निलमणिक बात सुनि पंडित शंकर मुस्कुराइत कहए लगलखिन- "यएह एहिठामक -मिथिलाक- विशेषता छैक जे सभ सभ जाति आ धर्मसँ बँटल अछि मुदा सामाजिक संबंध सेहो मजबूत अछि। जखन कखनो कोनो आफद-असमानी होइत तखन सभ एक भऽ सहयोग करैत। ततबे नहि, जखन कोनो धारमिक काज होइत तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत।"

कने-काल गुम्म भऽ पुनः डॉ. निलमणि पूछलखिन- "तखन तँ अजीब गति अछि?"

हँसैत, पंडित शंकर आगू कहए लगलखिन- "जते जातिक चर्चा केलहुँ ओहिमे आब फुटा-फुटा कऽ सुनू। एक जातिक भीतर, कुल-मूल-गोत्रक आधारपर अनेक विभाजन अछि। जे एक जातिक रहनहुँ, ने दोसराक अन्न खाइत आ ने कथा-कुटुमैती करैत। हम पैघ तँ हम पैघ, एहि उलझनमे सभ अपनाकेँ पैघ बुझि, मस्त। जातीए रुआब, पैघत्व आ बुद्धिमानीक रुआब सभमे! मुदा एहि सभ ओझरीमे

अहाँकेँ नहि जाइक अछि। आइये हम सभ वर्गक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजवै छी। ओहो सभ बेरोजगारो अछि आ लोककेँ रोगक उचित इलाज सेहो नहि भऽ पवैत छैक, जहिसँ रोगी मरबो करैए आ रोगग्रस्त भऽ जिनगीयो जीवैत अछि।''

डॉ. निलमणि- ''ऐहन परिस्थितिमे कोना डेग आगू बढ़ाओल जाए?''

पंडित शंकर- ''आइ धरिक इतिहास यएह कहैत अछि जे जहिया कहियो समाजमे, जखन कोनो कल्याणकारी काज शुरु कएल गेल तखन समाजक बहुसंख्यक लोक ओकर विरोध केलक। मुदा कतबो विरोध भेल तइयो काज आगू बढ़बे कएल। जे बादमे सभ मानि करए लगल आ आइ चलैत अछि। जहिसँ सभकेँ लाभ भऽ रहल छैक। तेँ एक्को पाइ चिन्ता नहि करक चाही। इलाजक प्रति जे विरोध होइत ओ शक्तिक विरोध नहि अज्ञानताक विरोध छी। लोकक बीच जना-जना ज्ञानक ज्योति प्रखर होएत तना-तना लोकक झुकाव एलोपैथी इलाज दिशि बढ़त। हम अहाँकेँ रास्ता बता दइ छी। आइये हम अपनो गामक आ अगल-बगल गामक सेहो, पाँचटा नवयुवक -जे कम्मो पढ़ल-लिखल हएत- सभ रंगक जातिक बजबै छी। अहाँ ओहि युवक सभकेँ किछु दिन पढ़ा रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ उपचार धरिक ढंग बुझा देवैक। वएह सभ अहाँक परचारो करत आ छोट-छीन इलाजो करत।''

पंडित शंकरक विचार डॉ. निलमणिकेँ जँचल। मनमे संतोष पैदा लइतहि मुस्कुराइत डॉ. निलमणि पंडित शंकरकेँ पूछलकनि- ''अपने परिवारमे दुइये परानी छी, आओर क्यो नै छथि?''

डॉ. निलमणिक बात सुनि पंडित शंकर हँसैत कहए लगलखिन- ''परिवार बहुत नमहर अछि। पढ़लो-लिखल अछि। दूटा बेटा आ तीनिटा बेटी अछि। पाँचोक विआह-दुरागमन भऽ गेल अछि। दुनू बेटो आ तीनू जमाइयो नोकरी करैत छथि। दुनू बेटा अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहति छथि तहिना तीनू जमाइयो। हमहूँ संस्कृत महाविदयालयमे शिक्षकक काज करैत छलहुँ। चारि साल पहिने नोकरीसँ सेवानिवृत्ति भेलहुँ। दर्शन शास्त्र आ साहित्य पढ़बै छलौं। जखन नोकरिएमे रही तखने बच्चा सभ नोकरी करए लगल। जखन सेवानिवृत्ति भेलहुँ तखन दुनू बेटा कहलनि जे आब अहाँ बूढ़ भेलहुँ, घरपर असकर रहब नीक नहि। किऐक तँ आब अहाँकेँ सेवा-टहलक जरुरत पड़त। हम सभ कतौ रहब आहाँ कतौ, ओहिसँ कष्ट होएत। दुनू भाँइक विचार अपनो जँचल मुदा जिनगी भरि तँ अपनो किताबेमे सन्हिआएल रहलहुँ। अपन कर्तव्य दिशि जखन नजरि उठा कऽ देखलिऐक तखन मनमे आइल जे मनुष्य सिर्फ माइये-बापक बेटा नहि होइत बल्कि समाजोक होइत। माए-बापक ऋृण तँ चुका चुकलहुँ मुदा समाजक ऋृण तँ बाकिये अछि। छठियारे दिन समाजक दाइ-माइ कोरामे लऽ अपन बेटा

बनौने रहथि तँ हुनकर ऋृण चुकवैक लेल जिनगीक शेष समए हुनका बीचि रहि, चुकेवनि।''

पंडित शंकरक बात सुनि डॉ. निलमणिक हृदयमे विसवास जगल। डॉ. निलमणिक मनमे आएल जे सभ आदमीकेँ कर्तव्यनिष्ठ हेवाक चाही। जखने सभ अपन-अपन कर्तव्य बुझि कर्म करत तखने सबहक कल्याण सेहो हेतैक आ मनुष्यक बीच प्रेम सेहो बढ़त।

डॉ. निलमणिक चर्चा पंचकोसीमे चलए लगल। केयो डॉ. निलमणि तँ केयो सेन सहाएव तँ केयो बंगाली बावू तँ केयो डॉक्टर साहव कहि संबोधित करए लगलनि।

तीनि सालक बेटा कपिलदेवकँ। जनमेसँ बच्चाकँ तुतली लागल। साल भरि धरि तँ बच्चाक तुतलीपर माए-बापक नजरिए ने पड़ल। मुदा साल भरिक पछाति दुनूक -माए-बापक- नजरि पड़ल जे बच्चाक बोली गड़बड़ अछि। बोली सुधारैक लेल कपिलदेव पहिने गहबर जा डाली लगौलक। तीनि मासमे बच्चाक बोली नीक हेवाक आश्वासन गहबरक भगता कपिलदेवकँ देलक। भगताक असिरवाद सुनि दुनू परानी कपिलदेव बेरागने-बेरागने गहबर जा पूजा करए लगल। मनमे सोलहन्नी विसवास रहै जे बच्चाक बोली सुधरबे करत। मुदा मास दिनक उपरान्तो जखन बच्चाक बोलीमे मिसियो भरि सुधार नहि भेलि तखन रसे-रसे दुनू परानीक विसवास गहबरपर कमए लगल।

तीनि मास बीति गेल, मुदा बच्चाक तुतली नीक नहि भेलै। तखन गहबरक आशा तोड़ि दुनू परानी कपिलदेव झाड़-फूँकक रास्ता धेलक। सुकनकँ इलाकामे सभसँ नीक झाड़-फूँक केनिहार बुझैति। केहनो साँप धेलहाकँ मनतरेसँ छोड़ा दैत। ओना गोटे-गोटे मरबो करैत मुदा अधिक बँचबे करैत।

दुनू बेकती कपिलदेव सुकन ऐठाम पहुँचल। बच्चाकँ देखि सुकन कपिलदेवकँ कहलक- ''ई तँ वामा हाथक खेल छी, मुदा एकावन रुपैया पूजा-पाठ करैले पहिने जमा करए पड़तह।''

एकावन रुपैआ पहिने जमा करैक बात सुनि कपिलदेव कहलक- ''अखन तँ संगमे ओते रुपैआ नहि अछि, मुदा अखनसँ एहि बच्चाकँ झाड़व शुरु कऽ दिऔ, काल्हि भोरे एकाबनो रुपैआ दऽ देव।''

कपिलदेवक बात सुनि सुकन कहलक- ''झाड़-फूकक बात अहाँ नइ ने बुझबै। पहिने पूजाक सभ सामान कीनि पूजा करब। पूजा केलाक बात देवता हुकूम देता तखन ने झाड़ब। बिना देवताक हुकूम नेने जँ होइत तखन तँ सभ करैत।''

सुकनक बात सुनि, दुनू परानी कपिलदेव विचारलक जे अखन चलू, रुपैआक व्योत कऽ काल्हिये आएव। कपिलदेव सुकनकेँ कहलक- "अखन जाइ छी काल्हि ने तँ परसू आएव।"

कहि कपिलदेव बच्चाकेँ कोरामे लऽ विदा हुअए लगल। कपिलदेवकेँ विदा होइत देखि सुकन कहलक- "अखन जँ अदहो-छिदहो रुपैआ जमा कऽ दी तँ हम काज शुरु कऽ देव।"

सुकनक बात सुनि कपिलदेव कहलक- "घरमे जँ रुपैआ रहैत तँ अखने आनि दइतौं, मुदा घरोमे नै अछि। तँ जोगार करए पड़त।"

सुकन- "बड़बढ़ियाँ, अखन जाउ। अगर एकावन रुपैयाक जोगार नइ हुअए तँ कमसँ कम एक्कैस रुपैयाक जोगार अवश्य करब। ओना हम आइये पूजा करै काल देवताकेँ न्योत दऽ देवनि। तँ काजमे बिथुत ने हुअए। जँ बिथुत हएत तँ उन्नासँ दुन्ना दुख भऽ जाएत। तखन सम्हारब कठिन भऽ जाएत।"

बच्चाकेँ नेने दुनू परानी कपिलदेव घर दिशि विदा भेल। रास्तामे कपिलदेव घरवालकेँ कहलक- "एक बेरि दीनानाथ बाबासँ बच्चाकेँ देखा दितिऐक?"

कपिलदेवक विचार सुनि घरवाली उत्तर देलकनि- "बड़वढ़ियाँ कहलौं। कत्ते दुखताहकेँ दीनानाथ छोड़ौलखिन। भगवान केलनि जँ अपनो बच्चाकेँ छुटि जाए।"

इलाकामे दीनानाथ नामी वैद्य। जड़ी-वूटीसँ रोगक इलाज करैत। कम्मे रोग ऐहन होए जकरा दीनानाथ वैद्य नहि छोड़ा पबथि बाकी सभ छोड़ा देथिन। बच्चाकेँ नेने कपिलदेव दीनानाथ ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देखि दीनानाथ कपिलदेवकेँ कहलखिन- "बच्चाक तुतली लगल अछि, जे आपरेशन केलासँ ठीक हएत। हम आपरेशन नहि करै छी। अहाँ सेन साहव ऐठाम चलि जाउ। ओ आपरेशनसँ ठीक कऽ देताह। रोग साधारण अछि तँ बेसी खरचो-बरचो नहिये हएत।"

दीनानाथक विचार सुनि कपिलदेव डॉ. निलमणि ऐठाम विदा भेल। डॉ. निलमणि एकटा कम्पाउण्डरकेँ ऑपरेशनेक संबंधमे बुझवैत रहथिन। कपिलदेवकेँ देखि डॉ. निलमणि पूछलखिन। कपिलदेव बच्चाक संबंधमे कहलकनि। बच्चाकेँ मुँह खोलि डॉ. निलमणि देखलखिन। जीभ आ निचला तालुक बीच जुड़ल छल। बच्चाकेँ कोठरीमे चौकीपर सुता कैंचीसँ काटि, दवाइ लगा बाहर आनि कपिलदेवकेँ कहलखिन- "साधारणे ऑपरेशन छल, जाउ ठीक भऽ गेल।"

कपिलदेव विदाहो नहि भेलि छल कि एक गोटेकेँ, दू आदमी खाटपर टाँगि, नेने आएल। डॉ. निलमणि उठि कऽ ओहि -खाट परक- आदमीकेँ देखलखिन। ओहि आदमीक दहिना पाएरक हड्डी टूटब देखि डॉ. निलमणि, रोगीक समांगकेँ

कहलखिन- ''हिनकर पाएरक हाड़ टूटल अछि, पलस्तर करए पड़त। बिना पलस्तर केने पाएर ठीक नहि हेतनि।''

समांग कहलकनि- ''डॉक्टर सहाएव, जखन अहाँ ऐठाम एलौं तखन जे केलासँ पाएर चलैबला हेतै, से कऽ दिऔ।''

समांगक बात सुनि डॉ. निलमणि अलमारीसँ पलस्तरक सभ समान -रुइआ, बेन्डेजबला कपड़ा, पेरिस पाउडर- निकालि पलस्तर कऽ देलखिन।

यएह दुनू इलाज डॉ. निलमणिक जिनगीमे चारि चान लगा देलक। चौगामामे, बिहाड़ि जेँका, डॉ. सेनक गुण पसरि गेल। गुण पसरितहि सभ दिन पनरह-बीस रोगी डॉ. निलमणि ऐठाम आबए लगल। जहिसँ डॉक्टर निलमणियोक कमाइ हुअए लगलनि आ परोपट्टामे सरजरीक इलाज सेहो हुअए लगलै।

चारिक अमल। सूर्य पछिम दिशि झुकि गेल। रौदमे तीखरपन सेहो कमि गेल। पंडित शंकर डॉ. निलमणि लग ऐलाह। डॉ. निलमणि किताव पढ़ति रहथि। पंडित शंकरकेँ देखि डॉ. निलमणि, किताब मोड़ि टेबुलपर रखि देल। किताव रखि डॉ. निलमणि पंडित शंकरक मुँह दिशि देखए लगल जे किछु बजताह। विचार दैत पंडित शंकर डॉ. निलमणिकेँ कहलखिन- ''डॉक्टर साहव, आब अहाँक लेल दूटा काज करब जरुरी भऽ गेल। पहिल, अखन धरि दरबज्जापर रहि इलाज करै छी से अलग व्यवस्था करए पड़त आ दोसर विआह करब।''

पंडित शंकरक विचार सुनि डॉ. निलमणि कहलखिन- ''अपनेक विचार तँ बड़ड उत्तम अछि मुदा अड़चन तँ दुनूमे अछि! पहिल, घर बनबैक लेल घरारी आ समानक जरुरत हएत। ओ कोना होएत? आ दोसर, हम तँ बंगालक रहनिहार छी। एहिठाम विआह कोना हएत।?''

डॉक्टर निलमणिक प्रश्न सुनि पंडित शंकर हँसैत कहए लगलखिन- 'अहाँक प्रश्न उचित अछि मुदा दमगर नहि अछि? घर-घरारीक लेल हम छी।(अपन चौमास देखबैत) ओहि बाड़ीमे घर बना देब। जे रोड-साइडमे सेहो अछि आ बीच टोलोमे अछि, जहिसँ चोर-चहारक कोनो डरो ने रहत। आ दोसर प्रश्न विआहक अछि, ओहो कोनो बड़ पैघ समस्या नहिये अछि। ई मिथिला थिकैत। अदौसँ एहिठाम जाति-प्रथा नहि रहल अछि। ओना समाजकेँ गलत रास्ता दिशि बढ़बैक लेल समाज-विरोधी शक्ति जाति-धर्मक कबच बना अपन उल्लु सोझ करैत रहल। तँ जाति-धर्म एते बुझि पड़ैए। एहिठाम -मिथिलामे- विआहमे स्वयंवरक चलैन अदौसँ रहल। स्वयंवरक अर्थ होइत छैक स्वयं बड़केँ चुनि विआह करब। जे जाति-पाँतिसँ अलग अछि।

--१३--

गणेशी, कलकत्तामे एकटा व्यापारी ऐठाम नोकरी करैत। बीसो बर्खसँ उपरेसँ जीप चलबैत। आजादीक आन्दोलनक दौरान बियालीस ईस्वीमे रेलक पटरी उखाड़ल गेल, पोस्ट ऑफिस जराओल गेल, टेलीफोनक तार तोड़ल गेल। असहयोग आन्दोलनक सहयोगमे ढेरो आदमी नोकरी छोड़ि देलक। रेल, पोस्ट ऑफिस आ आनो-आनो संस्थाकेँ चलब मुसकिल भऽ गेलैक। जमालपुरमे तिरबेणी उट्ठा -टेमप्रोरी- नोकरी रेलवेमे करैत। आदमीक अभावक दुआरे तिरबेणीकेँ स्थायी नोकरी रेलवेमे मे भऽ गेलैक। रेलवेमे बहाली होइत देखि तिरबेणी अपन भाए बंगटकेँ, तार पठा, जल्दी जमालपुर अबैले कहलक। गणेशी बंगटक दोस्त। बच्चेसँ दुनू गोटेक दोस्ती चलि अबैत। घरो एक्केठाम। शुरुहेसँ दुनू गोटे संगे नाचो-तमासा देखए जाए आ भरि दिन ताशो खेलाए। परोपट्टामे जँ कतौ डंका पड़ै वा कोनो मेला होइ तँ दुनू गोटे संगे जाए। बेरु पहरकेँ सभ दिन दुनू गोटे लाल कक्का ऐठाम पीसुआ भाँगो पीबए। पोस्ट ऑफिससँ तार पहुँचते बंगट गणेशीकेँ संग जा मास्टर साहवसँ पढ़ौलक। समाचार सुनि बंगट, गणेशीकेँ सेहो जमालपुर चलैले कहलक। घरपर आबि दुनू गोटे खरचोक ओरियान केलक आ कपड़ो-तत्ता खिचलक। दोसर दिन गाड़ी पकड़ि दुनू गोटे विदा भेल।

बंगटक रास्ता तिरबेणी तकैत। भागलपुर जाइ वाली गाड़ीसँ दुनू गोटे -बंगट आ गणेशी- जमालपुर पहुँचल। रातिमे दुनू गोटे तिरबेणीक डेरामे रहल। भोरे तीनू गोटे कलकत्ताक गाड़ी पकड़लक। किऐक तँ रेलवेक हेड ऑफिस कलकत्तेमे। जहि ऑफिससँ रेलवे कर्मचारीक बहाली होइत।

तीनू गोटे हाबड़ा स्टेशन उतड़ि रेलवेक हेड ऑफिस भजियाबए लगल। मुदा तीनूकेँ अक्षर ज्ञान नहि रहने ऑफिसक भाँजे ने लगै। अनठिया ककरोसँ पूछैत तिरबेणीकेँ संकोच होइत। सभ बंगलामे बजैत जे तिरबेणी बुझवे ने करैत। तीनू गोटे बाटपर ठाढ़ भऽ गुनधुन करैत। एकटा रिक्शाबलाकेँ अबैत देखि तिरबेणी मने-मन सोचलक जे एकरेसँ पूछबै। रिक्शोबला दड़िभंगिये। लगमे रिक्शाकेँ अविते तिरबेणी हाथक इशारासँ रिक्शा रोकलक। रिक्शा ठाढ़ कऽ निक्शाबला तिरबेणीकेँ पूछलक- "भाय कतए जेबह?"

रिक्शा लग आबि तिरबेणी कहलकै- "भाय रेलवेक हेड ऑफिस जाएब।"

तिरबेणीकेँ, हाथक इशारासँ देखबैत, रिक्शाबला कहलकै- "वएह रेलबेक हेड ऑफिस छियै, तइले रिक्शा किऐक करबह।"

तीनू गोटे विदा भेल। ऑफिसक आगूमे करीब दू कट्ठाक परती। जहिमे

सात-आठ टा अशोभ, यूक्लिपटश आ बोतलक गाछ। अशोभक गाछक छाहरिमे बंगट आ गणेशीकेँ बैसाए तिरबणी ऑफिस दिशि बढ़ल। ऑफिसक गेटपर चपरासी बैसल। चपरासी लग जा तिरबेणी चपरासीकेँ पूछलक- "भाय, हम जमालपुर रेलवे टीशनक इस्टाफ छी, एते दिन उठा काज करै छलौं। आब सालतनि भऽ गेल। यएह चिट्ठी लइले एलौं हेन। कने किरानी बावूकेँ देखा दाए।"

चपरसी- "बीड़ी पीबै छह। पहिने बीड़ी पियाबह तखन संगे नेने जा काज करा देवह।"

जेबीसँ तिरबेणी दूटा बीड़ी आ सलाइ निकालि, दुनू बीड़ी लगौलक। एकटा चपरासी हाथमे देलक आ दोसर अपने पीवए लगल। बीड़ीक धुँआ फेकैत चपरासी तिरबेणीकेँ कहलक- "समांग सभ गाममे नइ छह? अखन धड़हल्लेसँ बहाली होइ छै। सभकेँ नोकरी भऽ जेतह।"

तिरबेणी- "खरचो-बरचो पड़तै।"

चपरासी- "पाँच रुपैये आदमी खर्च हेतह। दू रुपैया किरानी बावू लेतह, दू रुपैया सहाएव आ एक रुपैया हमर हिस्सा होइए।"

तिरबेणी- "भाय, करए की सभ पड़तै।"

चपरासी- "किछु ने करए पड़तह। पाँच रुपैया लाबह। तूँ एत्तै बैसह। ऑफिसेमे फारम छै। खाली अपन नाओ-गामक ठेकान कहि दाए। ओहिठाम फारम लऽ किरानी बावूसँ भरा देवह। खाली हमरा सोझहामे दसखत करए पड़तह।"

- "अगर दसखत कएल नइ होइत होअए तब?"

- "तब की? औठा निशान दऽ देतइ।"

- "भाय दूटा समांग आएल अछि। दुनूकेँ काज कऽ दहक।"

- "अच्छा थमहह। किरानी बावूसँ गप्प केने अबै छी।"

कोठरी जा चपरासी किरानीकेँ कहलक। आमदनी देखि किरानी चपरासिये संग बहार निकलि, तीनू आदमी -तिरबेणी, बंगठ, गणेशी- कँ देखि आँखिक इशारा दैत चाहक दोकान दिशि विदा भेल। चपरासी तिरबेणीकेँ कहलक- "बड़े बाबूक संग जाउ। चाह-पान करा देबनि। सभ काज लगले भऽ जाएत।"

किरानीक पाछू तिरबेणी धऽ लेलक। ऑफिसक कम्पाउण्डसँ निकलितहि तिरबेणी किरानीकेँ कहलक- "हाकीम, तीनि बरखसँ हम उट्ठे काज करै छी। ऐबेर सालतनि भेल। वएह कागज लए एलौं।"

किरानी- "आरो जे दूटा समांग छथि हुनको नोकरी दिआइब।"

तिरबेणी- "हँ हुजुर। बड़ गरीब सभ छै। नोकरी भऽ जेतइ तँ कहुना-कहुना गुजर काटि लेत।"

किरानी- "आब दोकान लग एलौं। नोकरी-चाकरीक गप्प बन्न करु।"

दुनू गोटे चाह पीलक। पान खेलक। फेरि गप-सप्प करैत ऑफिस आएल। ऑफिसक मुँहपर अबिते किरानी चपरासीकेँ कहलक- ''हिनका सबहक काज जल्दी करा दहुन।'' कहि किरानी भीतर चलि गेल। बंगट आ गणेशीक नाओ-पता लिखि चपरासी तिरबेणीसँ पनरह रुपैआ लऽ भीतर जा तीनू गोटेक चिट्ठी नेने आएल। तिरबेणीकेँ हाथमे चिट्ठी दैत कहलक- ''हिनका दुनू गोटेकेँ एतै गैरेजमे काज भऽ गेलनि। अखने गैरेज चलि जाउ आ इन्चार्यक हाथमे चिट्ठी दऽ देवनि। औझुके दिनक बहाली भऽ जाएत। काल्हिसँ काज करत।''

तीनू गोटे गैरेज गेल। गैरेजमे जा तिरबेणी दुनू गोटेक चिट्ठी इन्जार्यकेँ दऽ दुनू आदमीकेँ देखा देलक। इन्चार्य नाओ-ठेकान पूछि, बही -रजिष्टर- मे लिखि, काल्हिसँ काज करए अबैले बंगट आ गणेशीकेँ कहलक।

काज भरिगर। भरि दिन -आठ घंटा- लोहाक रड, नट-बोल्ट चदराक टुकड़ा, सिलपट इत्यादि एक ठामसँ उठा दोसर ठाम राखए पड़ैत। सरकारी नोकरी बुझि बंगट साहससँ करैत मुदा गणेशीकेँ मने ने लगैत। अट्ठाइस दिन, दुनू गोटेकेँ काज करैत पूरि गेल। दू दिन महिनामे कम छल। दुनू गोटे -बंगट आ गणेशी-केँ इन्चार्य बजा, दरमाहा दऽ चारिम दिनसँ काज करए अबैले कहलक। एहिना सभ मास होय। पेइतालिसे रुपैआक नौकरी। कलकत्ता सन जगहमे रहब। कतबो काइट-छाइट जिनगी बितवैत तँ बीस-पचीस रुपैआ खरचे भऽ जाए। पाँच रुपैया जम्मेमे कटि जाए बाकी पनरह-बीस बँचै। गणेशी मने-मन सोचए लगल जे असकरमे पच्चीस रुपैया खरच भऽ जाइए आ गाममे तँ तीन -माए-बाप आ स्त्री-गोटे अछि, पनरह रुपैयासँ की हेतै? सालो भरिपर तँ गाम जेबे करब, गाड़ीमे टिकट नइ लागत मुदा सभले कपड़ा-लत्ता, सनेस आ दुओ चारि सौ रुपैया लऽ कऽ नइ जाएब तँ केहेन हएत। मुदा ओहो दू-चारि सौ आउत कतएसँ। जाबे गाममे छलौं ताबे टुटलो घरमे गुजर कऽ लैत छलौं मुदा आब तँ सरकारी नोकरी करै छी। आवो जँ घर-दुआर नइ बनाएब तँ कहिया बनाएव। जते बात गणेशीक मनमे अबैत तते मन खिन्न भेल जाइ। डेरासँ निकलि गणेशी चाहक दोकान दिशि विदा भेल।

चाह दोकानक बाहरेक ब्रेंचपर गणेशी वैसि चाह पीबए लगल। कनिये कालक उपरान्त एकटा व्यापारी मोटर साइकिलसँ उतड़ि, गणेशीक बगलेमे बैसि चाह पीवए लगल। चुपचाप दुनू -व्यापारियो आ गणेशियो- चाह पीबैत। व्यापारी चाहो पीबैत आ गणेशीकेँ उपरसँ निच्चाँ धरि निङहारबो करैत। चाह पीबि गणेशी उठल कि ओ व्यापारी पूछलकै- ''नोकरी करबह?''

नोकरीक नाम सुनि गणेशी पुनः बैसि पूछलक- ''कोन तरहक काज अछि?''

व्यापारी- ''काज तँ बहुतो अछि मुदा अखन कपड़ा दोकानमे जरुरत अछि।''

हल्लुक काज बुझि गणेशी पूछलक- ''दरमाहा कते देवै?''

व्यापारी- ''चालीस रुपैया, खेनाइ आ रहैले क्वाटर देवह।''

गणेशी- ''अहाँ एतै रहू। हम अपन कपड़ा-लत्ता डेरासँ नेने अवै छी।''

गणेशी डेरा जा बंगटकेँ सभ सुमझा, अपन सभ समान लऽ आबि गेल। व्यापारिऐक मोटर साइकिलपर चढ़ि गणेशी व्यापारीक घरपर पहुँचल। घरपर पहुँचते व्यापारी गणेशीकेँ एकटा कोठरी सुमझा देलक। अपन सभ समान रखि गणेशी काज करए लगल। दिल खोलि गणेशी मेहनत करए लगल। चारि बजे भोरे उठि गणेशी दुनू गाड़ी -एकटा जीप आ एकटा कार- कें साफ करैत। सात बजेसँ पहिनहि नहा-जलखै खा कपड़ा दोकानपर चलि जाइत। बारह-एक बजे खाइले अबैत। खा कऽ फेरि दोकानपर चलि जाइत। पाँच बजे बजारसँ तीमन-तरकारी आनए चलि जाइत। गाड़ी साफ करैत-करैत गाड़ी चलाएवो सीखि लेलक।

साल भरिक बाद गणेशी ड्राइवर भऽ गेल। दोकानदारीक संग गणेशी ड्राइवरियो करए लगल। गणेशीक मेहनत आ इमनदारी देखि व्यापारी अपन समांग वुझए लगल। जखन जे रुपैया गणेशी घर पढ़बैले मंगैत, व्यापारी दऽ दैत। सिर्फ काजक नाम पूछि लैत। एहि तरहे गणेशीकेँ बीस बर्ख कलकत्तामे भऽ गेलै।

गाममे गणेशीक परिवार गणेशीक स्त्री चलबैत। सालमे एक बेरि गणेशी एक मासक लेल अबैत। पाँचटा बेटा आ एकटा बेटी गणेशीकेँ। पहिल बेटी, बाकी सभ बेटा। छबो भाए-बहिनिकेँ गणेशी पढ़बैत। बेटी मैट्रिकक परीक्षा देलक। साल भरिसँ गणेशी बेटी विआहक ओरियान करैत। परीछे दुआरे बेटीक विआह रुकल।

दू मासक छुट्टी लऽ गणेशी गाम आएल। पाँच भाँइक बीच एकटा बहीनि तेँ दिल खोलि कऽ खर्च करैले गणेशी तैयार। कुटुमैती ठमबए लगल। कतौ नीक घर भाँजपर अबै तँ लड़का दब आ कतौ लड़का बढ़ियाँ भेटै तँ घर दब। एहि तरहे पनरह दिन बीति गेल। सोलहम दिन एकटा लड़काक भाँज गणेशीकेँ लागल। पितिऔत भाएकेँ संग केने गणेशी ओहिठाम पहुँचल। अढ़ाइ कोस हटि ओ गाम, घर बड़ देखि गणेशीकेँ पसीन भऽ गेल। मझोलका गिरहस्तमे सोनेलालक गिनती गाममे होइत। साठि-सत्तरि मन धान, बीस-पच्चीस मन मडुआ, आठ-दस मन दलिहन सोनेलाल उपजबैत। जहिसँ किछु बेचियो लैत आ अपनो सालो भरि चलैत। ग्रामीण चालि-ढ़ालिक सोनेलालक परिवार, तेँ खरचो कम होइत।

दलानपरसँ उठि, गणेशी दुनू भाँइ विचार केलक जे समए कम अछि तेँ बेसी लटारम नहि करब। लटारम ई जे हम दुनू भाँइ बर देखलौं। आब कनियाँ देखैले

हिनका सभकेँ कहबनि। दू-चारि दिनक उपरान्त कनियाँ देखताह। तखन फेरि अपना सभ लड्डूपान -सगुन- चढ़बैले आएव। तखन फेरि ई सभ कनियाँकेँ असिरबाद दइले जेताह। अही सभमे पनरह-बीस दिन लगि जाएत। तकर बाद कुटुम सभकेँ न्योत-पिहानसँ लऽ कऽ जोगार-पाती सभ करए पड़त। फेरि विआहक उपरान्त बर-विदागरीक झमेल भऽ जाएत। भार-दौर करैत कहुना-कहुना मास दिनसँ उपरे लगि जाएत। तँ नीक हएत जे बिआहसँ पहिलुक प्रक्रियाकेँ छोड़ि दियै। किएक तँ विआहसँ पहिनहुँ दोस-महिमसँ लऽ कऽ हित-अपेछित, कुटुम-परिवारकेँ न्योत-हकार देमए पड़त। बरियातीक व्यवस्थासँ लऽ कऽ, समान जुटौनाइ आदि ढेरो काज अछि। अगर देखे-सुनीमे समए लगा देब तखन काजमे पहपैट भऽ जाएत।

दलानपर आबि रामकिसुन -गणेशीक पितिऔत भाए- सोनेलालकेँ कहलक- “समधि, हमर भाय नोकरिया छथि, दुइये मासक छुट्टी लऽ कऽ ऐला हेन। तहूमे पनरह दिनसँ बेसी बीतिये गेलनि। जहिना बिआहसँ पहिने जोगार-पाती, नोत-पिहानमे समए लगैत तहिना तँ बिआहक बादो बर-बिदागरी, भार-दौरमे लगि जाइत। जखन हमर अहाँक दिल मिलि गेल तखन अनेरे आडमबरमे किअए पड़ब। लड़का-लड़कीक भागमे जे लिखल हएत, ओ हेबे करतै। हमरो एक्केटा भतीजी अछि। भैयाक विचार छनि जे जहिना बेटा-तहिना बेटी। जतेक बेटाले करबै ओते बेटियोले। जहिना बेटीकेँ पढ़ेलहुँ तहिना सम्पतियोमे जते हिस्सा हेतै तते देबइ। तँ अहूँकेँ नीक हएत आ हमरो। रामकिसुनक बात सुनि, सोझमतिया आदमी सोनेलाल रामकिसुनकेँ पूछलक- “अहाँ की कहए चाहै छी?”

रामकिसुन- “ओनो हम सभ तैयार भऽ कए नहिये आएल छी मुदा लड़काकेँ गोड़लगाइ दऽ जमाए बनाइये कऽ जाएब।”

सोनेलाल- “कोनो हरज नहि। मुदा बिना खाँनि-पीन केने, जमाए कोना बनाएब?”

रामकिसुन- “बड़ बढ़ियाँ। जाउ, भानस करबाउ। मुदा बेसी असार-पसार नहि करब। जाबे भानस हएत ताबे अहूँ चारिटा समाजक लोककेँ बजा लिअ। बरियातीक गप-सप्प कइये लेब।”

सोनेलाल आँगन जा घरवालीकेँ कहलक- “बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल। झब दे अहाँ भानस करु ताबे हम चारिटा समाजकेँ बजा आनि, बरियातीक गप-सप्प कऽ लइ छी।”

सोनेलालक बात सुनि घरवाली -सुधीरिया- झपटि कऽ बाजलि- “ई कोन बिआह भेलै? ने घरदेखी भेल आ लड़काकेँ दूबि-धान पड़ल, ने लड़की देखलौं आ ने घर-दुआर देखलौं। चुपेचाप चोर जेकाँ बेटाक बिआह करए चाहै छी। कोन

ऐहन माए-बाप हएत जकरा बेटा-बेटी विआहक मनोरथ नइ हेतइ। लोक की कहत?''

सोनेलाल- ''अहीले तँ समाजकेँ बजबै छी। अहाँ झब दे भानस करु।''

कहि सोनेलाल सौँसे टोलक लोककेँ बजा अनलक। चाह-पान, बीड़ी-सिगरेट तमाकू चलए लगल। बरियातीक गप-सप्प शुरु भेल। सोनेलालक भातीज मंगला। मंगला बम्वइमे लूम चलबैत। बम्बैया हवासँ प्रभावित तेँ बजैमे फड़कोर। सोनेलाल कातमे खुँटा लगल बैसल। गणेशी सेहो चुपचाप बैसल। समाजक लोक एहि भाँजमे जे पहिने घरबारी बजत तखने ने किछु बाजब। तेँ सभ चुप। मंगला अबैसँ पहिने एक शीशी ब्राण्डी पीबि नेने, किएक तँ लोकक बीच जाइ छी, मूड बनल रहत। सभकेँ चुप देखि मंगला बाजल- ''कुटुम जखन लड़ूपान-तिलक नहि केलहुँ, तखन तीनिटा काज भेल। तेँ दू सए बरियाती आएब। नाचो रहबे करत, अंग्रजी बाजा सेहो रहत। दू सए बरिआती ले दूटा मैक्सी आ चारिटा कार जाएत। तीनि साँझ खाएब। एक साँझ भात, दोसर साँझ पक्की आ तेसर साझ चूड़ा-दही। माछ-माउस खुअबैये पड़त। अइ गाममे बम्बैया छौँड़ सभ अछि, ओ इंग्लीस पीबे करत। लेन-देन जे करब से अपन दुनू कुटुम जानी।''

मंगलाक बात सुनि रघुबीर बाबा गरजि कऽ मंलगाकेँ कहए लगलखिन- ''रे मंगला, तूँ जे ऐना अलग-टेट जेकाँ फड़-फड़ बजै छैँ से तोरा एक्को पाइ जेठ-छोटक विचार नइ छौ। तूँ की बुझबिही जे समाज कोना चलै छै? दू सौ बरियाती जे कुटुकेँ कहलहुन से कह तेँ दू सौ बरियाती गाममे ककरा-ककरा गेलै। की जे मनमे अबै छौ बकैत जाइ छैँ। गाममे की सभसँ मातबर सोनेलाले आछि? सभसँ बेसी अजगजबला मोतिये लाल अछि। बेटा विआहमे सवा सौ बरियाती लऽ गेल रहए। लड़का जाइले एकटा कार आ बरियाती जाइले टाएर गाड़ी लऽ गेल रहए। खाइये-पीबै दऽ जे कहलिही माछ-माउस आ ताड़ी-दारु, से आइ तक समाजमे कतए देखलिही। हम सभ वैष्णव छी तेँ माछ माउस आ ताड़ी-दारु समाजक काजमे नइ हुअए देवइ। जकरा खाइ-पीबैक मन होय अपन घरमे खा-पीबह। क्यो ओकरा रोकतै।''

रघुवीर बाबा बजितहि रहति कि मंगला उठि कऽ चलि गेल। सभ कियो विचारि कऽ तँइ केलनि जे एक सौ बरियाती, एकटा कार, एकटा मैक्सी, एकटा नाच, अंग्रेजी बाजा जाएत। खाइ-पीबैमे ने माछ-माउस चलत आ ने ताड़ी-दारु। गणेशी मानि लेलक। विआहक दिन तँइ भऽ गेल। सभ किछु तँइ होइतहि सोनेलाल आंगन जा देखलक तेँ भानसो भइये गेल छल। समाजक सभ चलि गेल सिर्फ रघुवीरे बाबाटा बँचल किएक तँ सोनेलाल कुटुमक संगे खाइले कहि देने।

खेला-पीला बाद सोनेलाल, समधिकेँ पहिरबै लेल, दू जोड़ धोती दुआरपर नेने

आएल। धोती देखि गणेशी सोनेलालकेँ कहलखिन- "समधि, बेटी ऐठाम धोती पहिरब उचित नहि। तेँ अहाँ सुआगत केलहुँ। बड़बढ़िया। मुदा धोती नहि पहिरब, लऽ जाउ।"

गणेशीक बात सुनि सोनेलाल रघुवीर बाबा दिशि देखए लगल। रघुवीर बाबा बुझि गेलखिन। ओ सोनेलालकेँ कहलखिन- "कुटुमक विचार ठीके छनि। लऽ जा धोती।"

घरपर आबि गणेशी विआहक सरंजाम ओरियबैमे लगि गेल। कलकत्ता फोन कए कऽ बैण्ड पार्टी आ नाटक पार्टीक सट्टा सेहो गणेशी बना लेलक। लड़का-लड़कीक लेल वस्त्र-आभूषणसँ लऽ कऽ बरतन, कुरसी पलंग धरि ओरियान कऽ लेलक। बरिआतीक रहै लऽ टेन्ट, समियाना, कुरसी-टेबुल सभ दरभंगामे ठीक कऽ लेलक। विआहसँ एक दिन पहिने कलकत्तोसँ बेण्ड पार्टी, ड्रामा पार्टी आ दरभंगोसँ टेन्ट समियाना गणेशी ऐठाम पहुँच गेल। बरिआतीक भानसक लेल दरभंगेसँ भनसिया सेहो आबि गेल। विआहक दिन भोरेसँ सभ व्यवस्थामे जुटि गेल।

सात बजे साँझमे बरिआती आबि गामक स्कूलपर रुकल। बरिआतीक दू आदमी, अनभुआर बनि, गणेशी ऐठाम पहुँच सभ कुछ देखलक। सभ कुछ देखि, घुरि कऽ बरिआती लग जा सभ समाचार सुना देलक। स्कूलपर सँ बरिआती गणेशी ऐठाम विदा भेल। बैण्ड बाजा बजए लगल। बम्बैया छौँड़ा सभ बाजाक संग डान्स करैत बढ़ल। छुड़छुड़ी-फटक्का शुरु भेल। बरिआती ऐबाक आवाज सुनि कलकत्तोक बैण्ड पार्टी, अपन कलकतिया पोशाक लगा, आधुनिक कलाक धुन शुरु केलक। गणेशीक अंगनाक मुँहपर कलकत्ताक बैण्ड पार्टी आ बरियातीक संग सोनेलालक वैण्ड पार्टी बरियातीक बैण्ड पार्टीक संग जे छौँड़ा सभ डान्स करैत छल, ओ नचवो करए आ पिहकारियो दइ। गामोक जे नवयुवक सभ छल ओकरो नइ रहल गेलै, ओहो सभ कलकत्तिया बैण्ड पार्टीक संग नाचए लगल। बरियातीक कार, जहिपर बर वैसल छल, आ मैक्सी पाछू पड़ि गेल आ बैण्ड पार्टी आगू भऽ गेल। घरवैयोक बैण्ड पार्टी थोड़े आगू बढ़ल। एक भाग बरियातीक बैण्ड पार्टी आ दोसर भाग घरवारीक। देखिनिहार लोकक करमान लगि गेल। देखिनिहारे सभ, दुनू बैण्ड पार्टीकेँ चुप करा, कहलक जे बेरावेरी दुनू पार्टी बजाउ।" सएह भेल। मुदा कलकत्तिया बैण्ड पार्टीक आगूमे बरियातीक बैण्ड पार्टी कमजोर भऽ गेल। जे बरियातियो आ समाजो मानि लेलक। बरियातीक बैण्ड पार्टी बन्न भऽ गेल मुदा डान्सर सभ घरबैयाक बैण्ड पार्टीमे मिलि डान्स करए लगल। ड्रामा पार्टीक डान्सरकेँ नहि देखल गेलै। ओहो दुनू अपन पोशाक लगा डान्स करए लगल। बरियातीक डान्सर सभकेँ देखिनिहार पीहकारी देमए लगल। ओहो सभ आबि-आबि

मैक्सीमे बैसि गेल। दू-अढ़ाइ घंटामे कलकत्ताक बैण्ड पार्टी परोपट्टामे दलमलित कऽ देलक।

बैण्ड बाजा बन्न भेल। बरिआती सभ अपन बैसारमे बैसल। चाह-पान चलए लगल। जनिजाति सभ चंगेरामे दुबि-धान आ दीप लऽ बरकेँ दुआर लगौलक। चाह-पान होइतहि बरियातीक बीच जलपान चलए लगल। बरियातीक बैण्ड पार्टीक सभ कलाकार एक ठाम मन्हुआइल बैसि अपन कलापर अफसोस करैत। मुदा कलाकत्ताक बैण्ड पार्टीक कलाकारकेँ जितैक कोनो खुशी नहि। किएक तँ ओ सभ बुझैत जे ग्रामीण कला शहरी कलासँ पछुआइल अछि।

दस बजि गेल। चैगामाक लोक नाच देखए आबए लगल। रास्ता-पेरासँ लऽ कऽ नाचक मैदान धरि देखिनिहार पीह-पाह करैत। एकटा नम्हर परतीपर नाचक व्यवस्था गणेशी करबौने। एक भाग कलकत्ता ड्रामा पार्टीक स्टेज आ दोसर भाग मनचलक नाच पर्टीक। कलकत्ता पार्टीक स्टेज शहरी ढंगसँ बनल जबकि मनचलक स्टेज ग्रामीण ढंगसँ।

नाच-नाटक शुरु होइसँ पहिने मनचलक स्टेज लग बेसी देखिनिहार। किऐक तँ मनचलक पार्टीक प्रतिष्ठा इलाकामे अधिक। जबकि कलकत्ता ड्रमा पार्टी अनभुआर। देखिनिहारो तँ बच्चे। किऐक तँ कलाकेँ कला नहि बुझि मात्र मनोरंजन बुझल जाइत। मनचलक स्टेजपर नगेड़ा बाजब शुरु भेल। नगेड़ाक गड़गड़ेनाइ सुनि सभ देखिनिहार मनचलक स्टेज दिशि भऽ गेल। सम बन्है काल मनचल कातमे ठाढ़ भऽ देखैत। दर्शक आ संगीतकारक बीच साजक आवाज तार जोड़ि देलक। कातमे ठाढ़ भेल मनचल मने-मन चपचप होइत जे आइ हमर पार्टी जरुर उपर हएत। सम बान्हब समाप्त भेल। मनचल मेक-अप रुममे गेल। मनमे बेहद खुशी तँ अपन मेक-अप ढंगसँ करए लगल।

कलकत्ताक ड्रामा पार्टी, बिजली चालित साज सजा, साउंडबोक्स ठीक कऽ टेप खोललक। एकटा नर्तकी आबि मूक डान्स शुरु केलक। जेहने मधुर बाजाक आवाज तेहने शास्त्रीय नाच। शुरु होइतहि जेना वृन्दावनमे राधिका सभ कृष्णक प्रेममे विभोर भऽ नचैत, तेहने दृश्य। सभ देखिनिहार कलकत्ताक ड्रामा दिशि घुमि गेल। मनचलक स्टेज दिशि एक्को आदमी ने रहल। हरिमुरियाँ मास्टर उठि कऽ जा मनचलकेँ कहलक। मनचल अदहा मेक-अप केने। स्टेजपर आबि मनचल देखलक। अपन नाचसँ विमुख होइत दर्शककेँ देखि मनचलक दुनू आँखिसँ नोर खसए लगलै। बजतंत्रीसँ लऽ कऽ नाचक पार्ट खेलिनिहार धरि, सभ, स्टेजपर बैसि कलकत्ता पार्टीक नाटक देखए लगल। अपन नाच पार्टीक दुर्दशा देखि सोनेलाल मनचल लग आबि कहलक- ''मनचल भाय, ई तँ बरिआती-घरवारीक बीचक बात छी। समाज तँ देखबे करैए। हमरा-तोरा बीच सामाजिक संबंध अछि

तँ तूँ दुख नहि करह। जतेमे तोहर सट्टा छह, ओ देबे करबह। आब तोँ सभ नटुआ नहि बरियाती भेलह।''

एक तँ भरि राति नाटक चलैत, दोसर बरियातीक धुमशाही। मुदा एहि सभसँ फराक कारणे मनचलकेँ निन्न नहि होइत। मने-मन मनचल सोचैत जे जिनगी भरिक प्रतिष्ठा आइ चलि गेल। बिना प्रतिष्ठाक आदमी आ मुरदा, दुनू बराबरि। मुदा एहिठाम जे प्रतिष्ठा गेल ओ कि सभ सभ ठामक -सभ दिनक- लेल चलि गेल। कथमपि नहि! काल्हिये जँ हम दोसर ठाम नाचव तँ की ओ प्रतिष्ठा पुनः नहि आबि जाएत। जरुर आओत। तखन एते मनमे दुख किअए होइए। अनेरे। मुदा नहि! हमरा सभकेँ ओकर -कलकत्ताक पार्टीक- अनुकरण करक चाही। सीखक चाही। हम सभ ठमकल छी। हमर सिर्फ कले टा नहि ठमकल अछि बल्कि सामाजिक व्यवस्था सेहो ठमकल अछि जहिसँ लोकक बुद्धि आ नजरि -दृष्टिकोण- सेहो ठमकल छैक। समएक गतिकेँ जानि समएक संग सभकेँ चलब, उचित चलब भेल।

भोरे मनचल आ विदेसर, -बैंड पार्टीक अगुआ- बरिआती सभसँ अगल भऽ, कातमे वैसि अपन-अपन पछुआइल कलाक संबंधमे गप-सप्प करैत। जहिना किनको अपन परिवारकेँ अपन सोझामे नष्ट होइत देखि मनमे होइत, तहिना मनचल आ विदेसरकेँ होइत। दुनूकेँ जेना शरीरसँ शक्ति निकलि गेल होए तहिना शक्तिहीन वुझि पड़ैत। मुँह मलिन, चेहरा उदास दुनूक। दुनू गोटेकेँ कातमे उदास बैसल देखि, रघुवीर बाबा दुनूक लगमे जा कहलखिन- ''बौआ, तूँ दुनू गोटे एते उदास किएक छह? जिनगीमे एहिना नीक-अधला होइ छैक। सभ दिन नीके होइत रहलह आइ जँ कने अधले भऽ गेलह, तँ की हेतैक? तूँ सभ जुआन-जहान छह, जिनगी बड़ीटा होइ छैक, तँ मनसँ दुनू गोटे एकरा हटा लाए। धैर्य आ साहस करह। हम अपन जिनगीक घटल घटना कहै छिअह। जखन हम पचास बर्खक छलौं, तखन बड़द कीनए बसौली हाट चारि-पाँच गोटे गेल रही। हम सभ ओम्हर गेलहुँ इम्हर -गाममे- बाढ़ि चलि आएल। ऐहेन बाढ़ि आएल जे ढेरो लोकक घर खसलै, माल-जाल भँसलै, खेती-पथारीक तँ कोनो चर्चे नहि। हमर दुनू बच्चा -एकटा बेटा एकटा बेटी- आ घरवाली सेहो डूबि गेल। ओतइ -बसुलियेमे- सुनलिऐक जे बड़-जोर बाढ़ि अपना इलाकामे आबि गेल। सभ कियो विचारलहुँ जे जँ बड़द कीनब तँ लऽ कोना जाएव। बड़द कीनव छोड़ि देलियै। सभ कियो घुरि गेलहुँ। अबैत-अबैत जखन कमला छहर लग एलहुँ ते देखलिऐक जे पूबरिया छहर पान-सात ठाम टुटल अछि। सौँसे पानि झलाक-झलाक करैत। सेहो ठाढ़ पानि नहि, बेग। गाम अबैक साहस नहि भेलि। छहरक काते रामखेतारीमे सभ रहि गेलहुँ। भरि राति निन्न नहि भेलि। हुअए जे कहीं एहि सोझहे जँ छहर टुटि

जाएत तँ दहाइये जाएब। भोर भेलै। मुदा अढ़ाइ दिन बाढ़िकेँ पूरि गेल छलै तँ धारक पानि कोर लेलक। बाढ़ियो कमल। धारमे नावपर पार भेलौं आ पाएरे विदा भेलहुँ। गाम अबैसँ पहिने -बगलेक गाममे- पता लगल जे हमर परिवारे नास भऽ गेल। मुदा मन नहि मानलक। मनमे भेल जे उड़नितिये गप छियै कहीं झूठे होइ। मुदा मनमे खुटका भइये गेल। गाम एलौं तँ देखलिऐक, जे ठीके। मनमे अदंक पैसि गेल। बुद्धि जना उड़ि गेल। थाल-पानि सौँसे रहवे करै, कतए बैसब सेहो जगह नहि! घर-अंगनामे पानि चलि आएल छल। एक्केटा घर ठाढ़ रहल बाकी दुनू गिर पड़ल। घरक बगलेमे इनार। इनारक लहरा ऊँचगर। ओहि ठाम जा थालकेँ साफ केलहुँ। कनिये कालक बाद लहरा सुखि गेल। ओहिपर रहए लगलहुँ। तीनि दिनक बाद जखन सौँसे सुखल तखन अपना घर एलौं। चारि दिनक बाद सासुरसँ खबरि भेलि जे ससुरो आ साढ़ूओ डूबि गेला। दुनू गोटे भादबक पूर्णिमामे कुशेश्वर स्थान गेल। किएत तँ हुनका -ससुर- बुझल रहनि जे बैजनाथ बाबा भादवक पूर्णिमामे विदेसर आ कुशेश्वर स्थान, देवघर छोड़ि कऽ चलि अबैत छथि। तँ गेला। सासुरक समाचार सुनितहि, अनेरे मुँहसँ हँसी निकलए लगल। बड़ी काल धरि हँसिते रहलहुँ। तखन अपने मनमे भलि जे लोक बताह भऽ जाइ छै तँ अहिना हँसै छै। हमहूँ तँ ने बताह भऽ गेलौं मने-मन सोचए लगलौं जे बताह छी, की नहि छी।''

एते बात सुनितहि मुस्कुराइत विदेसर रघुवीर बाबाकेँ कहलक- ''एते भारी दुख सहि अहाँ बुलंदीसँ जीवैत छी, हमरा दुनू गोटेकेँ तँ मात्र मनमे कने ग्लानि भेलि। अहाँ जेकाँ तँ नहि जे शरीरसँ मन धरि दुखी भेलहुँ। आगू की भेलि, से कहियौ?''

- ''छह मास धरि मन उचटल रहल। कहियो हुअए जे बबाजी भऽ घरसँ निकलि जाइ। के एहि माया-जालमे पड़ल रहत। मुदा फेरि मनमे आबए जे बड़का-बड़का महंथ सभ कोना परिवारसँ अलग रहि ब्रह्मचर्य जिनगी जीबैत अछि। फेरि मनमे आबए जे बड़का-बड़का ऋृषि-मूनि सभ, कोना जंगलमे रहि तपस्या केलनि। एहिना छह मास धरि मन बौआइत रहल। धीरे-धीरे मन असथिर हुअए लगल। घटनाक सभ बात विसरितो गेलहुँ। छह मासक पछाति सासु समाद पठौलनि जे हम बड़ दुखित छी तँ कने आबि मुँह देखा जाउथ। समाद सुनि मनमे आइल जे आब ओ -सासु- हमर के छथि जे भेंटि करबनि। जाधरि स्त्री छलि ताधरि ओ हमर सासु छेलीह। मदु फेरि मनमे भेल जे बीमारी अगिलगी वा कोनो पैघ घटना भेलापर बिना कहनहुँ जेबाक चाही। तँ अचता-पचता सासुर गेलहुँ। सासुर गेलापर देखलहुँ जे ओ बीमार नहि छथि मुदा सोगाइल जरुर छथि। किएक तँ पति, जमाए, नाति-नातिन आ बेटी एक्के बेरि मुइलनि तँ चिन्तित

होएव स्वाभाविके छैलैक। मुदा हमर आगत-भागत पहिनेसँ बेसी होइत। हम बुझवे ने करियै जे ई उलटल गंगा किअए बहैए। मने-मन तारतम्य करी। एक दिन ओहिना बीति गेल। सिर्फ हम गोड़ लगलिएनि आ ओ असीरवाद देलनि। दोसर दिन हम कहलिएनि जे चलि जाएव। तखन जिनगीक नव प्रक्रिया शुरु भेल। जलखै बेरिमे चूड़ा, दही, चिन्नी, केरा, कलकतिया आमक खूब नमगर अचार, लूँगीयाँ मिरचाइ आ नुन थारीमे पड़ोसि, आगूमे देलनि। मनमे आएल जे कलौओ खाइक जरुरत नहि रहत, एक्के बेरि खूब दमसा कऽ चढ़ा ली। जहाँ दू-चारि कौर खेलहुँ कि सासु कहलनि- "पाहुन, हमर तँ घरे बिलटि गेल। आब कोना फेरि ओहिना फड़ल-फुलाइल घर देखब।"

हम निक-नहाँति बुझबो ने केलियै। मुदा एते बात हमरा मुँहसँ जरुर निकलि गेल जे- "अहाँ तँ हमर माए तुल्य छी। जे कहबै, हम करब। ओ -सासु- कहलनि- "दूटा बेटी छल दूटा जमाइ भेल। दूटा नातियो-नातीन छल। सभ मिला छह गोटे भेलहुँ। जहिमे दू गोटे छी। एकटा बेटी, एकटा जमाए। घर एक्कोटा ने भेल। तँ अहाँ साइर -विधवा बेटी- सँ विआह कऽ लिअ। कमसँ कम तँ दुनू गोटे ठरो धऽ लेब आ दू परिवारमे सँ एकटा तँ फड़त-फुलाइत।" साइरो लगेमे बैसलि छलि।

सासुक मधुआइल गप्प, चूड़ा-दही भोजन आगूमे, तँ हमरो मन दहलाइल। हमहूँ किछु तर्क-वितर्क नहि करए लगलिऐक, सोझे 'हँ' कहि देलिऐक। 'हँ' कहितहि जना सासोकेँ आ सारियोकेँ मन हरियर भऽ गेलिन। सरहोजि सेहो लगेमे बैसलि। चैवन्नियाँ मुस्की दैत सरहोजि बाजलि- "शुभ काजमे विलंब की।" हमर सासु, आठ-दसटा जनि-जाति बजा अनलनि। ताबे हमहूँ खा कऽ उठि गेलहुँ। गीति-नाद शुरु भेल। दिनेमे चुमौन माने विआह भऽ गेल। ने बरिआती आ ने आजा-बाजा। आइ देखिते छहक जे अस्सी बर्खक उमेरमे हम केहेन थेहगर छी। दूटा बेटा, दूटा पुतोहू, सातटा पोता-पोती अछि। अपन खिस्सा हम एहि दुआरे सुनेलियह जे मनुक्खकेँ कखनो निराश नहि हेबाक चाही। आशाक जिनगी स्वर्गक जिनगी आ निराशाक जिनगी नरकक जिनगी होइत। तँ तोहू दुनू गोटे मनसँ चिन्ता हटाबह आगूक उपाइ सोचह।"

रघुवीर बाबाक बात सुनि विदेसर मनचलकेँ कहलक- "भाय, अखन अपनो दुनू गोटेक पार्टी अछि आ कलकत्तोक दुनू पार्टी छैक। ओहि दुनू पार्टीकेँ बजाबह आ अपनो दुनू पार्टीक कलाकारकेँ जामा करह। कलकत्ता पार्टीकेँ गुरु मानि आग्रह करबनि जे एक-एकटा कलाकार दुनू पार्टीक -बैण्ड आ नाटक- रहि जाउ। हमरा सभकेँ सिखा दिअ। जखन हम सभ सीखि लेब तखन अहाँ चलि जाएब।"

मनचल- "बड़वढ़िया। कहि विदा भेल।"

दुनू गोटे चारु पार्टीक कलाकारकेँ बजौलक। पहिने तँ किछु काल हँसी-मजाक चललै। तकर बाद काजक गप-सप्प चलल। गप-सपक उपरान्त दूटा कलकत्ताक कलाकार दुनू पार्टीकेँ सिखबैक आश्वासन दैत रहि गेल।

--१४--

अंग्रेजी शासनक संध्याबेला। मिथिलांचलमे कतौ-कतौ संस्कृत विद्यालय, गोटि-पङरा संस्कृत महाविद्यालय आ एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय। जहिमे संस्कृत भाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ होइत। मुदा शिक्षा जनोपयोगी कम, सेहो आमजनक लेल उपलब्धि नहि। ग्रामीण इलाकामे केयो-केयो खानगी शिक्षक रखि अपन-अपन बेटाकेँ पढ़बैत। लड़कीक पढ़ाएव सेहो बर्जिते जेकाँ। कोनो-कोनो गाममे, गौँवा अपन सहयोगसँ लोअर-प्राइमरी स्कूल चलबैत। हाई स्कूल आ कओलेज नगण्ये जेँका। सेहो बजारक इलाकामे। तेँ ग्रामीण इलाकामे आगू पढ़ैक कोनो उपाइये नहि। किछु गनल-गूथल सुभ्यस्त परिवारक विद्यार्थी बाहर जा-जा पढ़ैत।

ओना मिथिलांचलमे जमीनदारी विरोधमे जन-आन्दोलन शुरु भऽ गेल। जमीनक लड़ाइ शुरु भऽ गेल। अपन कमजोरी जमीनदारो बुझए लगल। मुदा अंग्रेजी हुकुमतक जन-विरोधी शासनक लाभ उठा ओहो सभ -जमीनदारो- आम जनक विरोधे करैत। गोटि-पङरा जमीनदार आम-जनक संग सहानुभूति रखैत। मुदा तइयो जन-आन्दोलन बढ़िते गेल, कमल नहि माने दबल नहि।

भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिये समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पंडित लोकनिक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली चलैत तँ दोसर दिशि टूटल-फूटल मैथिली -जनभाषा- चलैत। जकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगीयो पछुआएल। आम जनक जिनगी पछुएवाक अनेको कारण छल। जेना- जमीनदार खेतक मालगुजारी लइत छल, जे दू-साल नहि देलापर किसानक जमीन निलाम कऽ लेल जाइत छल। जहिसँ आइक किसान काल्हि बोनिहार बनि जाइत। उपजा-बाड़ीक कमी आ सभ दिन काज नहि रहने लोक कर्जमे डूबि जाइत छल जहिसँ दिनानुदिन ओकर हालत निच्चे मुँहे होइत जाइत छल। तइपर सँ प्राकृतिक आफद सेहो होइते रहैत छल, जहिसँ कहियो बाढ़ि तँ कहियो रौदीक चपेटमे पड़िते छल। समाजक बीच स्पष्ट दू तरहक जिनगी चलैत छल। जहिसँ स्पष्ट दू तरहक कला-संस्कृति चलि रहल छल। एक दिशि परिनिष्ठत संस्कृति बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिशि टूटल-फुटल संस्कृति, लोक संस्कृति, सेहो चलि बढ़ि रहल छल।

भोलानाथक सुभ्यस्त परिवार। भैयारीमे असकरे। साठि बीघा जमीन भोलानाथकेँ। निःसन्तान भोलानाथ। सन्तानक दुआरे भोलानाथ तीनिटा विआह केलक मुदा एक्कहुटा संतान नहि भेलनि। साले-साल कामौर लऽ देवघर, बीस बर्खसँ सेहो जाइत। इलाकाक एक्कहुटा डॉक्टर, वैद्य, हकीम, ओझा-गुनी नहि बँचलाह जिनका ऐठाम भोलानाथ नहि गेल। जते तीर्थस्थान अछि सभठाम जा भोलानाथ कबुला केलक मुदा तइयो निःसन्ताने रहल। सन्तानक दुआरे भोलानाथ सदिखन चिन्तित। मुदा अपना बसक काज नहि बुझि सबुर करैत।

बच्चेसँ खुशीलाल भोलानाथक संगी। भोलानाथकेँ निसन्तान देखि खुशिलालो चिन्तित। एक दिन खुशीलालकेँ कहलक- "दोस, जँइ तीनिटा स्त्री केलह तँइ एकटा आरो करह। लोकक भाग्य सभ दिन एक्के रंग नहि रहैत छैक, के कहलक, जँ चारिम स्त्रीक भाग्यमे संतान लिखल हुअअ।"

संतानक दुआरे भोलानाथक मन जरल। तँ खुशीलालक बातसँ मनमे खुशी होइत। आह्लादित भऽ भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- "दोस, लोक कहै छै जे अधला काज केने अधला फल होइ छैक, मुदा हम तँ कहियो अधला काज नहि केलहुँ मुदा तखन ऐना किअए भेल। अखनो देखै छी जे तीनू स्त्री, अपने-अपने हाथे फूल तोड़ि, नियम-निसठासँ पूजा करैत अछि मुदा तइयो नीक फल कहाँ होइ छै। दुख अखुनका -जाबे जीवै छी- ओते नहि अछि जते मुइलाक बादक होइत अछि। किएक तँ जाबे जीवै छी ताबे तँ कहुना कटिये जाएत मुदा मुइलाक बादक दुख एहि दुआरे होइत अछि, पोथी-पतराक बात थोड़े झूठ हएत। अपने आँखिये तँ नहि पढ़ने छी मुदा पढ़निहार सभ कहै छथिन जे बिना बेटाक आदमीकेँ कोनो गति नहि होइत छैक। मुइलाक उपरान्त ओ जहाँ-तहाँ बौआइत अछि। तँ बेसी चिन्ता मुइलाक बादक अछि, दोस। निचेनमे जखन असकरे रहै छी, तखन यएह बात मनमे घुरिआइत रहैए, जे खेत-पथारक की हएत? अगिला पीढ़ीक लोक सभ सेहो कहत जे समाजमे सभसँ बेसी पापी भोलवे छल, जे तीनि-तीनिटा बहू केलक मुदा तइयो एकोटा मुसरियो ने भेलै।"

भोलानाथक बात सुनि खुशीलाल कहलक- "अही दुआरे ने दोस कहै छियह। कखन केकर भाग बदलत से कोइ जनैए।"

भोलानाथ- "दोस, आब हमरासँ कोन बेटीबला बेटीक विआह करए चाहत। पचपन-साइठिक उमेर भेल।"

मुस्की दैत खुशीलाल कहलक- "सम्पत्ति देखि कोन कन्यागत अपन बेटीक विआह नहि करए चाहत। बड़ करत तँ विआहक खरचा लेत। किछु बेसिये कऽ दऽ देबैक। मुदा विआह नहि हएत, केहेन बात बजै छह।"

भोलानाथ- "दोस, सभ तीर्थ स्थान जा-जा गुहारि लगेलहुँ, मुदा किछु ने

भेल। सिर्फ एकटा तीर्थ-स्थान बँचल अछि। ओहिठामसँ भऽ अबै छी, तखन तोहर बात करब।''

खुशीलाल- ''कोन स्थान?''

भोलानाथ- ''उनीकुटी। उनीकुटी त्रिपुरामे छैक। इम्हर जते तीर्थस्थान अछि सभ खुदरा देवस्थान छी। मुदा उनीकुटीमे, करोड़मे एक कम, देवी देवता अछि। तेँ मनमे अबैए जे सभकेँ एक्के बेरि किअए ने कहियनि। जँ किछुकेँ नहियो मन हेतनि तइयो सभ बेपाटे भऽ जेताह, से तँ नहि।''

खुशीलाल- ''अपने सभ परानी मिलि सभ देवताकेँ तँ कहबे केलहुन मुदा हमहू तँ दोस छियह। तँ हमहूँ जेहब। दोस्तक काजे होइ छैक दोस्तक नीक-अधलामे संग देब।''

आसीन मास। साओन-भादो भरि मन बरिसल। झाँटो-बिहाड़ि अपन हिस्सा नीक जेकाँ पुरा लेलक। काए उझुम बाढ़ि मुड़िआरी देलक। बेरु पहरकेँ भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम पहुँचल। खुशीलालक घर झाँटमे गिर पड़ल रहै। ओकरे सुढ़ियबैत खुशीलाल। खुशीलाल लग बैसि भोलानाथ अपन दुख आ खुशीलालक दुखकेँ तुलना लगल। मने-मन सोचए लगल जे जहिना हम धिया-पुता दुआरे दुखी छी तहिना तँ खुशीलालो अन्न वस्त्र आ घरले दुखी अछि। हमहीं दुनू दोस दुखी छी, सेहो बात तँ नहि। समाजोमे देखै छी क्यो कोनो दुखमे पड़ल अछि तँ क्यो कोनो दुखमे। मुदा अछि तँ सभ दुखी। बच्चेसँ दुनू गोटे -भोलानाथ आ खुशीलाल- संगे खेलेलहुँ, मेला-ठेला देखलहुँ, मुदा गरीबीक चलैत खुशीलाल मनुक्खक जिनगी कहियो ने जीबि सकल। बेचारोकेँ सातटा सन्तान भेल मुदा तरद्दुतक चलैत पाँचोटा मरि गेलै। सिर्फ दुइयेटा बेटा बँचल छैक, जकरो देखै छी जे ने देहपर वस्त्र छैक आ ने भरि पेट अन्न भेटै छै। तहिना स्त्रियोकेँ देखै छी जे बेचारी रोगसँ ग्रसित अछि, ने भरि पेट खेनाइ भऽ रहलैक अछि आ ने दवाइ-दारु। मुदा तइयो बेचारी जिनगीमे हारि नहि मानि रहल अछि। अखनो देखै छी जे भरिगरसँ भरिगर काज करैमे पति -खुशीलाल- केँ संग दैत अछि। वाह रे औरत! एते बात मने-मन भोलानाथ सोचिते छल कि खुशीलाल कहलकै- ''दोस, दुख-सुख तँ जिनगीमे लगले रहै छै आ लगले रहतै मुदा एहिबेरक दुख जिनगी भरि मन रहत।''

जिज्ञासासँ भोलानाथ पूछलक- ''से की?''

जहिना क्यो मृत्युक मुँहसँ बँचि सुखक जिनगी पाबि खुशीसँ बजैत तहिना खुशीलाल कहए लगलै- ''दोस, पैछला मासक जे अंतिम झाँट रौतुका रहअ ओहि दिनक घटना कहै छियह। एक्केटा घर अछि, ओहीमे एकचारी दऽ गाए बन्है छी आ अपनो सबतुर रहै छी। बरतनो-बासन आ आनो-आनो चीज-बौस रखै छी। सुतली

रातिमे पहिने पानि हुअए लगल। पानि होइते छल कि पुरबा हवा उठल। हवा तेज हुअए लगल। तेज होइत-होइत खूब तेज भऽ गेल। पहिने मालक एकचारी गिरल। एकचारी गिरितहि गाए डिरियाए लगल। अपनो सभ एकचारी गिरैक अवाज सुनलिऐक। ठाठो हल्लुके रहै तँ गाए ठारहे रहल। गाइक देहपर ठाठ पड़ल। अन्हार गुज-गुज। बेसुमार पानि झहरैत। हवो कहै जे आइ छोड़ि काल्हि नहि बहब। समए देखि गाएकेँ बँचबैक हिम्मते ने हुअए। अगदिगमे सभ पड़ल रही। गुल्लियाक -बेटा- माए कहलक- ''गाइयक देहपर चार गिरल अछि, ओ मरि जाएत। अगर जँ गाए मरि जाएत तँ धनो जाएत आ पतियो लागत। तँ दुनू परानी चलू आ गाए कऽ निकालि अही घर लऽ आउ।'' कहि ओ -घरवाली- साड़ीक फाँड़ बान्हि घरसँ निकलि गेलि। घरसँ निकलैत देखि हमहूँ धोतीक बान्हि निकललहुँ। एकचारीक मुँहपर जाइते गाइक नजरि पड़लै। अखन धरि जे गाए डिरिआइत छल ओ दोसर स्वर, मुदा पहुँचलापर जे डिरिआएल ओ दोसर स्वरमे। ओकरा आवाजमे बुझि पड़ल जे बेचारी कनैत अछि। गाइयक आवाज सुनि जना देहमे दस हाथी बल चलि आएल। सोझे हाथसँ चार अलगा, गाए लग पहुँच माथपर चार उठा लेलहुँ। माए देह चाटए लगल। गुल्लिया माए गाएकेँ खोलि घर लऽ अनलक। हम असथिरसँ चारकेँ रखि निकलि गेलहुँ। निकलि कऽ घर अबिते घरक खुटा कड़कड़ाएल। मनमे भेल जे इहो घर गिरत। पूबरिया चारक दूटा कोरो हम पकड़ि निच्चाँ मुँहे बल दियए आ पछबरिया चारकेँ गुल्लियाक माए। दुनू बच्चा आ गाए बीचमे ठाढ़। जाबे धरि झाँट रहलै ताबे धरि पकड़नहि रहलौं। बुझि पड़ए जे दुनू डेन टूटि जाएत। मुदा की करितहुँ। ओते राति, झाँट-पानिमे, कतए जइतहुँ। सबहक तँ एक्के गति। ओही झाँटमे किसुनमा सभ तुर मरि गेल।''

खुशीलालक बात सुनि भोलानाथक आँखिमे नोर आबि गेलै। मने-मन सोचए लगल जे जिनगी भरिक दोस दुखसँ त्रस्त अछि मुदा हमरा तँ कोनो चीजक कमी नहि अछि। मुदा हमहूँ कहियो दोसक दुख नहि बुझलिऐक। मुदा धन्यवाद ओहि वेचाराकेँ दियै जे कहियो किछु नहि मंगलक। लोककेँ दोस्तक जरुरी एहि दुआरे ने होइ छै जे सुख-दुखमे संग रहए मुदा हम तँ दोसक दुखमे कहियो संग नहि देलौं। बहुत पैघ गल्ती हम केलहुँ। दोस्तक अछैते धने दोस गरीबीक चक्कीमे पिसाइत रहल। जँ भगवान हमरा निःसन्तान बनौने छथि तँ उचिते केने छथि। अनेरे हम एते तीर्थ केलहुँ। मुदा उनीकुट्टी तँ जेबे करब मुदा ओहिसँ पहिने दोसकेँ रहैक घर आ जीवैक लेल धनक उपाए कऽ देबै। मुस्की दैत भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- ''दोस, एकटा बात पूछै छिअह?''

''की?''

"तोहर दशा देखि हमर मन बदलि गेल दोस। एक दिशि हमरा धन अछि तँ भोगिनिहार नहि दोसर दिशि तोरा भोगनिहार छह तँ धन नहि। अखन कहुना कऽ घर मरम्मत कऽ लाए, किएक तँ परसू उनीकुट्टी जाइक विचार कऽ नेने छी। ओमहरसँ जखन घुरि कऽ आएब तखन चारि बीघा खेत आ घर बन्हैले सभ किछु देबह।"

भोलानाथक बात सुनि खुशीलालक हृदय चमकि गेल, मुदा मनमे हुअए लगलै जे कहीं आवेगमे ने बाजि गेल हुअए आ पछाति कहए जे 'ओहीना बाजि गेलहुँ।' खुशीलाल पूछलक- "दोस, के सभ जेबह?"

भोलानाथ- "अपने चारु बेकती तँ जेबे करब जे तोरो संगे चलए पड़तह।"

खुशीलाल- "दोस तोरा तँ बुझले छह जे सभ दिन कमाइ छी तखन गुजर चलैए। हम जँ चलि जाएव तँ गाइयो आ धियो-पूतो तँ मरिये जाएत। गुल्लिया माएकेँ देखते छहक जे देहमे कोनो हब नइ छै।"

"काल्हि भोरे दोसतिनीकेँ डाक्टर ऐठाम लऽ चलह। जे खरच हेतै से हम देबह। आ डाक्टरोकेँ कहि देबै जे सभ दिन अहाँ दुनू साँझ देखैत रहबै। अपनो सबहक खाइले आ गाइयो खाइले सभ कुछ, -अन्न नार-पुआर- अखने चलि कऽ लऽ आबह। बच्चासँ आइ धरि हमरा-तोरा बीच सिर्फ मुँहक दोसती छल, मुदा आइसँ असल दोस्ती हएत।" कहि, भोलानाथ उठि कऽ खुशीलालक दहिना बाँहि पकड़ि कहलक- "आइ हमर मन जना चमकि रहल अछि, चलह, अखने चलह। असकरे सभ कुछ आनल नहि हेतह तँ दोसतिनोकेँ संग कऽ लाए। बच्चा सभ ताबे एतै रहतह।"

दुनू परानी खुशीयोलाल आ भोलोनाथ विदा भेल। घरपर जा भोलानाथ नारक टाल देखबैत कहलक- "अइमे सँ नार घीचि लिहअ।" कहि आंगन जा भोलानाथ चाउर-दालि कोठीसँ निकालि खुशीलालकेँ दऽ देलक।

दोसर दिन भोरे भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम जा चारियबैत कहलक- "दोस, डॉक्टर ऐठाम सबेर गेलासँ नीक रहतह, किऐक डॉक्टरोकेँ खटैत-खटैत मन पीता जाइ छैक, जइसँ पैछला रोगी सबहक इलाजो नीक जेकाँ नइ भऽ पबैत छै। तँ अखने चलह।" भोलानाथक बात सुनि गुल्लियाक माए गुल्लियाकेँ कहलक- "बौआ, दोस कक्काकेँ कहुन जे चाह पी लेता, तब जइहथि।"

दोसतिनीक गप सुनि भोलानाथक मनमे आएल- "दुनियाँमे प्रेम कतौ झँपाएल नहि अछि, ओ तँ सौँसे छिड़िआइल अछि। सिर्फ देखै आ करैक जरुरत अछि। मने-मन भोलानाथ सोचितहि छल कि गुल्लिया चाह नेने भोलानाथक हाथमे देलक। एक घोट चाह पीबि भोलानाथ दोसतिनीकेँ कहलक- "झब दे चाह पीबू आ चलू। सवेर घुरि कऽ आएब तखन ने कौल्हुका ओरियान करब।"

तीनू गोटे -दुनू परानी खुशीलाल आ भोलानाथ- डॉक्टर ऐठाम विदा भेल। रास्तामे खुशीलाल भोलानाथकेँ कहलक- “दोस, गरीबो रहैत, भगवान हमरा स्त्री देलनि। हम तँ दुनू उखराहा बोइन करए जाइ छी। इमहर धिया-पूतासँ लऽ कऽ माल-जाल, भानस-भात, कुटौन-पीसौन सभ सम्हारैत अछि। ऐहनो दशा छैक तइयो एक्को क्षण बैसल नइ देखबहक कखनो काल अपनो मनमे हइए जे जखन अहाँक दोसतिनी मरि जाइत तखन हमर की गति हएत। मुदा सबुर अइ दुआरे होइए जे दुनू बेटो भगवान हमरे चुनि कऽ पठौलनि। एतबे-एतबे अछि, मुदा कखनो मुँह मलिन नइ देखबै। भरि दिनमे पान सेर कच्ची धान बोइन होइए। अहीमे सँ नूनो-तेल करै छी। ई तँ भगवानेकेँ जस देवनि जे अनेरुआ साग बाधमे उपजवै छथिन जे तीमनो खाइ छी। नइ तँ सेहो ने खइतौं।”

आइ धरि जे जिनगी भोलानाथ नहि देखने छल ओहि जिनगीक भेंट भेलै। डॉक्टर एहिठाम पहुँचैत-पहुँचैत भोलानाथक हृदय मोम जेकाँ कोमल भऽ गेल। डॉक्टर एहिठाम पहुँचते भोलानाथ, अपन दोसतिनीकेँ देखबैत, डॉक्टरकेँ कहलक- “डॉक्टर सहाएव, पाइ कौड़ी दुआरे इलाज कमजोर नइ करबै। जे खर्च हेतै हम देब तँ इलाज नीक जेकाँ कऽ दिऔक।”

गुल्लिया माएक जाँच-पड़ताल कऽ डॉक्टर कहलखिन- “रोग कोनो जब्बर नहि छनि, मुदा अन्नक दुआरे रग-रग बैसि गेल छनि। तँ रोगी मरती नहि, मुदा तनदुरुस होइमे किछु समए लगतनि। खाइ-पीवैक नीक व्यवस्था सेहो कऽ देबनि आ दवाइयो चलतै।”

डॉक्टर एहिठामसँ तीनू गोटे विदा भेल। थोड़े दूर आगू आबि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- “दोस, जखन बजार आएले छी तखन कपड़ो दोकानक काज केनहि जाएब। जखन तीर्थ-स्थान जाइक तैयारीमे छी तखन सभले नव-वस्त्र सेहो कीनिये लेब।”

कपड़ा दोकान जा भोलानाथ दोकानदारकेँ कहलक- “तीनिटा हमरा स्त्री अछि आ एकटा दोसतिनी छथि चारु गोटेले एक्के रंग साड़ी, आँडी आ दुनू दोसले एक्के रंग पाँचो टूक कपड़ा दिअ।”

भोलानाथक आदेश सुनि दोकानदार एक्के दाम आ एक्के रंग कपड़ा सभले देलक। कपड़ा देखि भोलानाथ दोकानदारकेँ दाम जोड़ैले कहलक मुदा खुशीलालक बेटा मन पड़ितहि नै-नै करैत कहलक- “दूटा ढेरबा बच्चाले सेहो दू जोड़ा पेंट, दूटा गंजी, दूटा अंगाक खत आ दूटा चरिहत्थी चद्दैर सेहो दिअ।”

दोकानदार सभ कपड़ा दऽ भोलानाथकेँ पूछलक- “आरो किछु?”

दोकानदारक बात सुनि भोलानाथ खुशीलालकेँ पूछलक- “आब तँ क्यो बाकी नइ नै ने रहल। किऐक तँ अखन दोकानपर छी, कीनि लेब।”

मूड़ी डोलबैत खुशीलाल उत्तर देलक- ‘‘नहि।’’

बाजारसँ विदा भऽ रस्तामे भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- ‘‘दोस, दोसतिनीकेँ कहि दहक जे समए-समएपर दवाइ खाथि। ऐहन ने हुअए जे कहियो तीनि खोराक दवाइ एक्के बेरि खाथि आ कहियो तीनि दिनपर।’’

गुल्लियाक माए सेहो भोलानाथक गप्प सुनल। किछु काल गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगल जे भलेहीं हम नहि करी मुदा ऐहनो लोक तँ अछि जे करैत हएत। मुस्की दैत भोलानाथकेँ सुना कऽ बाजलि- ‘‘मनुक्ख जँ अपन देखभाल अपने नै करत तँ आन कत्ते काल कऽ सकतै। तखन तँ भुखल-नाङट आ खगल लोककेँ मतिये बगदि जाइ छै। तँ लोक अन्ट-शन्ट करैए।’’

गाम पहुँचते भोलानाथ अपन कपड़ाक मोटरी लऽ अपना ऐठामक रस्ता पकड़लक आ दुनू परानी खुशीलाल अपना ऐठामक। आंगन अबिते खुशीलालक दुनू बेटा खुशीलालक हाथसँ मोटरी लऽ ओसारपर रखलक। दुनू परानी खुशीलाल पाएर धोइले कलपर गेल। कलक हेन्डिल पकड़ि खुशीलाल पत्नीकेँ कहलक- ‘‘पहिने अहाँ हाथ-पाएर धोइ लिअ। हम चला दइ छी।’’

खुशीलालक बात सुनि पत्नी -रेशमा- केँ मनमे जिनगीक आशा जगल जे जहिना पतिक सेवा पत्नी करैत तहिना कुसमए पाबि पत्नियोक सेवा पतिकेँ करक चाहिऐक। तखने परिवारक गाड़ी आगू मुँहे हँसैत-खेलैत चलत। दुनू बेकती हाथ-पाएर धोए आंङन आबि, रेश्मा घरसँ आबि, रेशमा घरसँ बिछान आनि आंगनमे बिछौलक। खुशीलाल कपड़ाक मोटरी खोलि पहिने दुनू बेटाकेँ गंजी-पेंट दैत कहलक- ‘‘बौआ, दुनू भाँइ पहिरि लाए। आरो कपड़ा सभ छह।’’

दुनू भाँइ धरिया खोलि पेंट पहिरते छल कि रेशमा कहलकै- ‘‘बौआ, धरियाकेँ टाटपर रखि दहक घरनीपा बना लेब।’’

आइ धरि खुशीलालक परिवारमे एतै खुशी कहियो नहि भेल छल जत्ते अखन भऽ रहल छैक। परिवारमे सभकेँ एक बेर नव वस्त्र आ सुन्दर सेहो, देहपर आएल। आइ धरि जे बच्चा जाड़मे आगि तापि, बरखामे बोराक घोघही ओढ़ि बितबैत छल ओहि बच्चाकेँ जँ भरि देह कपड़ा, बरखामे छत्ता।मुदा बहुतो लोक तँ घरोमे बरखा समए छत्ता लऽ वितबैत। आ भरिपेट अन्न भेटि जाय तँ किऐक ने कनैत मन हँसत। खुशीलालक परिवारमे आइ ओहने हँसी, टाट तोड़ि आबि गेल।

दोसरि साँझ। धड़फड़ाइल भोलानाथ खुशीलालक एहिठाम आबि, दोस-दोसक आवाज लगौलक। रेशमा सिलौटपर मसल्ला पीसैत छलि आ खुशीलाल चुल्हि लग बैसि आँचो दैत आ दुनू बच्चोकेँ कहैत- ‘‘बौआ, काल्हि हम दोसक संग तीर्थ करैए जेबह। बीस-पच्चीस दिन लागत। माए दुखिते छह तँ दुनू भाँइ गाइयोकेँ खुअबिहह आ माइओक काज कऽ दिहक।’’

भोलानाथक अवाज सुनि रेशमा, लोढ़ी चलौनाइ रोकि, उठि कऽ घरक ओलती लग आबि बेटाकेँ जोरसँ कहलक- ''बौआ, दोस कक्का बाटपर सँ गर्द करै छथुन।''

रेशमाक बात सुनि खुशीलाल चुल्हि लगसँ उठि, बाहर निकलल। बाहर आबि भोलानाथकेँ कहलक- ''दोस, बाटपर किअए छह, अंगने आवह।''

आंगन आबि भोलानाथ बाजल- ''दोस अखैन नै रुकबह। तीनि बजे भोरे गामसँ निकलैक छह, तखने चरिबजिआ बस पकड़ि सकवह। किऐक तँ कोस भरि जाइओ पड़तह। सएह कहैले एलियहहेँ। दोसर बात जे हमरो ऐठाम तँ क्यो रहत नहि तँ दोसतिनीकेँ कहि दहुन जे भोरे अपन गाइयो आ दुनू बच्चोकेँ ओतै लऽ जेतीह। ओतै रहती, खेती-पीत्तीह। अपन गाइयोकेँ खुऔती-पीऔती। अखन जाइ छिअह। बहुत जुति-भाँति लगबैक अछि।''

खुशीलाल- ''कते दिन लगतह?''

भोलानाथ- ''एक तँ घरसँ निकलि नइ होइए, जखन निकलब तँ रस्तामे जे सभ देखैबला अछि ओ सभ देखनहि आइब की ने। आब जना अइठाम गाड़ी - रेल- पकड़ब, लोकहा जाएब, लौकहासँ बस धरब। कोसी पुल पार भेलापर, बराक्षेत्रक रस्ता अछि जाइ काल ओ छोड़ि देबै। आगू बढ़ब। नेपालक बीचे-बीच बसक रास्ता अछि। उत्तरवारि भाग जंगल-पहाड़ देखबह आ दछिनवारि भाग धार-धुर, खेत-पथार, गाम-घर देखवहक। आगू इटहरी चौक अछि। जइठाम अपना सभ पूब मुँहे ककरभिट्टा जाएब। मुदा चौकसँ दछिन मुँहे गेलापर विराटनगर अछि। इटहरिये चौकसँ उत्तर मुँहे गेलापर धरान आ धनकुट्टा अछि, ओ घुमती कालमे देखब। ककरभिट्टा तक नेपालक बस चलैए। ओतइ उतरि कऽ मेची धार पार हएव। धार पार भेलापर अपन देशक बस भेटत। ओहि बसपर चढ़ि नक्सलबाड़ी होइत सिलीगुड़ी जाएब। सिलीगुडीसँ एकटा रास्ता असाम जाइ छै जे अपना सभ पकड़ि कऽ जाएब। ओना, ओहूठाम -सिलीगुड़ी- सँ देखैबला बहुत जगह अछि। जना-दार्जिलिंग, सिक्किम, भूटान। मुदा जाइ काल कतौ ने अँटकब। अबैकाल सभ देखैत-सुनैत आएब। एकटा बात मन पड़ि गेल। जखन सिक्कम जेबहक तँ देखवहक जे जेना साँसे सिक्कम फुलबाड़िये अछि। किछु फूल अपनो इलाकाक देखवक मुदा बेसी फूल अनठिये बुझि पड़तह। दुनियाँमे एत्ते रंगक फूल कतौ ने अछि। से तँ जखन देखवहक तखन अनेरे बिसवास हेतह। फूलेटा किअए, चाहोक खेती देखि असंभए लगतह। सिलीगुड़ीमे बस पकड़ि असाम जाएब। ओतइ रातिमे, यात्रपाटी, विदेशिया नाच देखब। भोरमे त्रिपुरा लेल बस पकड़ि लेब। ओना असामोमे बहुत चीज देखैबला छै। जना ब्रह्मपुत्र धार, कामरुपकामाख्या, काजीरंगा, शिवसागर, कते कहबह। जखन गौहाटीसँ, बस

पकड़ि दछिन मुँहे विदा हेबहक, तखन रस्तेमे मेघालय भेटितह। एकटा बात तँ छुटिये गेलह। गौहाटियेसँ मिजोरम बस जाइ छैक, ओतौ जाएब। मुदा घुमती कालमे। मिजोरममे पहाड़, जंगल देखि कऽ मन भरि जेतह। मिजोरममे जे आदी देखबहक तँ आश्चर्य लगि जेतह। अपना सभक ऐठाम जे आदी होइए ओ तँ कनगुड़ियो ओंगरीसँ पातर होइए मुदा ओहिठामक -मिजोरम- जे आदी होइए ओ औंठोसँ मोट। तहूमे ओहिठामक आदीमे रेशा -सोन- नहि होइ छै। सोनक नाम सुनि बिचहिमे रेश्मा बाजलि- "दोस भाँग-ताँग पीवि कऽ ऐला हेन तँ ऐना बजै छथि। कहू जे जइ आदीमे सोन नइ रहत ओ आदी केहेन हएत।" दोसतिनीक बात सुनि भोला कहलक- "हम सभ तँ जाइते छी, अबैकाल एक किलो कीनने आएब। जखन अपना चसमसँ देखवै तखन तऽ विसवास हएत। तिला सकराइतिक खिचड़ी लऽ थोड़े रखियो लेब। हँ तँ दोस कहै छेलियह जे गौहाटियेसँ मणिपुर सेहो बस जाइ छै। देखैबला जगह अछि मणिपुर। ओहिठाम विष्णु भागवानक मंदिर, गोविन्द जीक मंदिर आ सभसँ नीक देखैबला अछि हेलैत उद्यान। मुदा ओहूठाम घुमतिये काल जाएब। ओतैसँ नागालैंड सेहो बस जाइ छै। ओहो देखब। अरुणाचल सेहो ओही रास्तामे अछि, सेहो देखि लेब। अरुणाचलमे दोसरे हिसाबसँ खेती करैत देखवहक। ओ सभ अपना खेतीकेँ झूम सिस्टम कहै छै। बुद्धदेवक बहुत पुरान मंदिर तवांगमे देखवहक। हँ तँ कहै छेलियह जे गौहाटीसँ जखन मेघालय जाएब तखन वुझि पड़तह जे ई राज पहाड़ेक छियैक। पहाड़ेटा किऐक हौ, खूब गहीर-गहीर धार सभ सेहो देखबहक। पहाड़ेपर शिलांगसँ सेहो अछि। उपरसँ जे देखबहक तँ बुझि पड़तह जे हजारो हाथसँ गँहीर एहिठामक धार सभ अछि। से की एगो-दुगो, मारे। सभटा मनो ने अछि मुदा जे मन अछि से कहै छियह। कृष्णई, कालु, भुगइ, दरेंग, सिमसांग, पनरह-बीसटा धार अछि। अखन जाइ छियह। काल्हिसँ तँ संगे रहबह। भरि रास्ता गप-सप्प होइते रहत।"

दोसर दिन भोरे बस पकड़ि पाँचो गोटे उनीकुट्टी विदा भेल। तीनि दिनक बसक सफर। किरिण डूबैत बससँ उनीकुट्टी उतरल। उनीकुट्टी पहुँच पाँचो गोटे हियाबए लगल जे ने अपन इलाका -मिथिला- सन इलाका अछि, ने बोली। बड़का-बड़का, उचगर-उचगर पहाड़ अछि, बोन-झाड़ अछि। अपना सभकेँ देखल नहि अछि आ लोकक बात बुझै नहि छियै। ने हमर बोली ओ सभ बुझैए आ ने ओकर हमसभ। विचित्र स्थिति। बिना देखने घुमियो जाएब सेहो कोनादन हएत। आब की करब? बसे स्टैण्डमे पाँचो गोटे रुकल। भोलानाथ खुशीलालकेँ पूछलक- "दोस, की करवह?"

खुशीलाल- "दोस, चाह-पानक दोकानदारसँ भाँज लगि जेतह। किएक तँ

टीशनक कातक दोकानमे सभ मुलुकक लोक अबै छै किने। हम जा कऽ पूछै छियै।''

मुसाफिर खानासँ हटि बाहरमे पानक दोकान। खुशीलाल बाहर निकलि पानक दोकान लग जा ठाढ़ भेल। दोकानदार बगलेमे खुशीलालकेँ पूछलक- ''की लेव?''

दोकानदार बोली खुशीलाल नहि बुझलक। दोकानदार वुझि गेल जे आन ठामक यात्री थिक। आँखिक इशारासँ दोकानदार पूछलक। खुशीलाल बाजल- ''भाय, परदेशी छी।''

बोली सुनि दोकानदार बगलक हलुआइक दोकानक नोकरकेँ सोर पाड़लक। नोकर मिथिलांचलेक। नोकरक नाम बिलट। बिलट अविते खुशीलालसँ गप्पकेँ दोकानदारकेँ कहलक। दोकानदार अपना ऐठाम लऽ जा चारुगोटेकेँ नल देखौलक। चारु गोटे बेरावेरी नहा चूड़ा-दही भरि पेट खा सुति रहल।

दोसर दिन विलटकेँ संग कए भोलानाथ चारु गोटे देखै लऽ विदा भेल। चारि आनामे भोलानाथ 'ऊनीकुट्टीक महात्म' नामक किताब कीनलक। घूमैले जाइसँ पहिने उनीकुट्टीक महात्म भोलानाथ पढ़ि लेब नीक बुझलक। पाँचो गोटे पाथरक टुकड़ापर वैसि भोलानाथसँ उनीकुट्टीक कथा सुनए लगल- ''द्वापर, युग अंतिम दिन गनैत। कलियुग लग आबि गेल। कलियुग अधला युग होइत तैँ सभ देवी देवता राता-राती पड़ा समुद्रमे वास करए विदा भेल। ऊनीकुट्टी लग जाइत-जाइत भोर भऽ गेलै। चिड़ै-चुनमुनी चह-चहाए लगल। दिनक आगमन बुझि सभ देवी-देवता रहि गेल। ओइह थिक उनीकुट्टी।

नमगर-चौड़गर इलाका। छोट-पैघ सइओ पहाड़। ऊँच-ऊँच पहाड़सँ पानि झहरैत। जे अपन रास्ता बनौने। पैघ-पैघ अनभुआर गाछ-बिरिछ। टूटल-टाटल देवी-देवताक मूर्ति जहाँ-तहाँ एक दिनमे सगरे घूमि कऽ देखब संभव नहि। बीचमे एकटा साधुक स्थान। छोटेटा घर। आगूमे चबूतरा जेकाँ पाथरक टुकड़ा। साधू भोलानाथसँ परिचए पूछि ऐवाक कारण पूछलखिन।

भोलानाथ सविस्तार कहि सुनौलकनि। हँसैत साधू कहए लगलखिन- ''ऐहि दुनियाँमे ने क्यो अपन अछि आ ने आन। सभ अपन। जइ बेटा-बेटीक इच्छा मनमे अछि ओ क्षणिक छी। जतेकेँ अपन बुझैत छी ओतबो अपन नइ छी। मनुक्ख खिआइत-खिआइत एते खिया गेल जे मनुखकेँ अपन नहि बुझि दू-चारि गोटेकेँ बीच समटा गेल। जहिना केयो चलैत बसमे भीड़ देखि नहि चढ़ि, छोड़ैत-छोड़ैत एते छुटि जाइत अछि जे अपन गन्तव्य स्थान धरि पहुँचिए नहि पबैत अछि तहिना समएक गति रुपी गाड़ीसँ छुटि तते पाछू पड़ि गेल जे समएक संग पकड़ब कठिन भऽ गेल अछि। सभ मनुष्यक दायित्व होइत जे अपनासँ आगू बढ़ि आनो-

आनकेँ सेवा करए। जतेक अधिक मनुखक सेवा एहि शरीरसँ भऽ सकत ओते अधिक धर्म होएत।''

साधूक विचार सुनि भोलानाथक हृदय गंगाजल जेकाँ पवित्र होमए लगल। अनायास स्नेह भरल हँसी भोलानाथक मुहसँ निकलए लगल- ''हम जे तकै छलहुँ भेटि गेल। ई अंतिम तीर्थाटन छी। गाम पहुँच अपन सभ सम्पत्ति बच्चा सभकेँ पढ़ेवामे दऽ देबइ। सभ बच्चा, बच्चा छी।''

साँसे उनीकुट्टी देखैमे पाँच दिन भोलानाथ सभकेँ लगल। उनीकुट्टीसँ नीरमहल जा सभ देखलक। नीरमहलसँ डबूर झील देखैत कमल सागर देखि सभ विदा भेल। रास्तामे चाहक खेती कतौसँ कतौ देखै गेल। डाँड़ भरि उपरसँ गाछ छपटल पतिआनी लगाओल रोपल। खेतमे जुआन, ढेरवा लड़की सभ घघड़ा पहिर पीठपर बेंतक बोको नेने चाहक पात तोड़ि-तोड़ि रखैत। गठल देह पुष्ट ललाट फूलक झावा केशमे खोसि पातो तोड़ै आ मस्तीसँ गीतो गबैत तहिना छाती भरि-भरि उपरमे रबड़क गाछसँ दूध बहैत सेहो देखलक। भोलानाथ कमलसागरक मोहारपर काली मंदिरक ओसारपर बैसि गाम घुमवा लेल सभ विचारलक। दोसर दिन भोरे गाड़ी पकड़ि विदा भेल।

चारिम दिन गाम आवि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- ''दोस्त, आव विआह नहि करब। जे खेत आ घरमे राखल गहना-गुरिया, बरतन-वासन अछि, रखि कऽ की करब? चौगामा लोकक बच्चाकेँ पढ़ै लऽ इस्कूल बना देव। अखन धरि जे अनपढ़ लोकक समाज अछि ओ पढ़ल-लिखल लोकक समाज बनत। जहिसँ समाज आगू मुँहे बढ़त।''

समर्थन दैत खुशीलाल कहलक- ''दोस्त, काल्हिसँ चारु पाँचो गाम जा-जा सभकेँ कहि वैसार करब। वैसारेमे अपन सभ बात कहिहक।''

--१५--

भोलानाथ आ खुशीलाल जलखै खा कमलपुर विदा भेल। जहिना अनभुआर जंगल जेवामे डर होइत तहिना भोलानाथ आ खुशीलालकेँ होइत। जिनगीमे परिवारसँ आगू बढ़ि कहिओ कोनो काज नहि केने। पहिने दुनू गोटे विसेसरक ऐठाम गेल। विसेसर दहिना हाथमे हाँसू, खुरपी आ वामा हाथमे कोदारिक बेंट पकड़ि कान्हपर नेने खेत जाइत छल। रस्तेमे दुनू गोटे विसेसरकेँ भेटल। भेटि होइते खुशीलाल विसेसरसँ कहलक- ''विसेसर भैया तूँ बहुत दिन जीवह। तोरे चर्चा हम दुनू गोटे करैत छलौं। एकटा विचार तोरासँ पूछए एलौं?''

“विसेसर- “खेते दिस चलह। हमर खेतिओ देखिहक।”

तीनू गोटे संगे जा बोरिंगक एकचारीमे बैसि गप्प-सप्प करए लगल। विसेसरक इमानदारी आ कर्मठताक चर्चा परोपट्टामे होइत। हृदय खोलि भोलानाथ विसेसरसँ कहए लगल- “विसेसर भाइ, भगवान संतान नहि देलनि। धन-सम्पत्तिक तँ कमी नहि अछि मुदा भोगिनिहार नहि। मोनमे आएल जे सभ सम्पत्ति बच्चा सभकेँ पढ़ैले इसकूलमे दऽ दियैक।”

मूड़ी डोलबैत विसेसर कहलक- “बड़ड निक विचार भोला केलह। हमरा तँ देह छोड़ि किछु अछि नहि मुदा देहसँ जे काज हुअ अखनेसँ तैयार छिअह। जाधरि इसकूल बनत ताधरि संगे खटवह। पहिने एकटा वैसार समाजक करह।”

‘ओइह सोचि तोरासँ पूछै एलौं।”

तर्क-वितर्क करैत-तीनू गोटे चारु भरक गामक सभक वैसौनाइ नीक नहि वुझि शिक्षा-प्रेमीकेँ बैसाइव उचित वुझलक। विसेसर अपना गामक शिक्षा-प्रेमीक संग लालपुरक शिक्षा-प्रेमीक कहैक भार लेलक। पछवारि गामक भार खुशीलालकेँ दऽ दछिनवरिया गामक भार भोलानाथ लेलक। परसू चारि बजे बैसारक समए बना तीनू गोटे काजमे जुटि गेल। एक बेर सगरे खेत घूमि देखब उचित बुझि विसेसर आड़िये-आड़ि घूमए लगल। गहूमक कोला टपिते भकरार फुलाइल दारिमक गाछपर विसेसरक नजरि पहुँचल। लाल-लाल फूल। पाछूसँ फड़क आ आगूसँ झड़ैबला फूलक। मधुमाछी एकटा परसँ उड़ि दोसरपर वैसि रसपान करैत। संगे अपन कोमल स्वरसँ खैतो आ गाछोकेँ गीति सुनबैत। विसेसर ठाढ़ भऽ तीनू गाछकेँ आँखि गड़ा-गड़ा देखए लगल। एकटा गाछमे पहिलुका फुलाएल फूल झड़ि फड़ बनि गेल। गोल-मोल हरियर। उपरसँ चिक्कन-चुनमुन। फूलक पत्ती झड़ि निच्चामे मोलाए गेल। दर्जनो फूल गाछमे फुलाएल। फड़केँ हाथसँ छूबि-छूबि विसेसर मने-मन खुशीसँ गद्गद् होइत सोचए जे हमरा सन गरीब-गुरबाकेँ जिनगीमे नसीब नहि होइबला, मेहनतक कृपासँ कतेको खाएब।”

कोदारि हॉसू खुरपी लऽ विसेसर आंगन गेल। मोहिनी अरबा खुद्दी पीसि, रोटी ठोकि रोटिपक्कामे दऽ कर उनटबैत रहए कि विसेसरकेँ देखलक। चुल्हि लग मोहिनीकेँ देखि विसेसर सहटि कऽ ओसार लग जा कहलक- “एकटा जरुरी काज उपस्थिति भऽ गेल। तँ खेतक काज छोड़ि श्यामानन्द ऐठाम जाइ छी।”

रोटिपक्कासँ रोटी उठा हाथक आंगुरसँ टोबि-टोबि मोहिनी देखए लागलि। रोटिपक्कामे रोटी राखि मोहिनी विसेसरकेँ कहलक- “रोटी सिझ गेल। नोन-मेरिचाइ सिलौटपर पीसि दै छी। जाबे अहाँ हाथ-पाएर धोअब ताबे भऽ जाएत। घूमि कऽ कखन आएब कखन नइ। जलखै कऽ लिअ।”

थत-मतमे विसेसर ठाढ़। एक दिस समाजक काज मोनकेँ खिचैत दोसर दिस

शरीरक रक्षाक लेल खाएब। ओसार परसँ लोटा उठा हाथ-पाएर धोअए विसेसर इनार दिस गेल। हाथ-पाएर धोय लोटामे पानि भरने आबि जलखै केलक। जलखै कऽ चुनौटीसँ चून-तमाकूल निकालि चुनवैत श्यामानन्द ऐठाम विदा भेल।

श्यामानन्द जलखै कऽ ट्रेक्टरपर बैसि, गरमाधान, सीता कटल, खेत जोतए ले विदा भेल। अगता गहूम वाउग भेने अधिक उपजा होइत। विसेसरकेँ देखिते, ट्रेक्टर परसँ उतड़ि श्यामानन्द दलानपर आबि विसेसरकेँ वैसवैत अपनो बैसल। कुशल-क्षेम केला उत्तर श्यामानन्द पूछलक- "भैया सवेरे-सवेर किम्हर ऐलहें?"

"बौआ श्याम, हमहूँ काज छोड़ि एलौं। भोलानाथ भिनसरे आवि कहलक जे हमरा ढेर सम्पत्ति अछि भोगिनिहार केयो ने अछि। तेँइ अपन सभ सम्पत्ति बच्चा सभकेँ पढ़ै लऽ इसकूल बनबैमे दऽ देव।"

विसेसर बात सुनि खुशीसँ श्यामानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। आंगन जाइत बाजल- "भैया कने रुकह। आब हमहूँ खेत जोतए नै जाएब।" आंगन जा गुलावकेँ कहलक- "दोसर काजमे जा रहल छी। जाबे ओ काज रहत तावे घरक काज अहाँ सम्हारु।"

मुँह बाबि, सुनि अचंभित भऽ गुलाब बाजलि- "कोन ऐहन काज आबि गेल जे सभटा भार हमरा देने जाइ छी?"

आगू बढ़बैत डेग रोकि श्यामानन्द गुलाबसँ कहलक- "भोलानाथ अपन सभ सम्पत्ति इसकूल बनबै लऽ दऽ रहल अछि ओहि काजे जा रहल छी।"

विसेसर श्यामानन्द संगे लालपुर चलल। कमलपुरसँ एकबधूऐ गाम लालपुर। लालपुर पहुँच दुनू गोटे मुनिलालक ऐठाम गेल। मुनिलाल दरबज्जेपर मोथिक बिछान लधने, वएह बिनैत। दुनू गोटेकेँ देखि हाँइ-हाँइ परतानसँ ठोकि उठि कऽ आवि वैसौलक। चौकीपर बैसि श्यामानन्द मुनिलालकेँ कहलक- "भाय कोनो चेष्टगर बच्चाकेँ सोर पारि कहिऔ जे गामक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजा लाओत।"

मुनिलाल बेटाकेँ सोर पाड़लक। जे आठवाँमे पढ़ैत। मुनिलाल दरबज्जे परसँ कारी, डोमी, कप्पल, गुनमाकेँ सोर पाड़ि बेटाकेँ रघुनाथक टोल पठौलक। इसकूलक बात सुनि सभ युवकमे नव उत्साह पैदा लेलक। दशो-बारहो युवक आएल। सभकेँ बैसा श्यामानन्द कहए लगल- "बौआ, अपन चारु-पाँचो गाममे एकोटा इसकूल नहि अछि। अवसर भेटल, भोलानाथ अपन सम्पत्ति दऽ रहल छथि। हमसभ जे नवयुवक छी जी-जानसँ पड़ि लोअर इसकूलसँ लऽ कऽ हाइ इस्कूल तक बनेवामे जुटि जाए। बेसी परिवार गरीबे अछि। बाहर खरचा दऽ बच्चाकेँ पढ़ाओत ओ संभव नहि छैक। लगमे इसकूल भेलासँ गाम परसँ खा स्कूल जा पढ़त।"

परसू चारि बजे ब्रह्मस्थानक अगिला मैदानमे बैसार हएत तहिमे सभ अविहह।''

गप-सप्प करैत दुपहर भऽ गेल। विसेसर आ श्यामानन्द विदा होअए लगल। मुदा खाइक बेर देखि मुनिलाल दुनू गोटेकेँ बाहि पकड़ि कहलक- ''बिना खेने नइ जाए देव?''

मुनिलालक आत्मीय स्नेहकेँ दुनू गोटे नहि काटि सकल।

पाँचों गामक लोक चारि बजेक बदला दुपहरेसँ आवए लगल। श्यामानन्द आ विसेसर कलौ खा बिहारी बचनाकेँ संग केने वैसारमे पहुँचल। चारि बजेक समए आगू नहि घुसकि पाछुऐ घुसकि दुइये बजेसँ बैसार शुरु भेल।

बैसारक बीच भोलानाथ ठाढ़ भऽ बाजए लगल- ''भाइ लोकनि अपन इलाका पढ़ै-लिखैमे बड़ पछुआएल अछि, जइसँ सभ तरहे पछुआ गेल अछि। हमर सम्पत्तिकेँ केयो भोगिनिहार नहि अछि तेँइ हम चाहैत छी जे अपन सभ सम्पत्ति दऽ हाइ इस्कूल तक बनावी। साइठ बीघा जमीन अछि। घरोमे फुल-पितरिक बरतन, गहना-जेवर -जे सभ बावूक अमलदारीमे बन्हकी लेने छलाह- ढेरी अछि। गाछी-कलम बाँस सेहो अछि। अहाँ सभक बीच कहैत छी जे अखनसँ ओ सभ चीज अहाँ सभक भेल जहिसँ बच्चा सभक उद्धारक लेल इस्कूल बना दिऔक।''

थोपड़ी बजा सभ भोलानाथक विचारकेँ समर्थन देलक। श्यामानन्द ठाढ़ भऽ बजए लगल- ''जाधरि स्कूल बनि पढ़ौनी शुरु होएत ताधरि हम दिन-राति अहाँ सभक संग खटव।''

श्यामानन्द बैसि गेल। श्यामानन्दकेँ वैसिते पंडित शंकर उठि कऽ कहए लगलखिन- ''जाधरि हम कॉलेजमे अध्यापकक काज केलौँ अपन समाजसँ अलग रहलौँ। जाधरि नोकरीमे रहलौँ एक तरहक लोकक समाजमे रहलौँ। जकरा आइ नदी जेकाँ समाज बुझैत छी। बीस बर्ख अध्यापन केलासँ अध्यापक भेलौँ, साइठ बर्खमे सेवा निवृत्ति भेला बाद जखन गाम एलौँ तखन बुझलिऐक जे आई धरिक समाज नदी जेकाँ छल आब समुद्र रुपी समाजमे एलौँ। तेँइ नौजवानक शक्ति हमरा शरीरमे प्रवेष केलक। आइ हम ओहि समाजमे छी जइमे प्रकांड पंडित, महान बैज्ञानिक, दार्शनिक, इंजीनियर, डॉक्टर, कानून बेतासँ लऽ महामुर्ख धरि रहैत। जहिना समुद्रमे बड़का-बड़का जानवरसँ छोटसँ छोट कीड़ि-मकोड़ी वास करैत। जहि समाजमे स्वस्थ खलीफासँ लऽ कऽ अथवल धरि रहैत। जहि समाजमे महानसँ महान डॉक्टर होइत ओहि समाजमे विकटसँ विकट रोगक रोगी रहैत। आइ ओहि समाजमे हमहूँ छी। अखन धरि पेटक लेल नोकरी करैत छलौँ, जे जिनगी भरिक जोगार भऽ गेल। आव पेटक लेल सेवा नहि कल्याणक लेल सेवा करब। जखन सेवा निवृत्ति भऽ गाम अवैत रही तखन रास्तामे मने-मन

कचोट होअए जे जहि समाजमे जन्म लेलौं जिनगीमे बहुत देलक। जकर हम ऋृणि छी। तँइ अहाँ सभक बीच कहैत छी जे मरै काल धरि अहाँ सभक बाँहि पकड़ि चलैत रहब।''

पंडित शंकरक वक्तव्यक बीच कतेक बेर थोपड़ी बाजल। पंडित शंकर अपन विचार व्यक्त करैत वैसि गेलाह। हुनका वैसिते डॉक्टर निलमणि सेन ठाढ़ भऽ बजै लगलथि- ''हमहूँ अहीं सभक बीच बसि जिनगी बीता रहल छी आगूओ विताएव। हम एकटा अदना डॉक्टर छी जहाँ धरि बनि पड़ैत अछि अहाँ लोकनिक सेवा करैत छी। भोलानाथ अपन सभ सम्पत्ति समाजक लेल लगा रहल छथि। तेँइ हुनका हृदयसँ धन्यवाद दैत छिअनि आ हमहूँ अपन आधा समए अहाँ लोकानिक सेवामे देब आ आधा समए पेटक लेल।''

डॉक्टर निलमणिकेँ वैसिते ईंटा बनौनिहार रामधन उठि कऽ ठाढ़ भेल। रामधनकेँ खड़ा देखि सभ टकटकी लगा देखए लगल। जेकरा एको अक्षरक बोध नहि, सभ दिन माटि बना पजेवा गढ़लक। ओ पाँच गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ अपन विचार रखए चाहैत अछि। सभकेँ एकरे जिज्ञासा। ठाढ़ भऽ रामधन कहए लगल- ''हम सभ अट्ठारह गोटे पजेवा बनवैत छी। अट्ठारहो गोटेक विचार अछि जे स्कूलक पजेवा हम सभ अधा मजदूरी लऽ बनाएव। अधा स्कूलक मदतिमे देव।''

रामधन थोपड़ी आवाजमे अपन विचार सम्पन्न कऽ बैसल।''

रामधनकेँ बैसिते मनचल उठि ठाढ़ भऽ बाजए लगल- ''जाधरि इसकूल बनत ताधरि गामे-गाम घूमि नाटक कए कऽ स्कूलक प्रचार करब आ जे आमदनी हएत ओ चंदा देव।''

आइ धरि गामक उत्थानक लेल एते लोक एते गामक एकठाम वैसि कहिओ नहि विचार केने छल। अखन धरि सभ जाति, सम्प्रदाय, ऊँच-नीचक आड़िक भीतर बौआइत छल। अनेरे एक-दोसरसँ जरैत, छोट-छीन झगड़ा ठाढ़ कऽ उलझल रहैत, जहिसँ समाजक पतन होइत रहल। औझुका वैसारसँ सभक मोनमे खुशी आएल, आपसमे प्रेम जागल। भाइचारा आ परोसीपनक उदय भेल। सभक जिज्ञासा त्याग, प्रेमक माध्यमसँ नव समाजक निर्माणक बीज रुपमे पड़ल।

पंडित शंकर पुनः ठाढ़ भऽ बाजए लगलथि- ''भाइ लोकनि भोलानाथक सम्पत्ति सभक भऽ गेल। एकरा खजाना बुझिऔक। हमर-अहाँक जिम्मा होइत अछि जे खजाना भरल रहै तेँइ एकरा मेहनतसँ भरबाक जरुरत अछि। पाँच-गामक लोक बैसल छी। सभ बड़का-बड़का राक्षसक चालिमे पड़ल छी। आइ हम सभ संकल्प ली जे विआह श्राद्ध इत्यादिमे धन लुटवैत छी ओकरा बन्न कऽ समाजक कल्याणमे धन लगावी। बिआह, श्राद्ध तँ आइये नहि अदौसँ होइत रहल

आ आगूओ होइत रहतैक। दहेज रुपी दानव पहिने नहि छल जे अखन सइओ हाथीक बलक बरावरि भऽ गेल अछि। विआह तँ सृष्टि निर्माणक प्रक्रिया छी, हेबे करत, जँ नहि हएत त सृष्टि रुकि जाएत। श्राद्धमे भोज कए घर-घरारी बेचि लुटा दैत छियै जहिपर सभकेँ ध्यान देमए पड़त। छोट-छोट बातक झगड़ा बढ़ि विकाराल रुप धारण कऽ लैत। जकरा चलैत कोट-कचहरीक चक्करमे पड़ि सभ निच्चाँ मुँहे जा रहल छी। ने अपन जिनगीक महत्व बुझैत छियै आ ने दोसराक।''

हाथ उठा सभ जोर-जोरसँ कहए लागल- ''पंडित बावा बढ़ियाँ विचार देलनि।''

पंडित शंकर दुनू हाथसँ शान्त करैत आगू कहए लगलखिन- ''भाय लोकनि, पाँच गामक लोक बैसल छी। पाँचो गामक सभ संकल्प लिअ जे हम अपन बेटा-बेटीक विआह एहि पाँचो गामक बीच करब। दहेज नै लेब। जरुरी काज जे अछि ओतवे करब। देखै छी जे अधासँ अधिक परिवारमे दुनू साँझ भरि पेट अन्न नै भेटैत छैक। देहपर कपड़ा नहि छैक, रहै लऽ घर नै छैक। आइ बच्चाकेँ पढ़वा लेल विचार कऽ रहल छी, नीक बात। कहि पंडित शंकर बैसि गेलाह।

पंडित शंकरेक अध्यक्षतामे समाज उत्थान समिति बनल जेकर सदस्य पाँचो गामक पच्चीस नौजवान भेल। आगूक लेल योजनाबद्ध ढंगसँ कार्यक्रम तँइ भेल।

समाप्त